समर्पण

विश्व की उस महान जनता को जिसने उपनिवेशों के
विरुद्ध स्वाधीनता के लिए और युद्ध के विरुद्ध
शांति के लिए अपने संघर्ष को सुदृढ़ बनाकर
युद्ध से भयभीत विश्व को राहत और
शांति प्रदान करने में योग
दिया है।

भारतीय अपने राज्य के स्वर्णकाल में भी आक्रान्ता नही रहे। उनकी सभ्यता, धर्म और कला का प्रभाव शांतिपूर्ण उपायों से प्रसारित हुआ। भारतीयो की नम्रता और शांतिप्रियता सुविदित है, और उन्होंने उपनिवेशवादियों के विरुद्ध अपने हाथ तभी उठाए, जब वास्तव में उनकी निराशा की कोई सीमा न रही। नये गणतन्त्र के सामने इस समय यह कठिन काम है कि औपनिवेशक शासन के दौरान भारतीयों ने जो समय गँवाया है, उन सबकी पूर्ति कुछ वर्षो के भीतर करली जाए। उन्हें उन सब राष्ट्रों की भांति जो सृजनात्मक कामों में लगे है, शांति चाहिए।

इलिया एहरेन बुर्ग

प्रस्तावना

'नेहरू विश्व शाति की खोज मे' एक तरुण कलम की उत्सुक दृष्टि को नई दुनिया के सम्मुख उपस्थित करती है। गाधी ने जो राजनीति में धर्मनीति का आरोप किया था, उसका प्रतिनिधित्व करते हुए पूर्व का ज्योतिस्तम्भ, यह नेहरू जो प्रकट मे तो भारतीय गणतन्त्र का महामात्य मात्र है, पर जो विश्व के मनुष्यो को अभयदान देने के लिए विश्व की शक्तियो को अपनी ओर अभिमुख कर रहा है, आज के मनुष्यो का सबसे बड़ा त्राता है। तरुण लेखक ने उस वैकल्य और प्रतिक्रिया का विश्व को आगे बढती हुई विनाशक प्रवृत्ति की पृष्ठ-भूमि पर विहगम दृष्टि डालते हुए—एक रेखा-चित्र हमारे सम्मुख रखा है। जिससे आगे आने वाली पीढी यह देख सकेंगी कि विश्व के राजनीतिज्ञ धुरीण-जन जब केवल अपने सामूहिक स्वार्थों पर त्याग और साहस का मुलम्मा चढा कर जन जीवन को त्रस्त कर रहे हैं, तब भारत की राजनीति का यह शीर्ष-स्थानीय पुरुष विश्व के मनुष्यो को अभयदान देने के लिए अपने सर्वस्व की बाजी लगा रहा है।

पुस्तक मे मार्के की बात यह है कि लेखक ने अपने विचारो को पाठको पर लादा नही है। वह केवल एक गम्भीर दृष्टा है, उसने विश्वात्मा नेहरू को भीतर बाहर जैसा देखा है, वैसा ही वह पाठको के सम्मुख रख रहा है। उसके इस प्रयास में उसकी निर्लेप कामना का व्यक्तिकरण तो है ही, साथ ही विगत चालीस वर्षो की विश्व राजनीति का गहन अध्ययन का प्रकटीकरण भी है। जिससे लेखक की मननशील प्रवृत्ति प्रकट होती है। मै हृदय से इस पुस्तक के सम्बन्ध मे कामना करता हू कि वह पाठको की दृष्टि में वह आदर पाये जिसके लिए कि वह सर्वथा उपयुक्त है।

ज्ञानधाम प्रतिष्ठान **—आचार्य चतुरसेन शास्त्री**

१०-६-५६

लेखकीय

'नेहरू विश्व-शाति की खोज मे' मेरी पुस्तक आज से एक वर्ष पूर्व लिखी जा चुकी थी, यानी जब पडित नेहरू सोवियत सघ से लौटे थे, परन्तु प्रकाशक महोदय के शीघ्र प्रकाशन के अनुरोध के पश्चात् भी मै अपनी लम्बी बीमारी के कारण इसे उन्हे प्रकाशन के हेतु न दे सका, और आजकल-आजकल करते वह दिन भी आगया जब सोवियत नेताओ ने भारत यात्रा की; ऐसी स्थिति मे एक अध्याय मैने भी जोड देना आवश्यक समझा, क्योकि विना उस अध्याय के पुस्तक अधूरी सी ही रहती। इस प्रकार आज से चार माह पूर्व यह प्रेस को दे दी गई, पर प्रेस मे भी देर के बाद देर होती चली गई और इस बीच तथा पुस्तक लिखे जाने के पश्चात् दुनिया मे बड़े-बडे परिवर्तन हुए। साम्यवादी देशो का संगठन (कामिन फार्म) भग होने की घोषणा, पचशील के आधार पर कई देशो के सम्बन्ध सुधार, युद्ध खोरो और उपनिवेशवादी-साम्राज्यवादियो का और भी पर्दा फाश हुआ मगर घटनाएँ तो घटती ही रहती है और इतिहास नया लिखा ही जाता है, इसलिए चाह कर भी मै इसमे परिवर्तन नही कर सका, क्योकि इतिहास कभी पुराना नही होता। यह भी इतिहास ही है 'विश्व शाति के प्रयत्नो का इतिहास' जिसकी भूमिका मे पडित नेहरू का भी प्रमुख हाथ रहा है।

इस सम्बन्ध मे मै एक बात तनिक स्पष्ट कर देना आवश्यक समझता हूँ कि पडित नेहरू से हमारे आपस के और चाहे कितने ही मामलो मे मतभेद हो परन्तु उनके विश्व शाति प्रयत्नो का न केवल भारतीय जनता ने वरन् विश्व की महान जनता ने हृदय खोलकर स्वागत किया है, और सभी इस सम्बन्ध में एक राय है कि आज जो विश्वशाति की गारटी देने की स्थिति पैदा हुई है, इसका श्रेय पडित नेहरू को भी उतना ही है जितना किसी अन्य को अधिक से अधिक दिया जा सकता है।

मैने इसकी भाषा की ओर विशेष ध्यान रखा है, पर फिर भी मै अपने

पंचम अध्याय १६१—१६८

पाक अमरीकी गठजोड़ एशिया की शान्ति को खतरा

षष्ठम अध्याय १६९—२००

पंचशील और वाडुंग सम्मेलन

सप्तम अध्याय २०१—२३८

नेहरू नई दुनिया में

प्रथम महायुद्ध

आज मानवता के सामने एक आशंका है !

तीसरा महायुद्ध !

यह ठीक है कि हम भारतवासियो ने आधुनिक युद्ध अपनी आँखो से नही देखा, पर प्रथम और द्वितीय महायुद्ध से हमारा देश अछूता रहा हो, ऐसी भी बात नही हैं। पहला युद्ध योरोप में होता रहा, साम्राज्य विस्तार के लिये और व्यापारिक मण्डियो के लिये, जिसमे भारतवर्ष के कितने ही बहादुर गोलियो के शिकार हुये, यदि यो कहा जाय कि अंग्रेजो ने जर्मनी को पहले युद्ध में भारतीयो की लाशो पर चलकर विजय किया था तो अत्युक्ति न होगी। क्योकि उस युद्ध के लिये पजाव से राजी और जवरन दोनो ही तरह से रिकरूटो की भर्ती हुई थी, और वह होनहार युवक १६ रुपये मे अग्रेजो के हाथ विक गये थे, उनके साम्राज्य को वढाने के लिये, उनके व्यापार को उन्नति दिलाने के लिये और उनके व्यापार के लिये जर्मनी जैसे देश के व्यापार को नष्ट करने के लिये। क्योकि जर्मनी ही उन दिनो एकमात्र प्रतिद्वन्द्वी था छोटे सामान के लिये जिसे आम जनता खरीदती थी। मगर उस युद्ध के पश्चात् लोगो को क्या मिला ? वहादुरो के प्रान्त पंजाव को क्या मिला, युद्ध मे काम आये वीरो की मां भारत को क्या मिला ? इसे सब जानते हैं !

ज्योही युद्ध समाप्त हुआ, देश पर नये-नये साम्राज्यी कानून जवरन लाद दिये गये। मंहगाई वढ गई, जलिया वाले वाग के रूप में पजावी और हिन्दुस्तानियो को युद्ध की विजय का पुरस्कार मिला। और आजादी के आन्दोलन को वुरी तरह कुचल दिया गया। स्वय पंडित नेहरू के शब्दो में—

'यूरोपियन महायुद्ध के अन्त में हिन्दुस्तान मे एक दवा हुआ जोश फैला हुआ था। कल कारखाने जगह-जगह फैल गये थे और पूंजीवादी वर्ग धन और सत्ता में वड़ गया था। चोटी पर के मुट्ठी भर लोग मालामाल हो गये थे और

उनके जी इस बात के लिये ललचा रहे थे कि बचत की इस दौलत को और भी बढ़ाने के लिये सत्ता और मौक़े मिले। मगर आम लोग इतने खुश किस्मत न थे और वो उस बोझ को कम करने की टोह मे थे कि जिसके तले वे कुचले जा रहे थे। मध्यम वर्ग के लोगो मे यह आशा फैल रही थी कि अब शासन सुधार होगे ही, जिससे सुराज के कुछ अधिकार मिलेगे और उनके द्वारा उन्हे अपनी बढती के नये रास्ते मिलेंगे। राजनैतिक आन्दोलन जोकि शान्त मय और बिलकुल वैध था। कामयाब होता दिखाई देता था और लोग विश्वास के साथ आत्म निर्णय, स्वसाशन और सुराज्य की बाते करते थे। इस अशान्ति के कुछ चिह्न जनता मे भी, और खासकर किसानो मे दिखाई पडते थे। पजाब के देहाती इलाको मे जबरदस्ती रगरूट भरती करने की दुखदायी बातें लोग अभी तक बुरी तरह याद करते थे और कोमागातामारू वाले दूसरे लोगो पर मुकदमे चलाकर जो दमन किया गया था उसने उनकी चारो ओर फैली हुई नाराजगी को और भी बढा दिया। जगह-जगह लडाई के मैदानो से जो सिपाही लौटे थे वे अब पहले जैसे 'जो हुकुम' नही रह गये थे। उनकी जानकारी और अनुभव बढ गया था और उनमे भी बहुत अशान्ति थी।

'मुसलमानो मे भी तुर्किस्तान और खिलाफत के मस्ले पर जैसा रुख अख्तयार किया गया उस पर गुस्सा बढ रहा था और आन्दोलन तेज हो रहा था। तुर्किस्तान के साथ सधिपत्र पर अभी हस्ताक्षर नही हो चुके थे, मगर ऐसा मालूम होता था कि कुछ बुरा होने वाला है, सो जहाँ वे एक ओर आन्दोलन कर रहे थे वहाँ दूसरी ओर इन्तजार भी कर रहे थे। देश भर मे प्रतीक्षा और आशा की हवा जोर पर थी, लेकिन उस आशा मे चिन्ता और भय समाये हुये थे। इसके बाद रौलट बिलो का दौर हुआ, जिसमे कानूनी कार्रवाई के बिना भी गिरफ्तार करने और सजा देने की धाराये रखी गयी थी। सारे हिन्दुस्तान में चारो ओर उठे हुये क्रोध की लहर ने उनका स्वागत किया, यहा तक कि माडरेट लोगो ने भी अपनी पूरी ताकत से उनका विरोध किया था। और सच तो यह है कि हिन्दुस्तान के सब विचार और दल के लोगो ने एक स्वर से उनका विरोध किया था। फिर भी सरकारी अफसरो ने उनको कानून बनवा ही डाला, और

खास रियायत सच पूछो तो यह की गई कि उनकी मियाद तीन वर्ष रख दी गई।' (मेरी कहानी पृष्ठ ६८-६९)

हमारे देश की युद्ध के पश्चात् उस समय ऐसी दशा थी। अब तनिक मुख्य घटना जलियान वाले बाग की ओर भी एक दृष्टि डालिये, क्योंकि उसके बिना वास्तविक स्थिति का अन्दाजा नही लगाया जा सकता।

युद्ध के पश्चात् अंग्रेजो ने सोच लिया था कि हमने न केवल जर्मन विजय किया है, वरन् विश्व विजय प्राप्त की है, और जिस प्रकार किसी गर्वीले आदमी को एक सफलता मिलजाने के पश्चात् गर्व अत्यधिक बढ जाता है बिल्कुल यही दशा अंग्रेजो की भी थी। जर्मन की विजय से उनका दिमाग सातवे आस्मान पर जा चढा और हिन्दुस्तान में उन्होने अपना रौब दिखाना आरम्भ कर दिया, क्योंकि हिन्दुस्तान अंग्रेजी उपनिवेशो मे न केवल सब से बडा था, बल्कि माली हालत भी इसकी बहुत अच्छी थी, और जितना आर्थिक लाभ अंग्रेजो को अपने शेप उपनिवेशो से होता था, उन सबसे कई अधिक गुना लाभ केवल भारत से होता था। यही कारण था कि जहाँ देश की जनता एक ओर सुराज की मांग कर रही थी, वही दूसरी ओर अंग्रेज उसे बुरी तरह से दलबल के साथ कुचल रहे थे।

बात यो हुई, जब अंग्रेजो ने देश पर रौलट कानून लाद दिया तो महात्मागाधी ने उसके विरुद्ध सत्याग्रह छेड़ दिया। उन्होने सत्याग्रह आरम्भ करने से पहले सत्याग्रह सभा की जिसके मेम्बरो से यह प्रतिज्ञा कराई गई थी कि उन पर लागू किये जाने पर रौलट कानून को वे न मानेगे या यो कहना चाहिये कि जानबूझ कर उन्होने जेल जाने की तैयारी की थी। पर इसी समय देश की दशा बदल गयी और गाधी जी को सत्याग्रह स्थगित करना पडा। पंडित नेहरू के शब्दो में "सत्याग्रह दिवस सारे हिन्दुस्तान में हड़ताले और तमाम काम काज बन्द— दिल्ली, अमृतसर और अहमदाबाद में पुलिस और फौज का गोली चलाना और बहुत से आदमियों का मारा जाना—अमृतसर और अहमदाबाद में भीड के द्वारा हिंसा काण्ड हो जाना—जलिया वाला-बाग का हत्याकाड, पजाब में फौजी कानून के भीपण, अपमानजनक और जी दहला देने वाले कारनामे। पंजाब मानों

दूसरे प्रान्तो से अलग काट दिया गया हो, उस पर मानो दुहरा परदा पड़ गया था जिससे बाहरी दुनिया की आखे उस तक नही पहुच पाती थी। वहाँ से मुश्किल से कोई खबर मिलती थी और कोई वहाँ से न जा सकता था न वहाँ से आ ही सकता था।

'कोई इक्का-दुक्का जो किसी तरह नरक कुड से बाहर आ पहुँचता था, इतना भयभीत हो जाता था कि साफ-साफ हाल नही बता सकता था। हमलोग जो बाहर थे, असहाय और असमर्थ थे, छोटी-बडी खबर का इन्तजार करते रहते थे और हमारे दिल मे कटुता भरती चली जा रही थी। हम मे से कुछ लोग फौजी कानून की परवा न करके खुल्लम-खुल्ला पजाब के उन भागो मे जाना चाहते थे, लेकिन हमे ऐसा नही करने दिया गया और इस बीच कांग्रेस की ओर से दुखियो और पीडितो को सहायता पहुँचाने तथा जाच करने के लिये एक बडा सगठन बनाया गया।'

जलियावाला बाग

१३ अप्रैल को जलियावाला बाग में एक विराट सभा हुई थी जिसमे लगभग २० हजार मनुष्य थे। भीड मे माएँ और बहिने अपने छोटे-छोटे बच्चो के साथ थी, कुछ माएँ दूध पीते बच्चो को गोद में लिये बैठी थी। लाला हँसराज व्याख्यान दे रहे थे। उसी समय पजाब का लेफ्टीनेन्ट गवर्नर ओ डायर सैनिको सहित उस बाग के बाहर पहुँचा। उसने बिना कोई हुक्म सभा को भग कराने का दिये बाग के दर्वाजो पर २५-२५ सैनिक खडे कर दिए और फायर का हुक्म दे दिया। कितने ही लोग मारे गये थे, कितने ही अपग हो गये और कितने ही घायल हुये। सन् १८५७ के बाद अग्रेजो का भारत पर यह सबसे अधिक अत्याचार था।

श्रीयुत ख्वाजा अब्बास अली बेग ने हटर कमीशन और डायर के सवाल-जवाबो को बडे उत्तम ढग से लिखा है। ख्वाजा महोदय अपनी न्याय प्रियता के लिये प्रसिद्ध थे, और ईमानदारी के लिये भी।

'दगे की जाँच करने के लिये जो हटर कमीशन बैठा था उसके सामने बयान देते हुये जनरल डायर ने कहा—"मैने वहाँ पहुचते ही गोलियाँ दागनी आरम्भ कर दी।"

कमीशन का प्रश्न—"क्या तुरन्त ?"

डायर—"हाँ, तुरन्त। मैंने इस पर पहले ही विचार कर लिया था और अपना कर्तव्य सोचने मे मुझे तीस सैकिण्ड से अधिक न लगा।"

कमीशन के सामने डायर ने यह भी स्वीकार किया कि—"सम्भव है, सभा मे उपस्थित बहुतेरे मनुष्यो ने मेरी मनाही की आज्ञा न सुनी हो।"

कमीशन के अध्यक्ष लार्ड हटर ने पूछा—"यह जानकर भी तुमने भीड़ को पहले तितर वितर होने के लिये सावधान नही किया ?"

डायर—"नही, उस समय मैंने यह नही सोचा। मैंने यही समझा, कि मेरी आज्ञा नही मानी गयी। सभा करके मार्शल्ला की उपेक्षा की गई। इसीलिये मैंने गोलियाँ चलाना जरूरी समझा।"

कई प्रश्नोत्तर के वाद उस रक्त पिपासु जेनरल डायर ने कहा कि—"मैंने दस मिनट तक उस भीड पर धुँआधार गोलियाँ चलायी। मैंने भीड़ को हटाने का उद्योग नही किया। मै विना गोलियाँ चलाये भी भीड को हटा सकता था; पर इससे लोग मेरी हँसी उड़ाते। कुल मिलाकर १६५० गोलियाँ दागी गयी थी। गोली वरसाना तभी वन्द किया गया, जब वे खत्म हो गयी। सभा में भीड़ वहुत ही घनी थी, जहाँ गोलियाँ चलाई गईं।" जेनरल डायर ने यह भी स्वीकार किया कि घायलो को उठाने और उनकी मदद करने का कोई प्रवन्ध नही किया गया। उसने कहा—"उस समय उन घायलो की मदद करना मेरा कर्तव्य नही था।"

लाला गिरधारीलाल का मकान जलियावाला वाग के निकट ही था, और उनके मकान से वाग दिखाई भी देता था। डायर की गोलियो का दृश्य वह अपने घर से देख रहे थे, और उनका वयान है कि—"मैंने उस जगह सैकडो को मरते देखा। गोलियाँ वाग के दरवाजो की ओर ही चलती थी, जिधर से मनुष्य भागने की चेष्टा कर रहे थे मैंने घूम-घूम कर वह स्थान देखा और जगह-जगह लाशो के ढेर दिखायी दिये। कितनो का माथा कटा था, कितनो की आंखो में गोली लगी थी, कितनों के हाथ, पैर, नाक-कान और भेजे चूर-चूर हो गये थे। मैं समझता हूँ, कि एक हजार से अधिक मनुष्यो की लाशो के ढेर वहाँ पड़े थे।"

दूसरे दिन जनरल डायर ने शहर के रईसो, म्युनिस्पल कमिश्नरो, व्यापारियो आदि की एक सभा कोतवाली में की, जिसमे कहा गया—'आप लोग क्या चाहते हैं, शान्ति या युद्ध ? यदि शान्ति, तो सव दुकानें खुलवाइये, नही तो वन्दूको के वल से दुकाने खुलवायी जायेगी ।" जनरल डायर के वाद मि० अर्विग वोले—*आप लोगों ने अंग्रेजो को मारकर बुरा काम किया है। आपसे और आपके वच्चों से वदला लिया जायेगा।'. १५ अप्रैल को सव दुकानें खुल गयी थी। लोगो ने समझा था कि वस अव शान्ति हो गयी, और आगे कुछ न होगा। पर मार्शल-ला की घोषणा करने के वाद ६ जून तक लोगो को निम्न-लिखित भिन्न-भिन्न कष्ट सहने पडे।

(१) जिस गली मे मिस शेरउड पर मारपीट हुई थी, वहाँ लोगो को कोडे लगाये गये, उधर से जाने वालो को पेट के वल रेंगाया गया (२) सभी अग्रेजो को सलाम करना पड़ता था, नही तो गिरफ्तारी और अपमान का भय था (३) मामूली वातों पर लोगो को आमतौर से कोडे लगवाये जाते थे (४) शहर के सभी वकील अकारण ही स्पेशल कास्टेविल वनाये गये और साधारण कुलियो की भाति उन्हे काम करना और चलना पडता था। (५) विना प्रतिष्ठा का ख्याल किये लोग अन्धाधुन्ध पकडे जाते थे और उनसे अपराध स्वीकार कराने या दूसरे सवूत के लिये या केवल उनका अपमान करने के लिये नाना प्रकार के कष्ट दिये जाते थे।

---

*(महात्मा गांधी द्वारा संचालित सत्याग्रह के सिलसिले में डायर ने डा० सत्यपाल और डा० किचलू को गिरफ्तार करके न जाने कहाँ भेज दिया। इस समाचार से अमृतसर में सनसनी फैल गयी थी। सहस्रों मनुष्यों की भीड़ नंगे पैर नंगे सिर डिप्टी कमिश्नर के वगले की ओर जाने लगी। भीड अपने नेताओ को छुड़ाना चाहती थी, पर रेलवे पुल के पास सैनिकों ने उन्हे रोका। सैनिकों से मुठभेड़ हुई। और सैनिकों ने गोलियां चलादीं। इसके वाद जनता के मन में दवी चिनगारी शोला वनकर भड़क उठी। जिसकी लपटों में कई अंग्रेज मारे गये कई इमारतें जलीं। यदि गोली न चलाई गई होती तो ऐसी घटना कभी नहीं घट सकती थी)।

मनीआवाला

मनीआवाला मे तो अत्याचारो की कोई सीमा ही नही रही थी। बहुत सी गिरफ्तारियाँ हुई, जिनमे एक सौ वर्ष का बूढा भी था। इन सब को लोहे के पिंजरे मे बन्द किया गया, जो दिन भर धूप मे तपाये जाते थे। स्त्रियो पर भी वहाँ जो जो अत्याचार हुये वह वर्णनातीत हैं। मगल जाट की—वृद्धा स्त्री ने बताया कि—

'मार्शल-ला के दिनो मे अग्रेज अफसर मि० बोसवर्थ स्मिथ ने हमारे गाँव के साठ बर्ष के ऊपर के सब पुरुषो को अपने बगले पर बुलाया जो गाँव से कई मील की दूरी पर था।"

वृद्धा ने कहा—'जब पुरुप बगले पर चले गये, तो पुलिस दल सहित अग्रेज अफसर हमारे घरो की ओर आये। जो स्त्रिया अपने पुरुषो के लिये बगले पर भोजन लिये जाती थी, उन्हे भी वह लौटाते लाये! गाँव में पहुँचकर वे गली-गली में गये और सब घरो की औरतो को बाहर निकलने की आज्ञा दी। सब स्त्रियाँ निकली, उन्होने साहबो के हाथ जोड़े। कुछ स्त्रियो को उन्होने छड़ी से मारा और बुरी-बुरी बाते कही। उन्होने दो बार मुझे ठोकर मारी और मेरे मुंह पर थूका। जबर्दस्ती औरतो का मु ह खोल दिया और छडी से उनके घूघट हटाये। इसके बाद वह उन्हे गधी, कुतिया, मक्खी और सूअरी कहकर गालियां देने लगा। उसने कहा—'तुम अपने शौहरो के बिस्तरो पर पडी थी, फिर तुमने उन्हे बुराइयाँ करने से क्यो नही रोका? अब तुम्हारे पायजामो के भीतर पुलिस वाले देखेंगे।" उसने मुझे एक ठोकर मारी और हम लोगो को झुककर पैरो के भीतर से हाथ निकाल कर कान पकडने को कहा।"

प्रथम महायुद्ध के पश्चात् हिन्दुस्तान ने, उपरोक्त विवरण से भी सैकडो गुना दृश्य अपनी आँखो से देखा। यह तो केवल एकादि घटना मात्र है। जो इतिहास के पन्नो मे सदैव रक्तिम पृष्ठो में लिखी मिलेगी। युद्ध के समय तो जो विनाश होता है, वह तो होता ही है, पर महायुद्ध के बाद जो घटनायें घटी क्या वह विनाश से कम थी। कहते है उस समय अनाज इतना महँगा हो गया

था कि उससे पहले कभी उतना महगा अनाज हमारे देश में नही विका था । जब कि फस्ले अच्छी थी, या यो कहिये कि उस समय फस्ले अच्छी हो रही थी । और जर्मनी मे, जो युद्ध मे हार गया था न केवल आर्थिक सकट था, वल्कि वीमारी और वेरोजगारी का साम्राज्य था । जिसे पडित नेहरू ने, उस समय अपनी आंखो से देखा जव वह युवा थे, उनका शरीर और हृदय युवा था और वह जनता के हृदय सम्राट समझे जाते थे ।

द्वितीय महायुद्ध

यह युद्ध उस समय छिडा जव हमारे देश में काग्रेस प्रान्तीय सरकारे वना चुकी थी, केवल वगाल को छोड़कर देश मे सारे प्रान्तो मे काग्रेस के मत्रिमडल वन चुके थे, और काफी अच्छे ढग पर शासन प्रवन्ध चला रहे थे, यानी जैसी उनके हाथ मे शक्ति थी ! तभी यकायक जर्मनी से आग वरसने लगी ।

अन्य युद्धो की भाति इस महायुद्ध के वीज भी काफी दिनो से वोये जा रहे थे : यदि यो कह दिया जाय कि पहले युद्ध की समाप्ति के पश्चात् ही दूसरे महायुद्ध के वीज वोने आरम्भ कर दिये थे तो कोई वेजा वात नही होगी, क्योकि जव रूस मे अक्तूवर की महान क्राति हुई तो दुनिया के साम्राज्यवादी एकवारगी काप उठे । फ्रास, इगलैण्ड, अमेरिका जो उस समय उपनिवेशक राज्यो पर हकूगत करने के लिये प्रसिद्ध थे, का इस युद्ध मे पूरा-पूरा हाथ था । हमारे देश के पुरुषो की कहावत है जो गढा खोदता है, वही गिरता है । और ऐसा ही इस युद्ध मे हुआ । गेहुँओ के साथ घुन पिस जाने की वात को तो अलग किया ही नही जा सकता ।

ये महायुद्ध दो ओर से हो रहा था एक ओर एशिया में जापान चीन पर आक्रमण कर रहा था, जिसका नेतृत्व तोजो के हाथ में था और दूसरी ओर जर्मनी और इटली यूरोप में वढ रहा था । योजना थी, इटली और जर्मनी के तानाशाह मुसोलिनी और हिटलर पूरे यूरोप को फतह कर लेने के वाद रूस के मार्ग द्वारा भारत की ओर वढें और पूरव में जापान, चीन ब्रह्मा और दूसरे

छोटे देशो को रोदता हुआ भारत की ओर बढे। अर्थात् हिन्दुस्तान में तीनो तानाशाहो की फौजे अपने बूटो से हमारे सीनो को रौदे।

हिटलर और मुसोलिनी तथा तोजो के पीछे कौन था जब तक यह बात समझ मे पूरी तरह से नही आजायेगी आगे की बात समझनी कठिन होगी।

जब रूस मे अक्तूबर क्राति के पश्चात् मजदूर हकूमत स्थापित हो गई तो साम्राज्यवादियो के दिलो पर साप लोट गये। उन्होने *पेरिस कम्यून की तरह इसे भी समाप्त करने की ठान ली। अनेक तरह के सकट रूस मे पैदा किये। जापान ने उसी समय साइवेरिया की ओर अपनी फौजे भेज दी। जर्मनी और रूस की दुश्मनी तो उन दिनो जगत् प्रसिद्ध थी, मगर सोवियत सरकार ने तुरत जर्मनी से सधि करली, हालाकि इस सधि मे रूस को काफी नीची शर्तें माननी पडी थी, और यही जापान के साथ हुआ। साम्राज्यवादियो की पहली चाल वेकार होगयी, उन्होने तुरत आर्थिक प्रतिबन्ध लगा दिये। इससे रूस की जनता विचलित हो उठी, मगर लेनिन और स्टालिन के नेतृत्व ने जल्दी ही इस परिस्थिति पर काबू पा लिया। हालाकि महगी बहुत दिनो तक चलती रही। जब प्रथम महायुद्ध के समाप्त होने के वाद हमारे देश हिन्दुस्तान से महगी काफी दिनो मे समाप्त हुई थी तो रूस के बारे मे तो कहा ही क्या जा सकता है, जो स्वय युद्ध मे फसा था। जहाँ का व्यापारी और धनिक वर्ग सरकार को उलटने की नाकामयाव कोशिश कर रहा था। और जब ये सारी हरकते साम्राज्यवादियो की वेकार हो गयी और रूस की नयी सोवियत सरकार के श्रेष्ठ कार्यो का पता दूसरे देशो की जनता को लगा तो वहाँ भी गडवडी सी होने लगी। इन सब पर विजय पाने के लिये साम्राज्यवादियो ने सोचा—'न रहेगा बास न वजेगी वासुरी।' रूस से इस शासन को ही समाप्त कर देना चाहिये। और तभी जन्म हुआ हिटलर, मुसोलिनी और तोजो का।

---

*सब से पहले मजदूर क्रांति फ्रास में हुई, जिसमें दो महीने तक जनता का शासन रहा, पर जमीदार, धनिक वर्ग और उसकी लाड़ली पुलिस तथा फौज ने इसे दो माह से अधिक न जीने दिया।

लाचारी पहुँचा दी।

'मगर रोम होकर जाना तो मुझे पडा ही, क्योकि हालैण्ड के के० एल० एम० कम्पनी का हवाई जहाज जिस पर मै सवार था, वहाँ रात भर रुका था। ज्योही मै रोम पहुँचा, एक बड़े अफसर मेरे पास आये और मुझे शाम को मिन्योर मुसोलिनी से भेट करने का निमन्त्रण दिया। उन्होने कहा कि सब कुछ तय हो चुका है। मुझे अचम्भा हुआ। मैने कहा कि मैं तो पहले ही माफी मांगने के लिये कहला चुका हूँ। घंटे भर तक बहस चलती रही, यहाँ तक कि मुलाकात का वक्त भी आ पहुँचा। अन्त में बात मेरी ही रही। कोई मुलाकात ही नही हुई।"

और एक दिन अचानक लोगो ने सुना कि स्पेन में जनरल फ्रेको ने विद्रोह कर दिया है, दुनिया ने देखा कि इस विद्रोह के पीछे जर्मनी और इटली की शक्ति काम कर रही है, और इस तरह एक विश्वव्यापी संघर्ष की तैयारी हो रही थी, यह तो केवल भूमिका मात्र थी।

स्पेन की समस्या या अबीसीनिया के आक्रमणो का जो प्रभाव पंडित नेहरू पर पडा उसके सम्बन्ध में वह कहते हैं—

'स्पेन के युद्ध की जो प्रतिक्रिया हुई, उससे पता चलता है कि मेरे मन में किस प्रकार हिन्दुस्तान का सवाल दुनिया के दूसरे सवालो से जुडा हुआ था। मै अधिकाधिक सोचने लगा कि चीन, अबीसीनिया, स्पेन, मध्य योरोप, हिन्दुस्तान या अन्य स्थानो की सारी राजनीतिक और आर्थिक समस्याएँ एक ही विश्व समस्या के विविध रूप हैं। जब तक मूल समस्या हल नही कर ली जाती तब तक इनमें से कोई एक समस्या अन्तिम रूप से नही सुलझ सकती। सम्भावना इस बात की थी कि मूल समस्या सुलझने से पहले ही कोई क्रान्ति या कोई आफत आवेगी। जिस तरह कहा जाता था कि आज की दुनिया में शान्ति अविभाज्य है, उसी प्रकार स्वाधीनता भी अविभाज्य है। दुनिया बहुत दिनों कुछ आजाद, कुछ गुलाम नहीं रह सकती। फासिज्म और नाजीवाद की यह चुनौती मूलत: साम्राज्यवाद की ही चुनौती थी। यह दोनों जुड़वां भाई थे—फर्क सिर्फ इतना ही था कि साम्राज्यवाद का विदेशों में उपनिवेशों और अधिकृत देशों में

जैसा नगा नाच देखने मे आता था, वैसा ही नाच फासिज्म व नाजीवाद का निज के देशो में दिखाई पडता था। अगर दुनिया में आजादी कायम होती है, तो न सिर्फ फासिज्म और नाजीवाद को ही मिटाना होगा बल्कि साम्राज्यवाद का भी बिल्कुल नामोनिशान मिटा देना होगा।" (पृष्ठ ८३८)

भारत की भूमिका

सन् १९३८ ।

यह वह समय था, जब दुनिया एक ज्वालामुखी के मुँह पर खडी थी और कब विस्फोट हो जाय इसकी प्रतीक्षा थी। चीन पर जापान के आक्रमण तेज हो गये थे और काफी तेजी से जापान चीन में घुसता जा रहा था, चीन की हार पर हार हो रही थी। जिसे देखकर राष्ट्रवादी [1]च्यागकाई शेक और चीनी साम्यवादी पार्टी जापान से लडने के लिये एक हो गये थे और डटकर मुकाबला कर रहे थे। पंडित नेहरू चू कि काग्रेस के विदेश विभाग के इ चार्ज थे इसलिये उन्होने (सन् १९३७ की) काग्रेस मे एक प्रस्ताव पास कराया—

'काग्रेस महासमिति चीन में जापानी साम्राज्यवाद के आक्रमण से चिन्तित है और वह नागरिक जनता पर बम वर्षाए जाने के निर्दय व्यवहार और आतंक से परिचित है। असाधारण परेशानियो और विषमताओ के होते हुए भी अपनी स्वतन्त्रता और अपनी एकता के लिये चीनी जनता वीरतापूर्वक जो संघर्ष कर रही है, महासमिति उसकी प्रशसा करती है। राष्ट्रीय सकट के समय आतरिक एकता पर महासमिति चीनी जनता को बधाई देती है। इस राष्ट्रीय विपत्ति के अवसर पर चीनी जनता के प्रति महासमिति अपनी हार्दिक सहानुभूति प्रगट करती है और उसकी आजादी की लडाई में भारतीय जनता के पूर्ण समर्थन का आश्वासन देती है। महासमिति भारतवासियो से यह माँग करती है कि वह चीनी जनता के प्रति सहानुभूति के प्रतीक स्वरूप, जापानी चीजो का इस्तेमाल बन्द करदे।'

जब काग्रेस ने चीन के सम्बन्ध में उपरोक्त प्रस्ताव पास किया था, तो

[1]उन दिनों च्यांगकाई शेक को राष्ट्रवादी ही कहा जाता था।

का मजा उन्हे मिल गया । अमेरिका को कुछ सूझता ही न था । उसने इग्लैंड के साथ दुकानदारी आरम्भ कर दी, युद्ध सामग्री इंग्लैंड पहुँचने लगी । पर केवल सामग्री पहुँचाने भर से क्या हो सकता था । सवाल था जर्मनी का रुख दूसरी ओर यानी रूस की ओर कैसे मोड़ा जाय ।

रूस नव निर्माण, छोडकर अपनी लालसेना की शक्ति वढाने में जुटा हुआ था, जर्मनी की ओर उसने अपनी सीमा पर फौजे भेज दी थी ।

और एक दिन हिटलर ने अपनी मौत को निमन्त्रण देकर रूस की ओर अपना रुख मोड दिया । सैलाव की तरह से वढने वाली हिटलर की फौजो ने जल्दी ही भाँप लिया कि रूस को जीतना लोहे के चने चबाना है । चर्चिल रूस गये और इस तरह फासिस्टो के विरुद्ध तीन वडे देश एक हो गये, अमेरिका, फ्रास और रूस । अमेरिका ने अपनी सेनाए चीन की ओर भेजी, रूस चारो ओर लड़ रहा था, पश्चिम मे जर्मनी से, दक्षिण में इटली की सेनाओ से, पूरव मे जापान से ।

हिटलर की फौजें मास्को तक वढ गयी, और फिर चारो ओर से घिर गयी ।

युद्ध और हिन्दुस्तान

इस युद्ध का बहुत वुरा प्रभाव हमारे देश पर पडा । जवरन रगरूट तो इस वार भर्ती नही किये गये, मगर जवरन ही कहना ठीक होगा, क्योकि जमीदारो ने जिन किसानो को रुपया दे रखा था या जिनपर लगान आदि वाकी था, उनपर दबाव डालकर उनके जवान वेटो को युद्ध मे भिजवाया । भारतीय जनता का असन्तोष सन् १९४२ के संग्राम के रूप मे फूट पडा था, जिसमे लाखो लोग जेल भेज दिये गये थे और सैकड़ो गोली के शिकार हुये, कितनो को फाँसी की सजायें दी गई । और यह सव हुआ युद्ध के कारण ।

पण्डित नेहरू आदि राष्ट्रीय नेता उफान आने से पूर्व ही ९ अगस्त को गिरफ्तार कर लिए गये थे । जनता को कोई सन्देश तक न मिला था ।

देश वीमारी और अकालके मुँह में चला गया । अंग्रेजी सरकार के आंकडो के अनुसार अकाल ने केवल वगाल में ४० लाख व्यक्ति मौत के शिकार वने । इस

तरह से युद्ध हमारे देश की सीमाग्रो से टकराकर भी इतने बडे नुकसान कर गया। जहाँ युद्ध हुग्रा था, वहाँ लोगो पर कैसी विपत्तियाँ पडी, उसके वारे मे तो वहाँ के निवासी ही जान सकते हैं।

नारियो का मूल्य ग्रकाल के समय एक मुट्ठी भोजन (भात) रह गया। ग्रमीर पहले युद्ध की तरह से ग्रौर भी ग्रमीर बन गये।मध्यम वर्ग ग्रौर निचला तबका मर मिटा, उसकी रीढ टूट गयी। माग्रो ने प्यारे वच्चो को वेचा, वापो ने ग्रपनी जवान बेटियो की लाज ग्राँखो के सामने लुटते देखी, पर उफ तक न कर सके। कितने ही परिवार तो विल्कुल नष्ट हो गये, जिनका नामोनिशान तक मिट गया। ग्रराकान ग्रौर चटगाव के चकले युद्ध की देन थे। जहां नारी का ग्राटे ग्रौर दाल की तरह मोल होता था।

ग्रनाज व्यापारियो ने खरीदकर भर लिया मनमाने दाम वसूल किये, सुना गया वगाल मे चावल ६० ग्रौर ७० रुपये विका। तमाम देश में ग्रनाज गायव हो गया, युद्ध के ५-७ वर्ष वाद तक ग्रनाज २० रुपये तक विका। जवकि लोगों की आमदनी में कोई विशेष वढती नही हुई थी।

युद्ध समाप्त हुग्रा। हिरोशिमा मे हुये एटम वम के प्रयोग से न केवल हिरो-शिमा नष्ट हो गया, वरन् उसके विषैले ग्रणु वहाँ से वाहर भी लोगो पर प्रभाव डालने लगे। ग्रौर इस तरह वीमारी का प्रकोप हुग्रा।

युद्ध की समाप्ति के पश्चात् हमारे देश के नेता जेल से छोड़ दिये गये। जिन्होने देश का तूफानी दौरा किया, वह जानते थे कि जनता युद्ध काल की परेशानियो के कारण वेचैन है, क्योकि जेल मे वन्द रहकर भी समाचार पत्रो ग्रथवा दूसरे ढग से मिली सूचनाग्रो के सहारे वह परिस्थिति का ग्रध्ययन करते रहे थे। ग्रध्ययन ग्रध्ययन होता है ग्रौर वास्तविकता वास्तविकता ही। क्योकि ग्रँग्रेजी सरकार ने ग्रखवारो पर पावन्दी लगा दी थी, फिर जव ग्रखवारो के मालिक मुनाफा वटोर रहे थे, तो उनके चाकर ग्रखवार उन्ही के विरुद्ध किस प्रकार आवाज उठाते।

पडित नेहरु पर इन युद्धो का वडा वुरा प्रभाव पडा ग्रौर उन्होने तय कर लिया कि भविष्य मे वह किसी भी तरह होने वाले युद्धो को न केवल हिन्दुस्तान

में रोकेंगे, वरन् कोशिश करेंगे कि दुनिया के किसी कोने मे युद्ध न हो, क्योकि युद्ध चाहे किसी भी देश में हो, कितनी ही दूर हो पर उसका प्रभाव प्रत्येक देश पर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से अवश्य पडता है ।

और जव युद्ध के कारण जनता मे फैली वेचैनी दूर नही हुई तो, उसने हथियार उठा लिये । देश भर में हडतालो और दूसरे सघर्षो की लहर आयी । पटना की समस्त पुलिस हडताल पर चली गयी, पोस्ट आफिस वन्द हो गये, नौ सेना ने विद्रोह कर दिया और तव अँग्रेजो ने अपनी खैरियत न समझकर देश के टुकड़े कर दिये और समुद्र पार जहाँ से आये थे चले गये ।

देश आजाद हुआ, मगर आजादी से वदतर होकर । नेहरू शासक बने युद्ध के विरुद्ध हृदय में वहुत सी घृणा समेटकर । क्योकि आजादी के वाद तक युद्ध की महगी वनी रही ।

पडित नेहरू ने दो युद्ध देखे, वहुत सो के वारे में उन्होने पढा, उन देशो को देखा जहाँ युद्ध हुए थे, मन पर घृणा आ विराजी इन युद्ध खोरो के खिलाफ क्योकि उन्होने अपनी आखो मे जिन देशो को हरा भरा लहलहाता देखा था, वह उजड गये थे, वीरान वन गये थे। सारा वैभव मिट्टी मे मिल गया था । वमो से हुए विस्फोट, मकान, इमारत, कालेज और यूनिवर्सिटी सव कुछ नष्ट हो गया था । वच्चो की पढाई स्थगित हो गई थी लोग मारे तो गये ही थे मगर युद्ध से लौटनेवाले अपने साथ वीमारियाँ लेकर घरो को लौटे थे, वीमारियाँ फैल गई थी । राष्ट्र अपग वन गये थे, अव नये सिरे से नव निर्माण करना था । पूंजी युद्ध मे समाप्त हो गई थी । वस जनता थी, जिसके पास न खाने को भोजन था, न पहनने को वस्त्र और न रहने को मकान । ऐसी दशा में राष्ट्र को कर्जा लेना पडा और यही कर्जा धीरे धीरे हाथ वाधता गया, कर्जा देनेवाले राष्ट्र ने व्यापार खोला और इस प्रकार देश का व्यापार भी नष्ट हो गया । वेकारी वढने लगी । अर्थात् युद्ध के पश्चात् जिन देशो ने भी कर्जा लेकर नव निर्माण आरम्भ किया, वह फिर गुलामी की ओर वढने लगे, कर्जा उनके लिए अभिशाप वन गया ।

और इन सवका पडित नेहरू पर गहरा प्रभाव पडा । उनकी आत्मा एक भारतीय की आत्मा है, वह तिलमिला गये और तभी उन्होने भारत की वागडोर

अपने हाथ मे लेते हुए प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से निश्चय किया **तीसरी जंग नहीं होगी ।**

शान्ति की ओर

पहला काम

भारत के विभाजन के तुरन्त वादही हिन्दुस्तान में साम्प्रदायक दगो की एक लहर सी आई, वल्कि यो कहना ठीक होगा कि भारत का विभाजन ही इन दंगो का मूल कारण था, क्योकि अंग्रेजो ने हमारे देश में सदैव से यही नीति बरती थी कि—'फूट डालो और हुकूमत करो ।' और इसी नीति पर वह इतने दिन हुकूमत कर भी गये । जव भी राष्ट्रीय आन्दोलन तेजी पर हुआ और अग्रेजो ने अपने लिये खतरा समझा तभी उन्होने कही न कही साम्प्रदायक आग लगा दी । जिसमें साथ-साथ रहने वाले, एक सभ्यता और सस्कृति में पलने वाले, रोज रोज भाई की तरह आपस मे मिलने वाले हिन्दू और मुस्लमान एक दूसरे के दुशमन वन जाते । आपस मे एक दूसरे की मा वहिनो की लाज तक लुट जाती । और यह कार्य करते गुडे थे, हिन्दू भी और मुसलमान भी । सरकार इनको पैसे देती थी। सन् १९४७ में यह आग इतनी तेजी से फैली कि प्रतीत होने लगा सारा देश इन साम्प्रदायक दगो की लपटो में भस्म हो जायगा, पर पडित नेहरू देश के प्रगतिशील लोगो के साथ इस दगे की लपटो मे जूझते रहे, यहाँ तक कि महात्मा गाधी के प्राण इस दगे के कारण ही गए । जव तक इन साम्प्रदायक दगो के मूल कारण और उमसे पैदा हुई परिस्थिति पर प्रकाश नही डाला जायेगा तव तक पडित नेहरू द्वारा की गई इन साम्प्रदायक दगो के विरुद्ध कुर्वानी का मूल्य न समझा जा सकेगा ।

सन् १९४६ में भारत के वायसराय लार्ड माऊंटवेटन ने अतरिम सरकार की उस समय घोपणा की जव अग्रेजी सरकार का अस्तित्व खतरे में पड गया। मगर दूसरी ओर उन्होने मुस्लिम लीग के नेताओ पर हाथ रख दिया, मगर पंडित नेहरू ने किसी तरह गाड़ी खीची और अमन बनाये रखा । मगर जव लार्ड पैथिक-लारेंस के नेतृत्व में तीन मेम्बरो का मिशन भारत आया और हिन्दुस्तान की

तमाम राजनैतिक पार्टियो ने उन्हे विज्ञापन दिये तो उन्होने अपने अन्तिम निर्णय मे इग्लैण्ड में जाकर कहा—'हिन्दुस्तान में पाकिस्तान बनने के लिये कोई गुजायश नही हैं, क्योंकि हिन्दुस्तान के बहुत से मुसलमान भी कांग्रेस के साथ हैं। प्रान्तीय धारा सभाओ के चुनावो से यह बात वहाँ स्पष्ट हो गई है।'

स्वर्गीय मुहम्मदअली जिना को इस बात ने पागल सा बना दिया। और दबी हुई साम्प्रदायक आग की चिनगारी जिसे अंग्रेज सुलगा सकने में असमर्थ से थे फिर से जल उठी।

बम्बई में मुस्लिम लीग के नेताओ के बीच एक सभा में मि० जिना ने लार्ड पैथिक लारेंस की उक्त बात का बडे कडे शब्दो में खंडन किया। उन्होने इंगलैण्ड को चुनौती दी—'क्या इंगलैण्ड की मजदूर सरकार[1] यह दावा करती है कि इंगलैण्ड में हकूमत बना लेने के बाद भी वह तमाम अंग्रेजो का नेतृत्व करती है। यह तो केवल हमारी आंखो में धूल झोकने की बात है। ठीक इसी तरह से मुस्लिम बहुमत प्रान्तो में से यदि थोडे से मुसलमान कांग्रेस में शामिल हो गये तो क्या वहाँ पाकिस्तान नही बन सकता। कोई सरकार जिस तरह अपने यहाँ के समस्त नागरिको का नेतृत्व नही करती (इंगलैण्ड की भी) ठीक वैसी ही परिस्थिती पाकिस्तान पर भी चरितार्थ होती है। हम इसके लिये १६ अक्टूबर को विरोध दिवस मनायेंगे।'

१६ अक्टूबर भारतीय इतिहास का वह खूनी दिन था, जब हमारे इतिहास पर कालिख लगी।

१६ अक्टूबर को कलकत्ते का विरोध दिवस भयानक साम्प्रदायक दंगो में डूब गया। भाई ने भाई को कत्ल किया, मा बहिनो का सतीत्व लूटा गया, धन और दौलत को आग लगाई गई। लोगो का जीवन घरो के भीतर भी सुरक्षित न रहा, मकान जला दिये गये और मार्ग जन शून्य हो गये। लेकिन तब भी सड़कों पर अंग्रेजों को घूमते हुए देखा, रात को भी और दिन को भी। वह बिना रोक टोक घूमते रहे, बंगाल की मुस्लिम लीगी सरकार तमाशा देखती रही,

१. उन दिनों इंगलैण्ड में मजदूर दलीय सरकार के हाथ में सत्ता थी।

उसने इन साम्प्रदायक दंगो के खिलाफ कोई कदम नही उठाया । ऐसा प्रतीत होता था कि बंगाल की सरकार और लडखडाती हुई अग्रेज सरकार दोनो ने मिलकर यह आग लगाई थी, ताकि आजादी के लिये होने वाला सघर्ष इन दगों के खून मे डूब जाय और अंग्रेज कुछ दिन और हकूमत कर सके, कुछ दिन और हिन्दुस्तान से लूट का माल इगलैण्ड ले जा सके । इन दगो के पीछे लड़खडाती हुई अग्रेजी हकूमत अपने पैर जमाने की चेष्टा कर रही थी, मगर व्यर्थ ! लाखो लोगो की जान जाने के बाद भी अग्रेज न ठहर सके, सारे देश की जनता बहुत आगे बढ चुकी थी फिर अकेला बगाल भाइयो के खून से होली खेलकर किस तरह से उन्हे रोक सकता था ।

मगर बगाल की आग बुझ गई हो, ऐसी बात नही थी, बंगाल की आग धीरे-धीरे सारे देश मे फैल गयी, और सारा देश इन साम्प्रदायक आग की लपटो में भाय-भाय जलने लगा । राष्ट्रनेता किंकर्त्तव्य विमूढ से पहले तो देखते रहे, मगर जव नेहरू ने इन दगो के विरुद्ध हुकार भरी तो सभी लोग इन लपटो से जूझने लगे ।

महात्मा गाधी की नोआखाली यात्रा जगत प्रसिद्ध यात्रा बन चुकी है । जो आजादी के सग्राम के समय की डाडी कूँच के बाद पहली और अपनी तरह की सर्वश्रेष्ठ यात्रा थी । गरीबो की झोपडियो से लेकर गांधी जी अमीरो के महलो तक में गये, शांति का सन्देश सुनाया । और बंगाल में लगी आग को एक बडी सीमा तक कम किया ।

इसी बीच आया पन्द्रह अगस्त १९४७ जब हिन्दुस्तान के दो टुकडे कर दिये गये, मगर दोनो को स्वतत्रता सौंप दी गई ।

नया रूप

पन्द्रह अगस्त १९४७ !

भारत की पूर्ण स्वाधीनता !!!

पडित नेहरू देश के समस्त प्रगतिशील लोगो के साथ साम्प्रदायक आग से जूझने लगे ।

और जब यह आग तनिक ठडी पडी तो फिर शरणार्थियो का सैलाब आ

गया। लाखो लोग दोनो देशो में लुट पिट कर धर्म के आधार पर अपनी जन्म-भूमि को त्याग एक से दूसरे मे चले गये। कल तक जो पडोसी थे, एक देश के दो बाजू थे अब दो राष्ट्र बन गये थे।

राष्ट्र की प्रगतिशील पार्टियो ने नेहरू जी का हाथ बटाया इन शरणार्थियो की सहायता में और पडित नेहरू ने प्रत्येक मोर्चे को स्वय जाकर देखा, जिससे उत्साह मिला, इस तरह शरणार्थियो की समस्या पूरी तरह तो हल नही हुई, मगर साम्प्रदायक दानव समाप्त हो गया। उसे इतना गहरा गड्ढा खोदकर दावा गया कि फिर बाहर न निकल सके!

पर समय को यह बात मजूर नही थी। राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ के रूप में मुस्लिम लीग जीवित हो उठी। वही मुस्लिम लीग जिसने देश के दो टुकडे कराये, जिसने बेटी और बेटो को मांओ की गोदी से छीन लिया। और इस सब की मेहरबानी से प्रकट या अप्रकट महात्मा गाधी जैसा महामानव हिन्दुस्तान से छीन लिया गया। यही क्यो जब देश का बटवारा हो रहा था, तब इस सघ ने हमारे देश मे खासकर देहली में उतनी घृणित कार्रवाहिया की कि पडित नेहरू को विवश होकर उस पर पाबन्दी लगानी पडी। इस पाबन्दी के खिलाफ सिवाय साम्प्रदायक तत्वो के और किसी ने सिर नही उठाया। हम समझते हैं, पडित नेहरू ने जिस प्रकार तेजी से यह कार्य आरम्भ किया था, यदि उन्हे अपने मंत्रिमण्डल का, कांग्रेस का या देश का वैसा ही सहयोग मिला होता तो हालत कुछ और ही होती। देश की प्रगतिशील ताकतो को जो उन दगो के विरुद्ध सघर्ष कर रही थी, पडित नेहरू का काफी सहयोग मिला, और देश एक धधकती भट्टी से बाहर निकाल लिया गया। इस दगे में हुई राष्ट्रीय क्षति का अनुमान कई अरब रुपये तक था। मरने वालो की सख्या हजारो से ऊपर निकल गई।

पडित नेहरू का ही यह प्रयास है कि आज हिन्दू और मुसलमान हमारे देश में साथ-साथ रह रहे है, भाई-भाई की तरह, बिना किसी भी प्रकार के भेद-भाव के! और यदि पडित नेहरू की इस बात पर अमल किया गया तो निश्चय ही भविष्य मे कभी साम्प्रदायक झगडे नही होंगे।

काश्मीर

गत पृष्ठो मे जिन दगो का जिकर किया गया है वह केवल साधारण से दगे न थे, उसमे अग्रेजो की एक चाल थी कि हिन्दुस्तान का बटवारा इस तरह से किया जाय कि हिन्दुस्तान और पाकिस्तान सदैव आपस मे लडते रहे और हम बन्दर बाट करने के लिये पच बन जाय ? यदि हिन्दुस्तान ने तनिक भी गलती की होती तो निश्चय ही अग्रेजो को पच बनने का अवसर मिल गया होता।

जिस समय देश में आबादी परिवर्तन हो रही थी, यानी भारत के मुसलमान जो पाकिस्तान जाना चाहते थे जा रहे थे, और पाकिस्तान के जो हिन्दू भारत आना चाहते थे आ रहे थे। भारतीय सरकार उनके प्रबन्ध मे दत्त-चित्त हो लगी थी। जब प० नेहरू की सरकार के सामने लाखो शरणार्थियो को फिर से बसाने और तुरंत उन्हे भोजन और कपडे तथा अस्थायी निवास का प्रबन्ध करना था, तभी कश्मीर पर पाकिस्तानी फौजो ने आक्रमण कर दिया। इन फौजो के बारे मे पहले तो कोई पता ही नही था, समझा ये गया था कि हिन्दुस्तान की तरह ही कश्मीर मे भी हिन्दू मुस्लिम साम्प्रदायक दगे हो गये है। लेकिन जब अच्छी तरह से जाच पडताल के पश्चात् ज्ञात हो गया कि न केवल कबाइली काश्मीर मे गड़बड कर रहे है वरन् काश्मीर को पाकिस्तान मे मिलाने के लिये पाकिस्तान अपनी फौज भी प्रयोग में ला रहा है।

काश्मीर की हालत समझने के लिये हमें इसमे पूर्व की घटनाओ पर प्रकाश डालना आवश्यक है, क्योकि काश्मीर की पूर्व की घटनाऐं ही पाकिस्तान के आक्रमण को उत्साह दे सकी थी।

काश्मीर राष्ट्रीय कान्फ्रेन्स के आन्दोलन की जडें काफी गहरी थी और महाराजा काश्मीर इस आन्दोलन को अपनी पूरी ताकत से कुचलते रहे थे। यहाँ तक कि जिस समय भारत और पाकिस्तान की घोषणा हुई तब भी महाराज ने प्रजा परिषद के नेताओ को जेल में बन्द कर रखा था. प्रजा परिषद के नेताओ की उस समय फौरी माग थी कि काश्मीर मे जनता का राज्य स्थापित किया जाय। मगर देशी नरेश अग्रेजो के नशे में थे, उन्हे पता

था, अब हमारा भाग्य अंग्रेजों के साथ नत्थी न होकर देश की जनता के साथ जुड़ा है। काश्मीर और हैदराबाद तथा जूनागढ़ इन राज्यों ने इस सिलसिले में सिर उठाया। यहाँ हम केवल काश्मीर के संबंध में ही बता सकेंगे, क्योंकि मामला काश्मीर संबंधी है, अन्य स्थानों पर जूनागढ़ तथा हैदराबाद के विषय में भी लिखा गया है।

काश्मीर के महाराज हरीसिंह वैसे एक सफल शासक थे, पर एक जागीरदार सामन्ती युग के अवशेषों से दूर नहीं जा सकता यह ऐतिहासिक तथ्य उन पर भी पूरी तरह से लागू होता था, फलस्वरूप जब काश्मीर में 'कश्मीर छोड़ो' आन्दोलन तेजी से चला जिसका नेतृत्व शेख अब्दुल्ला और बख्शी गुलाम मुहम्मद के हाथों में था, तो महाराजा हरीसिंह ने इस आन्दोलन को बुरी तरह से कुचल दिया और तमाम नेताओं को जेल में बन्द कर दिया। जिस समय भारत और पाकिस्तान की सीमाओं का बटवारा हो रहा था, ये नेता जेल में बन्द थे और महाराज कश्मीर पाकिस्तानी नेताओं से सौदेबाजी कर रहे थे कि यदि मैं पाकिस्तान के साथ सम्मिलित हो जाऊँ तो क्या आप मुझे स्वतंत्र रहने देंगे। मगर पाकिस्तानी शासक साम्प्रदायक मनोवृत्ति के थे, उन्होंने इस बात को ठीक न समझा, पर महाराज हरीसिंह को अपनी बातचीत में उलझाये रहे, और दूसरी ओर कबाइलियों को शस्त्र देकर काश्मीर पर आक्रमण करा दिया। महाराज ने सोचा यह तो सन् १९३३ जैसा साम्प्रदायक झगड़ा है, जो तनिक कठोर कार्रवाही करने से समाप्त हो जायेगा, मगर उस झगड़े के पीछे जो पाकिस्तान की राजनैतिक चाल थी, उसे वह नहीं समझ सके थे।

काश्मीर के लिए ही पाकिस्तान ने यह चाल क्यों चली, यह एक भेद था। इसके पीछे एंग्लो अमेरिकन गुट का पूरा-पूरा हाथ था। भारतीय नक्शे में काश्मीर एक महत्वपूर्ण स्थान है, यहां हिन्दुस्तान, चीन, रूस, अफगानिस्तान और पाकिस्तान की सीमाएँ मिलती हैं, या यों कहिये काश्मीर, हिन्दुस्तान, चीन, रूस, अफगानिस्तान और पाकिस्तान के बीच का केन्द्र है, जहाँ से इन सारे देशों पर कभी भी आक्रमण किया जा सकता है, और यही प्रमुख कारण था पाकिस्तान का काश्मीर पर आक्रमण करने का। अमेरिका और अंग्रेज हर मूल्य पर काश्मीर

को अपने हाथ में चाहते थे, मगर वह काश्मीर पर सीधे-सीधे हकूमत भी नही कर सकते थे, इसलिये उन्होने पाकिस्तान को उकसाया। पाकिस्तान के उच्चाधिकारी इस महत्व को समझते थे, इसलिये काश्मीर के वदले उन्हे और बहुत से वायदो की अमेरिका और इगलैण्ड से उम्मीद थी और अमेरिका तथा इगलैण्ड चाहते थे यहाँ काश्मीर मे रहकर **रूस की हलचलो का अध्ययन करना तथा, रूस, चीन और हिन्दुस्तान की सीमाओं पर जासूसी जाल बिछाना और किसी भी समय आवश्यकता पड़ने पर युद्धस्थल के रूप में काश्मीर को प्रयोग करना।**

पडित नेहरू ने काश्मीर का महत्व न समझा हो ऐसी वात न थी, वल्कि वह उचित समय की प्रतीक्षा मे थे। पडित नेहरू नही चाहते थे, कि पडोसी देश पाकिस्तान से काश्मीर के लिये युद्ध हो, क्योकि पडित नेहरू समझते थे, काश्मीर भारत का अविभाज्य अग है काश्मीर की जनता का हित भारत के साथ रहने ही मे है, मगर महाराज काश्मीर कुछ और ही ढग से सोच रहे थे, उनकी इच्छा न भारत के साथ मिलने की थी, न पाकिस्तान के साथ। वह काश्मीर को स्वतत्र रखना चाहते थे, अर्थात् अग्रेजो ने देश के दो टुकडे किये थे भारत और पाकिस्तान, पर काश्मीर के महाराज हरीसिह देश के तीन टुकडे करने की फिराक में थे, भारत, पाकिस्तान और काश्मीर। पर यह किसी भी तरह सम्भव नही था, क्योकि यदि काश्मीर अकेला रह भी जाता तो भी उसको आर्थिक समस्या के लिये दोनो देशो में से किसी एक के साथ सम्मिलित होना ही पडता।

कवाइलियो के आक्रमण २२ अक्तूवर १९४७ को आरम्भ हो गये और देखते ही देखते मुजफ्फरावाद का नगर नृशंसतम लूटमार का केन्द्र वन गया तथा वहा के सुन्दर भवन धू-धू करके जल उठे। सीमा उल्लंघन का यह पहला ही दृष्टान्त नही था। सितम्बर मास के मध्य से ही कभी कही और कभी कही पाकिस्तान समर्थित लुटेरे काश्मीर प्रान्त में घुस आते थे और लूटमार कर भाग जाते थे, किन्तु २२ अक्तूवर का आक्रमण सोच समझकर किया गया था, जिसकी योजना पहले ही वन चुकी थी, क्योकि लुटेरे केवल लुटेरे ही नही थे, वे ब्रेनगनो, स्टेनगनो, हथगोलो और आग उगलने वाली तोपो, टैंक तोड़ राइफलो आदि आधु-

निक फौजी शस्त्राशस्त्रो से सुसज्जित थे और मोटर ट्रको पर सवार होकर आये थे। कबाइलियो के साथ सेना के बहुत से अफसर और सैनिक भी थे, जिनकी संख्या लगभग दो हजार थी।

और इस दशा में काश्मीर के महाराजा हरीसिंह ने पाकिस्तान की वास्तविक शक्ल देखी और डोगरा सेना को इस बढते हुये आक्रमण को रोकने के लिये भेजा, मगर सेना इस कबाइली फौज को रोक सकने में असमर्थ रही, फिर भी महाराज हरीसिंह ने एक दुरगी चाल चली, पाकिस्तान और भारत से यथापूर्व समझौता करने की घोषणा, यद्यपि उस समय तक यह समझौता केवल पाकिस्तान से हुआ था, मगर पाकिस्तान ने जहा एक ओर इस समझौते को तोडकर आक्रमणकारियो को भेजा वही दूसरी ओर अन्न पेट्रोल तथा अन्य आवश्यक सामान देना बन्द कर दिया। इस आर्थिक दवाव के साथ ही साथ लुटेरो के छुटपुट आक्रमण के रूप में सैनिक दवाव भी डाला जाने लगा। २२ अक्तूबर का वृहद आक्रमण इसी योजना से सम्बधित था, क्योकि पाकिस्तान को पूरी-आशा थी कि काश्मीर आर्थिक और सैनिक आक्रमण की धमकियो से डर कर पाकिस्तान को आत्म समर्पण कर देगा, उसकी कल्पना थी कि पाकिस्तानी सैनिको के आक्रमण के साथ ही साथ काश्मीर की मुस्लिम जनता विद्रोह कर बैठेगी, किन्तु दुर्भाग्यवश स्वप्न स्वप्न ही रहा। क्योकि काश्मीर के महाराज हरीसिंह ने स्थिति भाप ली, उनके सामने दो ही मार्ग थे या तो पाकिस्तान की प्रभुसत्ता स्वीकार करना या भारत में विलीन हो जाना। मगर चू कि काश्मीर जनता का ८५ प्रतिशत भाग मुस्लिम जनता है, महाराज उससे डरते थे, कही भारत के साथ मिलने पर ८५ प्रतिशत मुस्लिम जनता विद्रोह न कर बैठे। और इस परेशानी को हल किया शेख अब्दुल्ला और उनके साथियों ने। क्योकि शेख अब्दुल्ला राज्य परिषद के अध्यक्ष थे और काश्मीर के अधिकाश निवासी इस सस्था के साथ थे, फलस्वरूप शेख अब्दुल्ला के सहयोग से महाराज हरीसिंह को मुक्ति मिली।

शेख अब्दुल्ला और उनके साथियो ने अत्याचारियों से मोर्चा लेने का निर्णय किया और महाराज को भारत से सैनिक सहायता लेने का परामर्श

दिया। फलत. २४ अक्तूबर को महाराज ने भारत सरकार से सैनिक सहायता की याचना की। स्थिति नाजुक थी, इस समय काश्मीर को सैनिक सहायता देने का अर्थ था पाकिस्तान से युद्ध मोल लेना और हिंसा तथा रक्तपात के क्षेत्र में कमर कस कर उतरना। नेहरू सरकार ने स्पष्ट कह दिया हम इस तरह युद्ध के लिये अपने सैनिक नही भेज सकते, जब तक काश्मीर अपने भाग्य का फैसला न कर ले, वह या तो पाकिस्तान में सम्मिलित हो जाय या भारत में, यदि भारत मे मिल गया तो अवश्य उसे- सैनिक सहायता दी जायेगी, क्योकि हम देश के दो टुकडो का नतीजा देख चुके हैं (साम्प्रदायक दगे) अब तीन टुकड़ो का फल और नही देखना चाहते ! काश्मीर नरेश ने अपनी परिस्थिति को जाचा और घोषणा कर दी कि हम भारत के साथ हैं, और इस घोषणा के तुरत बाद यानी २५ अक्तूबर को भारतीय सैना वायुयान द्वारा काश्मीर में जा उतरी।

कल्पना कीजिये उस समय की भारतीय सैनिक स्यिती की, जब आक्रमणकारियो की सैना हरेभरे काश्मीर कोलूटती जलाती बडे वेग और अहकारके साथ आगे बढ रही थी। बारामूला पदाक्रान्त हो चुका था और श्रीनगर के द्वार उसके सामने निर्विघ्न खुले पड़े थे। दुर्भाग्य वश रियासत की डोगरा सेना भी इधर-उधर बिखरी हुई थी काश्मीर में शाति स्थापना कराने के लिये और इस तरह काश्मीर की राजधानी की रक्षा का कोई साधन दिखायी नही देता था। ऐसे समय में कुछ गिने चुने भारतीय वीरो ने आगे बडकर साहस पूर्वक शत्रु को ललकारा। जिसमें कितने ही भारतीय सैनिको ने अपने प्राणो की बाजी लगा दी और उस टुकडी के नायक कर्नल डी० आर० एम भी शहीद हो गये, किन्तु इन बहादुरो ने कबाइलियो की आगे बढने की बाढ को रोकने के लिये एक बांध सा बना दिया था। यदि यो कहा जाय कि काश्मीर मे भारतीय सफलता का भवन वस्तुत इन्ही वीरो की समाधि पर खड़ा किया गया है तो कुछ अत्युक्ति नही होगी।

पडित नेहरू इस सबध में बड़े दूर की सोच रहे थे, वह मौन होकर हालात को देखते रहे और काश्मीर में शाति स्थापित कराने का आदेश देते रहे।

काश्मीर के युद्ध की कहानी लम्बी कहानी है। वह काश्मीर की टेढ़ी मेढ़ी,

दुर्गम पर्वतमालाओ के बीच भयकर तम शीत का सामना करते हुये साहस पूर्वक लड़ने वाले भारतीय वीरो के अपूर्व पराक्रम और पौरुष की कहानी है। वह कर्नलराय के अतिरिक्त मेजर शर्मा और ब्रिगेडियर उस्मान की कहानी है और वह कहानी है काश्मीर के नरनारियो के दृढ आत्मबल की जिन्होने अनेका-अनेक मुसीबतो के आगे भी अत्याचारियो के आगे सिर नही झुकाया।

लगातार चौदह मासतक युद्ध करने के पश्चात् भी, और अपार धन तथा युद्ध सामग्री की क्षति उठाने के बाद भी भारत ने काश्मीर मे अपने स्वार्थ के लिये पदार्पण नही किया था। यही नेहरू जी की महानता थी। नेहरूजी ने काश्मीर की रक्षा का भार वहन करते समय ही स्पष्ट शब्दो मे कह दिया था कि काश्मीर के भाग्य निर्णय का अधिकार तो केवल काश्मीर की जनता को ही है, भारत या पाकिस्तान को नही, यद्यपि विपत्तियो से विवश होकर काश्मीर ने अपनी पूर्ण सत्ता भारत को सौंप दी थी।

काश्मीर की राष्ट्रीय कान्फ्रेंस ने १२ अक्टूबर १९४८ के अपने एक विशेष अधिवेशन में भारत में स्थायी रूप से विलय होने का निर्णय कर लिया था और शेख अब्दुल्ला एक बार नही अनेक बार यह घोषणा कर चुके थे कि काश्मीर मे जनमत सग्रह का कोई प्रयोजन नही रह गया तथापि नेहरू सरकार अपनी न्याय प्रियता पर किसी प्रकार का कलंक का टीका नही लगने देना चाहती थी और न वह अपनी सत्ता किसी प्रकार की कच्ची भित्त पर खडी करना चाहती थी कि तनिक सी तगडी वारिस में भित्त गिर जाय और फिर जग हँसाई का सामना करना पडे।

संयुक्त राष्ट्रसंघ और काश्मीर

काश्मीर की घटनाओ ने यह सिद्ध कर दिया था कि भारत किसी प्रकार भी संघर्ष के मार्ग को अपनाकर पाकिस्तान से कटुता पैदा नही करना चाहता, तभी तो काश्मीर में भारतीय सेनाएँ भेजने के बाद भी पाकिस्तान से बराबर कहा गया कि वह कबाइलियो को फौजी सहायता देना बंद कर दे, मगर पाकिस्तान के कान पर जूँ नही रेंगी, जब कि भारतीय जनता काश्मीर मे कबाइली विजित

क्षेत्र पर आक्रमण करने के लिये नेहरू सरकार पर दबाव डाल रही थी, पर पडित नेहरू ने न्याय और प्रेम के मार्ग को न छोडकर भारतीय जनता की इस माग को ठुकरा दिया और सयुक्त राष्ट्र सघ मे काश्मीर का मामला १ जनवरी १९४८ को सोप दिया, ताकि कल को कोई भारत की ओर अगुली न उठा सके। इस समय भारतीय प्रतिनिधि ने जो स्मरण पत्र सुरक्षापरिषद को दिया उसमे अकाट्य प्रमाणो के बल पर यह सिद्ध कर दिया गया था कि काश्मीर में पाकिस्तानी सैनिक खुल्लम-खुल्ला भारतीय सेना से युद्ध कर रहे हैं। नेहरू जी को आशा थी कि विश्व-शाति के हित को दृष्टि मे रखते हुये सुरक्षा परिषद तत्काल न्याय का मार्ग ग्रहण करेगी और पाकिस्तान को तुरन्त काश्मीर से हट जाने का आदेश देगी, पर जब सुरक्षा परिपद् ने उल्टे भारत को दोपी सिद्ध करने की चाल चली तो भारतीय अधिकारियो की आँखो पर जो भ्रम का पर्दा पड़ा था हट गया और उन्होने अनुभव किया कि सयुक्तराष्ट्रसघ न्याय का मच नही, स्वार्थो का क्रीडा स्थल है। जिस ब्रिटेन ने मजबूर होकर भारत से वोरिया विस्तर समेट लिया था उसी ने भावी स्वार्थ सिद्ध के लिये वडी चतुराइके साथ पाकिस्तान का निर्माण किया था, वह भला भारत का पक्ष कैसे ले सकता था ? और अमेरिका जिसकी सयुक्त राष्ट्रसघ में तूती बोलती है, कैमे सहन कर सकता था कि काश्मीर पाकिस्तान के हाथ से चला जाए, क्योंकि वह रूस और चीन की, काश्मीर मे मे अपनी फौजे रखकर नाके वन्दी करना चाहता था, और जानता था कि भारत की जनता रूस के अन्दरूनी मामलो मे दिलचस्पी लेती है। और यही क्यो जब काश्मीर समस्या पर सुरक्षा परिपद में विचार होने लगा तो पाकिस्तान के प्रतिनिधि श्री जफरुल्लाखाँ ने काश्मीर की समस्या के साथ ही साथ हैदराबाद और जूनागढ की समस्या पर भी विचार करने की माग की तो ब्रिटेन और अमेरिका तथा उसके सहयोगी राष्ट्रो ने तुरन्त श्री जफरुल्लाखा का समर्थन किया। पर भारत ने सुरक्षा परिपद की इस धाधले वाजी के आगे सिर झुकाने मे साफ इन्कार कर दिया था। फलत. ढाई महीने तक व्यर्थ ही पाकिस्तान और भारतीय प्रतिनिधियो के बीच वहस चलती रही। और २० जून १९४८ को सुरक्षा परिषद् ने इस सुझाव को स्वीकार कर लिया कि तीन व्यक्तियो का एक

कमीशन स्थिति की जाँच करे, पर कमीशन के कार्याधिकार के बारे में कभी भी भारत और पाकिस्तान के अधिकारियो के बीच समझौता नही हो सका, हारकर भारतीय प्रतिनिधि मडल के नेता गोपाल स्वामी आयगर निराश होकर कुछ समय के लिये देहली लौट आये। सब ओर से निराश होकर पडित जवाहरलाल नेहरू जिन्हे सयुक्त राष्ट्रसघ पर बडी आस्था थी, को मार्च १९४८ मे कहना पडा 'सयुक्त राष्ट्र पथ भ्रष्ट हो गया है।' उसी समय नेहरू जी ने सभासदो की जानकारी के लिये काश्मीर के सम्बन्ध में एक विस्तृत विवरण उपस्थित किया जो इतिहास में श्वेत पत्र के नाम से उल्लेखनीय है।

सुरक्षा परिषद् में घुटाला

नेहरू जी प्रत्येक मूल्य पर शान्ति बनाये रखना चाहते थे, वह यह कदापि नही चाहते थे कि कोई अँगुली उठाये कि—'पाकिस्तान या हिन्दुस्तान के शासक शासन नही कर सकते, स्वतन्त्र होते ही उन्होने युद्ध छेड दिया।' इसलिये उन्होने गोपाल स्वामी आयगर को फिर से लेकसक्सेस भेज दिया और उन्हे कडा आदेश दिया कि जांच कमीशन की अधिकार सीमा के सम्बन्ध मे वह रंचमात्र भी न झुके और इस पर सुरक्षा परिषद में व्यर्थ का वादविवाद चलता रहा। इस वादविवाद का भी एक कारण था कि वार्ता को या समस्या को जितना लम्बा खींचा जाय खींचनी चाहिये यह पाकिस्तान और इगलैण्ड की इच्छा थी, ताकि इस बीच काश्मीर के विजित क्षेत्र पर मजबूती के साथ पाकिस्तान शासन स्थापित कर सके। पर भारत का पक्ष इतना स्पष्ट और दृढ था कि जफरुल्लाखा की मांगो का ज्यों का त्यों अमेरिका और इगलैंड समर्थन नही कर सके। अनन्तर २१ अप्रैल को सुरक्षा परिषद मे ब्रिटेन, अमेरिका, चीन, कोलम्बिया, कनाडा और बेलजियम की ओर से एक प्रस्ताव उपस्थित किया गया जिसे न तो भारत ने स्वीकार किया न पाकिस्तान ने ही, और इस प्रकार सयुक्त राष्ट्रसघ में काश्मीर की गुत्थी सुलझने की आशा क्षीण हो गई।

उपरोक्त ६ राष्ट्रों द्वारा पेश किये गये प्रस्ताव में कमीशन के सदस्यो की संख्या ३ से बढाकर पांच कर दी गई थी और कहा गया था कि भारत की

चाहिये कि वह अपनी सेना काश्मीर से हटा ले। पर इस प्रस्ताव के दो दिन पश्चात् ही भारतीय प्रतिनिधि मडल के नेता श्री गोपाल स्वामी आयंगर ने घोषणा कर दी थी कि भारत इस प्रस्ताव को मानने मे असमर्थ है।

३ जून को सुरक्षा परिषद् ने ब्रिटेन के प्रतिनिधि का प्रस्ताव स्वीकार किया जिसमें पिछले प्रस्ताव को स्वीकार करते हुए कमीशन के सदस्यो को जल्दी से जल्दी काश्मीर जाने का आदेश दिया गया था और इस कमीशन को काश्मीर के साथ ही साथ जूनागढ आदि का मामला भी सौपा गया था। पडित नेहरू ने इस ३ जून के प्रस्ताव के बारे में एक कड़ा विरोध पत्र सयुक्त राष्ट्र सघ को दिया और साफ-साफ कह दिया भारत काश्मीर के प्रश्न के साथ-साथ जूनागढ आदि की समस्या को मिलाये जाने को कदापि सहन नही करेगा।

मगर 'मान न मान मैं तेरा मेहमान' वाली कहावत। अमेरिका से प्रभावित संयुक्त राष्ट्रसघ ने अपने इस प्रस्ताव पर कार्य आरम्भ कर दिया और फलस्वरूप ५ राष्ट्रो का कमीशन ७ जुलाई को क्राची तथा १० जुलाई को नई दिल्ली पहुँच गया। जिसके निम्नलिखित सदस्य थे—

श्री रिकार्डो जे० सीरी (अर्जेन्टाइना) सभापति, श्री अलफ्रेडो लोजानो (कोलम्बिया) उपसभापति, श्री एगवर्त ग्रेफे (वेलजियम) श्री जोजेफ कार्बेल, (चैकोस्लोवाकिया) और जे० के० हडल (अमरीका) श्री एरिक कालवन इस कमीशन के नेता थे, वह सयुक्त राष्ट्र के महामन्त्री श्री ट्रिग्वेली के प्रतिनिधि के रूप में आये थे।

भारत का पक्ष चूँकि स्पष्ट था, इसलिये उसने कमीशन से कुछ छिपाया नही, उसके सामने हर बात को स्पष्ट कर दिया और जाँच के लिये उसे पूरा-पूरा अवसर दिया, पर पाकिस्तान जिसने सयुक्त राष्ट्रसंघ में चिल्ला चिल्लाकर कहा था कि भारत काश्मीर में उसे खाँमखाँ आक्रमणकारी कहता है, इस समय काश्मीर में तेजी से लड रहा था। वह चाहता था काश्मीर में ऐसी अराजकता पैदा हो जाय कि कमीशन समझ ले पाकिस्तान आक्रमणकारी नही है, वरन काश्मीर की जनता स्वय ही पाकिस्तान में सम्मिलित होना चाहती है। पर काश्मीर कमीशन ने अपनी आँखो से जब पाकिस्तान को काश्मीर में लड़ते हुए

देखा तो उसकी कलई खुल गई और कमीशन ने अनुभव किया कि बिना युद्ध बन्द किये जांच की कार्रवाही पूरी न हो सकेगी। अतएव १३ अगस्त को उसने भारत और पाकिस्तान के समक्ष तत्काल युद्ध बन्द करने का प्रस्ताव रख दिया। प्रस्ताव में कहा गया कि विराम सन्धिकाल में पाकिस्तान और कबाइली सेनाएँ काश्मीर से हटा ली जायें तथा स्वाभाविक स्थित स्थापित होने पर काश्मीर में जनमत लिया जाय। पहले तो भारत और पाकिस्तान दोनो ने ही इस प्रस्ताव (जनमत) को ठुकरा दिया, किन्तु कुछ स्पष्टीकरण के पश्चात् भारत ने उसे स्वीकार कर लिया, यद्यपि पाकिस्तान अब भी अपनी अड़ पर जमा हुआ था।

कमीशन और उसका कार्य

कमीशन निराश होकर लौट गया और उसने सुरक्षा परिषद को अपनी अन्तिम रिपोर्ट जाकर दे दी, जिसमें पाकिस्तान के झूठे प्रलाप और हठधर्मी की ओर भी सकेत था। यह रिपोर्ट पेरिस में २२ नवम्बर १६४८ को प्रकाशित हुई थी और उसमें पाकिस्तान पर आरोप लगाया गया था कि काश्मीर में युद्ध विराम न होने का कारण ये था कि पाकिस्तान ने १३ अगस्त के विराम सन्धि प्रस्ताव को स्वीकार नहीं किया, जब कि भारत ने उसे स्वीकार कर लिया था।

पर कमीशन इतने पर भी हताश नहीं हुआ वह जैनेवा में अपनी रिपोर्ट तैयार करने में लगा रहा। पेरिस में जहां सयुक्त राष्ट्रसंघ का अधिवेशन हो रहा था भारत और पाकिस्तान के प्रतिनिधियों के बीच जनमत गणना सम्बन्धी कुछ आधारभूत सिद्धान्तों पर विचार विनमय होता रहा। जिन सिद्धान्तो पर दोनो देशो के प्रतिनिधि सहमत थे उनकी सूचना दोनो सरकारों को उनके प्रतिनिधियों द्वारा भेज दी गई। इस बीच कमीशन के उपाध्यक्ष डाक्टर लो जानो एक बार फिर करांची और नई दिल्ली आये। इस बार उन्हें अपने कार्य में सफलता मिली और २६ दिसम्बर को वह अपनी रिपोर्ट देने न्यूयार्क के लिये रवाना हो गये। उनके जाते ही भारत के प्रधानमन्त्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने पाकिस्तान के प्रधानमन्त्री श्री लियाकतअलीखां से युद्ध बन्द करने का प्रस्ताव किया। और दोनों के सहयोग से कमीशन की निश्चित योजना से पूर्व ही

३१ दिसम्बर की अर्द्ध रात्रि को काश्मीर मे युद्ध बन्द हो गया। और इस सुखद सवाद को भारत और पाकिस्तान ही नही बल्कि समस्त ससार की शान्ति प्रिय जनता ने नव वर्ष के लिये एक अनुपम उपहार के रूप में ग्रहण किया।

और इस तरह काश्मीर का एक महत्वपूर्ण भाग खोकर भी पडित नेहरू ने काश्मीर के लिये ही नही, भारत और पाकिस्तान तथा इनसे सम्बन्धित राष्ट्रो की भलाई के लिये युद्ध बन्द करके अपनी शान्ति प्रियता का एक उदाहरण ससार के सामने और उपस्थित कर दिया। जब कि ससार इस बात को जानता है कि भारत की फौजे पाकिस्तानी फौजो से हर मामले मे तगडी थी और यदि पडित नेहरू चाहते तो वह आज के आजाद काश्मीर को मुक्त कर सकते थे, पर उन्होंने अपने कई उच्च सेनापतियो और बहुत से तरुण जवानो का बलिदान होने पर भी अपनी शान्ति की नीति को नही छोडा और इस तरह काश्मीर का एक भाग आजाद काश्मीर के नाम से पाकिस्तान के पास चला गया।

दूसरा पहलू

सन् १९४७ के अक्तूबर के तीसरे सप्ताह में जब आक्रमणकारी कबाइली और पाकिस्तानी सैना काश्मीर की राजधानी श्रीनगर से केवल कुछ ही मील दूर रह गई, तब काश्मीर के महाराज हरीसिह जम्मू चले गये और महाराज के साथ ही साथ सभी राज्य कर्मचारी पुलिस और फौजी अधिकारियो सहित जम्मू या दूसरे स्थानो को चले गये और श्रीनगर एक तरह से बिल्कुल खाली कर दिया। ऐसी स्थिति में शेख अब्दुल्ला अपने अन्य साथियो के साथ जेल से छोड दिये गये। वह तुरत भारत आये, पडित नेहरू से काश्मीर की समस्या पर परामर्श किया। इस बीच काश्मीर की स्थिति और भी गम्भीर हो चुकी थी। शेख अब्दुल्ला ने नेशनल कान्फ्रेंस की ओर से पडित नेहरू से सहायता मांगी और भारतीय सैना के श्रीनगर आने तक श्रीनगर में गृहरक्षक दल तैयार करना आरम्भ कर दिया। गृहरक्षक दल कबाइली और पाकिस्तानी फौजो के आक्रमण की रक्षा करने लगा और शहर की सारी शासन व्यवस्था अपने हाथ में ले ली। इस तरह बिना किसी के शासन व्यवस्था सौंपे ही शेख अब्दुल्ला ने शासन व्य-

वस्था सम्हाल ली। और काश्मीर के मंत्रिमंडल का निर्माण हो गया। कहने को कहा गया महाराज काश्मीर ने मंत्रिमंडल का निर्माण किया, मगर महाराज काश्मीर को उस समय पता चला जब मंत्रिमंडल सुचारु रूप से काम करने लगा और बाद मे महाराज ने औपचारिक रूप से इसे स्वीकृत कर लिया।

मगर जब काश्मीर के सवाल पर शेख अब्दुल्ला को संयुक्तराष्ट्र संघ में अपना मत व्यक्त करने के लिये बुलावा आया तो पंडित नेहरू हिचके, और परिस्थिति भाप गये, मगर चूँकि उन्होंने न केवल काश्मीर वरन् विश्वशांति के हेतु काश्मीर समस्या को संयुक्त राष्ट्र-संघ को सौंपा था, अतएव वह इस नये नाटक को देखते रहे इसके सिवाय कर भी क्या सकते थे। फलस्वरूप शेख अब्दुल्ला वहाँ गये और एक दूसरे नाटक की आधार शिला रखी गयी। कहने के लिये शेख अब्दुल्ला ने यह सिद्ध किया कि काश्मीर पाकिस्तान के साथ नहीं रहना चाहता। काश्मीरी जनता इसके खिलाफ है कि काश्मीर पाकिस्तान में मिलाया जाय, उस के हित भारत के साथ रहने में सुरक्षित है, मगर उन्होंने खुलकर नहीं कहा था कि काश्मीर भारत में विलय होना चाहता है अथवा काश्मीरी जनता भारत में विलय होना चाहती है, मगर भारत सरकार ने इस नये नाटक की ओर कम से कम उस समय ध्यान नहीं दिया, क्योंकि पंडित नेहरू ही नहीं हिन्दुस्तान की समस्त जनता शेख अब्दुल्ला पर विश्वास करती थी। शेख अब्दुल्ला के नेतृत्व में भारतीय और काश्मीरी जनता ने मिलकर देशी नरेशों के विरुद्ध संघर्ष किया था। फिर शेख अब्दुल्ला कुन्दन की भांति नये नेता थे, यह किसी को भास भी नहीं था कि शेख ही एक दिन राष्ट्र की कमर में अपने स्वार्थों के निमित्त छुरा घोंप देगा।

शेख अब्दुल्ला अब प्रधान मंत्री बन जाने के बाद और अपनी स्थिति काश्मीर में काफी मजबूत कर लेने के बाद एक प्रकार से पाकिस्तान और भारत से गोटीबाजी करने लगे। उन्होंने समझा पंडित नेहरू सीधे आदमी है, उन्हे धोखा देना कोई नई बात नहीं है, मगर पंडित नेहरू सब कुछ देख और सुन रहे थे, और बड़ी बारीकी के साथ परिस्थितियों का अध्ययन कर रहे थे। शेख उनकी आँखों मे धूल झोंक सकने मे असमर्थ रहा। और जब काश्मीर के प्रधान मंत्री

के बजाय उसने काश्मीर का सम्राट बनने का स्वप्न देखा तो वह तुरत पकड लिया गया। पाकिस्तान के द्वारा रची अमेरिका की नई साजिश भी कामयाब न हो सकी। और इस तरह विश्वशांति को, भारत में दूसरी बार काश्मीर द्वारा खतरा पहुंचाने की चाल अमेरिका की असफल हो गयी।

अमेरिकन साम्राज्यवादियो ने पाकिस्तान द्वारा शेख अब्दुल्ला को लालच दिया कि यदि काश्मीर भारत में विलय हो गया तो तुम्हारे पल्ले क्या पडेगा, क्योकि जनमत जब तक तुम्हारे साथ है तुम प्रधान मन्त्री हो और हिन्दुस्तान में हिन्दुओ की आबादी अधिक है इसलिये काश्मीर के भारत में विलय हो जाने के बाद कभी भी वहाँ की हिन्दू जनता का जनमत तुम्हारे खिलाफ हो सकता है, इस तरह तुम्हारा मन्त्रिमडल भारत के हिन्दुओ के हाथ में है जो कभी भी तुम्हे सहन नही करेंगे। शेख की अक्ल पर पत्थर बरस गये और भारतीय स्वतंत्रता प्राप्ति के लिये अपनी अनेको कुर्बानियो को भूलकर वह अमेरिका की साम्राज्यवादी चालो में आ गये।

उन्होने सम्राट होने जैसी अपनी स्थिति बना ली। एक मजूर का लडका शेख अब्दुल्ला अब चालीस और पचास हजार रुपये की कार में बैठने लगा और फिजूलखर्ची इतनी करने लगा कि जहां काश्मीरी जनता भूखो मर रही थी, वही शेख काश्मीर की अधिकतर आमदनी अपने ऊपर खर्च कर रहा था। काश्मीर में अमेरिकन गुप्तचरो का जाल सा बिछ गया जो काश्मीर के महत्वपूर्ण स्थानो के चित्र तो लेते ही थे भारत के विरुद्ध काश्मीरी जनता के दृढ मनोबल को भी कमजोर करते थे।

इस बीच एक ऐसी घटना घटित हो गयी कि जिसका प्रभाव शेख अब्दुल्ला पर भले ही न पडा हो, मगर काश्मीर की काया आन्तरिक ढंग से पलट गयी। यानी महाराज हरीसिंह स्वर्गवासी हो गये थे और उनकी जगह पर उनके पुत्र कर्णसिंह राजप्रमुख बन गये थे।

कर्णसिंह भले ही दकियानूसी परिवार में पैदा हुये थे, मगर नये जमाने की हवा लग चुकी थी। और कम से कम एक बात, राजप्रमुख कर्णसिंह के सामने साफ थी कि यदि शेख अब्दुल्ला ने काश्मीर को अपनी स्थिति सुदृढ बनाकर

स्वतंत्र घोषित कर दिया तो उनका क्या बनेगा। पहली बात श्री कर्णसिंह जी ने चाहे न सोची हो, मगर दूसरी बात अवश्य सोची, फलस्वरूप शेख के मन्त्रिमडल के एक प्रमुख सदस्य और आज के प्रधान मत्री बख्शी गुलाम मुहम्मद को उन्होने पडित नेहरू के पास भेजा। पडित जवाहरलाल नेहरू ने जो बडी बारीकी से काश्मीर और शेख की गतिविधियो को देख रहे थे, पता नही क्या परामर्श दिया। शेख तक को इस मुलाकात की जानकारी नही मिल पायी। और जब काश्मीर को शेख स्वतत्र राष्ट्र घोषित करने की पूर्ण तैयारी कर चुका, पाकिस्तानी और अमेरिकी गुप्तचरो से जब काश्मीर पूर्णरूप से भर गया तब यकायक शेख का पतन हो गया। उसे, अन्य साथियो के सहित जो काश्मीरी जनता और भारत के साथ गद्दारी कर रहे थे, अचानक एक दिन गिरफ्तार कर लिया गया और दूसरे ही दिन लोगो ने समाचार पत्रो में मोटे-मोटे शीर्षको में पढा।

'शेख अब्दुल्ला गिरफ्तार'

काश्मीर का नया मन्त्रिमंडल बख्शी गुलाम मुहम्मद के नेतृत्व में बना।

लोगो को आश्चर्य चाहे हुआ हो, पर जब समाचार पत्रो के प्रतिनिधि पडित नेहरू के पास गये और उन्होने इस नयी स्थिति के बारे में ज्ञात करना चाहा तो वह मुस्करा कर बोले—'मैं कुछ नही जानता'

और इस 'मैं कुछ नही जानता' के कूटनीतिज्ञ पूर्ण उत्तर से सभी को विस्मय हुआ।

और इसके कुछ दिन बाद ही पडित नेहरू ने घोषणा कर दी, काश्मीर में पर्यटक नहीं रह सकेंगे जिन्होंने बाकायदा भारत से अनुमति न ले ली होगी, और इस तरह काश्मीर में फैले गुप्तचरों का सफाया स्वयं ही हो गया। पडित नेहरू की चातुरी से काश्मीर द्वारा विश्वशान्ति को नष्ट होने से बचा लिया, जिसका कारण शेख बनता।

और तब से अब तक काश्मीर के बारे में कई बार पाकिस्तान और भारत के प्रधान मंत्री, उच्च अफसर आपस में भेंट कर चुके हैं, मगर नतीजा वही है, जो था। अब तक से जब बख्शी गुलाम मुहम्मद के नेतृत्व में वह गुप्तचरी नहीं हो सकेंगी जो शेख के शासन काल में हो रही थी, और इस तरह से अब काश्मीर

की ओर से खतरा नही रह गया है विश्व शाति के लिए, यह सारी दुनियां जान गई है, और शायद अब अमेरिका पाकिस्तान द्वारा ऐसे कुकृत्य कराने की हिम्मत भी न कर सकेगा। फिर भी काश्मीर की जनता सजग और सचेत है।

हैदराबाद एक समस्या

हैदराबाद रियासत की हालत भी बडी विचित्र हो गई थी, जब एक ओर भारतीय फौजें काश्मीर में शाति और सुरक्षा स्थापित करने मे लगी हुई थी, तभी हैदराबाद रियासत के नौकरशाही हैदराबाद को स्वतत्र घोषित करने की चेष्टा में लगे हुये थे। उनकी इच्छा थी, हैदराबाद एक इकाई राज्य के रूप में स्वतंत्र रहे, जिस स्वप्न को शेख अब्दुल्ला ने वहुत वाद में देखा, नवाव हैदराबाद ने उसे बहुत पहले ही देखा। पर नवाब हैदराबाद ने तो वास्तविकता की ओर से विल्कुल ऑखे ही मूँद ली थी, अर्थात् काश्मीर की वहुसख्यक आवादी मुस्लिम आबादी है और हैदराबाद की वहुसख्यक आवादी हिन्दू आवादी है, जो हर तरह से हिन्दुस्तान के साथ रहना चाहती थी। हैदरावाद की जन सख्या लगभग एक करोड़ सत्तर लाख है, राजस्व सतरह करोड है और यह रियासत (अब प्रान्त) दक्षिणी पठार के ८२६६८ वर्ग मील में फैली हुई है। हैदरावाद दक्षिणी भारत के वीचोवीच है, दूसरे शब्दो मे हम कह सकते हैं कि हैदरावाद दक्षिणी भारत का हृदय है, हैदराबाद की सीमा किसी भी विदेशी प्रदेश से काश्मीर की तरह नही लगी हुई है वल्कि चारो ओर भारतीय प्रान्तो और रियासतो (अब प्रान्त) से घिरा हुआ है और इसकी सभ्यता, इसकी संस्कृति व ऐतिहासिक परम्परा दक्षिण पठार की द्रविड सभ्यता के अभिन्न अग हैं। इस प्रकार हैदराबाद को किसी भी मूल्य पर भारत से अलग नही किया जा सकता था, पर नवाब हैदराबाद एक ओर जहाँ चुपचाप बैठे एक स्वतंत्र राज्य के सम्राट बनने के स्वप्न देख रहे थे, वही कुछ सिर फिरे लोग नवाब के इन स्वप्नो को वढावा दे रहे थे।

'रिजवी' नामक एक साम्प्रदायक नौकरशाह ने 'रजाकार' नामक एक दल का सघठन किया, कहते हैं इन दल के सम्बन्ध में पूर्णरूप ने निजाम को जान-

कारी थी। रजाकारो में वह लोग सम्मिलित थे, जो पहले (या वर्तमान) पुलिस या फौज में थे, पुलिस और फौज का पूरा पूरा सहयोग उसे मिला था। पाकिस्तान ने उसे शस्त्र मुहैया किये थे, और इस तरह से रजाकार एक जनसाधारण सगठन न होकर फौजी सघठन बन गया था, जो हिन्दुस्तानी फौज और पुलिस का मुकाबिला करने की भीतर ही भीतर पूरी तैयारी कर रहा था। उडती हुई एक खबर के आधार पर यह बात भी सुनी गई कि नवाब हैदराबाद के परिवार के कुछ लोग पाकिस्तान पहले ही चले गये थे, जो अमेरिका मे शस्त्रास्त्र मगा कर हैदराबाद भेजे रहे थे। इस तरह से भीतर ही भीतर षड्यत्र चल रहा था, और भारत सरकार का इस ओर तनिक भी ध्यान नही था, क्योकि भारत सरकार अपनी सारी शक्ति से देश में शाति स्थापना में लगी थी, दूसरे प्रश्न भी सामने थे जैसे शस्त्रास्त्र शरणार्थियो के लिए काम और मकानो की समस्या आदि।

पता उस दिन लगा जब रजाकारो ने अपनी हलचलें आरम्भ कर दी, और वह हैदराबाद की जनता को लूटने खसोटने का कार्य करने लगे, मगर भारत सरकार ने उस समय भी चुप रहना ठीक समझा क्योकि हैदराबाद तब तक राज्य नही बना था, देसी रियासतें अपनी सीमा के भीतर की व्यवस्था करने के लिये स्वतंत्र थी।

काश्मीर के प्रश्न के साथ ही साथ श्री जफरुल्लाखा पाकिस्तान के प्रतिनिधि ने संयुक्त राष्ट्रसंघ के सामने हैदराबाद की समस्या भी रखी। जिसका भारतीय प्रतिनिधि ने अपनी पूरी शक्ति के साथ विरोध किया, पर इस विरोध के बावजूद भी इगलैण्ड और अमेरिका ने हैदराबाद में दिलचस्पी लेनी कम नहीं की थी, मगर इंगलैण्ड या अमेरिका जब तक कोई कदम उठाए उस समय तक देश में शांति स्थापित करने के हेतु भारतीय पुलिस ने हैदराबाद को अपने कब्जे में कर लिया था, इस तरह इंगलैण्ड या अमेरिका दखलन्दाजी करने में अपने को असमर्थ पा चुप रह गये ?

बात यों हुई कि रजाकारों ने पहले अपनी शक्ति हैदराबाद राज्य के भीतर ही साम्प्रदायिक झगड़ों में आजमायी और तब निहत्थी जनता की लूट खसोट

में उनके मुँह खून लग गया तो उनकी हलचलें हैदराबाद के सीमावर्ती राज्यो में भी होने लगी, जिसे सरकार सहन न कर सकी और फलस्वरूप पुलिस कार्रवाही करनी पडी। और तीन दिन के भीतर सम्पूर्ण हैदराबाद मे फिर से शांति स्थापित हो गई। भारतीय पुलिस का हैदराबाद के नागरिको ने हृदय खोल कर स्वागत किया, रजाकारो पर बुरी मार पड़ी, और इस पुलिस कार्रवाही में रजाकारो की सारी शक्ति नष्ट हो गई, तथा नवाब हैदराबाद को हिरासत में ले लिया गया। इस तरह सबसे पहले देशी रियासतो में सबसे सम्पन्न रियासत हैदराबाद समाप्त होकर भारतीय प्रान्त बन गयी। और पडित नेहरू ने शीघ्र ही हैदराबाद की ओर से जो शाति भग होने का खतरा उत्पन्न हो गया था उसे सदैव के लिये समाप्त कर दिया।

अमरीका में नेहरू

एक दृष्टि

पडित नेहरू जब अमेरिकन राष्ट्रपति ट्रूमैन के निमन्त्रण पर अमेरिका गए थे, तब विश्व मे एक तनावपूर्ण वातावरण चल रहा था, लगता था अब विस्फोट हुआ, अब विस्फोट हुआ । और तो और स्वय भारत ने अमेरिका का कई मामलो मे विरोध किया था, काश्मीर और हैदराबाद का मामला तो भारत का घरेलू मामला था, जिसके लिए सयुक्त राष्ट्रसघ के वीच भारत ने अमेरिका का पूरे जोर के साथ प्रतिवाद किया था। पडित जवाहरलाल नेहरू ने अपने एक भाषण मे स्पष्ट कह दिया था—"काश्मीर के सवध मे ट्रूमैन और श्री एटली के हस्तक्षेप से मै आश्चर्यचकित हूँ ।"

प्रशातक्षेत्र एव सुदूर पूर्व सम्वन्धी नीति के वारे मे भी भारत और अमेरिका के विचारो मे मेल नही खाता था, फिलिपाइन्स के राष्ट्रपति (तत्कालीन) ने प्रशात सघ योजना तयार की थी । अमेरिका प्रशात और सुदूरपूर्व कम्युनिस्टो से मुकावला करने के उद्देश्य से इस योजना में दिलचस्पी ले रहा था । भारत यह नही चाहता था कि एशियाई देशो के मामले मे सैनिक स्तर पर हस्तक्षेप किया जाय, पर अमेरिका के परराष्ट्र विभाग ने इस योजना पर विचार किया और दुनिया के सामने तात्कालिक कार्रवाइयो के रूप मे अमेरिका के रुख का नया पहलू आ गया। क्योकि परराष्ट्र विभाग द्वारा इस योजना पर विचार करने से पूर्व ही प्रशात क्षेत्र मे वचे लगभग एक करोड डालर की लागत के अतिरिक्त ...मरिक और विस्फोटक पदार्थ चीन की राष्ट्रीय सरकार (च्याग सरकार) के हाथ दसवाश मूल्य पर वेच दिये ।

इधर चीन में जनवादी प्रजातन्त्र की स्थापना की घोषणा सितम्बर १९४९ मे हो चुकी थी । चीन की इन नयी सरकार को भारत ने मान्यता दे दी थी,

मगर अमेरिका चीन को मान्यता देने में अकारण ही बहाने तलाश कर रहा था। अमेरिका के परराष्ट्र सचिव श्री अचेसन ने तीन प्रश्न दुनिया को दिखाने के लिये चीन की मान्यता के सम्बन्ध में उठाये—(१) यह बात साफ नहीं है कि चीन की साम्यवादी सरकार जिस क्षेत्र पर कब्जा करने का दावा करती है, क्या वास्तव में उसपर उसीका कब्जा है ? (२) क्या वह अन्तर्राष्ट्रीय उत्तर-दायित्व को पूर्ण रूप से निभा सकती है, और क्या वह उसके लिए तैयार भी है ? (३) उसे जनता की अधिकतर संख्या का हार्दिक सहयोग प्राप्त है ?

कुछ दिन बाद ही यह बात बिल्कुल स्पष्ट हो गई कि इन तीन प्रश्नों का कोई महत्त्व नहीं है, अचेसन ने सिर्फ टालने वाली बात का बहाना बनाने के लिये ये तीन प्रश्न तैयार किये थे, भारत ने जनवादी चीन की सरकार को स्वीकार कर लिया था, इस प्रश्न पर भी दोनों देशों में मतभेद सा ही था।

चीन के साथ ही साथ दक्षिण अफ्रीका के बारे में भी अमेरिका और भारत में खींचा तानी सी चल रही थी। दक्षिणी अफ्रीका द्वारा स्वीकृत 'एशियाटिक लैण्ड टेन्योर अमेंडमेंट एक्ट' के विरुद्ध भारत ने आवाज उठायी थी और एक विरोधपत्र भी अफ्रीका की सरकार के पास भेजा था। भारत की इच्छा थी कि अमेरिका और इंगलैंड उस पर दबाव डालें, पर अमेरिका ने इसमें बिल्कुल दिल-चस्पी नहीं ली। दक्षिणी अफ्रीका में रंग भेद की नीति जो संसार में सभ्यता का ढोंग रचते हैं उनके लिए आज भी एक चुनौती है।

नेहरू और अमेरिका

राष्ट्रपति ट्रूमैन के आग्रह पर पंडित नेहरू ११ अक्तूबर को वाशिंगटन हवाई अड्डे पर पहुँच गये। चूंकि भारत एशियाई देशों में चीन को छोड़कर सबसे बड़ा है, और एशिया के मध्य में रहने से एशिया का प्राण है, इसलिये पंडित नेहरू को प्रसन्न करके अमेरिका भारत में अपने व्यापार की मण्डी खोलना चाहता था, या यों कहिए कि जब काश्मीर और हैदराबाद में घुस पैठ नीति अमेरिका की नहीं चली तो काश्मीर को हथियाने की दृष्टि से और अपने व्यापार की ओर भी उन्नति दिखाने के लिए पंडित नेहरू को उनके अपने यहाँ बुलाकर अमेरिकन नेताओं ने चकाचौंध कर देना चाहा।

पडित नेहरू के अमेरिका पहुचने से पूर्व ही लगभग अमेरिका के समस्त अखबारो ने पडित नेहरू और भारत के विषय में बहुत कुछ छापा। मोटे मोटे विशेषाक अखबारो ने प्रकाशित किये जिससे अमेरिकन जनता का पडित नेहरू की ओर विशेष आकर्षण हो गया था। वाशिंगटन पोस्ट के लिए, विशेष संवाद-दाता ने पडित नेहरू को विश्व नागरिक के रूप में अपने पाठको को परिचय दिया था और इस आगमन को पूर्व और पश्चिम का अद्भुत मिलन कहा था। और लिखा था—'एशिया महाद्वीप के बहुत बडे भाग का भाग्य पडित नेहरू के हाथो में है। यहाँ से जिस धारणा को वह भारत ले जायेगे, उसके द्वारा भविष्य में पर्याप्त काल पर्यन्त पूर्व और पश्चिम के पारस्परिक सम्बन्ध का निर्माण हो सकता है। प्राचीन भारत और वर्तमान अमेरिका दोनो महसूस कर रहे हैं कि एक के लिए दूसरा बहुत महत्वपूर्ण है।'

पडित नेहरू का एक बहुत बडे राजनीतिज्ञ के रूप में अखबारो ने अमेरिकन जनता से परिचय कराया था। इसी अखबार ने लिखा—'स्वतन्त्रता की प्राप्ति के तुरन्त पश्चात् शुरू होनेवाले साम्प्रदायक दंगों का मुकाबला साहस के साथ करने, राज्य के रूप में अपना अस्तित्व बनाए हुये राष्ट्रमंडल में रहने की पुष्टि करने वाला समझौता करने, हिन्देशिया के सबध में एशियाई देशों का सम्मेलन, जिसकी व्यवस्था और सचालन उन्होने इतनी कुशलता से किया कि परोक्ष में शान्तिपूर्ण ढग से मामला सुलझाने की प्रकृति को प्रोत्साहन मिला, इन प्राप्त सफलताओ ने नेहरू जी को सच्चा राजनीतिज्ञ सिद्ध कर दिया है और इनके कारण अमेरिका के अधिकारियो की दृष्टि में उनका सम्मान काफी बढ गया है।'

न्यूयार्क टाइम्स ने लिखा—'यदि किसी की लोकप्रियता उसके अपने देश के निवासियो के स्वेच्छा प्रेरित सहयोग से आकी जा सकती है तो अमेरिकन जनता प्रथम बार विश्व के सर्वाधिक लोकप्रिय व्यक्ति का दर्शन करेगी।'

हवाई अड्डे पर जब पडित नेहरू उतरे तो राष्ट्रपति ट्रूमैन तथा उनके मन्त्रिमण्डल के मन्त्री और अन्य उच्च सरकारी अफसर उनके स्वागत के लिए आए हुये थे। राष्ट्रपति ने आगे बढकर उनका अभिवादन किया और उनके सम्मान

में १९ तोपों की सलामी दी गई, इसके बाद अन्य उपस्थित सज्जनों से परिचय कराया गया।

हवाई अड्डे पर दोनों देशों के राष्ट्रगीतों की ध्वनि प्रसारित की गयी। राष्ट्रपति ट्रूमैन ने इस समय जो भाषण दिया वह अत्यन्त संक्षिप्त था। उन्होंने कहा:—

'भारत के प्रधान मन्त्री महोदय ! संयुक्तराष्ट्र अमेरिका की जनता और सरकार की ओर से यहां स्वागत करते हुए मुझे बहुत प्रसन्नता होती है। न केवल भारत सरकार के प्रमुख के रूप में वरन् स्वतन्त्र लोगों के एक महान् देश के प्रतिष्ठित नेता के रूप में भी मैं आपका अभिनन्दन करता हूँ।

'भाग्य की यह इच्छा थी कि भारत का मार्ग खोजने के सिलसिले में खोजक ने अमेरिका का पता लगाया। मुझे आशा है कि आपकी यात्रा भी एक प्रकार से 'अमेरिका की खोज' के रूप में होगी।

'मैं संयुक्त राज्य अमेरिका की जनता की ओर से अतिशय भाव और सद्-भावना प्रकट करता हूँ और आशा करता हूँ कि इस देश की यात्रा के पश्चात् लौटने पर आपकी यह भावना मजबूत होगी कि हम आपके घनिष्ट मित्र हैं।'

(न्यूयार्क टाइम्स)

पंडित जवाहरलाल नेहरू ने भी अपने संक्षिप्त पर प्रथम भाषण में स्वागत का आभार प्रगट किया और बताया कि आपस के लाभ तथा मानव समाज के कल्याण के लिए पूर्व और पश्चिम के देश मित्रता एवं लाभदायक सहयोग के आधार पर कई प्रकार से मिलजुलकर कार्य कर सकते हैं।

स्वागत के पश्चात् उन्हें गार्ड आफ आनर दिया गया।

पंडित जवाहरलाल नेहरू 'ब्लेयर-हाउस' में ठहराये गये। अमेरिकन राष्ट्र-पति श्री ट्रूमैन भी इसी में अस्थायी रूप से ठहरे हुए थे, क्योंकि व्हाइटहाउस में इन दिनों मरम्मत हो रही थी। यहां उसी दिन संध्या को प्रीति भोज दिया गया। जिसमें अमेरिका के सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य जज श्री फ्रेड विन्सन और श्रीमती विन्सन, अमेरिका की साधारण सभा के स्पीकर श्री सैम रेबर्न, परराष्ट्र मन्त्री डीन अचेसन और श्रीमती अचेसन, रक्षामन्त्री लुई जानसन और श्रीमती

जानसन, परराष्ट्र सबधी समिति के अध्यक्ष सिनेटर एम कानोली और श्रीमती कानोली, भारत स्थित अमेरिका के राजदूत और श्रीमती विजयलक्ष्मी आदि गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

भोज के पश्चात् श्री ट्रूमैन से दो घन्टे तक आपकी बातचीत होती रही। दूसरे दिन ही वह ब्लेयर हाऊस छोडकर भारतीय राजदूत भवन मे चले गये।

इसी दिन नेहरू जी अमेरिका के प्रथम राष्ट्रपति जार्ज वाशिंगटन की समाधि पर गये और वहाँ पुष्पाजलि अर्पित की। जार्ज वाशिंगटन अमेरिका के भाग्य निर्णायक थे, और अमेरिका के प्रथम राष्ट्रपति भी। जिन्होंने मानवता की जीवन भर सेवा की थी और अमेरिका को दासता के बंधन से मुक्त कराया था। विश्व के महान् नेताओ के नाम के साथ उनका नाम भी आदर से लिखा जाता है।

नेहरू जी का उद्देश्य मेलजोल बढाना तथा अमेरिका निवासियो की भावनाओ और उनके आदर्श को समझना था, और इसी कार्य मे अमेरिका के अधिकारियो से विचार-विमर्श करने का कार्य भी सम्मिलित था। अमेरिका में पहुँचने के दूसरे दिन ही श्री नेहरु के सम्मान में डी० अचेसन की ओर से एक भोज का आयोजन किया गया तथा साथ ही मैसेच्युट्स एवेन्यू स्थित इण्डियन चासरी मे अमेरिका निवासी भारतीय विद्यार्थियो की ओर से स्वागत समारोह का आयोजन भी किया गया। इस तरह से जहाँ भोज में उन्होने अमेरिकन सरकार के अधिकारियो से परिचय प्राप्त किया, वही दूसरी ओर भारतीय विद्यार्थियो से भी वार्तालाप का उन्हे तुरन्त समय मिल गया।

१३ अक्तूबर १६४७ अमेरिका के इतिहास में सदैव स्मरण रखा जानेवाला दिन बन गया। क्योकि इस दिन पडित नेहरू ने प्रथम वृहत् भाषण अमेरिका की साधारण सभा और सीनेट के समक्ष दिया। जिनमे उन्होने बताया हिंदुस्तान कैसा है और क्या चाहता है। यह भाषण अमेरिका में सुना है अब ऐतिहासिक भाषण माना जाता है। अतएव इस ऐतिहासिक भाषण को हम ज्यो का त्यो पडित नेहरू के शब्दो मे ही दे रहे हैं क्योकि अमेरिका में पडित नेहरू ने अपने भाषणो में जो कुछ कहा वह केवल पडित नेहरू की आवाज नही थी,

वल्कि भारत की ३६ करोड जनता की आवाज थी। वह भाषण केवल भारत के प्रधानमन्त्री की आवाज नही थी, वल्कि भारत की जनता के एक होनहार बेटे की आवाज थी, जो मानव को मानव समझता है।

प्रथम भाषण

'इस सभा के सदस्यो के समक्ष भाषण करने का समय प्रदान किये जाने को मै बहुत वडा सम्मान समझता हूँ। मुझे इसके लिये आभार प्रकट करना चाहिए। यह सभा एक विस्तृत भाव मे अमेरिका के गणराज्य का, जिसका आज मानव जाति के निर्माण कार्य में गहरा हाथ है प्रतिनिधित्व करती है। आपकी महान सफलताओ से कुछ सीखने के लिये मै आपके देश मे आया हूँ और इसलिए भी मै आया हूँ कि आपके प्रति अपने देश की शुभकामनाये व्यक्त करूँ। मेरी यात्रा एक दूसरे को समझने की दोनो देश की जनता की भावना के विकास में सहायक हो सकती है, और एक ऐसे मजबूत बन्धन को तैयार कर सकती है जो कभी-कभी छिपा रहता है, पर जो मनुष्यो के शारीरिक सम्बन्धो से भी अधिक मजबूत होता है और जो तरह-तरह के देशो को एक दूसरे से संयुक्त कर देता है।

'मेरे आगमन पर श्रीमन् राष्ट्रपति महोदय ने बडी महत्त्वपूर्ण भाषा मे कहा था कि मै अमेरिका की खोज के लिये आया हूँ। संयुक्त राष्ट्र अमेरिका सुदूर स्थित भारत के लिए कोई अज्ञात देश नही है। हम मे से अनेक उन आदर्शों और उद्देश्यो की प्रशंसा करते हुए युवा हुए है, जिन्होने इस देश को महान् बनाया। हम एक दूसरे के इतिहास और संस्कृति को जान सकते है, पर आवश्यकता इस बात की है कि एक दूसरे को हम भली प्रकार समझें और आदर करें, जहाँ मतभेद हो वहा भी यही बात रहे। इस तरह के विचारो से समान आदर्शों की प्राप्ति के प्रयास में फलदायक सहयोग जन्म लेता है। सम्भवत: दुनियां मे आज सबसे बडी कमी इसी बात की है। इसीलिये मै अमेरिका के हृदय और मस्तिष्क की खोज और उनके सामने अपने देश के हृदय और मस्तिष्क रखने के लिये यहा आया हूँ। इसी तरह हम पारस्परिक भावना और सहयोग के आधार पर आगे बढ सकते है। मुझे पूरा विश्वास है हमारे देश

हृदय से इसके लिये इक्षुक हैं।

'गत दो दिनो से मै वाशिंगटन में हूँ, इस वीच में इस राष्ट्र के महान् निर्माताओ के स्मारको पर भी गया हूँ, मैंने केवल रस्मी काम करने के लिए ही ऐसा काम किया है, क्योकि वे तो बहुत वडे अर्से से मेरे हृदय में अकित हैं, उनके उदाहरण ने मुझे और मेरे अगणित देशवासियो को प्रोत्साहन प्रदान किया है। ये स्मारक ही तो सच्चे देवस्थान है। प्रत्येक पीडी को इन्हे श्रद्धाजलि अर्पित करनी चाहिये और श्रद्धाजलि करते समय उस प्रकाश से एक भाग अवश्य ग्रहण करना चाहिये जो न केवल इस देश की स्वतन्त्रता के वल्कि विश्व की स्वतन्त्रता के मार्ग दर्शको के हृदयो मे प्रकाशित रहा। वास्तव मे जो महान होते हैं, उनका कुछ न कुछ सदेश भी होता ही है, और ऐसा सदेश किसी देश की परिधि तक ही सीमित नही रखा जा सकता, ऐसे सदेश तो विश्वभर के लिये हुआ करते हैं।

'हमारी पीढी में ही एक महा मानव का उदय हुआ, उसने सदैव हमें स्मरण दिलाया कि विचार और कार्य से नैतिक सिद्धान्तो का सम्वन्ध टूटना न चाहिये और इसीसे हमारे हृदयो को प्रेरणा मिलती रही आगे वढने के लिये।' उन्होने कहा—'सत्य एव शान्ति का मार्ग ही मानव के लिये सच्चा मार्ग है।' उनके नेतृत्व में ही हमने अपनी आजादी की लडाई लडी। हमारे मनो में किसी के भी खिलाफ बुराई नही थी। श्रद्धा और प्यार के कारण हमने उनको राष्ट्रपिता कहा था, पर उनकी महानताएँ इतनी थी कि वह एक देश के भीतर नही समा सकते थे, उन्होने हमें जो सन्देश दिया वह आज विश्व की वडी से वड़ी समस्या पर भी विचार करने में मददगार सिद्ध हो सकता है।

'स्वतन्त्रता और अतुलनीय वैभव के लिये सयुक्त राज्य अमेरिका ने भी गत डेढ दो सौ वर्षो से सघर्ष किया है, जिससे वह आज महान शक्तिशाली राष्ट्र है। भौतिक धन के विकास एव साइस तथा शिल्प विज्ञान सम्वन्धी प्रगति के लिये उसका रिकार्ड आज दुनियाँ में आश्चर्यजनक है। यदि आरम्भ में उसने अपने महान सिद्धान्तों का सहारा न लिया होता तो आज अमेरिका की यह स्थिति न होती। भौतिक विकास तो न तब तक प्रगति कर सकता है न स्थायी रह सकता है जब तक कि उसकी जड नैतिक सिद्धान्तो और उच्च आदर्शों पर

स्थापित न की जाय। ये सिद्धान्त आपके स्वतन्त्रता के घोषणा पत्र में मौजूद हैं। इसमें स्वतः सिद्ध सत्य की सम्मति से यह स्वीकार किया गया है कि सभी मनुष्य समान पैदा हुए हैं। पर कर्त्ता ने उन्हे कुछ निश्चित अधिकार सौंपे हैं, जिनमें जीवन, स्वतन्त्रता और प्रसन्नता की उपलब्धि का प्रयास भी सम्मिलित है। आपको यह जानकर हर्ष हो सकता है कि गणराज्य भारत के संविधान को तैयार करने में हम आपके संविधान से काफी प्रभावित हुए हैं। भारतीय विधान की परिभाषा में कहा गया है—"हम भारत निवासी, भारत को सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न लोकतन्त्रात्मक गणराज्य बनाने के हेतु, तथा उसके समस्त नागरिकों को सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक न्याय, विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास धर्म और उपासना की स्वतन्त्रता, प्रतिष्ठा और अवसर की समता प्राप्त कराने के लिये, तथा उन सबमें व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता सुदृढ करने वाली बन्धुता बढाने के निमित्त, इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।"

'स्पष्ट ही इन शब्दों में आपको आपके गणराज्य की नींव डालने वालों की आवाज सुनाई देगी। इस प्रकार आप देखेंगे कि यद्यपि भारत आपसे ऐसी आवाज में बात कर सकता है जिसे आप तुरत पहचान न सकें और जो विदेशी सी लगे, पर उसकी आवाज में उस ध्वनि की गहरी प्रतिच्छाया है, जो बहुधा आपने पहले भी सुनी है। पर इस सबके पश्चात् भी यह बात सच है कि भारत की आवाज कुछ भिन्न है। यह आवाज पुरानी योरोपीय दुनियाँ की नहीं अपितु नयी दुनियाँ की है, यों कहें कि यह एक प्राचीन सभ्यता की आवाज है जो स्पष्ट और जोरदार है, तथा जिसने नव जीवन धारण किया है और जिसने आपसे तथा पश्चिमी देशों से काफी सीखा है, तो ठीक रहेगा। अतएव यह नई और पुरानी दोनों तरह की सम्मिलित आवाज है। इसकी जड़ें भूतकाल में जमी थीं, पर यह वर्तमान समय की प्रगतिशील आवश्यकताओं की भी प्रतिनिधित्व करती है। इस तरह भारत और अमरिका की आवाज में चाहे कितनी ही भिन्नता दिखायी दे, इनमें समानता भी बहुत कुछ है। आपकी तरह हमने भी अपनी स्वतन्त्रता क्रान्ति द्वारा प्राप्त की है, पर तौर-तरीके भिन्न-भिन्न रहे हैं। आपके

राष्ट्र की तरह भारत भी सघ राज्य के सिद्धान्तो पर आधारित गणराज्य होगा। और यही उनकी सबसे वडी देन है जिन्होने आपके राज्य की नीव रखी थी।

'भारत ऐसे महान् देश मे, जैसा कि महान् गणराज्य सयुक्त राज्य अमेरिका मे है, केन्द्रीय नियन्त्रण और प्रादेशिक स्वतन्त्रता में हलका सतुलन वनाये रखना आवश्यक हो जाता है। पर हमने अपने सविधान मे उन मौखिक मानवीय अधिकारो को सामने रखा है जिसके लिये स्वतन्त्रता, समानता और विकास के प्रेमी इच्छुक होते हैं। यह अधिकार है—व्यक्ति स्वातन्त्र्य, समानता और कानून द्वारा शासन। हमारे सविधान मे तथा हमारे देश की जनता के विचारो मे लोकतन्त्र की जडें गहराई तक जमी हुई हैं। इसी रूप में हम स्वतन्त्र देशों के परिवार में सम्मिलित होते हैं। हमने अपनी राजनैतिक स्वतन्त्रता प्राप्त करली है, पर क्रान्ति अभी अपूर्ण है और वह आज भी विकासोन्मुख है। जीवित रहने और खुशहाली प्राप्त करने के अधिकार के विना जो केवल आर्थिक उन्नति से ही प्राप्त हो सकती है, राजनैतिक स्वतन्त्रता जनता को प्रसन्न नही रख सकती। दूसरा हमारा कार्य है देश की जनता के जीवन स्तर को उठाना और उन तमाम कार्रवाइयो को दूर करना जो राष्ट्र की आर्थिक प्रगति में वाधक हो।

हमारे देश की सवसे वडी समस्या खेती की समस्या है। और ये समस्या न केवल हिन्दुस्तान की समस्या है वरन् सारे एशिया की समस्या है, पर हमने इस पर काबू पा लिया है। भूमि पर जो सामती शासन था वह धीरे-धीरे अव वदलता जा रहा है, ताकि खेती का फल उसके जोतने और वोने वाले को मिल सके, ताकि जोतने वाला जिस भूमि को जोतता है उस पर उसका अधिकार वना रहे। ऐसे देश में जहां आज भी खेती प्रचुर मात्रा में होती है, न केवल व्यक्ति की स्वतन्त्रता और सन्तोष के लिये ऐसा आवश्यक है, वरन् समाज को मजबूत वनाने के लिये भी इसकी आवश्यकता है।

'दुनियां के अनेक भागो मे मुख्यतया एशिया में सामाजिक अस्थिरता के मुख्य कारणो में से एक कारण भूमि पर अधिकार की वर्तमान प्रणाली भी है, जो आज की दुनियां के लिये सही नहीं है। एशिया और अफरीका के अधिकतर भाग मे साधारण जन का जीवन स्तर निम्न है यह भी एक कारण सामाजिक

अस्थिरता के लिये है ।

'ऐसे भी बहुत से देश हैं, जिनकी दृष्टि में भारत औद्योगिक रूप मे उनसे अधिक विकसित है । दुनियाँ के औद्योगिक राष्ट्रो मे उसका स्थान सातवा या आठवा है । पर गणित का यह हिसाब हमारे देश की गरीबी को छिपा नही सकता है । उत्पादन का बढाना, ठीक-ठीक बँटवारा और अच्छी शिक्षा और स्वास्थ्य के द्वारा इस दीनता को दूर करने की समस्या हमारे देश की सबसे बडी समस्या है—यही हमारा सबसे बडा काम है, जिसको पूरा करने के लिये हमने प्रतिज्ञा की है ।

'हम यह बात जानते हैं और मानते हैं कि मनुष्य की नाई राष्ट्र की सफलता की आरम्भिक शर्त स्वावलम्बन है । हम इस बात के लिये जागरुक हैं, कि अपनी इस सफलता के लिये पहले हमे ही चेष्टा करनी चाहिये । अपने इस उत्तरदायित्व से छुटकारा पाने के लिये हम कभी भी किसी अन्य का दामन नही पकड़ेंगे, हालाकि हमारी आर्थिक शक्ति बहुत है पर तैयार माल के रूप में उसको बदलने के लिये हमे काफी यन्त्रो और शिल्प विज्ञान कौशल की आवश्यकता है । अतएव हम ऐसी शर्तो पर जो दोनो देशो के लिये समुचित मात्रा मे लाभ-दायक हो, ऐसी सहायता और सहयोग का प्रसन्नता से स्वागत करेंगे । हमारा विश्वास है कि इस प्रकार उन समस्याओ को भी हल किया जा सकता है जिनका सामना आज विश्व कर रहा है । **कड़ी तपस्या के पश्चात् मिलने वाली स्वतन्त्रता के किसी अंश के बदले में हम इस प्रकार की भौतिक सुविधा को प्राप्त नहीं करना चाहते ।'**

अपनी परराष्ट्र नीति के सम्बन्ध मे खुलासा प्रकाश डालकर पडित नेहरू शान्ति समस्या पर आयें । जो अमेरिका यात्रा में उन्होने सबसे बडी बात कही वह युद्ध के विरुद्ध शान्ति की बात थी । उन्होंने अपने भाषण के अन्तिम भाग मे कहा—

'विश्व शान्ति की रक्षा और मानव स्वतन्त्रता का विकास हमारी पर राष्ट्रनीति का उद्देश्य है । दो दुखान्त युद्धों ने युद्ध की आवश्यकता को बिलकुल समाप्त कर दिया है । शान्ति की रक्षा के बिना विजय बेकार होती

है। ऐसी दशा में विजयी और विजित दोनों भूतकाल के गहरे और दुखदायी घावों तथा समान रूप से भविष्य के भय से चिन्तित रहते हैं। क्या मैं यह कह सकता हूँ कि आज की दुनियाँ के बारे में यह बात गलत नहीं है ? मनुष्य के विवेक और मानवता के लिये यह बात कोई अच्छी बात नहीं है। क्या यह दुखद स्थिति बनी रहनी चाहिये और विज्ञान तथा धन की शक्ति मानव समाज के सर्वनाश के लिये खर्च होनी चाहिये ? प्रत्येक राष्ट्र को चाहे वह बड़ा हो अथवा छोटा इस महत्त्वपूर्ण प्रश्न का उत्तर देना है, जो राष्ट्र जितना बड़ा है, उसकी जिम्मेदारी भी सही उत्तर खोजने के लिये उतनी ही बड़ी है।

'दुनियाँ की राजनीति के लिये भारत क्या हो सकता है और इस युग के शक्तिशाली राष्ट्रों की समता में उसकी सैनिक शक्ति महत्त्वहीन हो सकती है, पर भारत का ज्ञान और अनुभव बहुत पुराना है और जीवन के सघर्षो मे वह ऐसी कई शताब्दियो से निकल चुका है जिनका नामोनिशान भी नही था। और अपने इसे लम्बे इतिहास में सदैव उसने शान्ति का पक्ष लिया है और प्रत्येक प्रार्थना जो भारतीय करता है की समाप्ति निर्मल हृदय में शान्ति की याचना के साथ होती है। प्राचीन भारत जो वर्तमान मे भी युवा है, महात्मा गांधी का अविर्भाव हुआ, जिन्होने हमे कार्य करने की शान्ति प्रणाली की शिक्षा दी। यह प्रणाली वास्तव मे प्रभावकारी थी और इससे हमें न केवल स्वतन्त्रता मिली, बल्कि उनके साथ हमारी मैत्री भी बनी रही जो कल तक हमारे शत्रु थे। यह सिद्धान्त बड़े पैमाने पर कहाँ तक व्यवहार में लाया जा सकता है इसे मै नही जानता। परिस्थितियाँ बदलती रहती हैं, और उनकी बुराई को दूर करने के लिये साधना की शक्ल का निर्धारण तथा उनका उपयोग पैदा हुई बुराई के रूप को देखते हुए करना पडता है।

'इसके बावजूद भी मुझे इसमे लेशमात्र भी सन्देह नहीं हैं कि ऊपर की कार्य प्रणाली के पीछे समस्याओ के सम्बन्ध में आधारभूत दृष्टि है, वह माननीय समस्याओ के सम्बन्ध में सही है और यही समदृष्टि ऐसी है जो अन्ततोगत्वा सन्तोषप्रद ढंग से समस्या को हल करती है। हमें स्वतन्त्रता प्राप्त करनी है और उसकी रक्षा करनी है। हमें आक्रमण का सामना करना है और उनका

प्रतिरोध करना है । उद्देश्य सिद्धि के लिये जिस शक्ति से काम लिया जाय वह पर्याप्त होनी चाहिये । आक्रमण का प्रतिरोध करने की तैयारी करते समय भी हम शान्ति और समझौते के अंतिम उद्देश्य को आँखों से अधिक ओझल न करें । हमारे हृदय और मस्तिष्क इस महान् लक्ष्य के साथ हों और घृणा तथा भय का प्रभाव उन पर न पड़ना चाहिये ।

'हमारी परराष्ट्रनीति का आधार और लक्ष्य यही है, न तो हम वास्तविकता के प्रति अंधे हैं, न मनुष्य की स्वतन्त्रता को दी गयी चुनौती को, चाहे वह चाहे जहाँ से आये, बिना प्रतिरोध के स्वीकार कर सकते हैं । स्वतन्त्रता के खतरे में पडने पर न्याय के संकटापन्न होने पर और आक्रमण होने पर न तो हम तटस्थ रह सकते हैं, न रहेंगे ।

'मुझे पूरा-पूरा यकीन है कि सयुक्त राज्य अमेरिका हमारे जीवन के इस दृष्टिकोण को समझेगा और सराहेगा क्योंकि उसका भी कोई दूसरा लक्ष्य या आदर्श नही हो सकता । इसीलिये सयुक्त राज्य अमेरिका और भारत इन दोनो देशो के बीच मैत्री और पारस्परिक सहयोग स्वाभाविक है । न्याय, स्वतन्त्रता और शान्ति के लिये दोनो देशो के सचेष्ट रहने की घोषणा मैं यहाँ करता हूँ ।'

भाषण के पश्चात् उन्होने राष्ट्रपति ट्रूमन और परराष्ट्र मन्त्री अचेचन से बातचीत की, जिसमें लगभग एक घन्टे का समय लगा । यहाँ नेहरूजी को पत्रकारो ने घेर लिया और उन पर प्रश्नो की बौछार लगा दी । पर पण्डितजी ने उन्हे केवल यही उत्तर देकर टाल दिया—'हमने किसी सम्बन्ध विशेष पर बातचीत नही की ।'

यहाँ पर पडित नेहरू ने मुख्य-मुख्य स्थान देखे—नेशनल गैलरी आफ आर्ट, काग्रेस की लायब्रेरी, ह्वाइट हाउस, वुडरो विलयन लायब्रेरी और निम्न मुख्य-मुख्य लोगो से मिले—

अमेरिका के भ्रमणशील राजदूत श्री फिलिप, श्री विलार्ड थार्प, जार्ज सी० मेघी, श्री लौय हैण्डरसन, जार्ज एफ कैनान श्री एलवर्ट जी मैथ्यूज, कर्नल हैरी मैक्ब्राइड, श्री मैक्गिल, श्री हटिंगनकायरस, श्री इवांक, डेविड मिश्रर्न्स और डा० हौर्स पोलमैन, आदि ।

भ्रमण

पडित जवाहरलाल नेहरू '१५ अक्टूबर १६४६ को अमेरिका के रक्षामन्त्री श्री लुई जानसन के साथ न्यूयार्क चले गये । जब उनका वायुयान हवाई अड्डे पर पहुँचा उस समय वहाँ काफी घना कुहरा छाया हुआ था, मगर तब भी नेहरू जी के स्वागतार्थ वहाँ राजकीय व्यक्ति और भारतीय काफी सख्या मे थे । कुहरा इतना घना था कि वायुयान को आधा घण्टा तक ऊपर ही उडते रहना पडा । उपस्थित व्यक्तियो मे महिलाओ की सख्या अधिक थी ये रग-बिरगी साडियाँ पहिने हुए थी । नेहरू जी ने इन सबका मुस्कराते हुये स्वागत किया ।

हवाई अड्डे पर पत्रकार भी काफी सख्या मे थे जो नेहरू जी से किसी-न-किसी तरह यह जान लेना चाहते थे कि अब उनका झुकाव रूस की ओर है या अमेरिका की ओर है । इस सम्बन्ध मे नेहरू जी ने उनके प्रश्नो का निम्न उत्तर दिया—

'हम पूर्व या पश्चिम के परस्पर विरोधी किसी गुट में सम्मिलित नही होना चाहते । वाशिंगटन में मैंने इस सम्बन्ध में कोई आश्वासन नही दिया है । हमारा लक्ष्य है—जनतान्त्रिक पद्धति से विश्व में शान्ति की स्थापना । हम अन्त तक इसका प्रयास जारी रक्खेंगे ।'

अखबार वालो ने जब अमेरिका के बारे में उनकी राय जाननी चाही तो पडित नेहरू ने कहा—'अमेरिका की प्रतिनिधि सभा में मै भारत का दृष्टिकोण बता चुका हूँ, इस दशा में उठाये गये किसी भी कदम का मै स्वागत करूँगा ।'

पत्रकारो का एक और प्रश्न था, जिसके जरिये वह भारत की रूस के प्रति जो धारणा है उस सम्बन्ध मे जानना चाहते थे । पत्रकारो ने पूछा, 'रूस के पास परमाणु बम होने के समाचार के आधार पर क्या भारत उत्तर पश्चिमी सीमा पर खतरा बढा हुआ समझता है ?' पडित नेहरू ने इसके उत्तर में कहा—'मै ऐसा नही समझता ।'

पत्रकारो से छुट्टी पाकर उन्हे भारतीय दूतावास तक पहुँचाया गया । ६५ वर्दीधारी पुलिस और २५ खुफिया कर्मचारी उनकी सुरक्षा के लिये मार्ग

'न्यूयार्क के सम्मानित अतिथि नेहरू जी ३५ करोड की जनसख्या वाले देश के उच्च अधिकारी हैं। हमारा देश उस महापुरुप के रूप मे इनका आदर करता है, जिसने स्वतन्त्रता के लिये सघर्ष किया। सारा भारत इनका आदर करता है, क्योकि इन्होने अपने सारे व्यक्तिगत स्वार्थ त्याग कर स्वतन्त्रता की लडाई लडी थी। इन्होने महात्मा गाधी के मार्ग पर चलते हुए अपनी आवाज वर्षो तक स्वतन्त्रता के सग्राम के रूप मे जनता तक पहुँचाई। **आज भारत के प्रधानमन्त्री विश्व-शान्ति और न्याय के लिये गांधी जी की आत्मिक देन को लेकर अनवरत प्रयास में लगे है।** गाधी जी के सिद्धान्तो मे आपकी अटूट श्रद्धा है। ऐसा महान् व्यक्ति जो भारत की सस्कृति और उसकी विविध समस्याओ को पूर्ण रूपेण समझता है, प्रथम बार अमेरिका में आगमन हुआ है। हम भारत जैसे महान् राष्ट्र के प्रतिनिधि के रूप में इनका स्वागत करते हैं, अमेरिकी सभ्यता को समझने के लिये न्यूयार्क में हमे उनकी सहायता करनी चाहिये। अभिनन्दन करने के साथ-साथ हमे उन्हे यह विश्वास भी दिलाना चाहिये कि यह राष्ट्र जिसका प्रतिनिधित्व न्यूयार्क नगर की जनता वास्तविक रूप मे यहाँ कर रही है, दुनियाँ के समस्त राष्ट्रो की स्वतन्त्रता के पक्ष में उनके साथ है।

'देवियो और सज्जनो जहाँ हम हैं, वहाँ अनेक महापुरुषो का स्वागत हुआ है। वह व्यक्ति भी हमारे सामने है जिसने विना वलप्रयोग के स्वतन्त्रता प्राप्त करने की शिक्षा दी है। **वह व्यक्ति हमारे सामने है जो इस दुनियां में उस शाश्वत तत्व का प्रतिनिधित्व करता है जो शान्ति प्रदान कर सकता है—न केवल भारत को वरन् विश्व के समस्त राष्ट्रो को।** ऐसे महान् व्यक्ति का स्वागत करते हुए मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है। हम भी वही चाहते हैं जो प्रधान मन्त्री की इच्छा है।

'आने वाली पीढ़ी के लिये हम इस बात की गारन्टी के बिना चैन न लेंगे कि एक दिन यह विश्व शान्तिमयविश्व होगा, जिसमें निवास करने वाले लोग एक दूसरे को समझेंगे। मै प्रधानमन्त्री महोदय का हार्दिक स्वागत करता हूँ।'

पडित जवाहरलाल नेहरू ने स्वागत का उत्तर देते हुए यह आशा की कि विश्व शान्ति और स्वतन्त्रता के निमित्त सयुक्त राष्ट्र अमेरिका और भारत दोनो

देश पारस्परिक सहयोग की भावना से कार्य करेगे ।

१७ अक्तूबर की रात को दस बजे कोलम्बिया विश्व विद्यालय के पदवी-दानोत्सव के अवसर पर पडित नेहरू ने महत्त्वपूर्ण भाषण दिया, यह भाषण भी उनके पहले भाषण की तरह एक ऐतिहासिक भाषण बन गया है ।

दूसरा भाषण

'अध्यक्ष महोदय, आपने जो मुझे 'डाक्टर आफ लाज' की सम्मानित उपाधि देकर सम्मान प्रदान किया है, उसके लिए मैं विश्वविद्यालय और आपके प्रति विशेष कृतज्ञ हूँ । इस विश्वविद्यालय से तथा यहाँ के विद्वानो और सत्यानिवेषियो से सम्बन्ध स्थापित हो जाना मेरे लिए गौरव की बात है, और मैं अपने हृदय में बहुमूल्य निधि की भाति इसे सुरक्षित रक्खूंगा । यह अनोखा सम्मान मुझे एक ऐसे व्यक्ति से मिला है जिसने 'युद्ध तथा शान्ति' दोनो ही में ख्याति प्राप्त की है ।'

उन्होंने बहुत जल्दी ही अपने भाषण के इस भाग को समाप्त करके विश्व-शान्ति की समस्या पर प्रकाश डालना आरम्भ कर दिया । वह बोले—

'पिछली पीढी ने कुछ महान् व्यक्तियो को जन्म तो दिया किन्तु विश्व को विनाश के मार्ग पर ले जाने का कार्य भी उसी ने किया । इस तरह इस पीढी ने समझदारी से कार्य नही किया, और इसी का मूल्य उसे दो महायुद्धो के रूप में चुकाना पडा । यह बहुत बडा मूल्य था, पर दुख की बात यह है कि इतना बडा मूल्य चुकाने के पश्चात् भी हम न तो वास्तविक शान्ति प्राप्त कर सके, न सघर्ष ही बन्द हुआ । उससे भी बडी दुख की बात यह है कि मनुष्य-जाति अपने अनुभव से कोई लाभ नही उठाती और उसी पर निरन्तर बढती रहती है, जिस मार्ग पर चलने के कारण कई बार विनाश हो चुका है ।

'हमने लडाइयां लडी और विजय भी प्राप्त की तथा उसका उत्सव भी मनाया, पर विजय कहते किसे हैं, उसका मापदण्ड क्या है ? यह बात माननी पडेगी कि कुछ लक्ष्यो को प्राप्त करने के हेतु ही युद्ध किया जाता है । शत्रु की पराजय युद्ध का लक्ष्य नही हुआ करता बल्कि यो कहना चाहिये कि लक्ष्य प्राप्ति

की जो बाधा थी वह शत्रु की पराजय से दूर हो पाती है। और यदि शत्रु की पराजय के पश्चात् भी लक्ष्य सिद्धि न होती हो तो सारहीन राहत मिल जाती है, जिसे कोई भी वास्तविक विजय नही कह सकता। पर हम देख रहे हैं कि युद्धो का लक्ष्य प्राय पूर्ण रूप से शत्रु की हार ही होती है। और दूसरा तथा असली उद्देश्य भुला दिया जाता है, जिसका परिणाम होता है कि शत्रु की हार केवल लक्ष्य प्राप्ति में आंशिक होती है और इससे वास्तविक समस्या का समाधान नही होता, और यदि तुरन्त इससे किसी प्रश्न का निपटारा हा भी जाता है तो इससे और कितनी ही तथा कभी-कभी तो और भी बदतर समस्याये खडी हो जाती हैं। इसलिये जरूरत इस बात की है कि असल मशा नजरके सामने हो, फिर चाहे युद्ध का समय हो अथवा शान्ति का और उसे प्राप्त करना ही हमारा उद्देश्य होना चाहिये।

'मै यह बात भी समझा दूँ जिस लक्ष्य को हम सामने रखते हैं उसमे और उसे प्राप्त करने के लिये हम जिन साधनो का उपयोग करते हैं उनमे सदैव निकट का और गहरा सम्बन्ध रहता है। अगर लक्ष्य ठीक भी हो, पर यदि साधन अनुचित हो, तो वे असफल कर देंगे या फिर गलत मार्ग पर भरमा देंगे इस तरह साध्य और साधन दोनो ही घनिष्ठ रूप से परस्पर सम्बन्धित हैं और उनमें मे हम एक को दूसरे से पृथक् नही कर सकते। यह एक पुरानी शिक्षा है जो भूतकाल में अनेक महापुरुषो ने हमे सिखायी है, पर दुर्भाग्यवश हम उसे स्मरण नही रखते।

'इनमें से थोड़े से विचार मै आपके समक्ष उपस्थित करने का साहस करता हूँ, इसलिये नही कि वे नवीन हैं, वरन् इसलिए कि जीवन की उन घडियो में मुझ पर उनका गहरा प्रभाव पड़ा है जो मैने अनवरत सक्रियता और सघर्ष या कारागृह में जबरदस्ती लादे गये अवकाश के समय बिताई हैं। मेरे देश में महान् नेता महात्मा गांधी, जिनके प्रोत्साहन और देखरेख मे मै बडा हुआ, नैतिक पहलू पर सदैव जोर देते रहे और हमें चेतावनी देते रहे कि हम साध्य से कम साधन को न समझें। हम भारतीय उनके योग्य तो न थे, फिर भी हमने अपनी ताकत भर उनके उपदेश पर चलने की कोशिश की। यद्यपि आंशिक रूप से ही हम

उनकी शिक्षा का अनुसरण कर सके, फिर भी हमने उससे अच्छा लाभ उठाया। एक महान् और शक्तिशाली राष्ट्र से एक पीढी तक जोरो से सघर्ष करने के पश्चात् हमने सफलता पाई और उस सफलता का कदाचित सबसे महत्त्वपूर्ण भाग, जिसका श्रेय दोनो ही पक्षो को दिया जाना चाहिये, वह उपाय है जिससे सफलता मिली। इतिहास में ऐसा उदाहरण शायद ही मिले, जब ऐसे संघर्ष का इस तरह शान्ति पूर्वक निपटारा हुआ हो और उसके पश्चात् दोनो के बीच मित्रतापूर्ण सहयोग स्थापित हो गया हो। यह बात विस्मयकारी है कि इन दो राष्ट्रो के बीच सारी कटुता और दुर्भावना किस प्रकार तेजी से दूर हो गई और उसका स्थान सहयोग की भावना ने ग्रहण कर लिया और हमने बिल्कुल अपनी इच्छा से यह सहयोग स्वतन्त्र राष्ट्र के रूप में भी चालू करने का निश्चय किया है।

'अन्य राष्ट्रो को जो अधिक अनुभवी भी हैं, किसी प्रकार का उपदेश देने की मेरी इच्छा नही है, पर क्या मैं आपके विचारार्थ कुछ सुझाव रख सकता हूँ कि भारत की शान्तिमय क्रान्ति से ऐसी शिक्षा ग्रहण की जा सकती है जो विश्व के समक्ष उपस्थित अधिक बडे प्रश्नो पर भी लागू हो सके। इस क्रान्ति ने हमें पाठ पढाया है कि शस्त्र बल से ही मनुष्य के भाग्य का निर्णय हो यह आवश्यक नही हैं और यह भी कि सघर्ष करने के ढंग और उसके समाप्त करने का भी महत्त्व है। पुराने इतिहास से पता चलता है कि शस्त्र बल का बडा प्रभाव रहा है, किन्तु वह यह भी बतलाता है कि यह शस्त्र बल अन्तोगत्वा विश्व के नैतिक प्रभाव को नही भुला सकता, और यदि वह ऐसा करने की कोशिश करता है तो फिर वह स्वय अपने ही ऊपर आघात करता है।

'आज यह समस्या हमारे समक्ष बडे गम्भीर रूप से है, क्योकि पशु शक्ति के पास जो साधन हैं, उनकी कल्पना करना भी भयावह है। क्या प्रारम्भिक बर्बरता और इस बीसवी सदी की बर्बरता में इतना ही अन्तर है कि मनुष्य की प्रतिभा ने जन-धन को नष्ट करने के लिए जो शस्त्रा-शस्त्र तैयार किये हैं, वे विनाशकारी प्रभाव में अधिक बढे हुए है? अपने गुरु की शिक्षा के अनुसार मेरा तो विश्वास है कि इस स्थिति का मुकाबिला करने और हमारे सामने जो

समस्या है उसके समाधान करने का दूसरा मार्ग भी है ।

'मै समझता हूँ कि किसी भी राष्ट्र नायक के लिये या उसके लिए जिसे सार्वजनिक समस्या पर सोचना पड़ता है, वस्तुस्थिति की उपेक्षा करना और उससे असम्बद्ध सत्य के आधार पर कार्य करना सम्भव नही है,.उसकी सक्रियता सदैव उसके साथियो की सत्यता पर निर्भर रहती है। परन्तु फिर भी मूल सत्य तो सत्य ही बना रहता है, वह कभी आखो से ओझल नही किया जा सकता और जहाँ तक सम्भव हो उसका ' अनुसरण हमे अपने कार्यो मे करना चाहिये। ऐसा न करने पर हम बुराई के ऐसे जाल में फँस जाते हैं जब एक अनुचित काम दूसरे अनुचित काम का कारण बनता जाता है।

'भारत प्राचीन देश है, जिसका अतीत भी महान् है, पर यह नई प्रेरणाओ को और नई महत्त्वाकाक्षाओ वाला राष्ट्र भी है। अगस्त १९४७ से ही वह अपनी स्वतन्त्र परराष्ट्र नीति पर चल रहा है। स्थिती की उस यथार्थता से वह भी सीमित है जिनको न हम भुला सकते हैं न जिस पर विजय पा सकते हैं। ऐसा होने पर भी भारत अपने महान नेता की शिक्षा को नही भुला सकता। उसने वस्तु स्थिति के साथ उसका सामजस्य स्थापित करने की चेष्टा की हैं। भले ही इसमें उसे अधिक कामयाबी न मिली हो। राष्ट्रो के परिवार में उसने हाल में ही प्रवेश किया था, इसलिये आरम्भ में उसका प्रभाव कम पड़ा; किन्तु फिर भी उसे एक विशेष सुविधा प्राप्त है जो उसका प्रभाव बढा देगी। एक बडी सुविधा इस बात में भी कि वह अतीत से नहीं बँधा था, पुरानी शत्रुताओ या पुराने बन्धनो में नही जकडा था और न ऐतिहासिक दावो या परम्परागत प्रतियोगताओ से ही प्रभावित था। यहाँ तक कि अपने पुराने शासको के प्रति भी उसके मन में कोई कटुता नही बची थी।

'इस तरह भारत ने विना किसी प्रकार की पूर्व दुर्भावना या शत्रुभाव के राष्ट्रमडल को स्वीकार कर लिया, वह प्रत्येक का स्वागत करने को तैयार था और उसकी इच्छा थी कि अमेरिकी इसी प्रकार उसका स्वागत करें। यह तो निश्चित था कि वह अपनी विदेश नीति पर उच्च आत्म-हित की दृष्टि से विचार करे पर साथ ही ऐसा करते समय उसने इसमें अपने आशीर्वाद की भी पुट दे

दी। इस तरह उसने राष्ट्रीय हित के साथ आदर्शवाद का समन्वय करने की चेष्टा की है। उस नीति के मुख्य लक्ष्य ये हैं—

(१) शान्ति का अनुगमन, किसी बड़ी शक्ति या समूह के साथ गुटबन्दी करके नही, वरन् प्रत्येक विवादग्रस्त प्रश्न पर स्वतन्त्र दृष्टिकोण से विचार करें।

(२) पराधीन राष्ट्रो को उनकी स्वतन्त्रता वापिस दिलवाना।

(३) स्वतन्त्रता की राष्ट्रीय और व्यक्तिगत स्वतन्त्रता, दोनो की रक्षा करना।

(४) जातिगत द्वेष-भाव दूर करना।

(५) वस्तुओ का अभाव, रोग एव अज्ञान को दूर करना, जिससे विश्व की जनसख्या का एक बडा भाग पीडित है।

'प्राय मुझ से लोग पूछा करते हैं कि भारत किसी एक राष्ट्र या राष्ट्रसमूह से गठबन्धन क्यो नही कर लेता, और प्राय वह वताया करते हैं कि हमें ऐसा अवश्य करना चाहिये, इसी में भारत का लाभ है। पर हमने ऐसा नही किया, इसी से अभी तक हम दुविधा की स्थित में पडे हुये हैं। यह प्रश्न भी सरलता से समझ में आ जाता है और इसका उत्तर भी। क्योकि सकट के समय डरे हुये लोगो का यह समझ लेना कठिन वात नही कि ऐसे समय दूसरो का शान्तिभाव से प्रथक बने रहना, गैर जिम्मेदाराना, अदूर दर्शिता पूर्ण, सारहीन, वस्तु स्थिति के विपरीत यहाँ तक कि अपुरोचित होना भी कहा जा सकता है।

भारत ने जिस नीति पर चलने का निश्चय किया है, वह निषेधात्मक या तटस्थता की नीति नही हैं। वह ठोस और अत्यन्त आवश्यक नीति है जो हमारे स्वातन्त्र्य सग्राम और महात्मा गाधी की शिक्षाओ से नि सृत हुई है। भारत के लिये ही शान्ति आवश्यक नही है, जिससे वह उन्नति कर सके और इसका विकास हो सके वल्कि सारे विश्व के लिये इसकी आवश्यकता है।

'अव प्रश्न उठता है कि ऐसी शान्ति वनाये रखना कैसे सम्भव है। आक्रमणकारी के आगे सिर झुका देने से या अन्याय और वुराई से समझौता कर लेने से इनकी रक्षा तो हो नही सकती, पर इसके साथ ही तरह-तरह की असंगत

बाते करने और युद्ध की तैयारी करते रहने से भी हम उसे नही बचा सकते। आक्रमण का मुकाविला तो करना ही होगा, क्योकि आक्रमण से शान्ति सकट मे पड जाती है, उसके लिये खतरा पैदा हो जाता है। इसके साथ ही हमें गत दो महायुद्धो का पाठ भी स्मरण रखना होगा और यह बात तो वास्तव मे बडी विस्मयकारी लगती है कि इस सबके पश्चात् भी हम फिर उसी मार्ग पर चल रहे हैं। दो शत्रुता पूर्ण शिवरो मे दुनिया के बटवारे का प्रयत्न अपने आप ही युद्ध को पास ले आता है। जिसे बचाने का इरादा किया जाता है, उससे उत्कट भावना पैदा हो जाती है और यह भावना मनुष्यो के मन को ढाप लेती है तथा उन्हे गलत मार्गो पर ले जाती है। जीवन मे और कोई भावना सम्भवतः इतनी बुरी और इतनी खतरनाक नही होती जितनी भय की भावना होती है। जैसा कि अमेरिका के एक महान राष्ट्रपति ने कहा था—

'भय को छोडकर वास्तव मे और कोई चीज ऐसी नही जिससे डरना लाजिमी हो।'

'हमारी समस्या ऐसी दशा मे डर की इस भावना को घटाना और अन्त मे उसे मिटा देना है। यदि विश्व के समस्त राष्ट्र दलबन्दी मे पड जायँ और युद्ध की बाते करते रहे तो यह सम्भव नही है। ऐसी दशा मे युद्ध का छिड जाना आवश्यक हो जाता है।'

'भारत भी राष्ट्रो के परिवार का सदस्य है और हमारा लक्ष्य सदस्यता के आवश्यक कर्तव्यो या जिम्मेदारियो के भार को उठाने से मुँह मोडने का नही है। सयुक्त राष्ट्र सघ का सदस्य होने के कारण हमने सम्पूर्ण जिम्मेदारियाँ स्वीकार कर ली हैं। हमारी अभिलाषा है हम उन्हे पूरा करे। सामान्य संग्रह में हम अपना पूरा भाग देना चाहते हैं और अपनी ताकत भर सेवा करना चाहते है, पर यह कार्य हम अपने ढग से और अपनी इच्छा के अनुसार ही सरलता से कर सकते हैं।

'लोकतन्त्र प्रणाली में हमारा गहरा विश्वास है और हम प्रयत्न कर रहे हैं कि राजनीतिक तथा आर्थिक दोनो ही क्षेत्रो में लोकतन्त्र की सीमा का विस्तार कर दिया जाय, क्योकि अभाव, निर्धनता और विषमता में कोई भी लोकतन्त्र

अधिक समय तक टिक नही सकता। हमारी तुरत की आवश्यकता अपने देश वासियो को आर्थिक स्थिति मे सुधार करना तथा उनके जीवन के स्तर को उठाना है। इस कार्य मे हम जितने अधिक सफल होगे, उतनी ही अधिक सेवा हम विश्वशांति के लिये कर सकेगे।

'अपनी त्रुटियो और दोषो की हमें पूरी जानकारी है, हम किसी से अच्छा बनने का दावा तो नही करते, पर दलवन्दी से दूर रहकर हमे जो सुविधाएँ मिली हुई हैं, उन्हे भी तो खोना नही चाहते, हमारा विश्वास है कि हम अलग रहने की अपनी इस नीति पर कायम रहते हैं, तो इसमे केवल हमारी ही भलाई नही है, वरन् ससार की शक्ति और स्वतन्त्रता की भी इससे भलाई है। दलवन्दी से इस तरह दूर रहने का यह अर्थ कदापि नही कि जब शान्ति और स्वतन्त्रता के लिये खतरा पैदा हो जाय तब भी हम अपने देश को प्रथक रखना चाहेगे, न यह हमारी उदासीनता है न तटस्थता है। जब मनुष्य की शान्ति या स्वतन्त्रता खतरे में होगी, तब हम तटस्थ नही रह सकते न रहेगे। उस समय भी तटस्थ बने रहना हमारे लिये उन सिद्धान्तो के साथ विश्वासघात करने जैसा होगा, जिनके लिये हम सदैव से प्रयत्नशील रहे है, और जिनके हम समर्थक है। अगर हमारा लक्ष्य शान्ति भंग न होने देना हो तो हमें युद्ध के मूल कारणो पर प्रहार करना होगा, उसके वाह्य-चिह्नो पर नहीं। एशिया के बडे-बडे भू-भागो पर अभी तक विदेशियो का कब्जा रहा है, जिसमें यूरोप उल्लेखनीय है। हम स्वय पाकिस्तान और वर्मा भी ब्रिटिश साम्राज्यवाद के अग थे। इगलैंड और पुर्तगाल के अधीन अब भी ऐसे क्षेत्र हैं, जिन पर वह शासन करते हैं, पर राष्ट्रवाद और स्वतन्त्रता की लहर ने एशिया के कितने ही साम्राज्यवादियो को हिला रक्खा है। मुझे आशा है हिन्देशिया में शीघ्र ही सार्वभौमिक स्वतन्त्र राज्य की स्थापना होगी। हमें यह भी पूरी आशा है कि फ्रेंच-हिन्द-चीन भी बिना देर किये अपनी सलाह के अनुसार स्वतन्त्रता और शक्ति प्राप्त कर लेगा, पर अफ्रीका का अधिकाश भाग तो आज भी विदेशी राष्ट्रो के आधीन है, और वहाँ के लोग भी स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिये सघर्ष कर रहे हैं। या यो कह लीजिये कि अब समय आ गया है जब साम्राज्यवाद और उपनिवेशवाद के चिह्न तक मिट जायेंगे।

'जाति भेद भी युद्ध का दूसरा कारण है। ज्ञान मे दूसरी जातियो ने जो थोड़ी-बहुत उन्नति कर ली है, उससे उन लोगो मे यह गलतफहमी आ गई है कि वह अन्य लोगो से श्रेष्ठ हैं। इस गलतफहमी की धारणावश ऐसे लोग दूसरे लोगो से घृणा करने लगते हैं। इसके उदाहरण मे यहूदियो को नष्ट करनेवाली वह रोमाँचकारी घटना बताई जा सकती है, जो बहुत कुछ सफल भी हुई थी। अफ्रीका और एशिया में भी जातिगत श्रेष्ठता का भाव खुलम-खुल्ला बडी उदडता से प्रचारित किया जा रहा है। यह बात भुला दी गई है कि मनुष्य-जाति के सभी बड़े-बड़े धर्मों का जन्म पूर्व में ही हुआ है। और ऐसे समय पूर्व मे चमत्कारिक सभ्यता का उदय हुआ जब अमेरिका और इगलैंड का पता तक न चला था। पश्चिम ने एशिया तथा अफ्रीका को बराबरी के अधिकार नही दिये, और कितने ही स्थानो मे तो आज तक नही दे रहे हैं, बल्कि यहाँ तक होता है कि उन लोगो के साथ मनुष्यता और दयालुता तक का व्यवहार नही होता है। आज की दुनियाँ के लिये यह खतरे की बात है, क्योकि आज एशिया और अफ्रीका अपनी सुस्ती त्याग रहे हैं, और उनकी नीद खुल चुकी है, अतएव इस बुराई से ऐसी आग भड़क सकती है, कि क्या हो जायगा नही कहा जा सकता। आपके सबसे महान् व्यक्तियो मे से एक का ही तो यह वचन है कि—'यह देश आधा गुलाम और आधा स्वतन्त्र नही रह सकता।' अगर आधी दुनिया को गुलाम बनाकर रखा गया या उसकी अवहेलना की गई तो शान्ति अधिक दिन तक स्थायी नही रह सकती। यह प्रश्न सदैव सरल नही और इसका समाधान क्रान्ति से या विशेष आदेश से ही सम्भव है, किन्तु जब तक उसे हल करने का दृढ और सच्चा निश्चय न हो, तब तक स्थायी शान्ति स्थापित हो ही नही सकती।

'लोगो के कष्ट और अभाव भी युद्ध का तीसरा कारण है, विशेषकर एशिया और अफ्रीका के करोड़ो लोगो का उल्लेख किया जा सकता है। पश्चिम में यद्यपि युद्ध ने अनेको विपत्तियाँ उत्पन्न कर दी हैं, फिर भी आम तौर से लोग आराम का जीवन व्यतीत करते हैं, उनके पास भोजन, वस्त्र, और कुछ हद तक मकान भी मौजूद हैं।

'अतएव पूर्व की मूल समस्या जीवन की इन आवश्यक वस्तुओ की प्राप्ति ही है। यदि इनकी कभी भी कमी हो जाय तो आशा निराशा में पलट जाया करती है या फिर क्रान्तिकारी बनने की विनाशक प्रतियोगिता आरम्भ हो जाती है। राजनैतिक स्वतन्त्रता, जातिगत असमानता, आर्थिक विपमता तथा कष्ट— यही वे रुकावटे हैं जिन्हे हमें दूर करना है, यदि हम निश्चित रूप से शान्ति चाहते हो। और यदि हमने इसका कोई उपाय न किया तो निश्चय ही अन्य घोषणाएँ और नारे जनता का मन अपनी ओर आकर्पित कर लेगे।

'राष्ट्र परिवार के सदस्य एशिया के बहुत से देश बन चुके हैं, और अफ्रीका के देशो के बारे में भी हमे ऐसी ही आशाएँ हैं। यह प्रक्रिया शीघ्रता से होनी चाहिये और इसे सरल बनाने के लिए अमेरिका तथा योरोप को पहल करनी चाहिये। हम अपनी आँखो के समक्ष विशाल परिवर्तन होता देख रहे हैं, केवल राजनैतिक और आर्थिक क्षेत्रो के लिये ही नही, वरन् इससे भी अधिक एशिया के नागरिको के मन में जो उन्नति के लिये और अपने विशाल जन-समुदाय का स्तर ऊपर उठाने के लिये उत्सुक है। इससे महाद्वीप की जागृति मानव जाति के लिये बड़ी महत्त्वपूर्ण है। और इसके लिये बडे ऊँचे दर्जे की कल्पनाशील राज-नीतिज्ञता आवश्यक है। इस जागृति की समस्याएँ हल नही हो सकेंगी यदि हम उन्हे भय के दृष्टिकोण से देखेंगे या अलग होने के भाव से देखें। हमें उन्हें मित्रता और समझदारी से समझना होगा, अपने सामने स्पष्ट लक्ष्य रखना होगा और मिलकर रहना होगा और मिल-जुलकर अपने सम्मान की चेष्टा करनी होगी। शस्त्रास्त्रो की वृद्धि के लिये जो भारी फिजूल खर्ची कितने ही राष्ट्र कर रहे हैं, वह शान्ति का सही हल नही है। यदि इस फिजूल खर्ची का एक भाग किसी अन्य उपयोगी काम पर खर्च किया जाय तो शायद उससे लाभ हो और वह अधिक स्थायी शान्ति के लिये काम आ सके।

'मेरी यही सम्मति है जो समझदार स्त्री-पुरुषो तथा सद्भावना-प्रेरित सभी व्यक्तियो के समक्ष उस मानवता के नाम पर प्रस्तुत की जा सकती है, जिसमें हम सब समान रूप से सम्मिलित हैं। यह दृष्टिकोण किसी इच्छा विशेष पर आधारित नहीं वरन् उन घटनाओ के गम्भीर अध्ययन के आधार पर आधारित

हैं जो हमे परेशान कर रही हैं, और उसकी भलाई के लिये ही मै इसे आपके सामने उपस्थित कर रहा हूँ ।'

व्यापार

कोलम्बिया विश्व विद्यालय के पदवी दानोत्सव के दूसरे दिन ही नेहरू जी के सम्मान मे एक भोज दिया गया, जिसमे सभी वर्गो के व्यक्ति सम्मिलित थे। जिसमे नेहरू जी से कई प्रश्न पूछे गये जिनमें दो प्रश्न मुख्य थे—

(१) अगर भारत के विकास कार्यो मे वडे पैमाने पर अमेरिकन पूँजी लगाई जाय तो क्या पुरानी तरह के औपनिवेशिक साम्राज्यवाद के सकट को दूर रखा जा सकेगा ?

(२) भारत के साथ अमेरिका किस प्रकार सहयोग कर सकता है ?

पडित नेहरू ने प्रथम प्रश्न के उत्तर मे कहा—'भारत की साधारण योजनाओ मे हस्तक्षेप किये विना अमेरिकन पूँजी लगाने की व्यवस्था करना कठिन कार्य नही होगा। मै इसमें आर्थिक साम्राज्य का सकट रही देखता। यह प्रश्न भारतीय जनता के मस्तिष्क में भी खूब चक्कर काट रहा है। और ऐसा इसलिये नही है कि इसमें कोई खतरा है, वल्कि इसलिए कि भारत भूतकाल के अनुभव को भुला नही सका है।'

अगले प्रश्न के उत्तर में पडित जवाहरलाल ने कहा—

'भारत से सहयोग करने का एक मात्र मार्ग यह है कि उसे काफी मात्रा में गैहूँ दिया जाय।'

पडित जवाहरलाल ने यहाँ एक सक्षिप्त-सा भाषण भी दिया जिसमें उन्होने कहा—

'हम अपनी भौगोलिक और ऐतिहासिक स्थिति को नही भुला सकते, प्रायः यह एक वोझ के ही समान है पर फिर भी इसकी उपेक्षा नही की जा सकती।

'एशिया की स्थिति असाधारण नही है, न विद्रोह की सी है, पर इस महाद्वीप में वडी तेजी के साथ परिवर्तन हो रहा है। इस महाद्वीप की सवसे प्रवल जो समस्या है वह भूमि की है।

'एशिया में राष्ट्रवाद आज भी प्रारम्भिक दशा मे है, उसकी राष्ट्रवादी भावना सर्वोपरि महत्ता की है।'

उन्होने अपने भाषण मे आगे चलकर कहा—'पर एशिया आज उपनिवेश के चक्कर से मुक्त हो रहा है, और इस तरह वह विश्व की समस्या मे एक महत्त्वपूर्ण योग देने वाला है। आज उसकी दशा शक्ति के सचय के विकास की-सी है, उसकी भावना दृढ है। हो सकता है दृढता की इस भावना के कारण कुछ गलतियाँ भी हो जायँ, पर मेरी दृष्टि से कमजोरी से यह अधिक अच्छी स्थिति है, भले ही उसके कारण चाहे गलतियाँ क्यो न हो। जहाँ तक इन दोनों देशो भारत और अमेरिका के सहयोग का प्रश्न है, मै समझता हूँ इसके लिये दोनो देशो मे एक दूसरे को समझने और उसके सहयोग की पूरी इच्छा होनी चाहिये।' ✓

कनाडा की राजधानी

कनाडा की राजधानी में २४ अक्टूबर को उनका एक भाषण और हुआ, जिसमे कनाडा की ससद के दोनों सदनो के सदस्य उपस्थित थे। आपने कहा—

'मुझे प्रसन्नता है कि मै इस उपनिवेश की राजधानी मे हूँ, और भारत की जनता की शुभ कामनाएं आपके लिये लाया हूँ। अत्यन्त महत्त्वपूर्ण मामलो के सम्बन्ध में आपके प्रधानमन्त्री श्री सेंट लारेंस और विदेशमन्त्री श्री पियर्सन से लगभग बारह महीने से विचार-विमर्श वार्ता चल रही है। हमें अनेक कठिन और दुरूह समस्याओ पर विचार करना पडा। मैं कोई भेद प्रकट नही कर रहा कि अनेक मामलो में भारत और कनाडा के विचार एक से रहे हैं या एक रहे हैं।'

अपने इसी भाषण में उन्होने एक जगह कहा—'कुछ वर्ष पूर्व भारतीय राष्ट्रवाद और ब्रिटिश साम्राज्यवाद आपस में संघर्ष रत थे, जिनके कारण दुर्भावना, सन्देह और कटुता फैली। हालाकि यह विदेशी प्रभुता के विरुद्ध किसी भी राष्ट्रवादी सघर्ष से पैदा हुई दुर्भावना से काफी कम थी, क्योंकि हमारे संघर्ष के साथ हमारे नेता महात्मा गांधी की शिक्षा थी। भला उन समय जिसने यह

बात सोची थी कि यह दुर्भावना और कटुता की भावना इतनी तेजी से मिट जायगी, और उसका स्थान समान और स्वतन्त्र राष्ट्रों के बीच मित्रतापूर्ण सहयोग का प्राप्त होना होगा। यह ऐसी समस्या है जिसके लिए सम्बन्धित सभी लोगो को श्रेय है। यह कठिन समस्याओं के शान्तिपूर्ण हल का अतुलनीय उदाहरण है। और मेरी समझ से यही वास्तविक हल है, क्योकि इससे नई समस्याएँ पैदा नही होती। शेष विश्व इस उदाहरण से यदि चाहे तो लाभ उठा सकता है।'

दोनो देशो की भोगोलिक सीमाओ का जिकर करने के बाद पडित नेहरू ने कहा—'आज की दुनियां मे न तो आप, न हम विचारो की दृष्टि से पूरे राष्ट्रवादी या यूरोपीय अथवा एशियाई नही बने रह सकते हैं। इस नजर से दुनिया सीमित हो गई है। अगर हम एक दूसरे से सहयोग नही करते और शान्ति से नही रहते तो हम एक दूसरे पर टूट पडते हैं और एक दूसरे का गला दबोचने लगते हैं।'

एशिया की स्थिति के बारे में उन्होंने इस भाषण में भी स्पष्ट रूप से कहा—'एशिया, जो महाद्वीपो की जननी है, और जिसकी गोद मे इतिहास का एक बडा भाग फला फूला है, आज फिर से जाग रहा है, इसकी नव जागृति स्वतन्त्रता की रफ्तार अत्यधिक तेज है क्योकि गत दो शताब्दियो से इसकी प्रगति रोकी गई, अतएव झुंझलाहट अधिक रही। नई शक्तियाँ जाग उठी हैं। राजनीतिक स्वतन्त्रता खोने वाली ये शक्तियाँ तत्त्वतः राष्ट्रवादी रही हैं। जनता की आर्थिक दशा को सुधारने की इनकी प्रबल इच्छा रही। जहाँ राष्ट्रवाद का अवरोध हुआ, वही सघर्ष हुआ—जैसा कि आज वहाँ आप देख रहे हैं, और उसे दबाया भी जा रहा है उदाहरण के लिये दक्षिण पूर्वी एशिया को ले लीजिये। दक्षिण पूर्वी एशिया की वर्तमान अस्थिर स्थिति को आदर्शमय समझना बडी महानतम भूल होगी। विश्व के इस बडे भाग और वास्तव मे एशिया के अधिकतर भाग में वर्तमान परेशानियाँ और असन्तोष अवरुद्ध स्वतन्त्रता और गहरी गरीबी का प्रतिफल है। स्वतन्त्रता के सघर्ष को सफल गति देना और गरीबी को दूर करना ही परेशानियो और असन्तोप को दूर करने का उपाय है। यदि ऐसा हो गया तो निश्चय ही एशिया स्थायी शान्ति देने का कारण

बन जाएगा। **एशिया का दर्शन ही शान्ति का दर्शन है, और रहा है।**

'एशिया की दशा का एक अन्य दूसरा पहलू भी है, जिसका उल्लेख आवश्यकीय है। **एशिया मे दीखने वाला विद्रोह पश्चिम के कुछ राष्ट्रों के दम्भ के विरुद्ध प्राचीन और स्वाभिमानी लोगों की जायज चेष्टा है। कुछ देशों म जाति गति भेद-भाव अब भी दिखाई देता है और अखिल विश्व संघठनों में एशिया के मूल्य को आज भी पूरा-पूरा महसूस नहीं किया जा रहा है।**

'भारत एशिया और अफ्रीका की स्वतन्त्रता की माँग की जो वकालत कर रहा है, वह भूगोल और इतिहास के तत्वों की स्वाभाविक माँग है। भारत किसी देश के नेतृत्व या उस पर अधिकार अथवा प्रभुत्व का भूखा नही है। पर एशिया और विश्व में अपना पार्ट निभाने के लिए हमें परिस्थितियो ने वाध्य कर दिया है। क्योंकि हमारा यह विश्वास है कि जब तक एशिया की आधारभूत समस्याएँ हल नही हो जाती तब तक विश्व शान्ति सम्भव नही है। लोकतन्त्र की अपनी परम्पराओ और ज्ञान के आधार पर कनाडा में हमारे उद्देश्यो और भावनाओ को समझने की शक्ति होनी चाहिए। स्वतन्त्रता क्षितिज का विस्तार करने, सुव्यवस्था और स्वतन्त्रता को अग्रसर करने तथा अभाव को कम करने एव इस प्रकार स्थायी शान्ति को दृढ़ करने में अपनी वढती हुई सम्पत्ति और शक्ति का उपयोग करना चाहिये।'

पडित नेहरू ने स्पष्ट कह दिया—'यदि दूसरे देशो में शान्ति न हो, किसी देश में शान्ति सुनिश्चित नही हो सकती। इस तग और छोटी होने वाली दुनियां मे युद्ध, शान्ति और स्वतन्त्रता अविभाज्य हो रही है।'

और शान्ति की गारण्टी कव तथा कैसे मिल सकती है, इस सम्बन्ध में उन्होने अपने इसी भाषण में आगे चलकर कहा—'यदि दुनियां के विभिन्न **भागो में बहुत वड़ी संख्या में लोग गरीवी और दीनता से घिरे रहेंगे तो शान्ति की कोई गारण्टी नहीं हो सकती।** और अखिल विश्व के लिए तब तक कोई निश्चित अर्थ व्यवस्था भी नही हो सकती जब तक पिछडे देश इसके सन्तुलन को विगाडने के लिए बने रहते हैं। इसलिए आर्थिक और राजनैतिक दोनो कारणो से यह आवश्यक हो गया है कि इन पिछडे देशो की उन्नति की ओर

श्रौर वहाँ के निवासियो के जीवन स्तर को ऊँचा उठाया जाय। इन क्षेत्रो के शिल्प-विकास श्रौर उद्योगीकरण से उन देशों को किसी प्रकार का नुकसान नही पहुँचेगा जो श्रौद्योगिक दृष्टि से काफी ऊँचे उठे हुए हैं। जितने अधिक देश जितनी अधिक सामग्री पैदा करेंगे, मानव जाति की उतनी ही अधिक सेवा करेंगे, अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार उतना ही अधिक बढ़ेगा। हमारे उद्योगीकरण का प्रमुख सामाजिक उद्देश्य अपने देश की बहुसख्यक जनता की आवश्यकता पूरी करना है।

'आज के जिस युग मे हम रह रहे हैं उसे आणुविक युग कहा गया है। शक्ति के नये बड़े स्रोतो का पता लगाया जा रहा है, पर मानव जाति की सेवा श्रौर उसकी उन्नति की बजाय लोगो के दिमाग ध्वसात्मक उद्देश्यो की श्रोर दौड़ते हैं। युद्ध के इन नये श्रौर भयावह शस्त्रास्त्रो द्वारा ध्वस सभी सम्बन्धित लोगो को अतुलनीय बरबादी की श्रोर ले जायेगा। परन्तु लोग फिर भी युद्ध के बारे मे बड़ी सरलता से बाते करते हैं, इसकी तैयारी में अपना मस्तिष्क श्रौर शक्ति खपाते हैं। अभी उस दिन एक प्रमुख अमेरिकन ने कहा था—'कुछ कीड़े-मकोडो से छुटकारा पाने के लिए घर मे आग लगाने के लिए अणुबम के प्रयोग की इच्छा की जा सकती है।

'इसमे कोई सन्देह नही कि हमारे सिर पर संकट मडरा रहा है। उससे हमें सचेत रहना चाहिये, श्रौर सभी आवश्यक सुरक्षात्मक कार्रवाहियाँ की जानी चाहिये। पर हमे सदैव स्मरण रखना होगा कि मानव प्रगति की सेवा करने या उसकी रक्षा करने का उपाय उसके मकान या सामग्री को नष्ट-भ्रष्ट करना नही हैं।

'इस तरह विश्व शान्ति को बनाये रखने तथा अपने मस्तिष्क श्रौर बुद्धि को उस श्रोर ले जाने का कार्य महत्त्वपूर्ण हो जाता है। हम सबके सब शान्ति की बाते करते हैं, श्रौर उसकी इच्छा भी प्रकट करते हैं, पर क्या हम सच्चाई श्रौर श्रम के साथ इसके लिये प्रयत्नशील हैं? जब भारत का स्वतन्त्रता का सग्राम चालू था, तब भी हमें गाँधी जी ने शान्ति का मार्ग बताया। अखिल विश्व के सम्बन्ध में भी हमे परिस्थिति के अनुसार इस मार्ग

को अपनाना चाहिये । मुझे विश्वास है कि भारत की नाई कनाडा भी हृदय से शान्ति बनाये रखने के पक्ष मे है । दोनो ही देश लोकतन्त्र और लोकतान्त्रिक ढगो एवं व्यक्तिगत और राष्ट्रीय स्वतन्त्रता मे विश्वास रखते है । अतएव अन्तर्राष्ट्रीय मामलो में भी हमारे उद्देश्य समान हैं और अब तक इन सहयोगो को पूर्ण करने में हमारे सामने कोई कठिनाई नही दिखाई दी है । मै यहाँ कनाडा की सरकार और जनता को यह विश्वास दिलाने आया हूँ कि अपने सहयोग से उपर्युक्त उद्देश्यो की पूर्ति के लिये काम करने की हमारी हार्दिक इच्छा है । पूर्व और पश्चिम के सम्बन्ध मे हमारे मस्तिष्क में जो भेद बने हैं, वे व्यर्थ हैं, उनमे कोई सार नही है, और सब एक ही महान उद्योग मे समान रूप से साझीदार हैं । मुझे इसमें तनिक भी सन्देह नही कि उन खतरो के बावजूद जो आज दुनियाँ को हिला रहे हैं, मानव कल्याण के लिये रचनात्मक एव सहकारी कोशिशे करने वाली शक्तियाँ सफल होगी और मनुष्य की आत्मा विजयी होगी ।'

हम अपनी पुस्तक के प्रथम अध्याय में कह चुके हैं कि प्रथम और द्वितीय महायुद्धो का पडित नेहरू के हृदय पर अत्यधिक बुरा प्रभाव पडा था । शिकागो विश्व विद्यालय मे भाषण करते हुए उन्होने दूसरे महायुद्ध से पैदा हुए सकट की ओर इशारा करते हुए कहा—

'क्या मैं आपको स्मरण दिला सकता हू कि बहुत अधिक दिन नही हुए, ६ वर्ष पूर्व सन् १९४३ मे जब कि युद्ध हो रहा था, बगाल में भयानक अकाल पड़ा था ? आपको सम्भवत. स्मरण होगा कि उस समय केवल भूख से तडप-तडप कर तीस लाख आदमी बगाल मे मर गये थे । अकाल के अनेक कारण थे, लेकिन इस अर्थ मे उसका सीधा सम्बन्ध युद्ध से रहा कि जनता पर पडने-वाले प्रभाव पर ध्यान दिये बिना भारत के सारे साधन युद्ध में झोक दिये गये । जीवन निर्वाह की अत्यधिक आवश्यक वस्तुएँ भी छीन ली गई और इस तरह अचानक लोग कगाल हो गये । फसल भी अच्छी नहीं हुई थी । और इस तरह जीवित रहने के साधन समाप्त हो गये । लोग मक्खियो की तरह मर गये । लोकतान्त्रिक सरकार इच्छा रहते हुए भी उपर्युक्त परिस्थिति का सामना नहीं कर सकती थी । उस सरकार को पद त्याग करना पडता और नई सरकार

है। वरन् इसका कारण है जो गन्ध हमें अमेरिका मे दिए गए भाषणो मे तब आती थी, आज वह यौवन के द्वार पर है, अतएव हमे आरम्भ की कुछ साधारण गन्ध को भी नही भुला देना चाहिये, क्योकि यदि अकुरो की ओर ध्यान नही दिया जायेगा तो वृक्ष पनपेगा ही क्योकर ?

तृतीय अध्याय

कोरिया के युद्ध का ऐतिहासिक महत्त्व

लाल फौज के साथ ब्रिटेन और अमेरिकन फौज भी सम्मिलित थी। ब्रिटेन की सेनाएँ तो अपने औपनिवेशिक राज्यो की हिफाजत मे लग गई, मगर चूँकि अमेरिका की फौजे अभी तक युद्ध में नही फँसी थी, इसलिये उसका सैन्य वल यूरोप के दक्षिणी मोर्चे और चीन की ओर भेज दिया गया। अर्थात् दो मोर्चों पर सोवियत रूस की सेना थी और दो पर ब्रिटेन और अमेरिका की। मगर सोवियत रूस ने अपने पूर्वी मोर्चे से आगे वढकर जापान को पीछे धकेल दिया और फिर चीन होती हुई लाल फौजे अमेरिकन फौजो के कन्धे से कन्धा भिडाकर कोरिया आदि देशो की स्वतन्त्रता के लिये लडने लगी, जव तीन शक्तियोका सयुक्त मोर्चा स्थापित हो गया तो जापान को मुँह की खानी पडी और उसे पीछे हटना पड़ा। इस तरह स्वतन्त्र राज्य कोरिया पर युद्ध मे जापानके हारने के पश्चात् दो देशो का एक साथ कब्जा हुआ। अर्थात् अमेरिका और रूस की फौजो ने कोरिया को मुक्ति दिलाई। उत्तरी कोरिया मे उस समय लाल फोजे थी और दक्षिणी कोरिया मे अमेरिकन फौजे। दोनो देशो ने एक समझौता किया, जव तक कोरिया अपने पैरो पर खडा नही हो जाता तव तक इन दोनो देशो की देखरेख मे समूचा कोरिया रहेगा, ताकि प्रतिगामी तत्त्व जो जापान के युद्ध के समय उभर आये थे, फिर सर न उठा सके। और इस तरह से कोरिया के सीने पर एक लकीर खीच दी, ३८ अक्षांस की। और कोरिया के दो राष्ट्र हो गये।

मगर लाल फौज ने जैसा कि प्रसिद्ध है, कोरिया में तुरत अस्थायी सरकार स्थापित कर दी, जो आगे चलकर स्थायी रूप मे वदल गई, मगर अमेरिका ने ऐसा नही किया, उसने प्रतिक्रियावादियो को गद्दी पर विठा दिया, जिसमे यदि कोरिया का एकीकरण भी हो जाय तो उसके व्यापारिक हित भी सुरक्षित रहे।

धीरे-धीरे एक समझौते के अनुसार लाल फौजे और अमेरिकन फौजें वहां से हटने लगी, मगर अमेरिकन फौजो के हटने का तो केवल वहाना मात्र था। जव लाल फौजें वहाँ से हट गईं तो दक्षिणी कोरिया ने अपनी सीमा वढाने के लिए गडवड करनी आरम्भ कर दी, क्योंकि अमेरिका को उत्तरी कोरिया के कारण अपने व्यापारिक हित खतरे मे दिखाई पडने लगे, और फिर उत्तरी कोरिया

जहाँ इस बीच आत्म निर्भर राष्ट्र बन चुका था, वहाँ दक्षिणी कोरिया अमेरिका का आश्रित था। फलस्वरूप दक्षिणी कोरिया मे अपने शासको के प्रति विद्रोह की भावना जागृति हो उठी। और तब जनता की इस भावना को वह युद्ध की ओर मोड़ने के लिए कोशिशे करने लगे।

३८ अक्षाँश पर उन्होने हलचले आरम्भ कर दी। मगर इसके वावजूद दक्षिणी कोरिया की जनता छापेमार गुटो मे सगठित होने लगी।

सयुक्त राष्ट्रसघ की ओर से कोरिया के एकीकरण के लिए वनाई गई एक कमेटी ने अपनी रिपोर्ट मे कहा—

'दक्षिणी पूर्वी कोरिया मे कुरचान के निकट शिनवुन मिडन गाँव में रहने वाले लोग, छापेमार दस्तो का साथ देने और उनकी सहायता करने के अपराध में फौजी अदालत (कोर्ट मार्शल) द्वारा १९५१ मे मौत के घाट उतार दिये गये।'

ए० वाई विशिन्सकी रूसी प्रतिनिधि सयुक्त राष्ट्रसघ में जव कोरिया के वारे में अपनी रिपोर्ट उपस्थित कर रहे थे, तव उन्होने ऊपर के गाँव के वारे में कह.—'रिपोर्ट में वर्णित घटनाएँ जून १९५० में शुरू हो गई थी। जव दक्षिणी कोरिया की पुलिस गाँव को नेस्तनावूद करने के वार-वार प्रयत्न कर चुकी थी, तव फरवरी १९५१ में दक्षिणी कोरिया की एक फौजी वटालियन और पुलिस दोनो ने गाँव पर हमला वोल दिया। इस पर हथियारो से लैस कई सौ छापेमारो और गाँव वालो ने उनका मुकाविला किया। पूरे दस घण्टे तक लडाई जारी रही। रिपोर्ट के अनुसार गाँव के लोग छापेमारो की सहायता कर रहे थे। उन्होने अनाज के ढेरो और अपने घरो में छापेमारो के छिपकर लडते रहने के स्थान वना रखे थे।'

जिस रिपोर्ट के वारे में श्री विशिन्स्की ने ऊपर जिकर किया है, उसका अगला भाग विल्कुल ही दक्षिणी कोरिया को वेपरदा कर देता है। रिपोर्ट में लिखा है—'गाँव वालो और कम्युनिस्टो के वीच वाकायदा विवाह-सम्वन्ध स्थापित हुए थे। युद्ध के दौरान में पुलिस द्वारा खाना माँगे जाने पर गाँव वालो ने उन्हे खाना देने से इन्कार कर दिया। छापेमारो को भोजन देकर किसानो ने

उनके प्रति अपनी हमदर्दी का सबूत दिया। इन सब बातो से बिल्कुल साफ जाहिर हो जाता है कि कम्युनिस्ट छापेमारो और गाँव वालो के बीच बड़ी घनिष्टता के सम्बन्ध थे। और रिपोर्ट का कहना है कि फौजी टुकड़ियो की फौजी कार्रवाहियो मे ये घनिष्ठता के सम्बन्ध ही बड़ी भारी रुकावट बन गये थे। गाँव के स्थानीय निवासियो के रवैये को देखकर फौज और पुलिस के दस्ते क्रोध से बौखला उठे थे, उन्होने गाँव पर हमलो पर हमले किये और लगभग २०० कम्युनिस्टो को भून डाला। इनमें गाँव के वह लोग भी शामिल थे जिन्होने छापेमारो का साथ दिया था।

'पर ऐसे पाशविक हत्याकांडो से भी दक्षिणी कोरिया की ताजोरी बटालियन के कमाडर की भूख नही मिटी। कुहचान पुलिस के खुफिया विभाग के प्रमुख अधिकारी को साथ लेकर वह शिनबुक गाव में पहुँचा, और वहाँ के १८७ निवासियो को उसी समय गोली से उड़वा दिया।

'सैकड़ो छापेमारो की हत्या की कोशिशे करने वाली सिंगमनरी की पुलिस और अफसरो के खिलाफ कुहचान के निहत्थे किसानो का यह वीरतापूर्ण सघर्ष था। सिंगमनरी की पुलिस ने खुद कबूल किया है कि छापेमारो और गाँव वालो के बीच बड़े मित्रतापूर्ण और घनिष्ठ सम्बन्ध थे। यह दोनो बातें इस सत्य के जीते-जागते सबूत हैं कि दक्षिणी कोरिया में सिंगमनरी सरकार के खिलाफ चलने वाले सघर्ष की जडे आम जनता मे गहरी जमी हुई हैं।

'सिंगमनरी सरकार के खिलाफ दक्षिणी कोरिया की आम जनता के व्यापक विरोध के परिणामस्वरूप ही छापेमार आन्दोलन का जन्म हुआ था, यह विरोध इस सरकार का समर्थन करने वाले अमेरिकी फौजी अधिकारियो के भी खिलाफ था।

'अपने शक्तिशाली विदेशी मालिको की सहायता से सिंगमनरी सरकार ने उन सभी लोगो का बेरहमी से दमन किया जो तनिक भी प्रगतिशील या जनवादी विचारो वाले होते थे।'

युद्ध की आग दर असल लगाई थी दक्षिणी कोरिया के राष्ट्रपति सिंगमनरी ने, जो स्वयं दुनियाँ के सामने काफी बदनाम हो चुका है। ३० दिसम्बर १९४९

को एक प्रस कान्फ्रेस मे स्वय सिगमनूरी ने ऐलान किया—

'नये वर्ष में हमे एकीकरण हासिल कर ही लेना चाहिए, और हम पूरी आशा है कि हम इसे प्राप्त कर लेगे—राष्ट्रसघ से सहयोग की खातिर हम पूरी गम्भीरता से सन्तोष किए बैठे रहे हैं। कोरियाई जनता की आपसी समझ-बूझ के द्वारा एकीकरण हासिल करने की अपनी कोशिशे हम जारी रक्खेंगे। पर एक वार न टलने वाला समय आने पर, शायद हम खूनखच्चर और घरेलू मारकाट को नहीं रोक सकते और अगर हम दुर्भाग्य से इस साल एका हासिल न कर सके तो अपनी सीमा को एक करने के लिए हमे खुद व खुद मजबूर होना पडेगा।'

ठीक इसी प्रकार दक्षिणी कोरिया के रक्षामन्त्री कैप्टन सिगसुंग यो ने फरवरी १९५० मे घोपणा की—

'यदि राष्ट्रसघ कोरिया से उस 'कटार' को हटा सकने में फिर असफल हुआ, जिसको हटा सकने में अभी तक वह नाकामयाव हुआ है, तो कोरियाई जनता को इसे हटाने की खुद कोशिश करनी पड़ेगी, और ऐसा करने के लिए उसे वल प्रयोग करना पडेगा।'

मिस्टर अचेसन के प्रश्न का उत्तर देते हुए सोवियत प्रतिनिधि श्री विशिस्की ने आक्रमण किसने किया, इस पर प्रकाश डालते हुए कुछ आकड़े पेश किये और. कहा—

'३८ अक्षांस के आसपास सभी हथियार वन्द घटनाएँ दक्षिणी कोरियाइयो की शुरु की हुई थी। जून १९४९ से पहले उत्तरी कोरिया की सीमा पर गोली बारी होती थी, पर जून के महीने से दक्षिणी कोरियाइयो ने ३८ अक्षांस को भग करना शुरू कर दिया। उत्तरी कोरिया की लाइनो पर कब्जा करने के मकसद से पूरी की पूरी टुकडियो ने ३८ अक्षास को पार करना शुरू कर दिया। यही कारण था कि हथियार वन्द मुठभेड़ शुरू हो गई।

'जून से अगस्त १९४९ तक दक्षिण कोरियाइयो के हमले के क्षेत्र ओसिन (ओगडिन) है जो (कैसुंग) ज्योये (ययाग) थे।

'ओसिन के क्षेत्र में दक्षिणी कोरियाई पुलिस ने वार-बार ३८ अक्षांस को भंग किया और उत्तरी कोरिया की सीमा में स्थित पहाड़ियो पर कई वार कब्जा

कर लिया।

'जून १६४६ में दक्षिणी कोरियाई, ट्रेन्च मोटरो से लैस सात पैदल दस्ते और हथियारो से सुसज्जित फौजी टुकडी को मोर्चे पर ले आए, और उत्तरी कोरिया में स्थित उपयोगी जगहो पर कब्जा करने के उद्देश्य से, हमला बोल दिया। थोडे-थोडे समय के अन्तर से पूरे दो महीने तक लड़ाई जारी रही।

'२७ जून को दक्षिणी कोरियाइयो की बटालियन ने २८८० पहाडी, १६ जुलाई को दक्षिणी कोरिया की एक फौजी टुकडी ने गोलीबारी की भारी तैयारी के बाद ४८८.२ पहाडी पर (३८ अक्षास के उत्तर मे) धावा किया और कब्जा कर लिया। २८ जुलाई से १ अगस्त १६४६ तक लडाई जारी रही, और अन्त में दक्षिणी कोरिया की फौजी टुकडियो को उत्तरी कोरिया से खदेड़ दिया गया।

'फौजो के क्षेत्र में हमले के समय दक्षिणी कोरियाइयो ने बहुत ज्यादा सख्या में गोला बारूद और मोटरो का प्रयोग किया। अकेले २५ जुलाई के दिन दक्षिणी कोरियाइयो ने ३५०० से ज्यादा भारी हौवित्जर गोलो और १००० से ज्यादा माइनो (विस्फोटको) का इस्तैमाल किया।

'इसके अलावा दक्षिणी कोरियाइयो ने ३८ अक्षास को और भी कई जगह भंग किया—उदाहरण के लिये ज्योजो क्षेत्र में (पूर्वी समुद्रीतट पर)। इस क्षेत्र में दक्षिणी कोरियाइयो ने २८ जून को ३८ अक्षास के उस पार १५६ आदमियो की दो तोड-फोड टुकडियाँ भेजी, ताकि वे उत्तरी कोरियाइयो के गेन्जान (वोन्सान) ज्योजो क्षेत्र में वापिसी के रास्ते को काट दें। ५ और ६ जुलाई को दक्षिणी कोरियाइयो की एक पैदल फौजी टुकडी ने सितोकुटी और कुऊडैनरी पर कब्जा कर लिया और ३८ अक्षास के उत्तर मे ४ ५ किलोमीटर अन्दर धस गई। दक्षिणी कोरियाइयो की दूसरी फौजी टुकडी ने किदोमोनरी क्षेत्र में (३८ अक्षांस से लगभग १ किलोमीटर उत्तर में) पहाडियो पर कब्जा कर लिया। यहाँ मै इस बात की याद दिला दू कि जनरल असेम्बली के पाँचवें अधिवेशन में १६५० में ही, हमने कोरिया में हमले का सवाल उठाया था, पर अमरीकी प्रतिनिधि मडल ने इस बात मे इनकार करने की कोशिश की कि कोरिया में सिगमनरी सरकार के सहयोग से अमरीकी हमला हुआ है।'

बिल्कुल एक ताजी बात का जिकर करते हुए श्री विशिस्की ने कहा—

'२० जून १९५० को, उत्तरी कोरिया पर हमले से ५ दिन पहले डलेस[1] ने सिंगमनरी को लिखा था कि अब खेले जाने वाले विराट नाटक मे सिंगमनरी के देश की जो निर्णयात्मक भूमिका होगी, उसे वह खास महत्त्व की दृष्टि से देखता है।'

इस प्रकार २५ जून १९५० को कोरिया में युद्ध यो ही आरम्भ नही हो गया।

वास्तव में कोरिया के युद्ध के कारण ये थे जो ऊपर दिये जा चुके है, अर्थात् जब दक्षिणी कोरिया ने ३८ अक्षाश पर ही ऊधमबाजी न करके ३८ अक्षास के पार भी इतनी ऊधमबाजी की कि उत्तरी कोरियाइयो को सिंगमनरी की वह बात सत्य जचने लगी, जिसमें उसने कहा था—'हमको यदि कोरिया के एकीकरण के लिए शस्त्र भी उठाने पडे तो उठायेंगे।' तो वह अपनी सुरक्षा के हेतु सिंगमनरी की सेना से मोर्चे पर जाकर डट गये, और दक्षिणी कोरियाई निवासी जो पहले से ही सिंगमनरी सरकार को पसन्द नही करते थे और गुरिल्ला युद्ध आरम्भ कर चुके थे, ने भी दक्षिणी कोरिया की सरकार की घमडी बातो को मिट्टी में मिला दिया, और फिर जब तक युद्ध उत्तरी कोरिया और दक्षिणी कोरिया तथा अमेरिका में रहा, वह दक्षिणी कोरियाई सेना को धुर दक्षिण तक पीटते चले गये। इस तरह से एक दिन दक्षिणी कोरियाइयो की कोरिया के एकीकरण की इच्छा उत्तरी कोरिया ने पूर्ण कर दी। पर संयुक्त राष्ट्रसघ पर अमेरिका का उन दिनो प्रभुत्व था, उसने तुरत उत्तरी कोरिया को आक्रमण-कारी घोषित करके सयुक्त राष्ट्रसंघ की फौजो को दक्षिणी कोरिया की सहा-यता के लिए भेज दिया। जिसमें अमेरिका, फ्रास, इगलैड, पाकिस्तान तथा अन्य कुछ राष्ट्रो की फौजें सम्मिलित थीं। भारत के प्रधानमन्त्री ने इस समस्या पर गम्भीरता से सोचा और भारतीय फौजें भेजने से साफ इन्कार कर दिया। वरन् शान्ति कार्य के नियमो के अनुसार उन्होने एक चिकित्सादल कोरिया

---

[1] डलेस इस समय अमरीकी सरकार के परराष्ट्र मन्त्री हैं।

भेजा, जिसने घायलो की वडी अच्छी तरह से सेवा की।

सयुक्त राष्ट्रसघ की फौजे कोरिया मे पहुचने पर पासा तो पलट गया, मगर उसका मूल्य सयुक्त राष्ट्रसघ को वडा महँगा चुकाना पडा। एक-एक इच भूमि के लिये उत्तरी कोरियाइयो ने प्राणो की वाजी लगा दी।

चीनी जनता इस समय वडी बेचैन थी, क्योकि अमरीकी जनरल और जिम्मेदार लोग वार-वार एक ही बात दुहराते थे कि हम यदि उत्तरी कोरिया की फौजे कोरिया से बाहर किसी दूसरे देश मे गई तो वहाँ भी उनका पीछा नही छोडेगे। इन सब वातो ने चीनी जनता को सचेत कर दिया था, क्योकि कोरिया चीन की सीमा से मिला हुआ है। और अमरीकी फौज ने इस बीच कोरिया चीन की सीमा पर हवाई जहाजो से वम भी वरसाये, जिसका प्रभाव चीनियो पर वहुत वुरा पडा और चीन के स्वयसेवक अपने पडौसी कोरिया की सहायता के लिए निकल पडे। अव तक केवल कहा ही गया था कि चीनी फौजें कोरिया मे लड रही है, मगर सवूत के लिए वह एक भी उदाहरण उपस्थित न कर सके थे, मगर अव चीनी जनता अपने पड़ौसी देश कोरिया के कन्धे से कन्धा भिडाकर लड़ रही थी।

इस युद्ध में अमेरिका ने तमाम अन्तर्राष्ट्रीय कानूनो को तोड दिया, कीटाणु बम का प्रयोग किया, स्कूल और हस्पतालो पर भी वम गिराये गये। कीटाणु-वम गिराने के वारे में सारे देश एकमत से अमेरिका के विरुद्ध हो गए, और लगभग सभी राष्ट्रो ने एक स्वर से इस वात की निन्दा की कि अमेरिका ने कोरिया मे कीटाणु वम छोडकर और अस्पतालो पर वम गिराकर अन्तर्राष्ट्रीय कानून को तोडा है तथा महान् पाप किया है। क्योकि कीटाणु वम के फट जाने के पश्चात् उससे वीमारियो के फैलाने वाले कीटाणु हवा के साथ ही जहाँ-जहाँ पहुँचते है, वही-वही वीमारी फैल जाती है। इस प्रकार उत्तरी कोरिया में चेचक और हैजा की वीमारी भी फैल गई।

युद्ध के मोर्चे से आई हुई खवरो मे यह भी कहा गया कि वच्चो के खिलौनो के भीतर भी गैस या इसी प्रकार के कीटाणु वन्द करके हवाई जहाजो मे शहरो पर फेंके गए, और इस तरह छोटे-छोटे वच्चो को भी अमरीका ने नहीं वख्शा।

इस तरह दुनिया मे कोरिया के इस युद्ध ने शान्ति के आन्दोलन को जन्म दिया।

दूसरी विश्व शान्ति कॉंग्रेस की ओर से दुनिया की जनता के नाम निम्न घोपणा पत्र प्रकाशित हुआ, जो अब शान्ति के इतिहास की एकनिध बन गया है।

'युद्ध का खतरा मानव जाति के—बच्चो, स्त्रियो और मर्दो के—सिर पर मँडरा रहा है। शान्ति और निश्चिन्तता को बनाये रखने को लोगो ने सयुक्त-राष्ट्रसघ से जो आशाये की थी उन पर वह पूरा नही उतरा। मानव जाति और मानव सँस्कृति की उपलब्धियाँ खतरे में हैं।

'सभी लोग यह आशा करना चाहते हैं कि संयुक्त राष्ट्रसंघ निश्चित रूप से उन सिद्धान्तो की ओर फिर से रुख करेगा जिनके आधार पर, द्वितीय विश्व-युद्ध के बाद, उसकी नीव रखी गई थी, जब कि यह मान लिया गया था कि आजादी, शान्ति और जातियो (राष्ट्रो) के बीच परस्पर आदर की भावना को सुरक्षित रखा जायेगा।

'लेकिन जातिया इससे भी ज्यादा खुद अपने में, खुद अपनी इच्छा-शक्ति और नेक इरादो में—आशा रखती हैं। हर समझदार आदमी के सामने यह साफ है कि कोई भी ऐसा व्यक्ति जो 'युद्ध की अनिवार्यता' पर जोर देता है, वह मानव जाति को लाछित करता है।

'जब तुम इस सन्देश को पढो, जिसे अस्सी देशो की जनता के नाम पर वारसा मे हुई द्वितीय विश्व शान्ति काग्रेस में स्वीकार किया गया है, तो याद रखो कि शान्ति के लिए संघर्ष के साथ तुम्हारे जीवन का गहरा लगाव है। अवगत रहे कि लाखो करोड़ो शान्ति के सैनिक, जो एक जूट हो गये हैं, अपने हाथ तुम्हारी ओर बढा रहे हैं। अपने भविष्य मे दृढ विश्वास के साथ मानव-जाति पहली बार जिस अत्यन्त शुभ सघर्ष को चला रही है, उसमें शामिल होने के लिए वे तुम्हारा आवाहन कर रहे हैं।

'शान्ति के आगमन के लिये प्रतीक्षा नहीं की जाती—उसे जीतने के लिए संघर्ष करना होता है। आओ, हम अपने प्रयासो को संयुक्त बनाये, और युद्ध को

वन्द करने की माँग करे जो आज कोरिया को नष्ट-भ्रष्ट और कल समूची दुनियाँ को अपनी लपटो मे लेने का खतरा उत्पन्न कर रहा है।

'जर्मनी और जापान में नये सिरे से युद्ध की भट्टियाँ धधकाने की कोशिशो के विरुद्ध हमे उठ खड़े होना है।

'आओ स्टाक होम अपील पर हस्ताक्षर करने वाले ५००,०००,००० लोगो के साथ मिलकर एटम हथियार पर रोक लगाने की, आम निशस्त्रीकरण की और इन उपायो को असली रूप देने के लिए उन पर कन्ट्रोल कायम करने की हम माँग करें। आम निशस्त्रीकरण और एटम हथियार को वरवाद करने पर कडा कन्ट्रोल कायम करना, टेकनीक की रू से सम्भव है। हमें इसके लिए केवल इच्छा की दरकार है।

'युद्ध प्रचार को दडनीय करार देने वाले कानूनो को पास करना हमें अनिवार्य बना देता है। अपनी पार्लियामेंट के सदस्यो के सामने, द्वितीय विश्व-शान्ति काग्रेस द्वारा प्रस्तुत शान्ति को ऊँचा उठाये रखने वाले अपने सुझावो को हमें रखना है।

'शान्ति की ताकतें प्रत्येक देश में इतनी वड़ी हैं और शान्ति के लोगो की आवाजो में इतना जोर है कि हम सब मिलकर, संयुक्त रूप में, पांच वडे राष्ट्रो के प्रतिनिधियो की मीटिंग को अवश्यम्भावी बना सकते हैं।

'द्वितीय विश्व शान्ति काग्रेस ने वेजोड शक्ति के साथ यह दिखा दिया है कि वे लोग जो दुनिया के पाच भागो से यहा आकर इसमें शामिल हुए, वावजूद भिन्न-भिन्न मत रखने के, नये युद्ध की विभीपिका को रोकने तथा शान्ति को बनाये रखने के लिए एक मत हो सकते हैं। सरकारो को भी इसी प्रकार अमल करना है। तव शान्ति का लक्ष्य सुरक्षित हो जायेगा।'

कुछ देशो में शान्ति के लिए आवाज उठाने वाले लोगो पर अत्याचार किये गये, क्योंकि शान्ति की आवाज प्रवल हो जाने के डर से उन्हे खतरा होता था, अपनी युद्ध की योजना के विरुद्ध जनता के चले जाने का, अतएव वारसा की दूसरी विश्व शान्ति कांग्रेस ने इस सम्बन्ध में भी एक प्रस्ताव पास किया—

'कतिपय देशो में आज शान्ति के सैनिको को पुलिस दमन का शिकार

बनाया जा रहा है।

'लेटिन अमरीका, सयुक्त राज्य अमेरिका, फ्रांस, इटली और अफ्रीका के कितने ही देशो और निकट पूर्व में शान्ति के हजारो सैनिको को जेलो में डाल दिया गया है।

'कितने ही लोग, जो इस काग्रेस के डेलीगेट चुने गये थे, काग्रेस में शामिल नही हो सके।

'शान्ति की रक्षा के लिये सभाओ पर पाबन्दी लगा दी है। पुलिस शान्ति के सैनिको पर गोली चलाती है। उन्हे मारती पीटती है।

'यहा तक कि वैज्ञानिक भी दमन से नही बच सके हैं।

'द्वितीय विश्व शान्ति काग्रेस शान्ति के उन सैनिको का अभिनन्दन करती है जो पुलिस के आतंक का शिकार बनाये गये हैं, और उनके दमन के विरुद्ध अपना तीव्र विरोध प्रकट करती है।

'कांग्रेस माग करती है कि पुलिस आतक के शिकार तमाम लोगो को मुक्त किया जाय।

'काग्रेस समूची दुनिया के लोगो का आवाहन करती है कि वह शान्ति के शुभ सैनिको के प्रति अपनी एकजुटता को अभिव्यक्त करे, उन्हे मुक्त करायें, और उन तमाम लोगो की मदद तथा रक्षा करें जो विश्व शान्ति के लिए सघर्ष कर रहे हैं।'

पर इस कान्फ्रेंस के पहले ही यानी जौलाय में ही पडित नेहरु ने कोरिया के युद्ध के बारे में गम्भीरता से काफी दिन सोचने के बाद एक स्थायी कदम उठाया, उन्होने स्वर्गीय जे० वी० स्तालिन प्रधानमन्त्री सोवियत रूस से पत्र-व्यवहार किया।

पंडित नेहरू का पत्र

१३-७-५०

हमारे राजदूत ने मास्को मे वैदेशिक वार्ता विभाग से जो बातें की हैं, उनमें उन्होने बता दिया था कि कोरिया की लडाई के सम्बन्ध में भारत का क्या रुख है।

भारत का उद्देश्य युद्ध का एक क्षेत्र तक ही सीमित रखना और सुरक्षा-परिषद् के वर्तमान गतिरोध को दूर करके उसके शान्तिपूर्ण हल को शीघ्र निकालने मे सहायता देना है जिससे कि चीन की लोकशाही का प्रतिनिधि सुरक्षा-परिषद् में अपना स्थान ग्रहण कर सके, सोवियत सघ उसमे वापस आ सके और परिपद के भीतर अथवा उसके बाहर गैर सरकारी सम्पर्क के द्वारा सोवियत सघ, अमरीका और चीन दूसरे शान्तिप्रिय राज्यो की सहायता और सहयोग से लड़ाई बन्द करने और कोरिया की समस्या के आखिरी हल के लिए कोई आधार निकाल सके ।

हमे पूर्ण विश्वास है कि आप शान्ति स्थापित रखने तथा उसके द्वारा सयुक्त-राष्ट्रसघ की एक जूटता बनाये रखने का दृढ निश्चय रखते हैं, इसीलिए मैं आपके पास यह व्यक्तिगत अपील भेजने की हिम्मत करता हूँ कि आप इस सम्मिलित उद्देश्य की सिद्धि के लिए अपना उच्च अधिकार और प्रभाव काम में लाये जिसके ऊपर मनुष्य मात्र की सुख समृद्धि निर्भर करती है ।

आप मेरा गम्भीर आदर स्वीकार करे।

जे० बी० स्तालिन का उत्तर

भारत जनतन्त्र के प्रधानमन्त्री पंडित जवाहरलाल नेहरू

मै आपके शान्ति के लिए उठाये गये कदम का स्वागत करता हूँ । मैं आपके इस दृष्टिकोण से पूर्णत. सहमत हूँ कि कोरिया के प्रश्न का सुरक्षा परिपद के द्वारा शान्तिपूर्वक हल निकाला जाय, जिससे पाच बड़े देशो के प्रतिनिधि, जिनमें चीनी लोकशाही सरकार का प्रतिनिधि भी शामिल हो, उसमे भाग ले सकें। मेरा विश्वास है कि कोरिया के प्रश्न को जल्दी हल करने के लिए सुरक्षा परिषद में कोरिया के लोगो के प्रतिनिधियो का विचार सुनना ठीक होगा ।

आदर के साथ

जे० वी० स्तालिन

(सोवियत संघ के प्रधानमन्त्री)

१५-७-१९५०

पंडित नेहरू का उत्तर

ता० १६–७–१९५०

मै श्रीमान के तत्काल उत्साह वर्धक उत्तर के लिए अत्यन्त कृतज्ञ हूँ। मै फौरन दूसरी सबन्धित सरकारो से सम्पर्क कर रहा हूँ और आशा करता हूँ कि मै जल्दी ही श्रीमान् को दूसरा पत्र लिख सकूंगा।

आदर के साथ
जवाहरलाल नेहरू
(भारत के प्रधानमन्त्री)

दो मार्ग

दो मार्ग, एक शान्ति का दूसरा युद्ध का नामक शीर्षक से एक लेख २४ जौलाई १९५० के प्रावदा में प्रकाशित हुआ, जिसमे कहा गया है—

'जे० वी० स्तालिन का, पडित नेहरू के सन्देश का जवाव अठारह जुलाई को प्रकाशित हुआ था। इस जवाव ने दुनिया के सभी देशो मे वहुत वडे पैमाने पर टीका टिप्पणी को जन्म दिया है। तमाम आजादी पसन्द लोगो ने, समूची प्रगतिशील मानव जाति ने सोवियत सघ की कभी इधर-उधर न होने वाली शान्ति की नीति के, सभी लोगो के हको की रक्षा करने वाली नीति के, एक नये और वहुत साफ उदाहरण के रूप में, इस जवाव का स्वागत किया है।

अपने जवाव मे जे० वी० स्तालिन ने लिखा है—'मै शान्ति की दिशा के उठाये गये आपके कदम का स्वागत करता हूँ। मै आपके दृष्टिकोण से, सुरक्षा-परिषद् के जरिये जिसमें पाँचो बड़ी शक्तिया मय चीनी जनता की लोकशाही के लाजिमी तौर से शामिल हो, कोरिया के सवाल को सम्भालने और साधने के वारे मे जो आपने पेश किया है, पूरी तरह सहमत हूँ।

'पंडित नेहरू के शान्ति प्रस्ताव का समर्थन करते हुए जे० वी० स्तालिन ने उस युद्ध को समाप्त करने का एकमात्र सही रास्ता वताया है जिसे संयुक्त-राष्ट्र अमरीका के शासको ने कोरिया की जनता के सिर पर लाद दिया है। इतना ही नही, वल्कि यही वह रास्ता है जिसे अपनाकर संयुक्त राष्ट्र सघ

अपने निर्दिष्ट उद्दश्यो और कार्यो को पूरा कर सकता है ।

पडित नेहरू को अपने जवाब मे जे० वी० स्तालिन ने वताया है—'मेरा विश्वास है कि कोरिया के सवाल को जल्दी से जल्दी निपटाने के लिये सुरक्षा-परिषद मे कोरिया की जनता के प्रतिनिधि की बात सुनना लाजमी होगा ।' यह सभी जानते हैं कि सयुक्त राष्ट्रसंघ के चार्टर मे इस बात को मुख्य तौर से उभारकर रखा गया है कि सयुक्त राष्ट्रसघ का लक्ष्य 'जातियो की समानता और आत्म निर्णय के सिद्धान्तो का मान रखने के आधार पर राष्ट्रो के वीच मित्रतापूर्ण सम्वन्धो का विकास करना है ।

'जे० वी० स्तालिन के प० नेहरू को दिये गये इस जवाव ने शान्ति के समर्थको के लिये, साम्राज्यवादी जगवाजो के विरुद्ध और सुरक्षा के लिये उनके सघर्ष में एक जूटता कायम करने की दिशा मे, एक शक्तिशाली प्रेरणा श्रोत का काम किया है। संयुक्त राष्ट्रसंघ के चार्टर के अनुसार, चार्टर की शर्तो और नियमो के अनुसार वनी और कानूनी कसौटी पर सही उतरने वाली सुरक्षा परिपद के द्वारा—ऐसी सुरक्षा परिपद के द्वारा जिसमें सोवियत सघ और चीनी जनता के जनतन्त्र के प्रतिनिधि सम्मिलित हो—कोरिया के प्रश्न को शान्ति-पूर्ण ढग से निवटाने के पंडित नेहरू के प्रस्ताव ने अमरीका के शासको की उन तमाम कोशिशो को एकदम वेकार कर दिया है जो कि वे कोरिया पर अपने जनघाती आक्रमण को सयुक्त राष्ट्रसघ के झडे के नीचे छिपाने के लिये कर रहे हैं ।

'अमरीकी दवाव में आकर, उसकी आज्ञा के अनुसार, सुरक्षा परिपद के एक दल द्वारा किये गये गैर कानूनी और तोड़े मरोडे हुए फैसले किसी की आँखो में धूल नही झोक सके । सारी दुनियाँ देख सकती है कि अमरीकी साम्राज्यवाद आक्रमण की कार्रवाही कर रहा है, शान्ति को पैरो तले रौदकर दूसरे देशो के हथियाने के लिए युद्ध कर रहा है ।

'भारत के प्रधानमन्त्री के सन्देश और जे० वी० स्तालिन के उत्तर ने सयुक्त राष्ट्र अमरीका के शासक वर्ग में घवराहट पैदा कर दी है और उन्हे गड़वड़ा दिया है। प० नेहरू के शान्ति प्रस्ताव का समर्थन करने या एक वार

फिर अपने जनघाती और आक्रमणकारी रूप का पर्दाफाश करने के सिवा और कोई चारा उनके सामने नही रह गया था।

'सयुक्त राष्ट्र अमरीका के शासक वर्ग के लिए यह काफी परेशान करनेवाली स्थिति थी। अमेरिका के पत्रो ने बिना कारण ही यह नही लिखा कि श्री अचेसन के सामने नाजुक मसला पेश है। वैदेशिक विभाग नेहरू के जवाव का मसौदा तैयार करने में लगा था। पत्रो में छपी सूचना के अनुसार नेहरू के जवाव के मसौदे को एक बार तैयार करने के पश्चात् दोवारा तैयार किया गया। अव वह जनता के सामने आ गया है। अमरीका ने भारत के प्रधान-मन्त्री के शान्ति प्रयास को ठुकराकर दिखा दिया है कि अमरीका का शासक-वर्ग कोरिया की जनता के विरुद्ध अपने घातक और आक्रमणात्मक युद्ध को जारी रखना चाहता है।

'सुरक्षा परिषद के द्वारा—उस सुरक्षा परिषद के द्वारा जिसकी रचना वैध, न्याय की कसौटी पर खरी उतरने वाली हो—कोरिया के प्रश्न को शान्ति-पूर्ण ढग से तय करने के नेहरू के सुझाव का अचेसन द्वारा ठुकराया जाना इस वात का स्पष्ट सवूत है कि अमरीका नही चाहता कि सुरक्षा परिषद, सयुक्त-राष्ट्रसंघ के चार्टर के आधार पर, फिर से अपना काम करने लगे।

'अचेसन का उत्तर पत्रो में २० जुलाई को प्रकाशित हुआ था। सयोग की वात कि इसके साथ-साथ अमरीकी काग्रेस के नाम ट्रूमैन का लम्वा सन्देश भी प्रकाशित हुआ। इस सन्देश की मूल वातो से पता चलता है कि अमरीका के वैदेशिक मन्त्री नेहरू के प्रस्ताव को पांव तले रौंदने के अपने कृत्य को चिकने-चुपडे शव्दो से ढकने के लिए वेकार इतनी दिमागी कसरत कर रहे हैं। ट्रूमैन ने अपने सन्देश में सव-कुछ साफ-साफ और भोंडे ढग से खोलकर रख दिया है। इतना ही नही, प्रेसीडेंट ट्रूमैन के सन्देश से यह भी पता चलता है कि कोरिया मे आक्रमण की कार्रवाई अमरीकी साम्राज्यवाद की एक वडी आक्रमणात्मक योजना का ही एक अग मात्र है।

'ट्रूमैन ने फौजी तैयारियो के लिए दस अरव डालर की और माग की है। पर यह सवको प्रतीत है [illegible] [illegible] कुल पचास अरव [illegible]

ट्रूमैन ने यह भी मांग की है कि अमरीका की फौजो की मात्रा और सख्या वढाने के मार्ग मे जो वर्तमान रुकावटे हैं उन्हे हटा दिया जाय और आवश्यकता के अनुसार अधिक से अधिक नेशनल गार्ड और रिजर्व भर्ती करने की छूट दे दी जाय।

'प्रेसीडेट के इस सन्देश से पता चलता है कि ट्रूमैन का इरादा दस खरब की वर्तमान मांग तक अपने को सीमित रखने का नही है।' उत्तरी अतलान्तक गुट के भागीदारो को हथियार वन्द करने के लिए अभी काफी खर्चे की आवश्यकता और होगी। ट्रूमैन ने पहले ही से चेतावनी दे दी है कि करो मे नई वढती, सामाजिक भलाई और शान्तिपूर्ण निर्माण के खर्च में कटौती की जायगी। दूसरे शब्दो में ये कि नई फौजी तैयारियो का भयानक वोझ श्रमजीवी जनता के सिर पर लदने वाला है। जहाँ तक वाल स्ट्रीट के मालिको का सम्वन्ध है, नये मुनाफो की खुशी में वे अपनी हथेलियों को खुजला रहे हैं।

'अपने सन्देश में ट्रूमैन ने कहा है कि सयुक्त राष्ट्रसघ अमरीका की सरकार कोरिया मे अपने आक्रमणात्मक युद्ध को जारी रखेगी। इतना ही नही, दूसरे एशियाई देशो मे अपने आक्रमण की नीति को वह और आगे वढायेगी। अपने सन्देश में ट्रूमैन ने ऐलान किया है कि वह फिलीपीन को सहायता देने वाली अमरीकी फौजो को और अधिक शक्तिशाली वनाने के आदेश जारी कर चुके हैं। साथ ही हिन्द चीन की सरकार और वहा पर स्थित फ्रास की हथियार वन्द फौजो को सैनिक सहायता भेजने मे जल्दी करने के आदेश भी उन्होने दे दिये हैं। उन्होने अपने सन्देश में इस वात की पुष्टि की कि फारमूसा पर कब्जा करने के लिये वह सातवें अमरीकी वेडे को वास्तव में आर्डर दे चुके हैं।

'ट्रूमैन ने जो कुछ कहा है उसका अर्थ स्पष्ट है। वह यह कि कोरिया में आक्रमणात्मक युद्ध जारी रखा जायेगा और फिलीपीन, हिन्दचीन और फारमूसा में आक्रमण की कार्रवाई को वढाया जायेगा। अमरीकी साम्राज्यवाद का, निकट भविष्य मे, यह सुदूरपूर्वी कार्यक्रम है।

'ट्रूमैन ने अपने सन्देश में हथियारवन्दी की दौड में नई सरगर्मी दिखाने का आवाहन किया है। इससे अमरीकी नीति का आक्रमणकारी रूप और भी

अधिक प्रकट होता जा रहा है। इससे उन कोशिशो का भी पता चलता है जो अमरीकी अर्थतन्त्र को संकट से बचाने के लिए हथियारबन्दी को और वाल-स्ट्रीट के मालिको के बेहद और बेढगे मुनाफो पर आंच न आने देने के लिए मेहनतकश वर्ग के जीवन स्तर के विरुद्ध आक्रमण को तेज करने के सिलसिले में की जा रही है। और जहाँ तक शेखी का सम्बन्ध है जो ट्रूमैन ने अपनी फौजी ताक़त को लेकर बघारी है—प्रेसीडेन्ट का सदेश इस शेखी से भरा पड़ा है—उसका उद्देश्य अमरीका के आक्रमण की कार्रवाई की विफलता पर—उसके मुँह के खाने पर पर्दा डालना है।

'ट्रूमैन के सन्देश से यह स्पष्ट हो जाता है कि अमरीका के शासक वर्ग का इरादा अमरीका के हथियारो की बढती तक ही अपने को सीमित रखने का नही है। ट्रूमैन ने यह खोलकर कह दिया है कि मारशलाई देशो पर, आक्रमणात्मक उत्तरी अतलातक गुट के सभी भागीदारो पर, सख्ती के साथ दवाव डालना होगा ताकि वे हथियार बन्दी और युद्ध की तैयारियो मे सक्रिय भाग ले सकें।

'पडित नेहरू के शान्ति के सुझाव का अमरीका की सरकार द्वारा ठुकराया जाना, और भी अधिक बडे पैमाने पर हथियार बन्दी को बढाने का कार्यक्रम—ट्रूमैन के सन्देश में जिसकी रूपरेखा खोलकर रखी गई है—ये इस बात का ताजा उदाहरण हैं कि अमरीकी जंगबाज अपने आक्रमण की कार्रवाई को फैला-कर उसका क्षेत्र बढाने का इरादा रखते हैं। इसलिये शान्ति के सैनिको का अब ये काम है कि वे आक्रमण की कार्रवाई के विरुद्ध, पागलो की तरह टूट पडने और आगे बढने वाले साम्राज्यवादी युद्धखोरो के जनघाती मन्सूबो के विरुद्ध शान्ति के अपने सघर्ष को आगे बढावें।'

(२४ जुलाई प्रावदा)

शान्ति आन्दोलन

विश्वशाति परिषद ने अपने प्रथम अधिवेशन में हस्ताक्षर आन्दोलन चलाया जिसमे अपील की थी—

चाहते हैं या किसी को धमकी देना चाहते हैं, वल्कि इसलिए कि समस्या को सुलझाने मे सहायता करने की दृष्टि से अन्य राष्ट्रो की अपेक्षा हमारी स्थिति अधिक अच्छी है। वहाँ सघर्ष-रत राष्ट्रो से हमारा सम्बन्ध मित्रतापूर्ण है। हमने कोरिया की विपत्ति ग्रस्त जनता के प्रति अपनी जिम्मेवारी महसूस की और यह प्रवल इच्छा उत्पन्न हुई कि कोरिया का सर्वनाश और ध्वस किसी भी मूल्य पर रोका जाना चाहिये।

'मैं पिछला इतिहास नही दुहराना चाहता। हमने अनेक कदम उठाये जिनका फल तत्काल नही मिला, लेकिन वाद मे जिन्हे सही मान लिया गया। सुदूरपूर्व की स्थिति के संवध में सबसे पहले हमारा ध्यान जिस वात पर जाता है, वह है आजकी अस्वाभाविक स्थिति। जव तक महान् देश चीन से वार्ता नही की जाती, तव तक कोई प्रभावकारी-कार्य पूरा नही हो सकता। यही कारण है कि हमने प्रारम्भ मे ही चीन को मान्यता प्रदान की और सयुक्त राष्ट्र सघ एवं उसके वाहर अन्य देशो से भी इस नीति को बिना इस वात का ध्यान दिए अपनाने का अनुरोध किया कि वह चीन की नीति पसन्द करते हैं या नही चीन सम्वन्धी तथ्य विल्कुल साफ हैं और मैं समझता हू कि उसे मान्यता न प्रदान करना वुनियादी रूप में सयुक्त राष्ट्र संघ के घोपणा पत्र और उसकी भावनाओ का उलंघन करना है। कोई भी यह नही कह सकता कि संयुक्त राष्ट्र सघ से एक ही नीति का अनुसरण करने वाले राष्ट्रो के प्रतिनिधित्व की आशा की जाती है। दुर्भाग्यवश सयुक्त राष्ट्रसंघ में यह धारणा घर करती जा रही है। परिणामतः चीन ऐसे विशाल राष्ट्र से इस प्रकार का व्यवहार किया गया मानो उसका अस्तित्व ही नही है और चीन से दूर स्थित दीप को चीन का प्रतिनिधि मान लिया गया है। यह असाधारण वात है। मेरी समझ में यह तथ्य ही सुदूरपूर्व की समस्या का मूल है। वास्तविकताओ की उपेक्षा स्वाभाविक रूप में अस्वाभाविक नीति और कार्यक्रम की ओर ले जाती है। यही हो रहा है।

"कुछ मास पूर्व संयुक्तराष्ट्र संघ में कोरिया सम्वन्धी प्रस्ताव पेश करने से पूर्व हम लगातार चीन, युनाइटेड किंगडम, सयुक्त राष्ट्र अमेरिका तथा अन्य राष्ट्रो को कुछ परेशानी महसूस होती, क्योंकि इसने सहयोग भी हमारी

आकाक्षाओ के मार्ग में ही कठिनाइयाँ उत्पन्न हो जाती । कभी-कभी हम एक राष्ट्र को दूसरे के दृष्टिकोण से भी अवगत करा देते । इसके फलस्वरूप हम काफी हद तक चीन की दृष्टि के अनुकूल प्रस्ताव बना सकने में सफल हुए । मै यह नही कहता कि इसमें शतप्रतिशत चीन की दृष्टि का उल्लेख है, लेकिन निश्चय ही इस में उसके विचारो का प्रतिनिधित्व करने की कोशिश की गयी है इसकी मुख्य बात यह है कि बन्दियो की अदलाबदली के मामले पर जैनेवा कनवेशन पर अमल करना चाहिये ।

'दूसरी बात ध्यान में रखने योग्य यह है कि यह प्रस्ताव केवल बन्दियो की ही अदला बदली के सम्बन्ध मे था । जो यह जानना चाहते हैं कि युद्धबन्दी का उल्लेख इसमे क्यो नही हैं, वह विवाद के तथ्य को भूल जाते हैं । सब जानते हैं कि इससे पूर्व डेढ वर्ष से पानमुनजान मे सन्धि वार्ता हो रही थी । बडी मुश्किल से बन्दियो की अदलाबदली को छोड़कर अन्य मामलो के सम्बन्ध में समझौता हो सका । स्पष्ट है कि विराम सन्धि का पहला लक्ष्य युद्ध विराम ही था । समझौते का प्रथम परिणाम भी यही रहा । इसलिए अब तक के अनिर्णीत प्रश्न को हमने लिया । यह भी उस समझौते के अधीन जिसके सम्बन्ध में करार हो चुका था, प्रस्ताव तैयार करने से पूर्व उन सिद्धान्तो पर जिन पर वह आधारित है, विस्तार से विचार कर लिया गया था । नवम्बर के प्रारम्भ मे इन सिद्धान्तो की सूचना चीनी लोकगणतन्त्र को उसकी राय जानने के लिए दे दी गयी थी । याददाश्त के आधार पर में कह रहा हूं कि कुछ समय पूर्व हमें सूचित किया गया था कि उन पर सावधानी से विचार किया जा रहा है । मैं यह कह सकता हू कि अनेक अवसरो पर हम विभिन्न राष्ट्रो द्वारा जिन में चीन भी शामिल है, धैर्य के साथ शाति स्थापना की चेष्टा करते रहने के लिए प्रोत्साहित किये गये । हमारा यह इरादा नही रहा कि जहाँ हमारी पूछ न हो, वहाँ भी हम जायँ । यह सत्य है कि चीन सरकार ने हमसे सहयोग करने का वादा नही किया, लेकिन यह भी झूठ नही हैं कि उसने हमसे ऐसा करने से इनकार भी नही किया । हमने यह महसूस किया कि किसी प्रकार की आपत्ति के बिना हम अपने प्रयास में आगे बढ सकते हैं । यह गलत निर्णय

हो सकता है लेकिन फिर भी हमने काफी प्रगति की। जिन सिद्धान्तो को हमने निर्धारित किया उनमें और प्रस्ताव में कोई बडा अन्तर न रहा, फिर भी सम्बन्धित देशो के पास हमने उसे भेजा। प्रस्ताव को पेश किये कुछ दिन बीत चुके हैं। सदन को याद होगा, पहली प्रतिक्रिया यह हुई कि सयुक्त राष्ट्र अमेरिका ने इससे असहमति प्रकट की और तत्काल इसे अस्वीकार कर दिया। तब हमें यह ज्ञात न था कि रूस और चीन की प्रतिक्रिया क्या होगी। अन्त मे उन्होने हमें सूचना दी कि हम इसे स्वीकार नही कर सकते। कुछ लोगो की राय में इस पर हमें प्रस्ताव वापिस ले लेना चाहिये था। यह सत्य है कि केवल किसी प्रस्ताव को स्वीकार करने से कुछ हो नही जाता, यदि लक्ष्य समझौता करना न हो। हमने यह महसूस किया। लेकिन दूसरी ओर बहुत से विकल्प भी न थे।

'प्रत्येक बार राष्ट्रसघ में हमारे द्वारा प्रस्ताव प्रस्तुत किये जाने से पूर्व बहुत से दूसरे लोगो का रुख आक्रमणात्मक रहा और निस्सन्देह उन्होने स्थिती अधिक खराब कर दी होती। यदि ऐसा अवसर आता तो हम उनसे सहमति प्रकट न करते और हमारा मत उनके विरुद्ध होता। रूस या पूर्वी योरोप के किसी अन्य राष्ट्र द्वारा प्रस्तावित प्रस्ताव में तत्काल युद्ध विराम पर जोर दिया गया था। हमने युद्धविराम का स्वागत ही किया होता, लेकिन स्पष्ट था कि यह प्रस्ताव स्वीकार न होगा। अनेक राष्ट्रो ने यह महसूस किया कि पूरे एक वर्ष की बहस के बाद और युद्ध के दबाव के बावजूद बन्दियो-सम्बन्धी मामला तय न हुआ तो युद्ध-विराम के बाद भी यह तय न होगा। इसलिये उन्होने वार्ता तब तक जारी रखने के कार्य को तरजीह दी जब तक सभी सम्बन्धित देशो के सन्तोष के अनुकूल अन्तिम रूप से निर्णय न हो जाय। जहाँ तक हमारे प्रस्ताव का सम्बन्ध था, वह कठिन कार्य था। इसका व्यापक रूप से समर्थन हुआ, लेकिन दुर्भाग्यवश कुछ प्रमुख सम्बन्धित देश इससे सहमत न हुए।"

जहाँ अन्य देश कोरिया के मसले के लिए अपनी अलग-अलग राय देते थे, वही पण्डित नेहरू अपनी एक बात पर जोर देते थे कि यदि कोरिया की समस्या हल करनी है तो चीन को सयुक्तराष्ट्र सघ में स्थान मिलना चाहिए। इसने २८

जनवरी १९५१ के भाषण मे आलइण्डिया रेडियो पर आपने कहा—

'आज सबसे अधिक प्रबल समस्या सुदूर पूर्व में शांति स्थापना की है। कई महीने से कोरिया में पैशाचिक युद्ध हो रहा है, जिसमें हजारो निर्दोष व्यक्ति कुरवान हो चुके हैं। मेरे विचार में यह सत्य है कि उत्तरी कोरिया की ओर से आक्रमण हुआ, लेकिन यह भी सत्य है कि सभी सम्बन्धित देशो में कोई भी पूर्णतः निर्दोष नही हैं। पिछले साल से या इससे भी अधिक समय से हम यह अनुरोध करते रहे हैं कि लैक सक्सैस की विश्व परिषद मे चीनी गणतन्त्र को भी स्थान दिया जाना चाहिये, लेकिन ऐसा नही हुआ और अब अधिकतर लोग यह महसूस करते हैं कि चीन से सम्बन्धित स्पष्टत· नजर आने वाला तथ्य यदि स्वीकार कर लिया जाता तो विश्व की स्थिती आज की स्थिति से भिन्न होती।'

पानमुन जौन वार्ता

युद्ध विराम वार्ता के सम्बन्ध में भारत की अपील पर १३ राष्ट्रो ने उस समय संयुक्तराष्ट्रीय फौजो से अपील की जब वह ३८ अक्षास से नीचे दक्षिणी कोरिया से उत्तरी कोरिया की फौजो को पीछे हटा रहे थे कि सयुक्त राष्ट्रसघ की सेनाये ३८ अक्षास से आगे न बढें, मगर संयुक्तराष्ट्र संघ की सेनाओ ने इस पर ध्यान न दिया और उसकी सैनाएँ ३८ अक्षांस को पार कर गयीं, और कही कही तो चीन की सीमा पर भी बम वारी हुई। तब मजबूरन चीन को भी युद्ध में सम्मलित होना पड़ा।

पण्डित जवारलाल नेहरू ने ७ दिसम्बर १९५० को लोकसभा में अपने एक भाषण में कहा था—

'लेकसक्सेस स्थित हमारे प्रतिनिध ने काफी ऐशियाई देशो के प्रतिनिधियो से परामर्श करने के बाद सयुक्तराष्ट्र सघ में यह प्रस्ताव रखा कि चीन की सरकार से विराम सधि करने के लिए राजी होने और यह आश्वासन देने को कहा जाय कि चीनी सेनायें ३८ अक्षास पार न करेंगी।···हमारे प्रतिनिध श्री बी० एन० राव ने यह प्रस्ताव रखा और प्रायः सभी एशियाई देशो ने उसका समर्थन किया। मालूम नहीं कि चीन सरकार की प्रतिक्रिया क्या होगी लेकिन

हम अपने प्रतिनिध द्वारा उठाए गए कदम का स्वागत करते हैं।"

पर भारत की वात चीन ने न मानी, शायद यह उसका वदला था, जव सयुक्तराष्ट्र संघ की फौजो ने भारत की वात नही मानी थी। पर सोवियत रूस के प्रतिनिध श्री जैकव मलिक ने २३ जून १९५१ को न्यूयार्क रेडियो पर युद्ध विराम के बारे मे अपने एक भाषण मे कहा—

"सोवियत जनता यह विश्वास करती है कि आज की सर्वाधिक जटिल समस्या, कोरियामें सशस्त्र सघर्ष की समस्या भी सुलझायी जा सकती है। सोवियत जनता का यह विश्वास है कि प्रथम चरण के रूप मे युद्धवन्दी की वार्ता युद्ध रत राष्ट्रो के बीच प्रारम्भ होनी चाहिए।"

श्री जैकव मलिक की घोषणा महत्व पूर्ण थी। इसके तुरन्त वाद ही मास्को स्थिति अमेरिकी राजदूत ने श्री ग्रामिको से भेंट की और श्री मलिक के भाषण का स्पष्टीकरण चाहा, तो उन्होने वताया कि युद्ध विराम के लिए दोवातें अत्यन्त आवश्यक हैं। (१) युद्ध वन्दी और (२) केवल सैनिक प्रश्नो पर विचार।

इस स्पष्टीकरण के वाद कोरिया मे सयुक्तराष्ट्रीय सैनिको के जनरल श्री रिजवे ने कम्युनिस्ट कमान से सम्वन्ध स्थापित किया और पानमुज जोन में विराम सन्धि की वातचीत के लिए तैयारी आरम्भ कर दी। काफी दिन तो यो ही आपस की चखचख में निकल गये। वड़ी मुश्किल से चौदह दिन वाद युद्ध-विराम सधि के लिए दो वातें तय हो पायी (१) कोरिया में युद्ध वन्द करने की मूलशर्त के रूप में असैनिक क्षेत्र के लिए सैनिक सीमा की सेवा तय करना और (२) युद्ध वन्दी और विराम सधि की शर्तें पूरी करने के लिए व्यवस्था करना जिसमें इसका निरीक्षण करने वाली सस्था के सघटन, उसके अधिकार और कार्य का निर्देशन सम्मिलित होगा।

केवल सैनिक हद वन्दी की रेखा निश्चित करने में चार महीने का लम्बा समय निकल गया, और इस प्रकार २७ नवम्वर १९५१ को यह समस्या हल हो सकी। दूसरी वात फिर उलझन में पड गयी। कितने ही राजनैतिक प्रश्न सामने आ गये, पर फिर भी किसी न किसी तरह तय हो गया कि सन्धि के लागू होने के तीन माह वाद आपसी वातचीत के द्वारा कोरिया से विदेशी सेनायें हटाने

और शातिपूर्ण ढग से कोरिया की समस्या के हल के हेतु उच्चस्तर पर राजनैतिक सम्मेलन आयोजित किया जाय।

जव १६ अक्तूबर सन् १९५२ को सयुक्तराष्ट्र सघ की साधारण सभा की मीटिंग हुई तो उसमे कोरिया का प्रश्न भी सम्मिलित कर लिया गया, बहस में भाग लेने के लिए दक्षिणी कोरिया के प्रतिनिधियो को भी बुलाया गया। इस सभा के अध्यक्ष श्री प्रियर्सन थे। उन्होने ५ दिसम्बर को एक तार द्वारा सयुक्त राष्ट्र सघ के रुख की सूचना उत्तरी कोरिया के विदेश मन्त्री को भेजी।

उत्तरी कोरिया के विदेश मन्त्री ने श्री प्रियर्सन को अपने उत्तर मे एक तार भेजा, जिसमें उन्होने अपनी स्थिति स्पष्ट कर दी और वताया कि कोरिया का शान्तिपूर्ण हल कैसे हो सकता है। तार पूरा इस तरह है—

'५ दिसम्बर १९५२ का भेजा हुआ आपका तार हमे मिला, यह तार राष्ट्र सघ की प्लेनरी वैठक मे इसी साल ३ दिसम्बर को स्वीकृत कोरिया के प्रश्न पर यानी कार्यक्रम की १६ वीं वात पर तथा कथित प्रस्ताव के सम्वन्ध में था।

'इस सम्वन्ध मे कोरियाई जनता के जनतन्त्र की सरकार ने मुझे यह कहने का आदेश दिया है कि हम समझते हैं कि उपरोक्त प्रस्ताव के पीछे न सिर्फ वह कानूनी ताकत नही हैं, जो कोरियाई प्रश्न के हलसे सम्वन्धित प्रस्ताव के पीछे होनी चाहिये वल्कि कोरिया में अमेरिका के घृणित हमलावर युद्ध को तुरन्त रोकने तथा शान्ति पूर्ण उपायो से कोरिया के प्रश्न को हल करने में भी वह असमर्थ है। कोरिया की जनवादी सरकार यह भी समझती है कि यह एक अन्याय पूर्ण प्रस्ताव है जिसका उद्देश्य अमेरिका की नीचता पूर्ण साजिशो का समर्थन करना है, जो कोरिया में दुष्टतापूर्ण हमलावर युद्ध को जारी रखने और फैलाने की योजना वना रहा है।

'कोरियाई जनता के जनतन्त्रकी सरकार समझती है कि यह 'प्रस्ताव' कोरियाई जनता की तथा विश्व की तमाम जनता की फौरी मागो और शातिप्रिय इच्छा अभिलाषाओं से जरा भी मेल नही खाता।

'इसी वर्ष १७ अक्तूबर को कोरियाई जनता के जनतन्त्र की सरकार के आदेश पर मैंने माग की थी कि राष्ट्र सघ की जनरल असेम्बली के अधिवेशन में

जब कोरियाई प्रश्न पर बहस हो, तब कोरियाई जनता के जनतन्त्र के सरकारी प्रतिनिध भी उसमे भाग ले। मैने घोषित कर दिया था कि हमारे प्रतिनिधियो की अनुपस्थिती मे यदि कोई बहस हुई और प्रस्ताव पास हुये, तो कोरियाई जनता के जनतन्त्र की सरकार और समूची जनता उन्हे गैर कानूनी समझेगी। जिस भी राज्य और उसकी जनता का भाग्य अन्तर्राष्ट्रीय सभाओ मे निपटाया जा रहा हो उस राज्य और उसकी जनता के सरकारी प्रतिनिधियो को अपने विचार व्यक्त करने का मौका देना न सिर्फ समस्या के न्यायपूर्ण हल के लिए एक जरूरी शर्त है, वल्कि अन्तर्राष्ट्रीय सभाओ के जनवादी और स्वतन्त्र रूप मे काम कर सकने की भी जरूरी शर्त और सभ्य समाज का एक मोटा सिद्धान्त है। लेकिन इस सबसे आखे मूँदकर राष्ट्र संघ के अधिकाँश सदस्यो ने अमेरिकी शासक वर्ग के इशारे पर कोरियाई जनता की केन्द्रीय सरकार की न्यायपूर्ण प्रार्थना को ठुकरा दिया, उन्होने कोरियाई प्रश्न पर बहस मे कोरियाई जनता के अधिकारी प्रतिनिधियो को भाग ले सकने से वचित रखा और लीसिडगमन (सिगमनरी गुट के प्रतिनिधियो) को, जिनको कोई कानूनी हक हासिल नही और जिसे समूची कोरियाई जनता घृणा की दृष्टि से देखती है—वहस में भाग लेने दिया।

'इसका क्या कारण हो सकता है कि अमेरिका के इशारे पर नाचने वाले राष्ट्रसघ के अधिकाश सदस्यो ने जनरल असेम्वली के अधिवेशन मे कोरियाई जनता के जनतन्त्र को भाग लेने की आज्ञा नही दी, हालाकि कोरियाई प्रश्न के न्यायपूर्ण हल के लिये जरूरी था कि दोनो पक्षो के प्रतिनिधि भाग लें। इसका पहला कारण तो यह है कि राष्ट्रसंघ का 'वहुमत' नही चाहता कि कोरियाई प्रश्न का न्यायपूर्ण हल हो। दूसरा कारण यह है कि इस दल को डर है कि कोरियाई जनता के जनतन्त्र के प्रतिनिधि उन सभी अत्याचारो का पर्दाफाश कर देंगे जो अमेरीकियो ने कोरिया मे राष्ट्रसंघ के झडे के नीचे किये हैं। इन वातो को देखते हुए राष्ट्रसंघ के पर्दे के पीछे अमरीकी डालरो की मदद से तैयार किए गये, कोरियाई प्रश्न पर इस 'प्रस्ताव के मसौदे' के पीछे, न केवल यह कि कोई कानूनी ताकत नही है, वल्कि वह एक ऐसी धूर्तता से भरा दस्तावेज है, जिसकी कोई मिसाल नही है। इसलिए दुनियां भर के तमाम ईमानदार लोगो

की आंखो में धूल झोकने तथा दुनिया के जनमत को धोखा देने की गरज से अमेरिका के इशारे पर गढे गये, इस गैर कानूनी 'प्रस्ताव के मसौदे' का मै विरोध करता हूँ। आपने जो प्रस्ताव स्वीकार किया है उसे हमारी सरकार नही मान सकती—और उसी तरह युद्धवन्दियो की वापिसी के प्रश्न पर प्रस्ताव को भी वह स्वीकार नही कर सकती। १२ अगस्त १९४९ के जैनेवा समझौते के एकदम स्पष्ट सिद्धान्तो के मौजूद होते हुए भी आपने जो प्रस्ताव स्वीकार किया है, वह अमेरीकियो के तथाकथित 'अपने आप स्वेच्छा से वापिसी' के सिद्धान्त पर आधारित है, और अमेरिका उस पर अडा हुआ है।

'सारी दुनियां जानती है उसकी इस वे मिसाल माग का वास्तविक अर्थ है—हमारे पक्ष के वीरो पर अत्याचार करना और उनके मनोवल को तोडना। इस माग का वास्तविक अर्थ है—जवरन 'जाच पडताल' और 'पूछ-ताछ' करना। उसके साथ ही पाशविक दवाव डाला जाता है, यहा तक कि निहत्थे लोगो के हत्याकाड रचाये जाते हैं। इस अमानुपिक सिद्धान्त का एकमात्र उद्देश्य है—कोरियाई और चीनी युद्धवन्दियो की एक वहुत वडी सख्या को किसी न किसी मूल्य पर रोक रखना। इस तरह का सिद्धान्त तो अमरीका और उसकी कठपुतलियो के हमलावर उद्देश्यो और इच्छाओ के अनुकूल ही हैं। वह कोरियाई युद्ध का अन्त शान्तिपूर्ण उपायो से नही, वल्कि युद्ध के द्वारा करना चाहते हैं। कोरियाई जनता को अमरीका की कोई भी धोखा-धडी, कोई भी फौजी धमकी डरा नही सकती, घुटने नही टिका सकती। कोरियाई जनता जानती है कि वह अपने देश की आजादी और स्वाधीनता के लिए लड रही है। यह वात अमेरिका के दुस्साहसिको को वहुत पहले ही मालूम हो जानी चाहिये थी। अगर राष्ट्रसंघ, जैसा कि आपके तार में वताया गया है कोरिया में शीघ्र से शीघ्र युद्ध वन्द करने के लिए वास्तव में प्रत्येक कोशिश करने को तैयार है तो उसे ढोंग का मार्ग त्याग देना चाहिये। उसे कोरियाई प्रश्न को सचमुच न्यायपूर्ण ढग से हल करना चाहिये और उसके लिए, सबसे पहले और सबसे अधिक, यह करना चाहिए कि वह कोरिया में तुरन्त युद्ध वन्द करे।

'ऊपर कही गई वातो के आधार पर मै चाहूँगा कि आप जनरल असेम्बली

के अध्यक्ष की हैसियत से आवश्यक कदम उठाये। ताकि—

(१) कोरिया मे युद्ध को जारी रखने तथा फैलाने की इच्छा से चलाई जाने वाली अमरीका की आक्रमणात्मक नीति पर पर्दा डालने के उद्देश्य से जनरल असेम्बली ने जो उपरोक्त तथाकथित प्रस्ताव गैर कानूनी ढग से पास किया है, उसे रद्द किया जाय।

(२) इसी वर्ष १० और २४ नवम्बर को सोवियत सघ द्वारा पेश किये गए प्रस्ताव के आधार पर, जिसे समस्त दुनिया की शान्ति प्रेमी जनता का उत्साहपूर्ण समर्थन और स्वीकृति प्राप्त है, कोरिया के युद्ध को तुरन्त वन्द कर देने के लिए और कोरियाई प्रश्न के शान्ति पूर्ण हल के लिए उपायो पर विचार किया जाय और कदम उठाये जायें।

(३) कोरियाई जनता के जनतन्त्र के प्रतिनिधियो को, जो कोरियाई जनता के सच्चे प्रतिनिधि हैं, राष्ट्रसघ के सगठनो मे कोरियाई प्रश्न पर वहस मे भाग लेने का हक दिया जाय।

(४) पानमुनजौन के सन्धि वार्तालाप को भंग करने वालो को कठघरे मे खडा किया जाय, अर्थात् अमरीकी पक्ष के प्रतिनिधियो को कठघरे में खडा किया जाय, जिन्होने कोरियाई सन्धि वार्ता के अनिश्चित काल तक के लिए स्थगित होने की घोपणा एकतरफा ढंग से करदी—उस सन्धि वार्ता को स्थगित करने की घोषणा कर दी, जिसमे केवल युद्धवन्दियो के प्रश्न को छोडकर सभी वुनियादी प्रश्न हल कर लिए गए थे।

(५) राष्ट्रसघ के झडे के नीचे अमरीकी आक्रमणकारियो द्वारा उत्तरी कोरिया के नगरो और गावो की शान्तिपूर्ण जनता पर होने वाली पाशविक वमवारी वन्द की जाय।

(६) हमारे पक्ष के युद्धवन्दियो को जवरन रोक रखने के उद्देश्य से उन पर ढाये जाने वाले जुल्मो को फौरन वन्द किया जाय। हमारे पक्ष के युद्ध-वन्दियो के साथ अमानुषिक वर्ताव तुरन्त वन्द किया जाय। दक्षिणी कोरिया मे युद्ध वन्दियो के खेमो में रचाये जाने वाले हत्याकांडो और वर्वर अत्याचारो को तुरत वन्द किया जाय।

(७) अन्तर्राष्ट्रीय कानून के मापदण्डो और मानव चेतना के आधार पर अमरीकी युद्ध अपराधियो को कड़ी सजा दी जाय, ताकि अन्तर्राष्ट्रीय कानून और मानवीय भावनाओ के मापदण्डो को बेरहमी से रौंदते हुए गैर कानूनी किस्म के हथियारो, कीटाणु युद्ध और रसायनिक हथियारों का प्रयोग करने-वाले, तथा उत्तरी कोरिया की शान्तिपूर्ण जनता को नष्ट-भ्रष्ट करने की इच्छा से कत्लेआम के दूसरे तरीके अपनाने वाले अमरीकी युद्ध-अपराधी अपनी दुष्टता-पूर्ण कार्रवाइयो को न दुहरायें।

'यदि राष्ट्रसघ के 'वहुमत' ने तमाम कोरिया की तथा समूची शान्तिपूर्ण जनता की आशाओ को व्यक्त करने वाले, इन न्यायपूर्ण सुझावो को ठुकरा दिया, तो कोरिया में युद्ध को जारी रखने की पूरी जिम्मेदारी राष्ट्रसघ के उन देशो पर होगी जो प्रकट या अप्रकट रूप से कोरिया मे अमरीका की हमलावर नीति का समर्थन कर रहे हैं।

'मै आपसे यह भी कह दूँ कि आप राष्ट्र सघ के सभी सदस्य देशो के समक्ष मेरे इस वयान को वितरित कर दे।

'अध्यक्ष महोदय, अपने प्रति मेरी गहरी सम्मान भावना को स्वीकार कीजिये।'

पानमुनजोन मे चलने वाली वार्ता १९५३ के अप्रैल में सफल होती हुई दिखाई दी। बीमार और घायल वन्दियो की अदला-बदली के समझौते पर दोनो पक्षो ने ११ अप्रैल १९५३ को हस्ताक्षर कर दिए और इससे आशा होने लगी कि जल्दी ही दूसरे प्रश्न भी सुलझ जायेंगे और शान्ति से कोरिया की समस्या हल हो जाएगी। परन्तु सयुक्त राष्ट्रसघ की ओर से इस सन्धिवार्ता में भाग लेने वाले प्रमुख अधिकारी लेफ्टिनेण्ट जनरल [illegible] यह प्र[illegible] कि विराम-सन्धि समझौते के अन्तरगत अपने [illegible] मे इ[illegible] ने वन्दियो के निष्पक्ष सरक्षक के रूप मे पा[illegible] [illegible]ग्या [illegible] [illegible]री और के प्रतिनिधियो ने निष्पक्ष सरक्षक [illegible] र हैं [illegible] अ[illegible] कार ही किया [illegible] न्य वार्ता [illegible] ला [illegible] बाद कुछ ऐ[illegible] [illegible] [illegible]न

गए हैं, मगर अमेरिका कुछ रूठ सा गया है।

जनरल हैरीसन के प्रस्ताव के मुकाविले एक दूसरा प्रस्ताव नामइल ने रखा। इसकी प्रतिक्रिया भी कम दिलचस्प न थी। यह प्रस्ताव अष्टसूत्री प्रस्ताव के नाम से प्रसिद्ध हुआ। प्रेसट्रेस्ट आफ इण्डिया के सम्वाद दाता के समाचार मे कहा गया—'अष्ट सूत्रीय कम्युनिस्ट प्रस्ताव के अध्ययन की तत्काल यहाँ पर प्रतिक्रिया हुई कि वह संयुक्तराष्ट्र संघ की साधारण सभा द्वारा ३ दिसम्वर १९५२ को स्वीकृत भारतीय प्रस्ताव के सदृश्य ही है। इस प्रस्ताव के कई भाग वास्तव मे भारतीय प्रस्ताव से लिये गये हैं।' और इस तरह से वार्ता चलती रही और ८ जून १९५३ को वदियो की अदला-वदली के लिये तटस्थ राष्ट्र वापसी आयोग की नियुक्त के सम्वन्ध मे समझौता हो गया। इस समझौते के अनुसार भारत को जो दायत्व सौंपा गया, इससे यह स्पष्ट सिद्ध होता है कि भारत पर दोनो ओर के राष्ट्रो को पूर्ण विश्वास हो गया था।

इस स्वीकृत प्रस्ताव मे भारत, स्वीडन, स्वीटजरलैण्ड, पौलेण्ड और चेकोस्लोवाकिया का एक-एक प्रतिनिध आयोग में रहेगा। यह भी निश्चय किया गया कि शाति को वनाये रखने के लिये केवल भारत ही अपनी सैना रख सकेगा और कमेटी का अध्यक्ष भी भारत ही होगा।

२७ जुलाई को सयुक्तराष्ट्र सघ की ओर से जनरल विलियम हेरीसन और साम्यवादी देशो की ओर से जेनरल नामइल ने इस विश्व प्रसिद्ध समझौते पर नौ वजकर पैतीस मिनट पर हस्ताक्षर किये। इस समझौते में यह निश्चित किया गया कि कोरिया की समस्या को अतिम रूप से हल करने के लिये सम्वधित देशो का राजनैतिक सम्मेलन वुलाया जाय। जव यह सोचने का समय आया कि सम्वधित देशो मे किन-किन देशो को वुलाया जाय, तव भारत पुन. एकवार सामने आया। रूस और चीन की सरकार ने अपनी पूरी कोशिश की कि भारत को भी सम्मलित किया जाय, तव अमेरिका ने उनका डटकर विरोध किया। सवसे पहले सयुक्तराष्ट्र सघ मे अमेरिका के प्रतिनिध श्री हेनेरी केवट लाज ने राजनैतिक सम्मेलन में भारत और रूस के सम्मलित करने का विरोध किया। अमेरिका के इस तरह के रुख की आलोचना अमेरीका परस्त अखवारो

निकलने दिया और न उतने बड़े पैमाने पर उपद्रव ही होने दिये जितने बड़े पैमाने के उपद्रव की दक्षिणी कोरिया ने तैयारी की थी ।

इस प्रकार भारत ने कोरिया के सम्बन्ध में जो नीति ग्रहण की उससे दुनियां को पता चल गया कि भारत की नीति, पंडित नेहरू की नीति शान्ति और विश्व के अन्य राष्ट्रों से भाई चारे की नीति है ।

चतुर्थ अध्याय

चीन और भारत की मित्रता
शान्ति का नया दौर

निकलने दिया और न उतने बडे पैमाने पर उपद्रव ही होने दिये जितने बडे पैमाने के उपद्रव की दक्षिणी कोरिया ने तैयारी की थी ।

इस प्रकार भारत ने कोरिया के सम्बन्ध में जो नीति ग्रहण की उससे दुनिया को पता चल गया कि भारत की नीति, पडित नेहरू की नीति शान्ति और विश्व के अन्य राष्ट्रो से भाई चारे की नीति है ।

चतुर्थ अध्याय

चीन और भारत की मित्रता

शान्ति का नया दौर

पहली बात

चीन और भारत विश्व में दो ऐसे देश हैं, जिन्होने कभी भी आपस में युद्ध नही किया, और सदैव एक-दूसरे के मित्र बने रहे। यदि हम मौर्य-काल के इतिहास के पन्ने पलटे तो हमें वहाँ पढने को मिलता है कि उस समय चीन और भारत मे गहरी मित्रता थी, चीन का राजदूत हमारे देश मे रहता था। कई चीनी विद्वानो ने अशोक समय के भारत की बडी प्रशसा लिखी है।

धर्म के अनुसार भी आज का चीनी धर्म, बौद्ध धर्म हमारे देश की ही दैन है। अशोक काल में ही हमारे देश से बौद्ध धर्मावलम्बी चीन, जापान सुमित्रा की यात्रा को गये थे, और उन्होने पूरी स्वतन्त्रता के साथ अपने धर्म का प्रचार वहाँ किया था, जिसका उदाहरण वहाँ आज भी बौद्ध धर्मावलम्बियो की असख्य संख्या है, जबकि भारत में बौद्ध धर्म के अवशेष नाम मात्र को शेष रह गये हैं।

पौराणिक भारत से लेकर परतत्र भारत तक चीन और भारत में गहरी मित्रता बनी रही। पडित नेहरू परतन्त्र भारत में भी चीन गये थे। च्यागकाई शेक पडित नेहरू का गहरा मित्र था, मगर इसका अर्थ पडित नेहरू और च्यांगकाई शेक की मित्रता नही, वरन् भारत और चीन की गहरी मित्रता थी, क्योकि च्याग के पतन के पश्चात् चीन की नयी समाजवादी सरकार से यदि किसी देश का सबसे पहले दौत्य सम्बन्ध हुआ तो वह भारत ही है। पडित नेहरू की मित्रता चीनी जनता से थी, न कि वहाँ के व्यक्ति विशेष च्यागकाई से। बल्कि पंडित नेहरू ने कई बार च्यांगकाई शेक की खुले शब्दो में भर्त्सना की है, और फारमोसा के प्रश्न पर अमरीकी दखलन्दाजी को बुरा बताया है।

जब चीन मे नये परिवर्तन हो रहे थे, तो हमारे देश के नेता उन्हें बडे ध्यान के साथ देख रहे थे। और ज्योही चीन में जनवादी सरकार की स्थापना हुई, हमारे देश के सम्मानित व्यक्ति चीन जाने लगे। चीन सरकार ने नेहरू जी को निमन्त्रण भी दिया।

इस सबका एक कारण है, और उसके लिये हमे वर्तमान या पुरातन काल की सभ्यता और सस्कृति को देखना पड़ेगा।

चीन और भारत को यदि एशिया से अलग कर दिया जाय तो शेप एशिया में बच ही क्या रहता है। दोनो देशो की आवादी मे यदि रूस की आवादी और जोड़ दी जाय तो इन तीनो देशो की आबादी सारी दुनिया की आवादी की आधी आवादी हो जाती है। इसी तरह से हमारे देश और चीन का दर्शन लगभग मिलता-जुलता है, सास्कृतिक सम्वन्धो मे भी विशेप भेद नही हैं। यदि हम चीनी नामो में विना हेर-फेर के केवल कुछ मात्राएँ वदले तो पूर्ण रूपेण वहाँ के निवासियो के नाम भारतीय नाम बन जाते हैं, इस तरह हमे सोचना पडता है कि चीन और भारत में अन्तर कुछ भी नही है, और जो है वह नाम मात्र का है।

भोगोलिक दृष्टि से भी हिन्दुस्तान की उत्तरी पूर्वी सीमा चीन की सीमा से मिली हुई हे, अर्थात् तिव्वत चीन का प्रदेश है, और लगभग तिव्वत की सारी दक्षिणी सीमा भारत की सीमा से मिली हुई है। इस पुरानी मित्रता को वनाये रखने के लिये दोनो देशो की जनता ने एक-दूसरे की ओर एक ही साथ हाथ वढाया और फिर दोनो आजाद और स्वतन्त्र देश आपस मे गले मिले। शिकवा शिकायत की तो कोई वात ही नही थी। कुछ सर फिरो ने तिव्वत के नाम पर पडित नेहरू का मित्रता पूर्ण रुख चीन की ओर से फेरना चाहा, मगर पडित नेहरू ने उन सवको धता वतायी, उन्होने खुले शब्दो में कहा तिब्वत चीन का अग है और रहेगा, हमें इसके वारे में कुछ नही कहना चाहिये।

झगडा यो खडा हुआ—

तिव्वत सदियो मे चीन का अग रहा है, १५७५ और १९१८ के बीच कितनी ही वार इस वात को दुहराया गया कि तिव्वत चीन का अग है, मगर ब्रिटेन ने तिव्वत के दलाईलामा को पट्टी पढाई कि वह अपने को स्वतन्त्र घोषित कर दे। केवल स्वशासन का जहाँ तक प्रश्न था, चीन ही उन्हे स्वशासन दे सकता था, मगर साम्राज्यवादियो ने दलाईलामा की आड मे तिव्वत के भीतर रहकर चीन के विरुद्ध नाकेबन्दी आरम्भ कर दी और विश्व भर के पैमाने पर

प्रचार किया गया कि तिब्बत सदैव स्वतन्त्र रहा है, उस पर चीन का कोई आधिपत्य नही। दलाईलामा ने भी इस सम्बन्ध मे घोषणा कर दी। नतीजा हुआ कि चीन ने अपनी मुक्ति फौजे तिब्बत में भेज दी। यह एक पुलिस कार्रवाई जैसी चीज थी। जहाँ बिना खून बहाये मुक्ति सेना ने तिब्बत को वास्तव मे मुक्त कराया उन तत्त्वो से जो तिब्बत निवासियो की रोजना की जिन्दगी को बरबाद किये दे रहे थे, जो चीन के विरुद्ध तिब्बत के सीधे-सादे निवासियो को भडका रहे थे। १९०६ में ब्रिटेन और चीन के बीच एक समझौता हुआ था उसमें भी ब्रिटेन ने तिब्बत पर चीन की प्रभुसत्ता स्वीकार की थी और इतिहास इस बात का साक्षी है कि लार्ड कर्जन के समय तक ब्रिटेन ने तिब्बत पर चीन की प्रभुसत्ता स्वीकार की थी। सीमा के बारे मे भी १८९० में एक समझौता हुआ था उसमें भी तिब्बत पर चीन की प्रभुसत्ता स्वीकार की थी। सन् १९१४ के महायुद्ध के पश्चात् ब्रिटेन ने एक बार फिर तिब्बत पर कब्जा की चेष्टा की थी, मगर उसे मुँह की खानी पडी। तिब्बत और ब्रिटेन ने उस समय जो सन्धि की थी, उसके विरुद्ध भी चीन ने तिब्बत में अपनी सेनाएँ भेजी थी, पर भीतरी गड़बड के कारण उन्हे सफलता नही मिल सकी थी।

कुछ सिर फिरे भारतीयो ने जब इसका समर्थन किया कि तिब्बत में चीन अत्याचार कर रहा है तो पडित नेहरू ने खुले शब्दो में घोषणा की—'तिब्बत का मामला बहुत साधारण है, जब चीनी लोक गणतन्त्र की सरकार ने तिब्बत की मुक्ति के सम्बन्ध में अपने विचार प्रगट किये थे, तभी से भारत की ओर से चीन स्थित उसके राजदूत ने चीन सरकार को भारत की सम्मति से अवगत करा दिया था। और हमने ये हार्दिक इच्छा जाहिर की थी कि चीन और तिब्बत शाति पूर्वक समस्या हल कर लेंगे हमने यह भी स्पष्ट कह दिया कि तिब्बत के बारे में हमारी कोई क्षेत्रीय या राजनैतिक अभिलाषा नही है। उनसे हमारा व्यापारिक और सास्कृतिक सम्बन्ध है। हमने चीन को बताया कि इन सम्बन्धो को कायम रखने की हमारी इच्छा स्वाभाविक है, क्योकि इससे न तो चीन के मार्ग में कोई अड़चन पड़ती है, न तिब्बत के। हमने इसमें कभी ये इच्छा भी नही दिखायी कि तिब्बत का स्वायत्त शासन का अधिकार जिसका उप-

जो यातुंग मे भारत सरकार के इस्तैमाल या कब्जे मे है, सिवाय उस जमीन के जो यातुंग मे व्यापारी एजेसी के अहाते या चहार दीवारी के अन्दर है।

ऊपर वर्णित जमीनो पर जो भारत सरकार के इस्तैमाल या कब्जे मे है और जिनको भारत सरकार लौटाने वाली हो, यदि भारत सरकार के गोदाम या भारतीय व्यापारियो की दूकाने, गोदाम या मकान हैं और इसलिये इन जमीनो को पट्टे पर लेते रहने की जरूरत है, तो चीन सरकार स्वीकार करती है कि वह भारत सरकार या भारतीय व्यापारियो के साथ यथोचित इन जमीनो के उन हिस्सो को यहाँ पर उठाने के लिये इकरार नामे पर दस्तखत करेगी, जिन हिस्सो पर ऊपर वर्णित गोदाम, मकान या दूकाने हो या जो जमीन के हिस्से इन इमारतो से सम्बन्ध रखते हो।

(६) दोनो ओर के व्यापारिक एजेंट स्थानीय सरकार के कानूनो और उपनियमो के अनुसार दीवानी या फौजदारी मामलो में ग्रस्त अपने देश वासियो से मिल सकेंगे।

(७) दोनो ओर के व्यापारिक एजेंट और व्यापारा पास-पडौस के लोगो को नौकर रख सकेंगे।

(८) ग्यात्से और यातुंग में भारतीय व्यापारी एजेसियो के अस्पताल एजेंसी के लोगो की सेवा बदस्तूर करते रहेंगे।

(९) प्रत्येक सरकार दूसरे देश के व्यापारियो और तीर्थ यात्रियो की जान और सम्पत्ति की रक्षा करेगी।

(१०) चीन सरकार स्वीकार करती है कि वह यथा सम्भव, प्रलन चुंग (तकलाकोट) मे कांगरियो चे (कैलाश) और मवंत्सो (मानसरोवर) तक के रास्ते पर तीर्थ यात्रियो के लिये आराम घर बनायेगी। भारत सरकार तीर्थ-यात्रियो को सभी सम्भव सुविधाएँ भारत में देना स्वीकार करती है।

(११) दोनो तरफ के व्यापारियो और तीर्थ यात्रियो को साधारण और उचित दर पर यातायात के साधन किराये पर लेने की सुविधा दी जायेगी।

(१२) प्रत्येक पक्ष की तीनो व्यापारिक एजेन्सियाँ बारहो महीने काम कर सकती है।

(१३) दोनो देशो के व्यापारी स्थानीय उपनियमो के अनुसार उन स्थानो में जो दूसरे देश के अधिकार मे हो, मकान या गोदाम किराये पर ले सकते हैं।

(१४) इकरार नामे के अनुच्छेद न० २ मे जो स्थान निर्दिष्ट किए गये हैं, उन पर दोनो देशो के व्यापारी स्थानीय उपनियमो के अनुसार यथाक्रम व्यापार कर सकते है। और—

(१५) दोनो देशो के व्यापारियो के वीच कर्ज या मुतालवे के झगडो को स्थानीय कानूनो और उपनियमो के अनुसार हाथ मे लिया जायेगा।[1]

इस समझौते से यह स्पष्ट हो गया कि चीन और भारत के वीच कभी भी कोई खाई पैदा नही हो सकती। और यदि हुई तो वह तुरन्त पाट दी जायेगी।

चाओ एन लाई भारत में

गत पृष्ठो के अध्ययन से यह तो स्पष्ट हो गया कि पडित नेहरू विश्व मे शान्ति स्थापना के लिये प्रयत्नशील रहे हैं, मगर उनका अपना एक सिद्धान्त है, वहुत दिन हुए एक ग्राम सभा मे उन्होने कहा था—'यदि कोई आदमी स्वय को सुधार लेता है, तो वह अपने देश के एक भाग को सुधार लेता है, पश्चात् उसे अपने परिवार, गाँव, जिला और प्रान्त तथा देश की सेवा करनी चाहिये।'

पडित नेहरू के इस सिद्धान्त मे मेरा विचार है सभी सहमत होंगे, क्योंकि जो व्यक्ति स्वय को नही सुधार सकता वह पडोस या गाँव को कैसे सुधार सकता है? ठीक इसी प्रकार जहाँ पडित नेहरू विश्व में शान्ति स्थापना की चेष्टा करते रहे, वही उन्होने एशिया मे शान्ति को सुदृढ वनाया, और एशिया में शान्ति की जडो का उन्होने प्रत्येक क्षण ध्यान रखा। जव कोरिया मे युद्ध हो रहा था, और सयुक्त राज्य अमेरिका यद्ध की लपटो को शान्त न होने देने की चेष्टा कर रहा था, तव पडित नेहरू ने अमेरिका के लिये डाटा तो था ही, साथ ही वह लगातार इस वात की चेष्टा भी करते रहे थे कि किसी प्रकार चीन को

[1] भारत सरकार और चीन दूतावास की समय-समय पर निकलने वाली विज्ञपतियो से।

तथा एशिया की शान्ति को सुदृढ करने वाला सिद्ध हुआ। पूरा भाषण इस प्रकार है—

'भारतीय प्रधानमन्त्री जी, देवियो और सज्जनो !

'महामहिम प्रधानमन्त्री श्री नेहरू के निमन्त्रण पर भारत आकर मुझे भारत सरकार और भारतीय जनता का हार्दिक स्वागत और उत्साहपूर्ण आथित्य-सत्कार प्राप्त हुआ है। प्रधानमन्त्री नेहरू ने इस भोज का आयोजन कर मुझे अपने प्रतिष्ठित मित्रो से मिलने का अवसर प्रदान किया है, जिसके कारण मै अत्यन्त गौरव और आनन्द अनुभव कर रहा हूँ। माननीय प्रधानमन्त्री जी, मै आपके प्रति और आपके द्वारा भारत की सरकार और जनता के प्रति हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करता हूँ।

'चीन और भारत में दो हजार वर्षो से परम्परागत मित्रता चली आ रही है। भारतीयगण राज्य और चीनी लोक गणतन्त्र के बीच, समानता, परस्पर लाभ और एक दूसरे की प्रादेशिक अखण्डता और प्रभुसत्ता के सम्मान के आधार पर कूटनीतिक सम्बन्ध स्थापित हो जाने से, हमारे दोनो देशो के लोगो की इस मित्रता में, पिछले कुछ वर्षो में, नई प्रगति हुई है।

'चीनी सरकार और जनता भारतीय सरकार और जनता की मित्रता को बहुत ही मित्रतापूर्ण समझती है। हमारे दोनो देशो के सम्बन्ध दिन-प्रतिदिन और मजबूत हो रहे हैं, और सांस्कृतिक व आर्थिक नाते बराबर बढ रहे है। खासकर, इस वर्ष अप्रैल में चीन और भारत के बीच, चीनी तिब्बत प्रदेश और भारत के पारस्परिक व्यापार और आवागमन के सम्बन्ध मे, जो समझौता हुआ है, उसने न केवल चीन-भारत मित्रता मे सुधार किया है, बल्कि हमारे दोनो देशो के सम्बन्धो के निम्नलिखित सिद्धान्तो पर भी प्रकाश डाला है। एक दूसरे की प्रादेशिक अखण्डता और प्रभुसत्ता का सम्मान करना, एक दूसरे के विरुद्ध आक्रमक कार्रवाही न करना, एक दूसरे के घरेलू मामलो मे हस्तक्षेप न करना, समानता और परस्पर लाभ की नीति का और शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व की नीति का पालन करना। इस प्रकार, इस समझौते ने राष्ट्रों की पारस्परिक समस्याओ को बातचीत द्वारा सुलझाने का एक अच्छा उदाहरण प्रस्तुत किया है।

'चीन भारत दोनो शान्तिप्रिय देश हैं। चीनी जनता को इस बात की बड़ी प्रसन्नता है कि उसका पडौसी भारत जैसा देश है जो शान्ति के उद्देश्य में सलग्न है। कोरिया विराम सधि सम्पन्न कराने के लिए जो प्रयत्न किये गये हैं, उनमें भारत का अमूल्य योग रहा है। हिन्द चीन की लडाई को बन्द कराने की कोशिशो में भारत बराबर दिलचस्पी लेता रहा है। और जैनेवा सम्मेलन में, हिन्द चीन में फिर से शान्ति स्थापित करने के लिये जो प्रयत्न किये गये हैं, उनका सबने दृढता से समर्थन किया है। यह बिल्कुल स्पष्ट है कि भारत की ये नीति एशिया की शान्ति की सुरक्षा के लिये बहुत ही महत्त्वपूर्ण है।

'एशिया के तमाम लोग शान्ति की इच्छा रखते हैं। एशिया की शान्ति को जो इस समय खतरा है वह बाहर से है। लेकिन आज का एशिया कल का एशिया नही है। वह युग, जब बाहरी शक्तियाँ अपनी इच्छानुसार एशिया के भाग्य का निर्णय कर सकती थी, सदा के लिए बीत चुका है। हमे विश्वास है कि एशिया के तमाम शान्तिप्रिय राष्ट्रो और लोगो की एकता, जगबाजो की साजिश को परास्त कर देगी। मुझे आशा है कि चीन और भारत, एशिया की शान्ति की सुरक्षा के उच्च उद्देश्य के लिये परस्पर और भी घनिष्ठ सहयोग स्थापित करेंगे।

'माननीय प्रधानमन्त्री जी, मै चीन और भारत के मैत्रीपूर्ण सहयोग के लिये, भारत की राष्ट्रीय समृद्धि के लिये और भारतीय जनता के कल्याण के लिये, आपकी सेहत का जाम पेश करता हूँ।'

प्रैस कान्फ्रेस में

२७ जून १९५४ को श्री चाओ एन लाई ने सम्वाददाताओ के प्रश्नो के उत्तर दिए।

कुछ सम्वाददाताओ ने प्रश्न किया कि 'क्या आपके पास अन्तर्राष्ट्रीय तनाव कम करने के लिए कुछ ठोस सुझाव हैं?

इस प्रश्न का उत्तर देते हुए श्री चाओ-एन-लाई ने कहा—

'मेरे विचार में अन्तर्राष्ट्रीय तनाव को कम करने का मुख्य उपाय युद्ध का

विरोध करना और शान्ति की रक्षा करना है। कोरियन विराम सन्धि से अन्तर्राष्ट्रीय तनाव कुछ कम हुआ है। यदि हिन्द चीन की लडाई बन्द कर दी जाए और वहाँ फिर से शान्ति स्थापित कर दी जाए तो अन्तर्राष्ट्रीय तनाव और भी कम हो जाएगा। फिर भी, हमें इस तथ्य की उपेक्षा नही करनी चाहिये कि अभी तक ऐसे लोग मौजूद हैं जो हिन्द चीन के दोनो युद्धरत पक्षो की सम्मानजनक विराम सन्धि में वाधा डाल रहे हैं। इसलिए शान्ति से प्रेम करने वाले राष्ट्रो और लोगो को अपने प्रयत्न जारी रखने चाहिए और इस प्रकार की वाधाजनक कार्रवाहियो को सफल नही होने देना चाहिए।

प्रश्न—क्या आपके पास एशियाई राष्ट्रो के आपसी सहयोग को वढाने के लिए ठोस सुझाव हैं ?

उत्तर—मेरे विचार में प्रधानमन्त्री पडित नेहरू का ये कथन ठीक है कि इस साल अप्रैल मे चीन और भारत का, चीनी तिव्वत प्रदेश और भारत के परस्पर व्यापार और आवागमन के सम्वन्ध में, जो समझौता हुआ है, उसकी प्रस्तावना के पाँच सिद्धान्तो को चीन और भारत के सम्वन्धो का निर्देशन करना चाहिए। ये सिद्धान्त ये हैं—एक दूसरे की प्रादेशिक अखडता और प्रभुसत्ता का सम्मान करना, एक दूसरे के विरुद्ध आक्रामक कार्रवाही न करना, एक दूसरे के घरेलू मामलो में हस्तक्षेप न करना, समानता और परस्पर लाभ की नीति का और शान्तिपूर्ण सह अस्तित्व की नीति का पालन करना। ये सिद्धान्त केवल हमारे दोनो देशो के लिए ही नहीं, वल्कि एशिया के अन्य देशो और ससार में तमाम देशो के लिए भी अच्छे हैं। यदि इन सिद्धान्तो को एशिया में विस्तृत रूप से लागू किया जाए तो युद्ध का खतरा कम हो जायेगा और एशियाई राष्ट्रो के आपसी सहयोग की सम्भावना वढ जायेगी।

प्रश्न—संसार मे कुछ राष्ट्र वडे और कुछ छोटे हैं, कुछ शक्तिशाली हैं, कुछ निर्वल हैं, फिर वे शान्तिपूर्वक साथ-साथ कैसे रह सकते हैं ?

उत्तर—हमारी राय यह है कि अभी-अभी दूसरे प्रश्न के उत्तर में मैंने जिन पाँच सिद्धान्तो का उल्लेख किया है, उसके आधार पर ससार के सभी राष्ट्र—चाहे वे वडे हो या छोटे, शक्तिशाली हो या निर्वल और चाहे उनमें से प्रत्येक

की सामाजिक व्यवस्था किसी प्रकार की क्यो न हो—शान्तिपूर्वक साथ-साथ रह सकते हैं। प्रत्येक राष्ट्र की जनता के राष्ट्रीय स्वाधीनता और आत्म निर्णय के अधिकारो का सम्मान किया जाना चाहिये। प्रत्येक राष्ट्र के लोगो को यह अधिकार होना चाहिए कि वे अपने लिए, दूसरे देश के हस्तक्षेप के बिना जैसी भी राज्य व्यवस्था और जीवन प्रणाली चाहे, चुन सकते हैं। क्रान्ति विदेशों से नही मँगाई जा सकती। साथ ही, किसी देश के लोगो की, सम्मिलित रूप से व्यक्त की गई इच्छा मे बाहरी हस्तक्षेप भी नही होने देना चाहिए। यदि ससार के सभी राष्ट्र इन सिद्धान्तो को अपने आपसी सम्बन्धो का आधार बना लें तो एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र को न तो धमकी देगा और न उसके विरुद्ध आक्रामक कार्यवाही करेगा और विश्व के सभी राष्ट्रो का शान्तिपूर्ण सह अस्तित्व सम्भावना नही बल्कि एक वास्तविकता बन जायेगी।

प्रश्न—क्या यह उचित होगा कि एशिया के प्रमुख देशो के प्रधानमन्त्री, एशिया की शान्ति और सुरक्षा को बनाए रखने के सामान्य उपाय ढूंढने के लिए, समय समय पर आपस मे मिलते रहे ?

उत्तर—मेरी राय मे एशिया की शान्ति और सुरक्षा को बनाये रखने के सामान्य उपाय ढूंढने के लिए, यह उचित होगा कि प्रमुख एशियाई देशो के उचित जिम्मेदार व्यक्ति समय-समय पर आपस मे मिलते रहे और एक दूसरे से परामर्श करते रहे।

प्रश्न—चीन और भारत के सम्बन्ध किस प्रकार मजबूत किये जा सकते हैं ?

उत्तर—मेरे विचार मे चीन और भारत के सम्बन्धो को मजबूत करने और बढाने के लिये हमे विभिन्न दिशाओ में प्रयत्न करना होगा। चीन और भारत में दो हजार वर्ष से परम्परागत मित्रता चली आ रही है, हाल ही मे दोनो देशों के बीच चीनी तिब्बत प्रदेश और भारत के पारस्परिक व्यापार और आवागमन के सम्बन्ध मे, एक समझौता हुआ है, जो पचशील के ऊपर आधारित है। इससे हमारे दोनो देशो के सम्बन्धो को मजबूत करने का आधार मिल गया है। इस नूतन आधार पर दोनो देशो की सरकारो और व्यक्तियो मे दीर्घ, विश्व-शान्ति के लिये घनिष्ठ सहयोग और स्थिर सम्पर्क स्थापित होने से और दोनों देशो के

आर्थिक सम्बन्धो के विकास और सास्कृतिक आदान प्रदानो से हमारे दोनो देशों के सम्बन्धो को बराबर सुदृढ और विकसित किया जा सकेगा। यह कहा गया है कि हमारे दोनो देशो में इस समय अपेक्षाकृत कम व्यापार हो रहा है। मेरे विचार में एक-दूसरे की आवश्यकताओ को पूरा करने और सहायता करने की भावना से तथा समानता और परस्पर लाभ के आधार पर, ऐसे उपाय ढूँढे जा सकते हैं, जिनसे यह व्यापार बढ सके।

ऐतिहासिक लालकिला

दिल्ली के नागरिको की ओर से प्रधान मत्री चाओ'एन लाई का एक स्वागत समारोह लालकिले में किया गया जिसमें उन्होने अपने भाषण में कहा—
'हम यहाँ भारतीय जनता के लिये चीनी जनता की मित्रता लेकर आये हैं। और हम यहाँ भारतीय जनता में भी चीनी जनता के लिये वैसी ही गहरी मित्रता देख रहे हैं।

'हम यहाँ चीन के लोगो की शाति को बचाने की प्रबल इच्छा लेकर आये हैं। और हम यहाँ भारत के लोगो में भी शान्ति को बचाने की उतनी ही प्रबल इच्छा अनुभव कर रहे हैं।

'दिल्ली के लोगो और उनके नेताओ में हमने समूचे भारत के लोगो की, हिन्द-चीन मैत्री को बढाने और विश्व-शान्ति की रक्षा करने की सामान्य भावना और आकांक्षा का अनुभव किया है।

'हमारे दोनो देशो के लोगो की युगो से चली आती स्फूर्तिदायनी मित्रता का हम सबने बडे उत्साह से उल्लेख किया है। आज, जब हम एक जगह उपस्थित हैं, हम यह बात सन्तोष के साथ कह सकते हैं कि हमारी यह परम्परागत मित्रता दिन प्रति दिन बढ रही है।

'हम सबने कहा है कि हमारे दोनो देशो के लोग स्थायी शान्ति की सामान्य इच्छा रखते हैं। नि:सन्देह भारत और चीन के ९६ करोड लोग जब यह मांग कर रहे हैं कि हमें सगठित होना चाहिए और कधे से कधा मिलाकर काम करना चाहिए, तो इससे यह स्पष्ट है कि शान्ति की सुरक्षा के लिये एक विराट शक्ति

का निर्माण हो रहा है ।

'इन सब बातो से मुझे यह विश्वास हो गया है कि नि सन्देह भारत की हमारी इस यात्रा के मूल्यवान परिणाम निकलेगे ।

'आपकी यह कामना कि जैनेवा सम्मेलन में हमे सफलता मिले, मुझे विश्वास है कि शान्ति के लिए चीन और भारत की—एशिया के दो प्रमुख राष्ट्रो की—एकता के और मजबूत होने से जैनेवा सम्मेलन की सफलता की सम्भावनाएँ निःसन्देह और बढ जायेंगी ।'

रेडियो पर

चीन के प्रधान मत्री श्री चाओ एन लाई द्वारा २७ जून १९५४ को रेडियो पर दिया गया भाषण ऐतिहासिक भाषण के नाम से पुकारा जाता है, हम उसे नीचे ज्यो का त्यो दे रहे हैं—

'प्रिय भारतीय मित्रो !

'भारत के लोगो के लिये भाषण देने का मुझे जो अवसर मिला है, इससे मुझे बडी प्रसन्नता अनुभव हो रही है । सबसे पहले मै भारत की महान जनता का चीन की महान जनता की ओर मे अभिनन्दन करता हूँ ।

'चीन और भारत की जनता में बहुत ही प्राचीन काल से गहरी मित्रता रही है । लगभग तीन हजार किलोमीटर लम्बी एक सीमान्त रेखा इन दो राष्ट्रो को एक-दूसरे से जोड रही है । इतिहास इस बात का साक्षी है कि हमारे दोनो देशो के बीच, शताब्दियो तक सास्कृतिक और आर्थिक आदान-प्रदान होते रहे है, लेकिन कभी भी लडाई या शत्रुता नही हुई है ।

"निकट अतीत में चीन और भारत दोनो को विदेशी उपनिवेशवाद के आक्रमण और दमन का शिकार होना पडा था । लेकिन चीनी जनता और भारतीय जनता अपनी स्वाधीनता और स्वतन्त्रता के लिये बराबर सघर्ष करती रही । एक-सी विपत्ति का शिकार होने और एक-से उद्देश्य के लिये संघर्ष करने के कारण चीन और भारत के लोग एक-दूसरे से गहरी सहानुभूति रखने लगे और एक-दूसरे को गहराई से समझने लगे ।

अन्यत्र शान्तिपूर्ण समझौते के जो प्रयत्न हो रहे हैं उन सम्भव उपायो मे, सभी द्वारा, सहायता पहुँचाई जाए। उनका मुख्य उद्देश्य एक दूसरे के दृष्टिकोण को और भी अच्छी तरह समझना है जिससे कि पारस्परिक सहयोग और अन्य देशो के सहयोग द्वारा, शान्ति बनाए रखने मे सहायता पहुँचाई जा सके।

३—हाल ही में चीन और भारत का एक समझौता हुआ है जिसमे उन्होने दोनो देशो के आपसी सम्बन्ध किस प्रकार के हो, इसके लिए कुछ सिद्धान्त स्थिर किये हैं। ये सिद्धान्त हैं—

(१) एक दूसरे की प्रादेशिक अखडता और प्रभुसत्ता का सम्मान करना,
(२) एक दूसरे के विरुद्ध आक्रामक कार्रवाई न करना,
(३) एक दूसरे के घरेलू मामलो मे हस्तक्षेप न करना,
(४) समानता और परस्पर लाभ की नीति का पालन करना, और
(५) शान्तिपूर्ण सह अस्तित्व की नीति का पालन करना।

प्रधान मन्त्रियो ने इन सिद्धान्तो की फिर से पुष्टि की है और यह अनुभव किया है कि उन्हे, एशिया और ससार के अन्य भागो के दूसरे देशो के साथ भी अपने सम्बन्ध इन्ही सिद्धान्तो के आधार पर स्थापित करने चाहिएं। यदि इन सिद्धान्तो को न केवल विभिन्न देशो के आपसी सम्बन्धो मे, बल्कि अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धो में भी सामान्य रूप से लागू कर दिया जाय, तो ये शान्ति और सुरक्षा का ठोस आधार बन जाएंगे और आज जो भय और आशकाएँ हैं उनके स्थान पर विश्वास की भावना उत्पन्न हो जाएगी।

४—प्रधानमन्त्रियो ने यह चीज स्वीकार की है कि एशिया और ससार के विभिन्न भागो मे आज भिन्न-भिन्न प्रकार की सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्थाएँ हैं। परन्तु यदि उपरोक्त सिद्धान्त स्वीकार कर लिए जाएं और उन पर अमल किया जाए और एक देश द्वारा दूसरे देश के मामलो मे हस्तक्षेप न किया जाए, तो इन विभिन्नताओ से न तो शान्ति में बाधा पड़ सकती है और न झगड़े ही पैदा हो सकते है। यदि प्रत्येक देश को यह भरोसा हो कि उसकी प्रादेशिक अखडता और प्रभुसत्ता सुरक्षित है और उसके विरुद्ध कोई आक्रामक कार्यवाही नही की जाएगी, तो सम्बन्धित देश शान्तिपूर्वक साथ साथ रह सकते

हैं और परस्पर मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध रख सकते हैं। इससे ससार मे आज जो तनाव हैं, वे कम हो जाएँगे और शान्ति का वातावरण तैयार होने में मदद मिलेगी।

५—प्रधानमन्त्रियो को आशा है कि हिन्द चीन की समस्याओ को सुलझाते समय इन सिद्धान्तो को विशेष रूप से लागू किया जाएगा। हिन्द चीन के राजनीतिक समझौते का उद्देश्य, स्वाधीन, लोकतन्त्रात्मक, संयुक्त और स्वतन्त्र राज्यो की स्थापना होनी चाहिए—ऐसे राज्यो की स्थापना, जो आक्रामक उद्देश्यो के लिए प्रयोग मे न लाए जा सकें और जिनमें विदेशी शक्तियाँ हस्तक्षेप न कर सकें। इससे इन देशो में आत्म विश्वास पैदा होगा और इनके आपस में और पडोसी देशो के साथ मैत्री सम्बन्ध स्थापित होगे। उपरोक्त सिद्धान्तो को मान लेने से एक शान्ति क्षेत्र की स्थापना मे भी सहायता मिलेगी इस शान्ति क्षेत्र को परिस्थितियो के अनुसार विस्तृत किया जा सकेगा। और इस तरह, ससार भर मे युद्ध की सम्भावनाओ को कम किया जा सकेगा, और शान्ति के पक्ष को मजबूत किया जा सकेगा।

६—प्रधानमन्त्रियो ने चीन और भारत की मित्रता में अपना विश्वास प्रकट किया है। इस मित्रता से विश्व शान्ति के उद्देश्य में तथा दोनो देशो और एशिया के अन्य देशो के शान्तिपूर्ण विकास में मदद मिलेगी।

७—इस बातचीत का उद्देश्य यह रहा है कि एशिया की समस्याओ को और भी अच्छी तरह समझा जाए और इनको तथा इन जैसी अन्य समस्याओं को सुलझाने के लिए, ससार के दूसरे देशो के साथ मिलकर, शान्ति और सहयोग की भावना से प्रयत्न किया जाए।

८—दोनो प्रधानमन्त्री इस बात पर सहमत है कि उनके अपने देशो को आपस मे घनिष्ठ सम्पर्क रखना चाहिए ताकि वे एक दूसरे को पूरी तरह समझ सकें। उन्हे एक दूसरे से मिलने का और खुलकर विचार विनिमय करने का जो यह अवसर मिला है, उसे वे बहुत ही मूल्यवान समझते हैं। इससे वे एक-दूसरे को और भी अच्छी तरह समझ सकेंगे और शान्ति के उद्देश्य के लिए मिल-जुलकर प्रयत्न कर सकेंगे।

चीन में नेहरू

श्री चाओ एन लाई के भारत आने का जितना प्रभाव चीन भारत एकता से एशिया में शाति स्थापना के लिये उत्पन्न हुआ, उतना ही पडित नेहरू के चीन जाने से। बहुत पहले से चीन की लोक तत्रीय सरकार ने उन्हे निमत्रण दे रखा था, मगर अन्तर राष्ट्रीय परिस्थितियाँ ऐसी पैदा हो रही थी कि नेहरू जी चीन जाने की बात को या तो टालते रहे थे, अथवा अवसर ही न निकलता था, मगर श्री चाओ की भारत यात्रा ने उन्हे चीन बुला ही लिया।

अक्तूबर के प्रथम सप्ताह में पडित नेहरू चीन के लिये गये तो राष्ट्रपति डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद सारे राष्ट्रीय बन्धनो को तोडकर उन्हे विदा करने हवाई अड्डे पर पहुँचे। इतिहास की यह पहली घटना थी कि एक राष्ट्र का राष्ट्रपति प्रधान-मत्रीको हवाई अड्डे पर विदा देने गये! और शुभ कार्य जिस शुभ ढग से आरम्भ हुआ उसी तरह समाप्त भी। यानी पडित नेहरू के चीन पहुँचने पर उनका जो शानदार स्वागत हुआ, वैसा स्वागत चीन में तो क्या दुनिया के किसी भी राष्ट्र में किसी विदेशी अतिथि का न हुआ था।

पीकिंग की एक सार्व जनिक सभा में उन्होने घोषणा की—

'मैं यहाँ शान्ति और सदभावना का दूत बनकर आया हूँ और मैंने देखा कि यहाँ भी शाति और सदभावना व्याप्त है।'

चीन में बीते गत चार दिनो के बारे में वह बोले—'पिछले चार दिनो में, मेरे चारो ओर अपार दोस्ती, आथित्य और प्रेम उमड पडा है। इन सबने जिस हद तक मेरा मर्म छुआ है, इसका मैं बयान नही कर सकता।'

दोनो देशो के प्राचीनतम सम्बन्धो की याद दिलाते हुये उन्होने कहा—'चीन एक गौरव शाली देश है, जिसकी सदियों पुरानी संस्कृति है। अपनी नयी हासिल की हुई स्वतंत्रता और शक्ति से वह आनन्द से भर उठा है और बड़ी आशा तथा विश्वास के साथ आगे अपना भविष्य देख रहा है।'

उनके इस प्रसिद्ध भाषण के श्रेष्ठतम भाग निम्न हैं—

'एशिया में आधिपत्य की स्थिति से जो पुराने शक्ति सम्बन्ध थे, वह समाप्त

राष्ट्रपति माओ त्से तुंग ने उनका जनरल चू-देह, श्री चाऊ एन लाई, श्री ल्यू शाओ ची और मेडम सनयात सैन आदि प्रमुख नेताओ से परिचय कराया।

इसी दिन सध्या को श्री चाओ एन लाई ने पडित नेहरू के सम्मान मे स्वागत समारोह किया, जिसमें चीन के ६०० प्रमुख जन नेताओ ने भाग लिया। यही पर पडित नेहरू ने तिब्बत के अध्यक्ष दलाई लामा और पचम लामा से भेट की।

पश्चात् दलाई लामा ने सम्वाददाताओ को बताया कि उन्हे आश्चर्य हुआ कि पडित जवाहरलाल नेहरू ६५ वर्ष की आयु में भी जवान दिखाई देते हैं। उन्होने बताया कि ल्हासा से पीकिंग आने में उन्हे ६ सप्ताह लगे थे, पर इतनी शीघ्रता से निर्माण कार्य हो रहा है कि लौटने में उन्हे बहुत ही कम समय लगेगा। और यात्रा पहले से अधिक सुविधाजनक तथा आराम देह होगी।

अल्पमतों का विद्यालय

पडित जवाहरलाल नेहरू ने अल्पमत जातियो के विद्यालय को भी देखा। यहाँ अपनी-अपनी जातीय वेष-भूषा से सज्जित विभिन्न जातियो के १३०० विद्यार्थियो ने नेहरू जी का स्वागत किया।

पडित नेहरू ने यहाँ बौद्ध विद्यार्थियो के बौद्ध मन्दिर तथा मुस्लिम विद्यार्थियो की मस्जिद भी देखी।

यहा पडित नेहरू ने देखा कि विभिन्न जातियो के विद्यार्थियो के लिये उनके अपने राष्ट्रीय भोजन की सुविधा के लिये अलग-अलग भोजनालय हैं।

नेहरू जी ने एक चार मंजिल के छात्रावास का निर्माण होते हुये भी देखा, जिसमें ७०० विद्यार्थी और रह सकेंगे। अभी यहाँ बारह विशाल इमारतें हैं, जिनका निर्माण पिछले ढाई साल में ही हुआ है।

नेहरू जी ने विद्यार्थियो के विनोद गृह, उनकी पोशाकों, वाद्ययंत्रों, वर्गों आदि को भी दिलचस्पी से देखा।

नया चीन छोटी-छोटी जातियो के राजनीतिक और सांस्कृतिक उत्थान में किस प्रकार दिलचस्पी ले रहा है, पडित नेहरू को इसके साक्षात् दर्शन हुये।

ग्रीषम महल

२० अक्तूवर को पडित जवाहरलाल नेहरू का सारा दिन ग्रीष्म महल देखने में ही व्यतीत हो गया। यह मचूवश के सम्राटो का महल था, किन्तु नये चीन मे यह चीन के विराट सांस्कृतिक वैभव का प्रदर्शन भवन वन गया है। जहाँ चीन की उच्चकोटि की कला देखी जा सकती है।

सध्या को श्री चाओ एन लाई ने पडित नेहरू को प्रीति भोज दिया। जिसमें लगभग एक हजार अतिथ सम्मलित हुये। यहाँ जो भाषण पडित नेहरू ने दिया वह बडा महत्त्वपूर्ण है। उनका पूरा भाषण इस प्रकार है—

'दिल्ली से जब मै पीकिंग आ रहा था, तो वर्तमान और भूतकाल के इतिहास की समस्त दृश्यावली मेरे सामने घूम गयी। दो हजार वर्ष पहले से ही चीन और भारत ने एक-दूसरे को जानना और पहिचानना आरम्भ कर दिया था। उसके पश्चात् अनेको धार्मिक तथा अन्य यात्री एक देश से दूसरे देश पहुँचे जो अपने साथ अपने देश का सदभावना का सन्देश लाये और जिनके द्वारा सस्कृति और विचारो के आदान-प्रदान का आज भी उल्लेख मिलता है, मगर सघर्ष का नही। यह इन दो महान पडोसी देशो की गौरव पूर्ण विरासत है।

पश्चात् एक ऐसा युग आया जब दोनो देश बाहरी शक्तियो के कारण बिल्कुल प्रथक-प्रथक हो गये। स्वाधीनता और आजादी हासिल कर लेने के पश्चात् हमने फिर एक-दूसरे की ओर देखा और उन पुराने सम्पर्कों को, आज के नये युग के अनुसार फिर से जीवित करने का विचार किया।

'प्रधानमन्त्री महोदय, कुछ दिन पहले जब आप अल्पकाल के लिये भारत पधारे थे, तो आपके आगमन का हमने न केवल स्वागत किया था, बल्कि उसका एक ऐतिहासिक महत्व भी माना था। भारत की हमारी जनता ने उसके महत्व का अनुभव किया था, और आपका उत्साहपूर्वक स्वागत किया था। इसी प्रकार जब उसे पता चला कि मै इस महान् प्राचीन देश को जा रहा हूँ तो उन्होंने मेरी इस यात्रा को बडा महत्व दिया। और इसे भारत तथा चीन दोनो देशो के लिए एक महत्वपूर्ण घटना समझा। पीकिंग के निवासियो ने जब जो मेरा

शानदार स्वागत किया है, उसके लिए मै सदैव कृतज्ञ रहूँगा, वह भी इस बात का संकेत है कि इस महान् देश की जनता ने यह समझ लिया है कि यह यात्रा केवल एक व्यक्ति का आगमन नही है, वरन् उससे कुछ अधिक है। वह स्वागत मेरा नही था, बल्कि उस देश का था जिसका प्रतिनिधि होने का सौभाग्य और गौरव मुझे प्राप्त है। जनता की यह चेतना इतिहास का निर्माण करने वाली शक्तियों और धाराओं की, राजनैतिक नेताओं और राजनीतिज्ञों की इच्छाओं से भी अधिक सच्ची कसौटी है।

'मेरे भीतर कोई गुण हो या न हो, पर हालात ये हो गई है कि मेरी इस यात्रा ने हमारे इन दो महान् देशों के आपसी सम्बन्ध में कुछ ऐतिहासिक महत्व प्राप्त कर लिया है। भारत और चीन का आपसी सम्बन्ध इस समय बहुत महत्व रखेगा। आज के इस भ्रान्त और विषम संसार में तो इसका महत्व इससे भी अधिक हो सकता है। भला मनुष्य किसी भी अन्य वस्तु से अधिक महत्त्व रखते हैं, और चीन और भारत में बसने वाले लगभग एक अरब व्यक्तियों का महत्व बहुत है।

गत इतिहास के बारे में हमारे अलग-अलग अनुभव रहे हैं, और हमने मार्ग भी अलग-अलग चुने हैं। इस समय भी हो सकता है हम कुछ बातों पर एक राय न हों, मगर इससे एक सैद्धान्तिक सचाई को छिपाया नही जा सकता कि हमारे बहुत से अनुभव लगभग एक जैसे ही रहे हैं। हममें बहुत कुछ समानता है, और हमारे इन दो देशों और उनके नागरिकों में निश्चित रूप से परस्पर सद्भावना और मित्रता है। इस कलहपूर्ण संसार में यह एक बहुत बड़ा लाभ है। आज संसार की सबसे बड़ी आवश्यकता शान्ति है, और मुझे पूरा विश्वास है चीन की जनता, भारत की जनता की तरह शान्ति के ध्येय में ही लगी हुई है।

श्रीमान् प्रधानमन्त्री जी ! आप जब भारत पधारे थे तो हमने एक संयुक्त वक्तव्य प्रकाशित किया था, जिसमें हमारे आपसी सम्बन्ध का शासन करने-वाले पाँच सिद्धान्त सम्मिलित थे। इन सिद्धान्तों में यह महान नियम प्रति-पादित किया गया था कि प्रत्येक देश स्वतन्त्र रहे, अपनी इच्छानुसार जीवन

व्यतीत करे, दूसरो के साथ मित्रता रखे और अन्य कोई देश किसी प्रकार का उसमें हस्तक्षेप न करे। यदि उन पॉच सिद्धान्तो पर विश्व मे आज प्रयोग किया जाय, तो बहुत से झगड़े जो राष्ट्रो को कष्ट दे रहे हैं, स्वय ही समाप्त हो जायँ। चीन एक महान और विशाल देश है, जिसमें बहुत प्रकार के लोग बसते है। भारत में जहाँ हम अपनी बुनियादी एकता को दृढ करते है वहाँ साथ ही इस विभिन्नता को भी जो हमारे राष्ट्रीय जीवन को समृद्ध करती है, मान्यता देते हैं। हम उन लोगो पर, जो किसी एक प्रकार के जीवन के अभ्यस्त है किसी दूसरे प्रकार के जीवन को थोपना नही चाहते। इस तरह हम अपने राष्ट्रीय जीवन के क्षेत्र मे भी इस विभिन्नता को मान्यता देते है और स्थिर रखते हैं, क्योंकि हम यह अनुभव करते हैं कि केवल इसी प्रकार राष्ट्र और जनता का पूर्ण विकास होगा।

'यदि एक राष्ट्र मे ये दशा है, तो विभिन्न राष्ट्रो में ये चीज कितनी अधिक होगी ? एक राष्ट्र की रक्षा को अन्य राष्ट्रो पर या एक देश की जीवन-प्रणाली को अन्य देशो पर लादने की जो लत है, वह झगडा अवश्य पैदा करेगी और शान्ति को सकट मे डालेगी और इसीलिये हम एक देश पर दूसरे देश के शासन का विरोध करते आये है।

'इस तरह जिस प्रकार दलो के लिए उसी तरह राष्ट्रो के लिए भी एक-मात्र सही और व्यवहारिक मार्ग यही है कि वे अपने दृष्टिकोण और जीवन-प्रणाली से भिन्नता रखते हुए भी, परस्पर सह अस्तित्व को मान्यता दें। किसी अन्य मार्ग या इनमें किसी प्रकार के हस्तक्षेप का अर्थ है—कलह।

'हम ससार मे हद से अधिक कलह, द्वेष और बरबादी देख चुके है, जबकि प्रत्येक देश की जनता शाति और विकास के लिए बेचैन है। द्वेष और हिंसा से जो कि अपने साथ केवल लडाई, झगडा या हिंसा ही नही लाते, बल्कि मानव विकास को भी रोकते है। इनसे किसी भी व्यक्ति या राष्ट्र की उन्नति हो ही नही सकती।

इस गम्भीर विश्वास के साथ, जिसकी हमारे महान नेता महात्मा गांधी ने हमे शिक्षा दी है, हमने, जितनी भी योग्यता रखते है, उसके अनुसार शान्ति के

लिये चेष्टा की है, पर युद्ध का अभाव ही तो शान्ति नही है। यह एक वस्तु है जो ठोस है, यह जीवन का एक मार्ग है और सोचने तथा आचरण की एक प्रणाली है, और इसी प्रकार हम शान्ति का वातावरण उत्पन्न कर सकते हैं जो राष्ट्रो के आपसी सहयोग की ओर हमें ले जायेगा।

'मुझे पूर्ण विश्वास है कि चीन और भारत के लोग इस महान उद्देश्य में, जिसके बिना ससार के लिये कोई आशा नही है, स्वय को लगा देंगे और इसके लिये चेष्टाएँ करते रहेगे।

'जिस उमग और प्रेम के साथ इस देश के नागरिको ने मेरा स्वागत किया है, मैं उसके लिये पूरी तरह कृतज्ञता प्रकट करने के हितार्थ शब्द नही पा रहा हूँ। हालाकि मेरी यात्रा अभी आरम्भ हुई है, फिर भी उनके प्रति उदार स्वागत ने मुझे गद्-गद् कर दिया है। श्रीमान प्रधान मत्री महोदय, मै चीन के महान नेता राष्ट्रपति माओ त्से तुंग के प्रति, आपके प्रति और आपकी सरकार के प्रति भी अपनी हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करना चाहता हूँ।' (हिन्दुस्तान टाइम्स)

इसी भोज में श्री चाओ एन लाई ने अपने भाषण में पडित जवाहरलाल नेहरू की यात्रा, भारत का शान्ति के लिये प्रयत्न और दोनो देशो की गहरी मित्रता मे उत्पन्न हुई नई परिस्थिती के बारे में कहा—

'दुनियां के लोग शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व की कामना करते है, पर कुछ शक्तियां हैं, जो इसका स्वागत नही करती। सीटो नामक गठबन्धन इसका उदाहरण है।

सीटो के सम्बन्ध में पडित नेहरू द्वारा भारतीय पार्लियामेंट में दिये गये भाषण का उद्धरण देते हुये श्री चाओ ने कहा—'कि यह गलत और खतरनाक रवैया अभी भी नही छोडा जा रहा है और खतरा यह भी है कि इस (फौजी गुटबन्दी) के खतरे को एशिया के बाहर के क्षेत्रों में भी फैलाया जायगा।'

उन्होंने पडित जवाहरलाल नेहरू के शान्ति क्षेत्र के फैलाने की बात का उदाहरण देते हुये कहा—

'स्पष्ट है कि शान्ति क्षेत्र स्थापित करने और उसको विस्तृत करने की नीति जितनी ही भारतीय जनता के हित में है उतनी ही एशियाई जनता के हित में

है। हम पडित नेहरू के इस प्रस्ताव का स्वागत करते हैं और इस कार्य में कठिनाइयाँ दूर करने तथा शान्ति क्षेत्र स्थापित करने और विस्तृत करने के प्रयत्नो मे परस्पर सहयोग करने के लिये तैयार हैं।'

महान भोज

भारतीय राजदूत की ओर से प्रधान मत्री नेहरू के सम्मान में आयोजित स्वागत-भोज एक ऐतिहासिक भोज वन गया है, क्योकि इस भोज में अब तक की इतिहास की सारी परम्पराओ को तोडकर चीन के राष्ट्रपति श्री माओ त्से-तु ग भी सम्मिलित हुये थे। यह भोज दुनियाँ में अपनी तरह का पहला भोज रहा है जिसमें किसी देश के राजदूत द्वारा दिये गये निमन्त्रण पर उस देश का राष्ट्रपति भी सम्मलित रहा हो, पडित जवाहरलाल के देश भारत को ही ऐसा गौरव मिला है।

यह भोज २१ अक्तूवर की सध्या को दिया गया था, भारत की ओर से वहाँ भारत के प्रधान मत्री पडित जवाहरलाल नेहरू, उनकी पुत्री श्रीमती इन्दरा-गाधी, भारतीय परराष्ट्र मत्रालय के प्रधान सचिव श्री एन० आर० पिल्ले और उप सचिव बहादुरसिंह, एम० एल० गैंद, के० एफ० रुस्तम, एन० के० रोशन तथा पडित नेहरू के दल के तीन और सदस्य उपस्थित थे।

चीन की ओर से उपराष्ट्र पति श्री चुतेह, राष्ट्रीय लोक काग्रेन की स्थायी समिति के अध्यक्ष ल्यु शाओ-चि और राज्य परिषद् के प्रधान मंत्री श्री चाओ एन लाई। उस समय सभी ने बडी जोर से करतल ध्वनि की जब चीन के राष्ट्-पति माओ त्से तु ग ने भी पदार्पण किया।

इस भोज में विभिन्न देशो के राजदूत तो उपस्थित थे ही, साथ ही भारत चीन मैत्री संघ तथा अन्य जनवादी सगठनो के प्रमुख सदस्यो ने भी भाग लिया।

भारतीय राजदूत श्री राघवन ने भोज में पहला जाम पेश करते हुये कहा—'मैं चीन की महान जनता के प्रिय नेता, भारत के महान मित्र विश्वशान्ति के प्रवल समर्थक, महामहिम राष्ट्रपति माओ त्से तु ग के स्वास्थ्य की कामना के हेतु जाम पेश करता हूँ।'

लिये चेष्टा की है, पर युद्ध का अभाव ही तो शान्ति नही हैं। यह एक वस्तु है जो ठोस है; यह जीवन का एक मार्ग है और सोचने तथा आचरण की एक प्रणाली है, और इसी प्रकार हम शान्ति का वातावरण उत्पन्न कर सकते हैं जो राष्ट्रों के आपसी सहयोग की ओर हमें ले जायेगा।

'मुझे पूर्ण विश्वास है कि चीन और भारत के लोग इस महान उद्देश्य में, जिसके विना ससार के लिये कोई आशा नही है, स्वय को लगा देंगे और इसके लिये चेष्टाएँ करते रहेगे।

'जिस उमंग और प्रेम के साथ इस देश के नागरिको ने मेरा स्वागत किया है, मैं उसके लिये पूरी तरह कृतज्ञता प्रकट करने के हितार्थ शब्द नही पा रहा हूँ। हालाकि मेरी यात्रा अभी आरम्भ हुई है, फिर भी उनके प्रति उदार स्वागत ने मुझे गद्-गद् कर दिया है। श्रीमान प्रधान मत्री महोदय, मे चीन के महान नेता राष्ट्रपति माओ त्से तुंग के प्रति, आपके प्रति और आपकी सरकार के प्रति भी अपनी हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करना चाहता हूँ।' (हिन्दुस्तान टाइम्स)

इसी भोज में श्री चाओ एन लाई ने अपने भाषण में पडित जवाहरलाल नेहरू की यात्रा, भारत का शान्ति के लिये प्रयत्न और दोनो देशो की गहरी मित्रता मे उत्पन्न हुई नई परिस्थिती के बारे में कहा—

'दुनिया के लोग शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व की कामना करते है, पर कुछ शक्तियां हैं, जो इसका स्वागत नही करती। सीटो नामक गठबन्धन इसका उदाहरण है।

सीटो के सम्बन्ध में पडित नेहरू द्वारा भारतीय पार्लियामेंट में दिये गये भाषण का उद्धरण देते हुये श्री चाओ ने कहा—'कि यह गलत और खतरनाक रवैया अभी भी नही छोडा जा रहा है और खतरा यह भी है कि इस (फौजी गुटबन्दी) के खतरे को एशिया के बाहर के क्षेत्रो मे भी फैलाया जायगा।'

उन्होने पडित जवाहरलाल नेहरू के शान्ति क्षेत्र के फैलाने की बात का उदाहरण देते हुये कहा—

'स्पष्ट है कि शान्ति क्षेत्र स्थापित करने और उसको विस्तृत करने की नीति जितनी ही भारतीय जनता के हित में है उतनी ही एशियाई जनता के हित में

है। हम पडित नेहरू के इस प्रस्ताव का स्वागत करते हैं और इस कार्य में कठिनाइयाँ दूर करने तथा शान्ति क्षेत्र स्थापित करने और विस्तृत करने के प्रयत्नो मे परस्पर सहयोग करने के लिये तैयार हैं।'

महान भोज

भारतीय राजदूत की ओर से प्रधान मत्री नेहरू के सम्मान में आयोजित स्वागत-भोज एक ऐतिहासिक भोज वन गया है, क्योकि इस भोज में अव तक की इतिहास की सारी परम्पराओ को तोडकर चीन के राष्ट्रपति श्री माओ त्से-तु ग भी सम्मिलित हुये थे। यह भोज दुनियाँ में अपनी तरह का पहला भोज रहा है जिसमें किसी देश के राजदूत द्वारा दिये गये निमन्त्रण पर उस देश का राष्ट्रपति भी सम्मलित रहा हो, पडित जवाहरलाल के देश भारत को ही ऐसा गौरव मिला है।

यह भोज २१ अक्तूवर की सध्या को दिया गया था, भारत की ओर से वहाँ भारत के प्रधान मत्री पडित जवाहरलाल नेहरू, उनकी पुत्री श्रीमती इन्दरा-गाधी, भारतीय परराष्ट्र मत्रालय के प्रधान सचिव श्री एन० आर० पिल्ले और उप सचिव वहादुरसिह, एम० एल० गेंद, के० एफ० रुस्तम, एन० के० नेदान तथा पडित नेहरू के दल के तीन और सदस्य उपस्थित थे।

चीन की ओर से उपराष्ट्र पति श्री चुतेह, राष्ट्रीय लोक कांग्रेस की स्थायी समिति के अध्यक्ष ल्यु शाओ-चि और राज्य परिषद् के प्रधान मंत्री श्री चाओ एन लाई। उस समय सभी ने वडी जोर से करतल ध्वनि की जव चीन के राष्ट्र-पति माओ त्से तु ग ने भी पदार्पण किया।

इस भोज में विभिन्न देशो के राजदूत तो उपस्थित थे ही, साथ ही भारत चीन मैत्री संघ तथा अन्य जनवादी सगठनो के प्रमुख सदस्यो ने भी भाग लिया।

भारतीय राजदूत श्री राघवन ने भोज में पहला जाम पेश करते हुये कहा—'मै चीन की महान जनता के प्रिय नेता, भारत के महान मित्र विश्वशान्ति के प्रवल समर्थक, महामहिम राष्ट्रपति माओ त्से तु ग के स्वास्थ्य की कामना के हेतु जाम पेश करता हूँ।'

भोज मे चीनी लोक गणतन्त्र का राष्ट्रीय गान बजाया गया।

चीन के राष्ट्रपति श्री माओ त्से तुंग ने अपनी ओर से जाम उपस्थित करते हुये कहा—

'चीनी और भारतीय जनता दृढता पूर्वक शान्ति के पक्ष मे है, हमारे इन दोनो देशो के लोग, पूरे ससार की नाई, शान्ति के लिये दृढ सकल्प होकर कार्य कर रहे हैं।'

'आइये, हम चीन और भारत की जनता के सहयोग के लिये और दोनो देशो की जनता की समृद्धि के लिये,

'विश्वशान्ति के लिये,

'भारतीय गणराज्य के राष्ट्रपति श्री प्रसाद के स्वास्थ्य के लिये,

'प्रधान मत्री श्री नेहरू की इस यात्रा और उनके स्वास्थ्य के लिये,

आज के इस भोज के मेजबान राजदूत श्री राघवन के स्वास्थ्य के लिये मधुपान करें।'

इस भोज मे श्री चाओ एन लाई ने एक भाषण देते हुये कहा—'भारत चीन दोनो महान एशियाई शक्तियाँ हैं। दो हजार वर्ष से भी अधिक समय से भारत और चीन के बीच घनिष्ठ सास्कृतिक सम्बन्ध रहे हैं। इतिहास में कोई ऐसी घटना नही हुई कि दोनो देशो में कभी युद्ध हुआ हो।

'वर्तमान समय मे हमारे दोनो देशो की जनता उपनिवेशी दमन की शिकार हुई है और दोनो ने उपनिवेश विरोधी सघर्ष किये हैं। आज हमारे दोनो देशो की जनता की यह कामना है कि अन्तर्राष्ट्रीय वातावरण शान्तिपूर्ण रहे, जिससे हम अपने देशो का निर्माण कर सके।

'और साथ ही हमारे दोनो देशो की जनता साम्राजी दस्तन्दाजी के विरुद्ध तथा आर्थिक पिछड़ा पन दूर करने और पूरी राष्ट्रीय स्वाधीनता हासिल करने के लिये संघर्ष कर रही है।

'इस सबमे केवल इसी बात का आधार नही मिलता कि हमारे दोनो देशो की जनता के बीच मित्रतापूर्ण सहयोग हो बल्कि इसमे सदियो पूर्व गुजरा हुई हमारी घनिष्ठ मित्रता और भी मजबूत होती है। हमारे महान पड़ोसी देश के

प्रतिनिध के रूप में पडित नेहरू का चीनी जनता ने जो हृदय खोलकर स्वागत किया है, वह इसका सबूत है।

'यह गहरी मित्रता इस बात को प्रकट करती है कि हमारे दोनो देशों में मित्रतापूर्ण सहयोग की व्यापक सम्भावनाएँ हैं।

'मेरी नयी दिल्ली की यात्रा के समय ५ सिद्धान्तो का जो संयुक्त वक्तव्य प्रकाशित हुआ है, वह ऐतिहासिक निधि है। चूकि भारत और चीन शान्ति के साथ-साथ रहने के इन पाँच सिद्धान्तो के प्रणेता हैं, इसलिये हम पर यह जिम्मेदारी है कि अपने आपसी सम्बन्धो में हम इन सिद्धान्तो को आगे बढायें और अमल में यह दिखाये कि ये सिद्धान्त दोनो पक्षो के लिये हितकर हैं, किसी के लिये हानिकारक नही।

'हमारा विश्वास है कि शान्ति के साथ-साथ रहने और मित्रतापूर्ण सहयोग से निश्चय ही धीरे-धीरे दूसरे एशियाई देशो तथा सारी दुनियां के देशो के साथ शान्ति से साथ-साथ रह सकना आसान हो जायेगा।

'दुनियाँ की जनता का बहुमत शान्ति के साथ-साथ रहने के सिद्धान्तो का स्वागत करता है। शान्ति से साथ-साथ रहने के पाँच सिद्धान्तो को अमल में लाने के लिये वे तैयार हैं। पर अब भी कुछ ऐसे अल्प सख्यक लोग हैं जो इसका स्वागत नही करते और इसके विपरीत काम कर रहे हैं। इस सम्बन्ध में सबसे मुख्य उदाहरण 'सीटो गुट' का है।

'यह गलत और खतरनाक रवैया अभी छोडा नही गया है, और खतरा इस बात का है कि इसे एशिया के बाहर भी फैलाया जायगा। हमारा कहना है कि यह एशिया मे असन्तोष का कारण है।

'शान्ति का क्षेत्र बनाने और उसे बढाने की भारत की नीति, भारत की जनता के हितो के और साथ ही एशिया के दूसरे देशो की जनता के हितों के अनुकूल है। प्रधान मंत्री नेहरू के इस प्रस्ताव का हम स्वागत करते हैं। हम भारत के साथ मिलकर कठिनाइयो को दूर करने और एशिया में एक शान्ति का क्षेत्र बनाने और उसका विस्तार करने के लिये एक साथ काम करने के लिये तैयार हैं।

'अभी हाल ही में भारत और चीन मे जो व्यापारिक समझौता हुआ है, हम उसका स्वागत करते हैं। उससे हमारे दोनो देशो मे आर्थिक सहयोग को बल मिलेगा।

'९६ करोड भारतीय और चीनी जनता का मित्रतापूर्ण सहयोग एशिया और दुनियाँ की शान्ति की रक्षा करने का एक महत्वपूर्ण साधन होगा।

'हम आशा करते है कि भारत और चीन की सुदृढ़ मित्रता और भी मजबूत होगी तथा विकसित होगी, जिसमें भारत और चीन के ये सम्बन्ध सारी दुनियाँ के सामने इस बात की मिसाल बन जायें कि विभिन्न सामाजिक रिवाजों और विचारधाराओं के देश किस प्रकार शान्ति से साथ-साथ रह सकते है।'

(जनयुग से)

संगीत और बन्देमातरम

पडित नेहरू के सम्मान में २१ अक्तूवर की रात मे चीनी नृत्य और, सगीत का जो समारोह हुआ, उसमे वकिम बाबू का लिखा हुआ भारतीय राष्ट्र गीत वन्दे मातरम भी गाया गया। इसके साथ वाद्य यत्रो (आर्केस्ट्रा) का इतना सुन्दर सामजस्य था कि पडित नेहरू ने इस गीत का रिकार्ड वनाकर देने की प्रार्थना की।

ध्यान देने की बात यह है कि भारत में इस गीत को राष्ट्रगीत इसलिये नही बनाया गया कि सगीतकारो को इसके साथ वैण्ड के स्वर मिलाने में कठिनाई अनुभव होती थी, किन्तु चीनी सगीतकारो ने आर्केस्ट्रा का वढिया सामजस्य वैठाया।

चीन के समाचार पत्र

चीन के समस्त समाचार पत्रो में पडित नेहरू की यात्रा को मुख्य शीर्षक देकर छापा गया। हवाई अड्डे पर पडित नेहरू ने जो भाषण दिया उसे समस्त समाचार पत्रो ने ज्यो का त्यों प्रकाशित किया। पडित नेहरू के सम्वन्ध के समस्त समाचार प्रथम पृष्ठ पर प्रकाशित किये गये।

दैनिक क्वागमिन ने अपने सम्पादकीय में लिखा—

'पडित नेहरू की यात्रा भारत चीन सम्बन्धो में प्रधान मत्री चाओ एन लाई की यात्रा के पश्चात् एक और महत्त्वपूर्ण घटना है।

पत्र ने अपने इसी सम्पादकीय मे लिखा—'दोनो देशो की मित्रता दिन प्रति दिन वढती जा रही है।'

चीन के मजदूरो के अखवार डेली वर्कर ने पडित नेहरू का स्वागत करते हुए घोषणा की कि—'पडित नेहरू की इस यात्रा से दोनो देशो के मित्रतापूर्ण सम्वन्ध अवश्य ही और घनिष्ठ होगे, तथा इससे एशिया तथा दुनियाँ की शान्ति की रक्षा करने में मदद मिलेगी। हमारी हार्दिक कामना है कि एशियाई शान्ति के कार्य में दोनो देश और भी घनिष्ठता से सहयोग करें।'

चीनी युवको की ओर से प्रधानमन्त्री प० जवाहरलाल नेहरू के स्वागत में उनके मुख पत्र ने लिखा—

'राजसत्ता प्राप्त कर लेने के पश्चात् हमारे हृदय की सवसे वडी इच्छा है कि हम अपने देश को एक ऐसा शक्तिशाली और समृद्ध देश वना लें जिसकी ओर किसी को भी आँख उठाने की हिम्मत न पडे। भारतीय जनता की भी यही इच्छा है कि शान्तिपूर्ण वातावरण में वे अपने देश का निर्माण करे। भारत और चीन की जनता की मित्रता को और आगे वढाने का यह एक आधार है।'

वियतनाम और इण्डोनेशिया

वियतनाम और इडोनेशिया दोनो ही वहुत छोटे राष्ट्र है, और दोनो ही अपने स्वाधीनता के सघर्ष में फँसे रहे हैं। पडित जवाहरलाल ने यदाकदा जव भी दुनियाँ के लिए शान्ति का जिकर किया तव वियतनाम और इण्डोनेशिया का जिकर अवश्य आया। क्योकि साम्राज्यवादी देशो ने इन देशो की जनता के स्वाधीनता सग्राम को कुचलने के लिये नीच से नीच व्यवहार और वडे से वडा शस्त्र उनके विरुद्ध प्रयोग किया, मगर वियतनाम और इण्डोनेशिया की महान् जनता ने कभी साम्राज्यवादियो के क्रूर दमन प्रयोग के आगे घुटने नहीं टेके।

पडित नेहरू पहले वियतनाम गये, पश्चात् इण्डोनेशिया में। शान्ति के

पुजारी भारतीय प्रधानमन्त्री का दोनो ही देशो की जनता ने हृदय खोलकर स्वागत किया और शान्ति के लिये कदम से कदम मिलाकर भारत के साथ चलने का दृढ सकल्प दुहराया।

वियतनाम

आजाद वियतनाम की राजधानी हनोई की मूक जनता ने प्रधानमन्त्री पडित जवाहरलाल नेहरू के स्वागत के लिये सारे शहर को पुष्पो और फूलमालाओ से सजाया था। ऐसा प्रतीत होता था कि शहर में विवाहो की धूम हैं। चारों ओर उल्लास ही उल्लास फैला हुआ था।

वियतनाम के उपप्रधानमन्त्री श्री फामवाग दौन ने हवाई अड्डे पर पडित नेहरू का स्वागत किया। वहाँ से नेहरूजी को राष्ट्रपति होचीमिन्ह से मिलने के लिये ले जाया गया।

तीन मील लम्बे मार्ग पर दोनो ओर लाखो हर्षोत्फुल नर-नारी कतार बाँधकर खडे हुए थे, जिन्होने पडित नेहरू पर फूलो की वर्षा की।

राष्ट्रपति होचीमिन्ह और पडित नेहरू का मिलन दो देशो की साम्राज्य-विरोधी, शान्तिप्रेमी जनता के गहरे आपसी प्रेम का दृश्य था। राष्ट्रपति होची-मिन्ह ने पडित नेहरू को भुजाओ में भर लिया और गले से लगा लिया।

राष्ट्रपति होचीमिन्ह और पडित नेहरू दो व्यक्ति या महान् व्यक्ति गले नही मिले, बल्कि दो राष्ट्र गले मिले।

सवाददाताओ से पडित नेहरू ने कहा—

'डाक्टर होची-मिन्ह साक्षात् शान्ति मूर्ति हैं।'

वियतनामी जनता के गौरवशाली स्वतन्त्रता सग्राम के इस महान् नेता से पंडित नेहरू की यह पहली मुलाकात थी, किन्तु डाक्टर होचीमिन्ह नेहरू जी के पिता पडित मोतीलाल नेहरू से साम्राज्य विरोधी सघ के अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में मिल चुके थे।

डाक्टर होचीमिन्ह और पडित नेहरू ने अपनी बातचीत के पश्चात् एक संयुक्त विज्ञप्ति प्रकाशित की, जिसमें चाऊ-नेहरू के पाँच सिद्धान्तों का समर्थन

किया गया था। दोनो ने भारत और वियतनाम के प्राचीन सम्बन्धो को पुर्नस्थापित करने और उन्हे मजबूत करनें पर जोर दिया।

इंडोनेशिया

इडोनेशिया के दैनिक 'हारियान रैयत' ने पडित नेहरू की चीन यात्रा पर लिखा है कि—'एशिया के दो महान प्रतिनिधि मिल रहे हैं। यह शान्ति का मिलन है और इससे विश्व शान्ति को सबल बनाने में हमे प्रोत्साहन मिलेगा।

पडित नेहरू ने शेनयांग में कुचगाँव, अनशान का विराटलोई का कारखाना और डैरन का वन्दरगाह देखा।

पत्रकारों के बीच

पडित जवाहरलाल नेहरू ने पत्र सम्वाददाताओ के सम्मेलन में वताया कि लदन और न्यूयार्क के कुछ अखवारो मे जो भारत तथा चीन के वीच मतभेदो के समाचार छपे हैं, वे सरासर झूठ हैं। उन्होने कहा—

'हम और चीन दोनो शान्ति की कामना करते हैं, क्योकि जो उन्नति हम करना चाहते हैं, उसका बुनियादी आधार यही है। हम दोनो के लिए यह पवित्र आकाक्षा मात्र नही हैं, हमारे लिए यह महत्वपूर्ण आकाक्षा है।"

पडित नेहरू ने कहा—कुछ मामलो में हम दोनो की समस्याएँ एक हैं, और दोनो की परिस्थितियां भी एक हैं। हम दोनो एक दूसरे से सीख सकते हैं। चीन और हम दोनो ही चाहते हैं कि हमारे देशो के करोडो लोग सुखी और समृद्ध हो सकें।

'मुझे आशा है कि दोनो देशो के बीच सम्पर्क और अधिक बढेगा, यह आवश्यक है कि हम दोनो एक दूसरे को समझें।'

फारमोसा के सवाल पर उन्होंने कहा—'हम केवल एक ही सरकार को मानते हैं। और वह है चीन की जनवादी सरकार।'

अन्तिम भाषण

२७ अक्टूबर को पडित जवाहरलाल नेहरू का एक भाषण रेडियो से सुनाया गया। जिसे पहले ही रिकार्ड कर लिया गया था—

'एक सप्ताह पूर्व मैं पेकिंग पहुँचा था और कल इस प्रसिद्ध और उदार नगर से बिदा लेने वाला हूँ। तीन दिन पश्चात् मैं चीन से वापस भारत के लिए रवाना हो जाऊँगा।

'मै नये चीन के, जिसकी कुछेक झाकियाँ लेने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ है, अगणित प्रभाव अपने साथ ले जाऊँगा। सर्वाधिक, मै उस भरपूर मित्रता और सत्कार की यादगार अपने साथ ले जाऊगा जो चीन के उदार हृदय लोगो से मुझे प्राप्त हुई है। वह यादगार बनी रहेगी और मै चीनी जनता की कृपा और प्रेम को कभी भी नही भुला सकूँगा।

'बीस वर्ष पहले चीन मे सुदीर्घ अभियान आरम्भ हुआ था। मुझे स्मरण है मैं उसके समाचारो को रोमाच और प्रशंसा की भावना के साथ पढा करता था। वह अभियान सैनिक इतिहास में योग्यता और जबरदस्त सहनशीलता के एक कारनामे के रूप मे स्मरणीय बन गया है। मेरे लिये वह अभियान एक राष्ट्र और उसकी जनता के सुदीर्घ अभियान का प्रतीक बन गया था।

'चीन और भारत दोनो ही बहुत वर्षो से अपने स्वाधीनता और समृद्धि के अभियान में व्यस्त हैं। हम विभिन्न मार्गों पर चलते हुए आज अपनी यात्रा के एक पडाव पर आ पहुँचे हैं, एक महत्वपूर्ण पडाव है जहाँ हम स्वतन्त्र और प्रभुसत्ता सम्पन्न देशो की तरह काम कर सकते हैं, पर फिर भी वह एक पडाव ही है और इससे पूर्व की हमारी अगणित जनता सुख और समृद्धि के उस स्तर पर पहुँचे, जिस पर कि उसे पहुँचना चाहिये, हमे अभी बहुत आगे बढना है।

'इस तरह ये दोनो देश इस महान् प्रयत्न मे लगे हैं, और मुझे लगता है कि दोनो ही एक दूसरे से कुछ सीख सकते हैं। भले ही उनकी कुछ समस्याएँ अलग-अलग हो, और उनका ढग भी एक जैसा न हो, फिर भी दोनो आपस में अनेक प्रकार का सहयोग कर सकते हैं। दो राष्ट्रो और उनके नागरिको मे जो महत्व-पूर्ण वस्तु है, वह सहिष्णुता और मित्रता की भावना है। यदि ये हैं तो अन्य चीजें स्वयमेव आजाती हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि चीन और भारत में ये दोनो वस्तुएँ मौजूद हैं।

'मैं भारत में अपने कार्य पर जो काफी भारी है, लौट जाऊँगा, पर इस

महान् चीन देश के अपने थोड़े से प्रवास की और इसकी महान जनता की मधुर स्मृतियाँ मेरे साथ रहेगी। ये मधुर स्मृतियाँ मुझे साहस और बल प्रदान करेंगी। मुझे पूर्ण आशा है कि उन महान् चेष्टाओ मे जिनमें हम लगे हैं, और विश्व में शान्ति की सुदृढ स्थापना के महानतम प्रयास मे हमारे ये दोनो देश परस्पर सहयोग करेंगे और सहायता पहुँचायेंगे।

'मैं पीकिंग के लोगो के प्रान्त और चीन की जनवादी सरकार और जनता के प्रति उनकी मित्रता और सरकार के लिए एक बार फिर अपनी हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करना चाहता हूँ।'

धन्यवाद सन्देश

पडित जवाहरलाल नेहरू ने चीन से भारत के लिए चलते समय राष्ट्रपति माओ-से-तुंग को एक धन्यवाद सन्देश भेजा। जिसमें कहा—

'इस छोटी सी पर कभी न भुलाई जा सकने वाली यात्रा के पश्चात् चीन से विदा होते समय मै एक बार फिर आपको इस उदार सत्कार और मित्रता के लिए जो मुझे प्राप्त हुआ है धन्यवाद और कृतज्ञता प्रकट करना चाहता हूं। मै इसे अपने दोनो देशो और उनके नागरिको की मित्रता का प्रतीक मानता हूँ। मुझे आशा है कि दोनो देश एक दूसरे के हितो के लिए, विश्व शान्ति के लिए आपस में इससे भी अधिक सहयोग करेंगे।'

चाओ एन लाई को

'इस महान देश की मेरी यह छोटी सी यात्रा समाप्त हो गई है, और अब हम यहाँ से घर के लिए विदा हो रहे हैं। मुझे यहाँ आकर, यहां जो महान कार्य चल रहा है, उसकी कुछ झलक देखकर तथा चीनी जनता के नेताओं से मिलकर अपार प्रसन्नता हुई है। मैंने एक महान राष्ट्र को, जो न केवल विस्तार में वरन् गुणो मे भी महान् है, देखा है। में इस मित्रता और आदर सत्कार के लिए भी, जो इस पूरे प्रवास मे मेरे चारो ओर रहा है, आपके प्रति कृतज्ञता प्रकट करता हूँ।'[२]

---

[२]भारत में चीन के राजदूत के कार्यालय की विज्ञप्ति से।

पंचम अध्याय

पाक-अमरीकी गठ जोड़
एशिया की शान्ति को खतरा

फौजी समझौता

पाकिस्तान और भारत एक देश के दो भाग हैं, अतएव दोनो को मिलकर रहना चाहिये, यह बात प्रत्येक मनुष्य के दिमाग मे आसानी से उतर सकती है, क्योकि पाकिस्तान के समस्त उच्च और छोटे शासनाधिकारी और भारत के समस्त शासनाधिकारी एक ही माँ की गोदी मे पले और बड़े हुये और इस तरह एक देश के पश्चात् दो देश बन जाने के बाद भी सबसे पहले भारत और पाकिस्तान के शासनाधिकारी भाई-भाई हैं। जनता तो सदैव थी और रहेगी भी।

मगर बात इससे बिल्कुल उल्टी है, भारत यदि दिन कहता है तो पाकिस्तान रात, भारत यदि शान्ति के लिये प्रयत्न करता है तो पाकिस्तान युद्ध के लिये। और ऐसी ही कुराफातो के कारण पाकिस्तान की जनता परेशान है। और यही कारण है कि आज भी पाकिस्तान अर्ध गुलाम देश है, क्योकि अभी हाल ही में जब पाकिस्तान के गवर्नर जनरल इलाज के लिये योरोप गये तो उन्हे इगलैण्ड की महारानी से आज्ञा लेनी पडी स्थानापन्न गवर्नर जनरल के लिये नामजद करने की[1] (भले ही चाहे यह बात औपचारिक ढग से हो) इस बात को जिसने भी अखबारो में पढा लज्जा से सर झुक गया कि हमारा पडौसी देश जो कभी हमारा ही देश था आज भी साम्राज्यवादियो की गुलामी में जकडा हुआ है।

गत प्रधान मत्री श्री मुहम्मद अली पहले पाकिस्तान की ओर से अमेरिका में राजदूत थे, उनके वारे में प्रसिद्ध है कि वह अमेरिका की चाटुकारिता करने के लिये वडे चतुर हैं। यही कारण था, कि एक दम उन्हे विना किसी चुनाव आदि के ही राजदूत पद से हटाकर पाकिस्तान का प्रधान मत्री वना दिया गया था। इसमें भी एक भेद छिपा था।

अमरीका वास्तव मे पाकिस्तान के भीतर रहकर भारत और रूस तथा चीन के विरुद्ध अपनी फौजी नाके-वन्दी करना चाहता था। और इसमें उसे तत्काल

---

[1] अब पाकिस्तान भी गणराज्य घोषित हो गया है।

लेकर ही वह आग शान्त हुई थी। यह वही सामान है जिसने कोरिया की धरती को लहू लुहान करके उसके हृदय के दो टुकडे कर दिये हैं। यह वही सामान है जो सात वर्षों तक हिन्द चीन मे भाई को भाई से लडाता और कटाता रहा है, और अब भी उसका पीछा नही छोड रहा है। यह वही सामान है जो मध्य पूर्व के मुस्लिम देशो मे आये दिन खून की नदियाँ बहाता रहा है। यह वही सामान है जो 'नेटो' और 'सीटो' और लन्दन और पैरिस समझौतो के रूप मे तमाम योरोप और एशिया के अमनोअमान के लिए इन महाद्वीपो के देशो की आजादी और प्रभुसत्ता के लिए खूनी खतरा बनकर मँडरा रहा है।

'उसके ऊपर करोडो मासूम इन्सानो के लहू के दाग हैं। उसकी कर्कश आहनी आवाज के नीचे करोडो नेताओ और माताओ की सिसकती आहे हैं। वह जहाँ गया है, उसने मौत की ही खेतियाँ बोई हैं, तबाही की ही आँधियाँ चलाई हैं।'

आगे चलकर इसी अखबार ने लिखा है कि 'आने के पहले ही पाकिस्तान की आजादी को रोद डाला।'

अखबार ने लिखा है—'खतरे की गम्भीरता को समझ लेना आवश्यक है। मौत का वह सामान उस पाक अमरीकी समझौते के मातहत आ रहा है जो गत मई १९५४ मे हुआ था।

'जिन दिनो पाकिस्तान के साथ इस समझौते की अमरीकियो ने बातचीत शुरू की थी उन दिनो कोरिया और काश्मीर में ही उनकी पराजय हुई थी। कोरिया में सैनिक और कश्मीर में कूटनीतिक।

'उसके बाद से उनके पैरो के नीचे से और काफी जमीन निकल गई है। डीन लीन फू की विजय और जैनेवा सम्मेलन की सफलता ने हिन्द चीन में उनकी योजनाओ को असफल कर दिया। चीन को घेरने, अन्तर्राष्ट्रीय दुनियाँ से अलग रखने, उसके विकास को रोकने और भारत चीन के बीच जहर बोने की उनकी कोशिशें भी बेकार गईं। 'सीटो' का सिक्का भी एशियाई देशो में न चल सका। और फिर अन्त में पूर्वी बगाल के चुनावो मे मुस्लिम लीग की हार के बाद स्वय पाकिस्तान में भी उनके और उनके आदमियो के

लिए गम्भीर संकट पैदा हो गया।

'इन घटनाओ से वे और भी अशान्त और अधीर हो उठे हैं। हिन्दुस्तानी भूखण्ड को यदि वे अपने गिरफ्त में लेना चाहते हैं, तो उनके लिए 'अब या कभी नही', का सवाल हो गया है।

इस अखबार की दो टूक राय से अमेरिका के पत्र 'टाइम्स' की भी सास वन्द सी हो गयी, जिसने इस सहायता के आने से दो सप्ताह के पूर्व लिखा था—

'विना किसी खून खच्चर के ही पाकिस्तान एक अस्थिर पश्चिम पक्षी जनतन्त्र से एक अधिक ठोस, पश्चिम पक्षी फौजी डिक्टेटरशिप मे वदल गया।'

न केवल फौजी गोला वारूद ही अमेररिका से आने के लिये पाकिस्तान ने समझौता किया वरन् अमेरिका के पूँजीपतियो को उनकी ही शर्तो पर पाकिस्तान में पूँजी लगाकर व्यापार के लिए भी निमन्त्रण दे दिया था। दूसरे शब्दो मे जव विश्व के समस्त राष्ट्र उपनिवेशवाद के विरुद्ध और पूँजीवादी प्रणाली के विरुद्ध सघर्ष कर रहे हैं या विजय पा चुके हैं, तब ऐसे युग में पाकिस्तान स्वयं अपने आप अमेरिका का उपनिवेश वनने की तैयारी कर रहा था।

और जनता के सामने एक नया ढोग पाकिस्तान का गवर्नर जनरल रच रहा था, सर्वदलीय सरकार का। और इस नई सर्वदलीय सरकार के वनने के वावजूद भी जिसमें डाक्टर खान जैसे व्यक्ति मौजूद थे, वहाँ फौजी शासन लागू कर दिया। केवल कहने भर के लिए पाकिस्तान के प्रधानमन्त्री मुहम्मदअली थे, वास्तविक सत्ता तो पूर्वी पाकिस्तान के वदनाम भूतपूर्व गवर्नर जनरल सिकन्दर मिर्जा के हाथ में थी। जनरल सिकन्दर मिर्जा अमेरिका के विश्वस्त आदमी हैं, और इन्हे वगाल का गवर्नर भी इसीलिये वनाया गया था कि ये वहाँ की संयुक्त मोर्चे की सरकार को समाप्त कर दे और उसने समाप्त भी कर दी।

इस्कन्दर मिर्जा से जव वंगाल में गवर्नरी शासन के समाप्ति के वारे में एक सवाददाता ने पूछा तो उसने वेशर्मी से उत्तर दिया—

'क्यो? गवर्नरी शासन का खातमा क्यो किया जाय? लोग उससे खुश हैं, फिर उसे खत्म करने की क्या जरूरत है।'

पाकिस्तान के इस राजनीतिक नाटक के पीछे मध्यपूर्व के देशो का इतिहास

दुहरा रहा है, जहाँ साम्राज्यवादियो के इशारे पर असन्तुष्ट जनता को भ्रम में डालने के लिए और अपना शोषण और तेज करने के लिए छठे छमाये सरकारें बदलने के नाटक होते रहे हैं।

लियाकतअली की हत्या, नाजिमुद्दीन का गद्दी से उतारा जाना, मुहम्मद-अली का एकाएक प्रधानमन्त्री बनाया जाना और फिर सकट काल की घोषणा, सविधान सभा का भग होना—पाकिस्तान में साम्राज्यवादियो के इस नाटक का अन्त यही नही है। और अब मुहम्मदअली का भी पत्ता साफ।

पता नही पाकिस्तानी जनता को अभी क्या-क्या देखना है, क्योकि अभी तो अमेरिका ने केवल पैर पसारे हैं पाकिस्तान मे और जब वह पूर्ण रूपेण पाकिस्तान मे काबिज हो जायेगा तब निश्चय ही पाकिस्तान के नागरिक गुलाम भारत की याद करेगे।

अतएव पाकिस्तान के नागरिको का कर्तव्य है कि वह अपने देश मे शान्ति बनाये रखने के लिये हर ऐसे कदम का विरोध करे, जिससे युद्ध नजदीक आता दिखाई दे।

षष्ठम अध्याय

पचशील और वाडुंग सम्मेलन

एशियाई कान्फ्रेंस

पंचशील और वाडुंग सम्मेलन से पूर्व यदि हम एशियाई सम्मेलन का जिकर नही करेंगे तो वाडुंग सम्मेलन की भूमिका पूरी नही होगी।

एशियाई सम्मेलन शान्ति कमेटी की ओर से बुलाया गया था, जिसमें एशिया के लगभग समस्त राज्यो ने भाग लिया था, और उनकी जनता के प्रतिनिधियो ने देहली मे आकर एशियाई देशो में मित्रता स्थाई रखने के लिये विचार-विमर्श किया था। यह सम्मेलन ६ से १० अप्रैल तक नई दिल्ली मे हुआ।

सम्मेलन में निम्न देशो के प्रतिनिधियो ने भाग लिया—

(१) चीन (२) जापान (३) सोवियत सघ (४) बर्मा (५) श्री लका (५) कोरिया (६) लेबनान (७) मगोलिया (८) पाकिस्तान (९) सीरिया (१०) जौर्डन (११) वियतनाम (१२) मिश्र और (१३) भारत।

पहली बार देहली में एक सार्वजनिक जलसे मे एशिया के समस्त राष्ट्रो के झंडे फहराये गये।

सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुये अपने भाषण में श्रीमती रामेश्वरी नेहरू ने स्पष्ट शब्दो में कहा—'पचशील के पाँच सिद्धान्त हमारे सम्मेलन की आधार-शिला हैं।'

उन्होने अपने भाषण में बताया—'हम एक दूसरे के प्रति कोई जिम्मेदारी ले रहे हैं तो वह शान्ति, सामाजिक, न्याय, व्यक्तिगत और राष्ट्रीय स्वतन्त्रता के लिये तथा शोषण के खिलाफ है।'

जापानी प्रतिनिधि मण्डल के नेता ने अपने भाषण मे कहा—'पंचशील सारे एशिया की मुक्ति और स्वतन्त्रता के लिए आधारभूत सिद्धान्त है। जापान जापानियो के लिए और एशिया एशियाइयो के लिए है।'

वियतनाम के प्रतिनिधि मडल के नेता ने भारत के शान्तिपूर्ण प्रयासो की सराहना की और कहा—'वियतनामी जनता अपनी अर्थ व्यवस्था का निर्माण करने के लिये पूर्ण शान्ति चाहती है।'

पाकिस्तान के प्रतिनिधि मौलाना भसानी ने अपने जोरदार शब्दो मे कहा—'इस सम्मेलन मे भाग लेना मेरे जीवन की गौरवपूर्ण घटना है।' उपनिवेशवाद पर करारी चोट करते हुए वह बोले—'एशिया अब जाग गया है, और गुलामी के बन्धनो से पूरी तरह मुक्त होकर ही रहेगा।'

अरब देश के प्रतिनिधियो की ओर से डा० दवालिवी बोले। उन्होने कहा—'साम्राज्यवाद के खिलाफ अपने सघर्ष मे अरब देशो को एशिया के अन्य बन्धु-राष्ट्रो से सहायता पाने की बडी आशा है।'

और सोवियत प्रतिनिधि मडल के नेता ने कहा—'दुनियाँ की शान्ति की रक्षा का भार आज एशिया पर पडा है।' उन्होने कहा—'राष्ट्रो के बीच मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध कायम करने के लिए 'नेहरू-चाऊ' घोषणा के सिद्धान्त ठोस आधार प्रदान करते हैं।'

अगले दिन बहस के दौर मे जापान के प्रतिनिधिमण्डल की ओर से एक प्रस्ताव आया, जिसमे उन्होने सात बातें एशिया मे शान्ति स्थापना के लिये आवश्यक बतलाई।

गोआ, मलाया, पश्चिमी हरियान मे उपनिवेशी शासन समाप्त किया जाय,
एशिया को घेरने वाली फौजी सन्धियाँ और गुटबन्दिया समाप्त की जायँ,
एटमी हथियारो पर रोक लगाई जाय,
फारमोसा और दूसरे चीनी टापुओ पर से अमरीकी कब्जा समाप्त किया जाय,
एक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन करके कोरिया को सयुक्त किया जाय,
वियतनाम को सयुक्त करने के लिए जेनेवा समझौते का पालन किया जाय,
पचशील सिद्धान्तो का अनुसरण किया जाय।

मौलाना भसानी ने अपने भाषण में—पाकिस्तान के दक्षिणी पूर्वी एशिया फौजीगुट (सीटो) में सम्मिलित होने का विरोध किया। उन्होने कहा कि 'यह फौजी गुटबन्दी विदेशियो के नेतृत्व में हो रही है। दो तीन देशो को छोडकर सारे एशिया ने इसकी निन्दा की है।'

जापानी प्रतिनिधि मडल के नेता श्री जी चीरो मतनूमोतो ने माँग की कि ऐटमी हथियारो पर एकदम रोक लगाई जाय तथा एशिया में जो विदेशी फौजी अड्डे हैं उन्हे समाप्त कर दिया जाय।

उन्होने बताया अमेरिका ने अकेले जापान में सात सौ फौजी अड्डे बना रखे हैं और ओकीनावा को स्थायी किला बना दिया है, कोरिया और हिन्दचीन के युद्धो मे इन अड्डो को पूरी तरह इस्तैमाल किया गया था।

भारतीय प्रतिनिधि डाक्टर अनूपसिंह ने माँग की कि विदेशी हिन्द चीन के सम्बन्ध में अब दखल देना बन्द कर दें। उन्होने माँग की कि मौजूदा ऐटमी हथियार बन्द कर दिये जायँ और उनके बनने पर रोक लगा दी जाय। उन्होने यह भी माँग की कि सारी दुनियाँ से उपनिवेशवाद खतम किया जाय और एशिया से समस्त विदेशी फौजे हटा दी जायँ।

ट्रास जार्डन के प्रतिनिधि ने कहा कि उनके देश की जनता इराक तुर्की फौजी सन्धि और हर तरह की फौजी गुटबन्दी के विरुद्ध है।

कोरिया की प्रतिनिधि श्रीमती पाक देन आई ने कहा—कि एशिया के समस्त देश कोरिया का बटवारा रुकवाने में सहायता करें और माँग की कि कोरिया से समस्त विदेशी फौजें हटा ली जायँ।

सम्मेलन ने सर्व सम्मति से कुछ प्रस्ताव एशियाई जनता से अपील के रूप में पास किये—

प्रस्ताव

'एशिया के साथियो'

(१) 'नई दिल्ली में हम ऐसे अवसर पर मिले हैं, जब इतिहास का एक नया अध्याय खुल रहा है। प्राचीनकाल में हमारे लम्बे ऐतिहासिक सम्बन्ध रहे है। हमने वैभव के वे दिन देखे हैं जो हमारी अमूल्य धरोहर है। उन दिनो की यादगार आज भी हमारे दिलो में बसी है। हम सबने एक साथ पतन, शोषण और राष्ट्रीय अपमान के दिन देखे थे। वह अन्धकारमय शोकपूर्ण समय था। अब हम अन्धकार से बाहर निकल आए हैं। हमारी करोड़ो जनता के हृदय

के तार आज नई उमगो से, नई आशाओ से बज उठे हैं। हम आगे बढते जा रहे हैं। हमने शपथ ले ली है कि जिस आजादी को हमने बडी मुश्किल से हासिल किया है, उसकी हम रक्षा करेगे। उसे हम कभी भी हाथ से जाने न देगे। हमने शपथ ली है कि हम शान्ति की रक्षा करे गे, क्योकि शान्ति ही एशिया की अन्तरात्मा की आवाज है।

'हमे अनेक विकट समस्याओ का मुकाबिला करना होगा। लेकिन महान परिवर्तनो के जमाने मे तो यह अनिवार्य होता है। हमें निराश होने की जरूरत नही। हम सब मिलकर इन समस्याओ का सामना करे गे और इन्हे हल करे गे। हम कन्धे से कन्धा मिलाकर आगे बढेगे और अपनी जनता के लिए महान भविष्य का दरवाजा खोल देगे। उनकी शक्ति और प्रबल प्रेरणा को हम निर्माण में लगा देगे।

'हम एशिया की समस्त जनता को आमन्त्रित करते हैं कि पंचशील में निहित ५ सिद्धान्तो को बिना शर्त स्वीकार कर आपस में एकता की भावना को बढावे। हम आशा करते हैं कि एशिया की जनता विभिन्न समस्याओ को एक एशियाई दृष्टिकोण से देखेगी, सकुचित क्षेत्रिय या जातीय दृष्टिकोणो से नही, बल्कि व्यापक मानवता के एक अभिन्न अग के रूप मे।

(२) एशियाई देशो का यह सम्मेलन, उन पाँच सिद्धान्तो का पूर्ण समर्थन करता है जिसका भारत और चीन के प्रधान मन्त्रियो ने ऐलान किया है। कई अन्य देश इन सिद्धान्तो का समर्थन पहले ही कर चुके हैं। ये सिद्धान्त ये हैं—

एक दूसरे की प्रादेशिक अखडता और प्रभुसत्ता का सम्मान करना।

एक दूसरे पर आक्रमण न करना।

एक दूसरे के घरेलू मामलो में दखल न देना।

समानता और एक दूसरे के लाभ।

शान्ति के साथ-साथ रहना।

यह सम्मेलन भारत के प्रधानमन्त्री प० नेहरू के साथ इस बात पर एकमत है कि ये पाँच सिद्धान्त विश्व को एशिया की चुनौती हैं और हर देश को इस चुनौती का साफ-साफ जवाब देना होगा। हम एशिया और विश्व के हर देश

और जनता से अपील करते हैं कि वे इन सिद्धान्तो का समर्थन करें और समझ-दारी के साथ इनका पक्ष मजबूत करें ।

हम एशिया और विश्व की सभी सरकारो से अपील करते हैं कि वे इन सिद्धान्तो को मानकर, इन्ही के आधार पर अन्य देशो से सम्बन्ध स्थापित करें ।

(३) यह सम्मेलन सीटो और तुर्की-इराक समझौते जैसे सभी फौजी समझौतो व फौजी अड्डो का पूरी तरह से विरोध करता है, जिनका एशियाई देशों पर सीधा-सीधा असर पडता हो । हम एशिया की भूमि पर से सभी विदेशी फौजों के हटाए जाने की माँग करते हैं ।

हम एशियाई देशो पर फौजी समझौता में शरीक होने के लिए सीधे तौर से या अन्य किसी प्रकार से दबाव डाले जाने की निन्दा करते हैं ।

सम्मेलन का प्रभाव

दिल्ली मे हुए इस सम्मेलन के प्रस्तावो का अभिनन्दन करते हुए पीकिंग से निकलने वाले दैनिक पत्र 'छन मिन जूयाओ' ने अपने सम्पादकीय मे लिखा—

'एशियाई देशो के सम्मेलन मे स्वीकृत प्रस्ताव एशिया मे शान्ति की सुरक्षा के लिये महत्त्वपूर्ण आवाहन है । इनसे एशियाई जनता को अपने शान्ति और आजादी के सघर्ष मे महान प्रेरणा और उत्साह मिलेगा । एशियाई जनता के बीच एकता और मैत्री सम्बन्धो को दृढ करने, सह अस्तित्व के पाँच सिद्धान्तों को लागू करने, विश्व युद्ध को बचाने और सुदूरपूर्व में तनातनी को समाप्त करने में ये प्रस्ताव महत्त्वपूर्ण भाग लेगे ।'

पत्र ने आगे लिखा—

'प्रस्ताव ने जोर दिया है कि गोआ, पश्चिमी इरयान और ओकीनावा, जो विदेशी अधिकार मे हैं, भारत, इन्डोनेशिया और जापान को लौटा दिये जायें, तथा मलाया को पूर्णतया आजाद किया जाय ।

'एशिया और विश्व शान्ति को सबसे बड़ा खतरा आज अमरीका की हमलावर नीति से है, जिसने चीन के ताइवान क्षेत्र पर कब्जा जमा रखा है ।

'चीनी जनता ताइवान को मुक्त करने के लिए दृढ प्रतिज्ञ है । अपनी मातृ-

भूमि, अपनी प्रभुसत्ता और अपने क्षेत्रीय अधिकारों की रक्षा करना हमारा पुनीत कर्तव्य है। एशियाई सम्मेलन ने स्पष्ट शब्दो में घोषणा की है कि ताइवान चीन का है और चीन को मिलना चहिए। अमरीकी फौजें वहाँ से हट जानी चाहिये।'

सम्पादकीय के अन्त मे कहा गया—

'सांस्कृतिक, वैज्ञानिक, आर्थिक एव सामाजिक प्रश्नों सम्बन्धी प्रस्ताव एशियाई जनता की व्यापक समझ को प्रकट करते हैं। इन क्षेत्रो में एशियाई जनता के संयुक्त प्रयासो का महत्त्वपूर्ण परिणाम निकलेगा।'

'चीनी सरकार और जनता शान्तिमय विदेश नीति को प्रश्रय देती है। गत पाँच वर्षो में कूटनीतिक सास्कृतिक एवं आर्थिक सम्बन्ध/एशियाई और विश्व के अन्य देशो से बराबर बढते गये हैं।'

'एशियाई सम्मेलन के प्रस्तावो में निहित अन्तरराष्ट्रीय तथा विश्वशान्ति की भावना को लगातार बढाने में चीनी जनता एशिया की जनता के साथ-साथ काम करेगी।'

चीन से प्रकाशित होने वाले एक और प्रमुख-पत्र 'ता कु ग पाओ' ने भी १३ अप्रैल को अपने सम्पादकीय में लिखा—

'वर्तमान एशियाई परिस्थिती की जाँच करके एशियाई सम्मेलन ने स्पष्टतः यह नतीजा निकाला है कि एशयाई तनातनी का सबसे बडा कारण अमरीकी साम्राज्यवाद की आक्रामक नीतियाँ ही हैं।

'एशिया में नये युद्ध की आग भड़काने के लिये अमरीका जो तरीके इस्तैमाल कर रहा है, उनमें सबसे प्रमुख है एशिया में फौजी गुट-बन्दियाँ कायम करना और इस प्रकार एशिया की एकता को तोडना तथा घृणा के बीज बोना।

'एशिया की समस्त जनता तथा विश्व के बाकी शान्ति प्रिय लोग तायवान क्षेत्र में अमरीका की आक्रामक कार्रवाइयो से चिन्तित हैं। सम्मेलन ने मांग की है कि अमरीकी फौजें ताईवान तथा [illegible] हैं [illegible] जायँ।

'चीनी जनता शान्ति से बेहद [illegible] स्वतन्त्रता और प्रभुसत्ता को बेचकर झूठी शा[illegible] सदैव ही

कहा है कि अन्तरराष्ट्रीय मस्लो को शान्तिमय तरीके से हल किया जाय। लेकिन वह आक्रमण कारियो के 'शान्ति' के झूठे नारे के बहकावे में कभी न आ सकेगी।'

लम्बे सम्पादकीय के अन्तिम भाग मे कहा है—

'सम्मेलन ने एशियाई जनता की दिन प्रति दिन वढती हुई शान्ति की भावनाओ को प्रकट किया है। इसने पूर्णतया प्रदर्शित कर दिया कि शान्ति की रक्षा के लिये होने वाले आन्दोलन में एशियाई जनता में परस्पर सहयोग, मैत्री और एकता मे बृद्धि हुई है।'

जकार्ता से प्रकाशित होने वाले 'सुलह इन्डिया' ने अपने सम्पादकीय में कहा—

'एशियाई सम्मेलन में स्वीकृत हुये प्रस्ताव खतरे से पैदा हुई तनातनी को कम करने की अपील करते हैं।'

प्राग (चैकोस्लोवाकिया) रेडियो ने एशियाई सम्मेलन की प्रशसा करते हुये कहा—'यह असाधारण महत्त्व की घटना है। यद्यपि अमरीकी एशिया वालो को आपस में लडाने की कोशिश कर रहे हैं, फिर भी एशियाई राष्ट्रो ने घोषणा की है कि वे पचशील सिद्धान्तो के अनुसार शान्ति से रहना चाहते हैं।'

कोरिया के अखवार 'रोदोग शिमून' ने लिखा—

'इस सम्मेलन ने जो यथार्थ प्रस्ताव स्वीकार किये हैं उनमें एक ओर तो शान्ति के प्रति एशिया की जनता का दृढ विश्वास प्रकट होता है और दूसरी तरफ एशिया के खिलाफ षडयन्त्र रचने वाले साम्राजी आक्रमणो पर गहरी चोट पडती है।'

इस प्रकार एशियाई सम्मेलन में एक प्रकार से नेहरू जी ने भाग न लेकर भी पूर्ण रूपेण भाग लिया, अर्थात् नेहरू जी और चाओ द्वारा स्वीकार पचशील सिद्धान्त के आधार पर ही एशिया के समस्त देशो की जनता के प्रतिनिधियो ने युद्ध के विरुद्ध शान्ति के लिये और अपने-अपने राष्ट्र की खुशहाली के लिये तथा नव-निर्माण के लिये युद्ध के विरुद्ध एक स्वर से आवाज उठायी।

यही झलक स्पष्ट तथा पूर्णरूपेण वाडुग सम्मेलन में भी दिखायी दी। यदि

हम सक्षेप में यह कहे कि वाडुंग सम्मेलन की भूमिका एशियाई सम्मेलन था तो अत्युक्ति न होगी।

वाडुंग सम्मेलन

वाडुंग सम्मेलन के विषय मे दिसम्बर १९५३ मे भारत, पाकिस्तान इण्डोनेशिया, वर्मा और श्री लका के प्रधान मत्रियो की बैठक में सोचा गया था जिसके अनुसार अप्रैल मे इण्डोनेशिया के नगर वाडुंग मे एशिया और अफ्रीकी महाद्वीपो के ३० राष्ट्रो का ऐतिहासिक सम्मेलन होना निश्चय हुआ।

इस सम्मेलन के बुलाने के मुख्य चार उद्देश्य थे—

(१) एशिया और अफ्रीका के राष्ट्रो के वीच आपसी सहयोग और भाईचारा स्थापित करना, आपसी हितो को समृद्ध करना और पडौसी जैसे सम्बन्ध तथा मैत्री को दृढ करना।

(२) उपस्थित देशो की सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक समस्याओ पर विचार करना।

(३) राष्ट्रीयता, जातिभेद और उपनिवेशवाद के वारे मे विशेप दिलचस्पी से समस्याओ पर विचार करना।

(४) आज की दुनियाँ, एशिया, अफ्रीका के देशो और उनकी जनता की स्थिती देखना और विश्व-शान्ति तथा आपसी सहयोग वढाने के लिये उनके कर्त्तव्य समझना।

इस सम्मेलन के समाचार से साम्राजियो मे घवराहट फैल गई। ब्रिटेन के साम्राज्यवादी पत्र 'मैन्चेस्टर गार्जियन' ने टिप्पणी करते हुये लिखा—

'गैर गोरी दुनिया के लोग अपने भाग्य का निर्णय स्वय करने के अधिकार पर अमल कर रहे हैं। यह केवल उपनिवेशवाद का विरोध करने का ही प्रश्न नही है ''इसमें एशिया की समस्याएँ स्वयं एशिया में ही सुलझाने की चेष्टाएँ निहित हैं ''

सवसे अधिक घवराहट अमेरिका मे फैली। अमरीका के अर्ध सरकारी पत्र 'न्यूयार्क टाइम्स' ने लिखा—

'अमरीकी विदेश विभाग वाडुंग की सम्भावनाओ को बुरी दृष्टि से देखता है। वाडुंग मे उन राष्ट्रो का सम्मेलन इस धारणा के आधार पर आयोजित किया गया है कि पश्चिमी, गोरे लोगो का उपनिवेशवाद या साम्राज्यवाद ही एशिया अफ्रीका के लिए मुख्य खतरा है।'

और इतने ही से क्यो २३ फरवरी को बैंकाक मे सीटो सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए अमरीका के विदेशमन्त्री श्री डलेस ने कहा—

'एशिया मे तीन मोर्चे हैं। यह असम्भव है कि कम्युनिस्ट चीन द्वारा युद्ध छेड़े जाने पर वह केवल फारमोसा या दक्षिणी कोरिया तक ही सीमित रहे। इन दो मोर्चों पर जो शक्तियाँ हैं, उन्हे दक्षिणी पूर्वी एशिया में सम्भावित कम्युनिस्ट आक्रमण के भाग के रूप मे ही लिया जाना चाहिये।'

अर्थात् एशिया को युद्ध मे झोकने के लिए मि० डलेस ३ मोर्चे खोलना चाहते थे—कोरिया, फारमोसा और हिन्द चीन।

मि० डलेस ने इसी सम्मेलन मे एशिया मे अमरीका की फौजी नीति के बारे मे स्पष्ट कर दिया कि वह कितनी नगी है—

'ऐटम बमो को आखिरी बार के अस्त्रो के रूप मे नही, साधारण फौजी हथियार के रूप मे अमेरिका समझता है।'

(१) जैनेवा समझौते को तोडने की अमरीका ने पूरी कोशिश की थी। दक्षिणा वियतनाम में अमरीकी जगवाज अपने पिट्ठू नियम को मजबूत करने के लिए एक लाख फौजो को हथियार बन्द करने और उसकी फौजी शिक्षा का प्रबन्ध कर रहे थे। अमरीकी फौजी सलाहकार जनरल ओडियन ने २२ मार्च को स्पष्ट कर दिया था कि वह इस सेना की तैयारी जेनेवा समझौते के अनुसार होने वाले चुनाव के लिए कर रहे है, ताकि फौज को चुनावो में हस्तक्षेप करने का अवसर मिल जाय। और यही कारण था कि फ्रास ने वियतनाम के तीन धर्म सम्प्रदायो की सेनाओ को उभाड दिया था और इन तीन सेनाओं ने अमरीकी कठपुतली प्रधानमन्त्री के विरुद्ध ग्रह युद्ध छेड दिया था।

(२) डलेस के कथनानुसार कोरिया का भी एक मोर्चा था, जहाँ उन्होंने युद्ध-विराम को तोडकर फिर से युद्ध करने के लिए अपनी हलचलें प्रारम्भ कर दी थीं।

२३ मार्च को दक्षिणी कोरिया की कठपुतली सरकार ने अपनी पार्लियामेंट में एक प्रस्ताव पास करके माग की कि—'विराम सन्धि रद्द कर दी जाय और तटस्थ राष्ट्र कमीशन में से पोलेंड और चैकोस्लोवाकिया के प्रतिनिधियो को निकाल दिया जाय।

और इसका एक कारण था, क्योकि तटस्थ राष्ट्र कमीशन की उपस्थिति के कारण युद्ध का सामान कोरिया में जमा करने मे अडचन पड़ती थी। लदन के सडे टाइम्स ने इस पर टिप्पणी करते हुए माँग की कि—

'कोरिया स्थित अमरीकी फौजो को नये हथियार देने और ऐटमी अस्त्रो से सुसज्जित करने पर रोक हटाई जाय।'

और यह वात तो सर्व विदित हो गई थी कि सिगमनरी ने कई वार उत्तरी कोरिया पर आक्रमण करने की धमकियाँ दी थी।

(३) डलेस के कथनानुसार एशिया में युद्ध के लिये तीसरा मोर्चा फारमोसा था। फारमोसा अमरीकियो के लिये स्वर्ग बन गया है, क्योकि सन् १९५१ से १९५४ तक अमरीकी साम्राजियो ने 'सहायता' की आड़ में यहां के उद्योगो में एक अरव से ऊपर पूंजी लगायी थी। विजली रसायन, अल्मूनियम, जहाज निर्माण आदि उद्योग पूरी तरह से हाथो में आ गये थे।

फारमोसा का जिकर यत्र तत्र पहले भी कई स्थानो पर हम कर चुके हैं। मगर फारमोसा की समस्या वडी जटिल है। चीन का सही दावा जिसे मानने से दुनियाँ का कोई देश इनकार नही कर सकता है कि फारमोसा चीन का अग है, और रहना चाहिये। अमेरिका इस वात को नही मानता और अपनी गन्दी नीति 'एशियाइयो को एशियाइयो से लडाओ' की नीति फारमोसा में वर्तना चाहता है।

इन सव परिस्थितियो पर विचार करने के लिये और न केवल एशिया में शान्ति स्थापित करने के लिये अपितु विश्व में शान्ति स्थापना के हेतु वाडुग सम्मेलन करने का निश्चय किया गया था।

सम्मेलन और षड़यंत्र

वाडुंग सम्मेलन के लिये जहां एक ओर विश्व की जनता आंख लगाये बैठी

थी, और गम्भीरता से होने वाली घटनाओं का अध्ययन कर रही थी, वही शांति के दुश्मन, साम्राज्यवादी और उपनिवेशवाद के हामी युद्ध खोर वाडुंग सम्मेलन को असफल बनाने की चेष्टा मे महीनो पहले से लगे थे।

और षड्यन्त्र न केवल विश्व भर मे चल रहे थे छिपे छिपे, वरन् वाडुग सम्मेलन के राष्ट्र इण्डोनेशिया में भी चल रहे थे, जिसके वारे मे इडोनेशिया के अखवार बरावर लिखते रहे। कई बार वहाँ के अखवार 'व्रीता इण्डोनेशिया' ने छापा कि च्याग काई शेक के गुप्त एजेन्ट इण्डोनेशिया में अमरीका की सहायता से स्थानीय हथियार बन्द गिरोहो से सम्बन्ध स्थापित कर रहे हैं, ताकि सम्मेलन में उत्पात किया जाय और इण्डोनेशिया की सरकार को पलट दिया जाय।

इस अखवार ने स्पष्ट लिखा कि इन एजेंटो का सम्वन्ध इण्डोनेशिया के 'लौह और खूनी दल' नाम के आतकवादी गिरोह से है।' अखवार ने लिखा कि इस दल के लोग व्यायाम स्काउट और क्लव न० ११ के नाम पर फौजी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। इसी अखवार ने एक भेद इस दल के वारे में और खोला कि इस दल का एक नेता च्याग काई शेक की फौज का पुराना सैनापति है।

जाकार्ता के अखवारो में मार्च मे खबर छपी कि इस दल के नेता चगची चुन ने अपनी वर्ष गाँठ और अपने दो बेटो के विवाह के वहाने ६००० लोगो को निमत्रण दिया। इस वहाने उसने इडोनेशिया, जापान और फिलिपाइन्स के च्याग काई शेक के एजेन्टो को वाडुग मे एकत्रित करने की कोशिश की। इस प्रकार उपहारो के रूप मे रुपये इकट्ठा कर और निमत्रणो के वहाने उसने वाडुग सम्मेलन को ध्वस करने की योजना वनाई।

इण्डोनेशिया के अखवार 'व्रीता इण्डोनेशिया' ने लिखा—'वहुत से क्वोमिताग़ी एजेंट जापानी और फिलिपाइनी प्रतिनिधियो और पत्रकारो के छिपे वेष मे आयेंगे और वडे-वडे निमंत्रण भी इन एजेंटो को इण्डोनेशिया में घुसाने का एक वहाना मात्र हैं।'

अखवारो ने खवर छापी कि अमरीकी यात्रियो के साथ मिलकर वहुत-से ध्वसकारी इडोनेशिया में आ गये हैं और इन यात्रियो के पास स्वतन्त्रता के साथ इडोनेशिया में घूम सकने के अधिकार पत्र हैं।

१०० अमरीकी यात्री जो वाली जाने वाले थे, अपना एकदम वाली जाने का कार्यक्रम रद्द करके सीधे जाकार्ता और वाडु ंग की ओर चले आये।

अमरीकी निर्देशन मे चलने वाली च्याग काई शेक के एजेटो की कार्रवाइयां इतनी खुलकर हो रही थी कि अमरीकी समाचार समितियाँ भी चीनी प्रतिनिध मडल की सुरक्षा व्यवस्था का जिकर करने लगी।

यूनाइटेड प्रेस आफ अमरीका के जकार्ता सवाददाता ने १३ अप्रैल को भेजे अपने सम्वादो में चीनी प्रतिनिध मडल की सुरक्षा के प्रश्न का जिकर किया। अपने ६ अप्रैल के सवाद में उसने लिखा—'च्याग काई शेक समर्थित तत्त्वो ने इडोनेशिया के अधिकारियो को यह गारटी देने से इन्कार कर दिया है कि प्रधान मत्री चाओ एन लाई के नेतृत्व में आने वाले चीनी प्रतिनिध मडल के खिलाफ वे घृणित हत्या के तरीके न अपनायेंगे। इसी सवाद में उस सवाददाता ने अमरीका और च्याग समर्थक तत्वो को पहले से हत्या के षडयन्त्र से दोष मुक्त करने की—कोशिश करते हुये लिखा कि अगर ऐसा हुआ तो यह व्यक्तिगत काम होगा। (जनयुग २४ अप्रैल ५५)

इडोनेशिया की जनता ने कुछ दिन पहले ही एशिया सम्मेलन में एशिया के समस्त राष्ट्रो से भाईचारा स्थापित करने की कसम खाई थी, तभी वहां की जनता के जनवादी सगठनो ने और प्रतिनिध मडल ने सरकार से माग की कि वह चीनी नेता और चीनी प्रतिनिध मडल की सुरक्षा का पूरा-पूरा प्रबन्ध करें।

मगर इसके वाद भी च्यांग के एजेंट और अमरीका के गुलामो ने इस घृणित कार्य को करके वदनामी के कलको में एक सवसे वडा कलक का दाग और लगा लिया जो कितने ही पुण्यो के पश्चात् भी धुल नही सकेगा। घटना इस प्रकार घटी—

वाडु ंग सम्मेलन के लिये चीन की ओर से ११ प्रतिनिधियो और पत्रकारों को लेकर जाने वाला भारतीय वायुयान ११ अप्रैल को उत्तरी वोर्नियो में सारवाद के निकट षड्यत्र का शिकार हो गया। इस प्रकार वाडु ंग में होने वाले एशिया-अफ्रीका सम्मेलन को असफल करने की साम्राज्यवादियो ने पूरी-पूरी चेष्टा की

मगर पडित नेहरू का लगाया गया तमाचा युद्ध खोर कभी नही भूल सकते। उन्होने इतनी बडी कुरवानी के बाद भी वाडु ग सम्मेलन को सफल बनाया। एक बहुत बड़े भारतीय नेता ने कहा—

'चीनी प्रतिनिध मंडल की कुर्बानी व्यर्थ नही जायेगी, शहीदो का खून एक दिन रग लायेगा और युद्धखोर उस दिन शान्ति के आगे घुटने टेक देंगे। वाडु ग सम्मेलन होगा, और उसी तरह होगा जिस तरह होना था, हाँ वातावरण उतना अच्छा और प्रसन्नदायक इस घटना के पश्चात् नही रहेगा जितना होना था।'

भाग्य से इस प्रतिनिध मडल के साथ चीन के प्रधान मत्री चाओ एन लाई नही थे।

चीन के अखवार पीपुल्स डेली ने अपने सम्पादकीय मे लिखा—

'अमरीकी साम्राजी और च्याग काई शेक के गुट के एजेट सगीन अन्तरराष्ट्रीय अपराध कर रहे है। अन्तरराष्ट्रीय तनाव को वढाने के और एशिया अफ्रीका सम्मेलन को विफल करने के लिये वे प्रधान मंत्री चाओ एन लाई के नेतृत्व में जाने वाले चीनी प्रतिनिध मडल की हत्या का प्रयत्न कर रहे हैं।

'हालाकि ब्रिटिश अधिकारियो ने रक्षा का वचन दिया था, फिर यह समझना कठिन है कि अमरीका की आज्ञा पर च्याग काई शेक के विशेष एजेंट अपनी योजना के अनुसार इस जघन्य कार्रवाई पर किस प्रकार अमल कर सकें ...इस घटना से अन्तरराष्ट्रीय कानून और नैतिक सिद्धान्तो पर लात मारी गयी है।'

पत्र ने आगे लिखा है—

'अमरीका और च्यांग काई शेक के एजेट इडोनेशिया में एक लम्बे समय से अपनी पडयन्त्रकारी कार्रवाहिया चला रहे हैं। उनका तात्कालिक उद्देश्य है एशिया अफ्रीका सम्मेलन को तोडना, चाओ एन लाई के नेतृत्व में आने वाले प्रतिनिध मडल की हत्या करना, एशिया अफ्रीका सम्मेलन का समर्थन करने वाले देशो को धमकाना, और हो सके तो इण्डोनेशिया की सरकार को पलट देना।

'इडोनेशिया समाचार पत्रो में वरावर रिपोर्ट निकल रही है कि अमरीका

श्रौर च्यांग के एजेट इडोनेशिया के अन्दर तोड-फोड श्रौर गडबडी फैलाने की बराबर कोशिशे कर रहे हैं।

'एशिया अफ्रीका सम्मेलन २९ देशो की एक अरब ४४ करोड जनता का प्रतिनिधित्व करता है। वह उन पीडित राष्ट्रो की आवाज बुलन्द करता है, जिन्हे साम्राज्यवादियो के आक्रमणो से बराबर नुकसान उठाना पडा है। अमरीकी साम्राजियो श्रौर च्यांग के एजेटो के किसी षडयंत्र से इस महान सम्मेलन को होने से नही रोका जा सकता। एशियाई अफ्रीकी जनता को श्रौर अधिक सतर्क होना चाहिये श्रौर अमरीका तथा च्यांग गुट के षडयन्त्रो को विफल करने के लिये दृढतापूर्वक चोट करनी चाहिये।

'प्रधानमन्त्री चाऊ एनलाई के नेतृत्व में चीनी प्रतिनिधि मडल एशिया-अफ्रीका सम्मेलन को सफल बनाने के लिए कोशिशे जारी रखेगा। एशिया श्रौर विश्व की शान्ति के लिए वह बराबर सघर्ष करता रहेगा।'

पडित जवाहरलाल नेहरू ने दुर्घटना पर खेद प्रकट किया श्रौर दुर्घटना के सबन्ध मे कहा कि—

'जहाज के समुद्र मे गिरने से दस मिनट पहले तक हमे उससे साधारण सन्देश मिलते रहे थे। उसके बाद कोई चीज एकाएक हुई होगी। इस सब की पूरी जाँच कराई जानी चाहिये।'

सम्मेलन में

सम्मेलन का उद्घाटन इन्डोनेशिया के राष्ट्रपति सुकर्ण ने किया। उन्होंने अपने प्रारम्भिक भाषण मे सम्मेलन के ऐतिहासिक महत्व पर जोर देते हुए कहा—'मानव के इतिहास में गैरगोरी जातियो का यह पहला सम्मेलन है।'

अपने धारावाहिक भाषण में उन्होने कहा—'पीढियाँ बीत गई जब दुनियाँ में एशिया की जनता की आवाज सुनने वाला भी कोई नही था।

'हमारी तो कोई परवाह ही नही करता था। हमारे भाग्य का फैसला हम स्वय नही दूसरे करते थे। उन्ही के स्वार्थ उपर रहते थे एशिया की जनता तो गरीबी श्रौर बे आदर का जीवन व्यतीत करती थी।'

उन्होने स्पष्ट कहा—'गत कुछ वर्षो में बडे परिवर्तन हो गये हैं। सदियो की निद्रा से राष्ट्र और जाति जाग उठी हैं। निष्क्रिय लोग हाथ-पैर फैलाने लगे हैं। शान्ति के बजाय सक्रियता और सघर्ष है। दोनो महाद्वीपो पर ऐसी लहरें उठी हैं, जिन्हे कोई भी नही रोक सकता।

'जागरण और पुनरुत्थान का तूफान सभी देशो को दहलाता हुआ और बहतरी के लिए उनमे परिवर्तन करता हुआ उठ पडा है।

'हमसे प्रायः कहा जाता है, कि उपनिवेशवाद मर गया। हमे इसके धोखे मे न पडना चाहिये और न इससे शान्त होना चाहिये। मै आपसे कहता हूं कि उपनिवेशवाद अभी भी मरा नही हैं, हम उसे कैसे मरा मान सकते हैं जबकि एशिया और अफ्रीका के बड़े-बड़े भूभाग आज भी स्वतन्त्र नही हैं।'

अपने भाषण में उन्होने समस्त प्रतिनिधियो को आवाहन किया—**'एशिया की सारी आत्मिक, नैतिक और राजनैतिक शक्तियों को शान्ति के समर्थन में एक जूट करें और यह दिखा दें कि हम शान्ति का समर्थन करेंगे युद्ध का नहीं और हमसे जितनी भी ताकत होगी उसे शान्ति के समर्थन में लगा देंगे।'**

सम्मेलन के अध्यक्ष इन्डोनेशिया के प्रधानमन्त्री अली गस्त्रोमिजय चुने गये। अपने भाषण में उन्होने कहा—'आज के तनाव का मुख्य कारण उपनिवेशवाद है।' अपने भाषण में आगे चलकर वह बोले—'दुनिया का अधिकाश भाग समझता है कि उपनिवेशवाद तो पुराने जमाने की वात थी। पर वास्तविकता ये है कि उपनिवेशवाद अभी काफी जीवित है।'

राजनैतिक स्वतन्त्रता के पश्चात् आर्थिक स्वतन्त्रता प्राप्त करने मे एशिया तथा अफ्रीकी जनता की कठिनाइयो का वर्णन करते हुए उन्होने इन देशो के आर्थिक सहयोग पर वल दिया।

चीन के प्रधानमन्त्री श्री चाओएन लाई ने अपने भाषण मे कहा—

'एशिया और अफ्रीका की जनता ने शानदार प्राचीन समस्याओ का निर्माण किया था और मानव समाज को अतुल दैन दी थी। पर जव से नया युग प्रारम्भ हुआ, एशिया और अफ्रीका के समस्त राष्ट्रो को अनेक तरह से उपनिवेशी लूट और उत्पीडन का शिकार होना पडा और इन तरह उन्हे मजबूरन गरीबी और

पिछडेपन के गढे में रोक रखा गया।

'हमारी आवाजो का गला घोटा गया, हमारे अरमान चूर-चूर किये गये, हमारा भाग्य दूसरो के हाथो में सौप दिया गया।

'हमारे समक्ष इसके सिवाय अन्य मार्ग नही है कि हम उपनिवेशवाद के विरुद्ध संघर्ष करे। एक ही रोग के शिकार एक ही उद्देश्य के लिए लडते हुए, हम एशिया और अफ्रीका के निवासी एक दूसरे को अधिक सरलता से समझ सकते हैं। हम मे एक दूसरे के प्रति बराबर हार्दिक सहानुभूति रही है।

'और अब एशिया और अफ्रीका की शक्ल ही बदल गई है। नये-नये देश उपनिवेशी जजीरो को तोड चुके हैं और तोडते जा रहे हैं। अब किसी भी प्रकार उपनिवेशी राष्ट्र अपनी लूट को जारी रखने के लिए अब पुराने तरीके प्रयोग नही कर सकते।

'आज का एशिया और अफ्रीका कल का एशिया और अफ्रीका नही है। इस भूमि से बहुत से देशो ने बरसो तक मेहनत के पश्चात् अपना भाग्य अपने हाथो में स्वय ले लिया है। हमारा ये सम्मेलन इसी एतिहासिक परिवर्तन का सूचक है।

'परन्तु इस इलाके में उपनिवेशी शासन समाप्त हो गया हो ऐसी बात नही है, बल्कि नये उपनिवेशी राष्ट्र पुरानो का स्थान लेने की चेष्टा कर रहे हैं। बहुत से एशियाई अफ्रीकी देश आज भी उपनिवेशी परतन्त्रता में जकडे हुए हैं।

'स्वतन्त्रता प्राप्त करने के हमारे मार्ग चाहे कितने ही भिन्न हो, पर स्वतन्त्रता प्राप्त करने और उसकी रक्षा करने की हमारी भावना एक ही है। हमारे देशो की अपनी-अपनी दशा चाहे कितनी ही भिन्न हो, लेकिन हममें से अधिकांश के लिये यह एक ही तरह आवश्यक है कि उपनिवेशी शासन के कारण जिस पिछडेपन के हम शिकार हैं, उससे अपने को मुक्त करें।

'हमारे लिये आवश्यकता इस बात की है कि बिना बाहरी दखलन्दाजी के अपनी जनता की इच्छा के अनुसार स्वतन्त्र रूप से अपने देशो का विकास करें।

'इस बात को देखते हुए एशिया और अफ्रीका के देशो की जनता की यही समान इच्छा हो सकती है कि विश्व शान्ति की रक्षा की जाय, राष्ट्रीय

स्वतन्त्रता प्राप्त करने, और इसी के लिए राष्ट्रो के बीच मित्रतापूर्ण सहयोग को प्रोत्साहन दिया जाय।'

उन्होने अपने भाषण के अन्त मे जेनेवा सम्मेलन का जिकर किया कि उससे एक आशा की किरण दिखाई दी थी, उसके पश्चात् का जिकर करते हुए उन्होने कहा—

'पर उसके पश्चात् जो अन्तर-राष्ट्रीय क्षेत्र मे घटनाएँ हुई वह जनता की इच्छाओ के विरुद्ध जाती हैं। पूर्व और पश्चिम दोनो ओर ही युद्ध का खतरा बढ रहा है।

'एशिया की जनता यह कभी भी नही भूल सकती कि पहला एटमबम एशिया की पृथ्वी पर फेंका गया और हाईड्रोजन के परीक्षण मे जो पहला ही आदमी मरा वह एशियाई ही था।

'फिर भी आक्रमणात्मक कार्रवाई करने वाले और युद्ध की तैयारी करने-वाले तो बहुत थोडे हैं, जब कि सारी दुनिया की लगभग समस्त जनता वह चाहे जिस प्रकार की सामाजिक व्यवस्था में रहती हो युद्ध के खिलाफ शान्ति चाहती है।

'उसकी आवाज की अब अधिक उपेक्षा नही की जा सकती। आक्रमण और युद्ध की नीति से जनता अब पहले से अधिक घृणा करने लगी है।'

उन्होने अपने भाषण में आगे चलकर कहा—

'चीन सहित एशिया और अधिकाश अफ्रीका के देश लम्बे उपनिवेशी आधिपत्य के कारण आज भी आर्थिक रूप से बहुत पिछडे हैं। इसीलिये हम केवल राजनैतिक स्वतन्त्रता ही नही आर्थिक स्वतन्त्रता भी चाहते हैं।

'पर राजनैतिक स्वतन्त्रता के ये अर्थ नही है कि एशिया अफ्रीका क्षेत्र के बाहर के देशो से हम अपने को पृथक कर लें। पर फिर भी वह समय लद गया जब हमारे भाग्य विधाता बाहर के लोग बन बैठे थे। अब स्वय एशिया और अफ्रीका की जनता अपने भाग्य को बनाने वाली है।

'उपनिवेशवाद का विरोध करने वाले और अपनी राष्ट्रीय स्वतन्त्रता की रक्षा करने वाले एशिया अफ्रीका के देश अपने राष्ट्रीय अधिकार का और भी

अधिक सम्मान करते है, सभी देश वे चाहे छोटे हों या बडे अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धो में सबके समान अधिकार होने चाहिये ।

'हर परतन्त्र देश की जनता को आत्म निर्णय का अधिकार होना चाहिये, उन्हे उत्पीडन और हत्या का शिकार न बनाना चाहिये ।

'नस्ल या रग का भेद किये बिना प्रत्येक जनता को मूल मानव अधिकार मिलने चाहियें, उनके साथ दुर्व्यवहार न होना चाहिये ।'

२५ अप्रैल के हिन्दुस्तान टाइम्स ने चाओ एन लाई के व्यवहार के सम्बन्ध मे लिखा—'मित्रतापूर्ण सद्‌भाव के वढाने और तनाव घटाने के मार्ग निकालने में श्री चाओ एन लाई ने जो महान् भूमिका अदा की, सम्मेलन का शायद वही सबसे बडा चमत्कारी पहलू था ।'

एशिया अफ्रीकी सम्मेलन के आरम्भ से ही फिलीपाइन्स, थाईलैण्ड, पाकिस्तान, श्री लका, इराक और तुर्की के प्रतिनिधियो ने विश्व कम्युनिजम और कम्युनिस्ट देशो की आलोचना की । इनके उठाये गये अनेको प्रश्नो का उत्तर देते हुए श्री चाओ एन लाई ने अपने दूसरे भाषण मे कहा—

'चीनी प्रतिनिधि मण्डल यहाँ एकता के लिए आया है, झगडा करने के लिए नही । हम कम्युनिस्ट यह छिपाते नही कि हम कम्युनिजम में विश्वास करते हैं और हम समाजवादी व्यवस्था को अच्छा समझते है, पर आपस में मतभेद होते हुए भी इस सम्मेलन मे अपनी विचारधारा और अपने देश की राजनैतिक व्यवस्था का प्रचार करने की आवश्यकता नही है ।

'चीनी प्रतिनिधि मडल यहाँ एकता के लिए आधार तलाश करने आया है, मतभेद ढूँढने नही । क्या हममें एकता के लिए आधार ढूँढने की गुजाइश है? अवश्य है। एशिया व अफ्रीका के देशो ने उपनिवेशवाद की बर्बादी को सहा है। और सह रहे हैं, यह हम सभी मानते हैं । यदि हम उपनिवेशवादी बर्बादी और यातनाओ को समाप्त करना एकता का आधार बनाएँ, तो हमें एक-दूसरे को समझने, आदर करने, हमदर्दी और सहायता करने मे सरलता होगी और एक-दूसरे के प्रति सन्देह, भय, अलगाव और विरोध की भावना दूर होगी ।

'इसलिये बोगोर में हुये पांच देशो के प्रधान मन्त्रियो के सम्मेलन में हम

एशिया अफ्रीका सम्मेलन के जो चार उद्देश्य तय हुये थे, हम उनसे सहमत हैं और नये प्रस्ताव नही रख रहे हैं।'

मतभेद के प्रश्न पर उन्होंने कहा—

'ताइवान के क्षेत्र में एक मात्र अमरीका ने जो तनाव पैदा कर दिया है, उसके सम्बन्ध में हम इस सम्मेलन में विचारार्थ सोवियत यूनियन का यह सुझाव उपस्थित कर सकते थे कि एक अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलन बुलाकर यह समस्या हल कर ली जाय। ताइवान और तटवर्ती द्वीपो को, जो हमारे देश का ही हिस्सा है, मुक्त करने की चीनी जनता की इच्छा न्यायोचित है। यह बिल्कुल हमारी घरेलू और अपनी प्रभुसत्ता को कार्यान्वित करने का सवाल है। इस सम्बन्ध मे हमारी उचित माँग का समर्थन कई देशो ने किया है।

'सयुक्त राष्ट्र सघ मे हमारा स्थान माना जाय, और हमे उचित स्थान दिया जाय—यह प्रश्न भी हम इस सम्मेलन में उठा सकते थे। बोगोर में हुये पाँच प्रधान मन्त्रियो के सम्मेलन ने हमारी इस माँग का समर्थन किया है। एशिया व अफ्रीका के अन्य देशो ने भी, इस प्रश्न पर हमारा समर्थन किया है। हमारे साथ सयुक्त राष्ट्र संघ ने जो अनुचित व्यवहार किया है, हम उसकी आलोचना भी यहां कर सकते थे।

'पर हम ये प्रश्न नहीं उठा रहे हैं, क्योकि यदि हम ये प्रश्न उठायेंगे तो हमारा यह सम्मेलन झगडो मे फँस जायेगा और उनका हल भी न निकाल पायेगा।

'इस सम्बन्ध मे हमे मतभेद रहते हुये भी आपस मे एकता के आधार तलाश करने चाहिये। हम सब की जो एकसी इच्छाये और माँगें हैं, इस सम्मेलन को उसे दुहराना चाहिये। यही यहाँ पर हमारा मुख्य काम है। जहाँ तक मतभेद का प्रश्न है, कोई किसी से अपना दृष्टिकोण देने के लिये नही कहता है। क्योकि वास्तविकता ये है कि हम मे मतभेद हैं। पर यह मतभेद मुख्य प्रश्न के बारे में एकमत होने के मार्ग मे नही आना चाहिये। जहाँ हमारी एक राय हो वहाँ हमें मतभेद समझने के लिये कोशिश करनी चाहिये।

'सबसे प्रथम मै अलग-अलग विचारधाराओ और सामाजिक व्यवस्थाओ को

लेता हूँ । हमें मानना पड़ेगा कि एशियाई और अफ्रीकी देशो मे अलग-अलग विचारधारा और सामाजिक व्यवस्था है, लेकिन इससे हमे आपस मे समानता ढूँढने और एक होने के मार्ग मे वाधा नही पड़ती ।

'दूसरे विश्वयुद्ध के वाद से बहुत से देश आजाद हुये हैं । इन देशो का एक समूह वह है जो कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व मे हैं, दूसरा समूह वो है जहाँ राष्ट्रवादी नेतृत्व करते हैं । पहले समूह मे अधिक देश नही हैं । पर कुछ लोगो को यह नापसन्द है कि साठ करोड़ चीनी जनता ने एक समाजवादी सामाजिक व्यवस्था और कम्युनिस्ट पार्टी का नेतृत्व स्वीकार किया है और साम्राज्यवादियो का शासन समाप्त कर दिया है । दूसरे समूह में जो देश हैं उनकी सख्या अधिक है—भारत, वर्मा, इण्डोनेशिया आदि एशिया व अफ्रीका के कई देश इस समूह में हैं ।

'इन दोनो समूहो के देशो ने औपनिवेशिक शासन से मुक्ति पाई है, और वे पूर्ण स्वतन्त्रता के लिये आज भी सघर्ष कर रहे हैं । फिर क्या कारण है कि हम एक-दूसरे को न समझ सकें, आदर न प्रदान कर सकें । आपस में मैत्रीपूर्ण सहयोग और अच्छे पडौसियो जैसे सम्वन्ध कायम करने के लिये पचशील को अवश्य ही आधार वनाया जा सकता है । हम एशिया व अफ्रीका के देश, जिनमे चीन भी सम्मिलित है, आर्थिक व सास्कृतिक दृष्टि से पिछडे हुये हैं । फिर क्यो न हम एक-दूसरे को समझे व आपस मे मित्रो का सा व्यवहार करे ?'

धार्मिक और अधार्मिक प्रश्न को जो लोग उठाते हैं, और एशिया की मित्रता को तोडने की कोशिश करते हैं, उनको जवाव देते हुए उन्होंने कहा—

'हर आधुनिक देश धार्मिक विचारो की स्वतन्त्रता को मानता है । हम कम्युनिस्ट अनीश्वरवादी हैं, लेकिन हम धार्मिक विचार रखने वालो का आदर करते हैं ।

'हम आशा करते हैं कि जो धार्मिक विचार वाले लोग हैं, वह भी अनीश्वरवादी विचारधारा वालो का आदर करेंगे । चीन ऐसा देश है जहाँ धार्मिक विचारो की पूर्ण स्वतन्त्रता है । हमारे यहाँ करोडो मुसलमान और वौद्ध हैं, और प्रोटेस्टेट व कैथोलिक ईसाई हैं । यहाँ चीनी प्रतिनिधि मण्डल मे भी

मुस्लिम धर्म को मानने वाले एक सज्जन आये हैं, लेकिन इनसे चीन की एकता मे बाधा नही पडती, तो फिर एशिया और अफ्रीकी देशो के सम्मेलन मे धर्म मानने वालो और न मानने वालो के बीच एकता क्यो नही हो सकती।

'धार्मिक झगडे करने के दिन तो अब समाप्त हो जाने चाहिये थे, क्योकि वे लोग जो धार्मिक झगड़े करके लाभ उठाते थे, यहाँ हमारे बीच मे नही हैं।'

जो लोग बाहरी देशो में बसे चीनियो के बारे मे शका प्रकट करते हैं, क्योकि चीन उन्हे भी नागरिक समझता है, उनके बारे मे श्री चाओ एन लाई ने कहा--

'कुछ लोग कहते हैं कि जो एक करोड़ से अधिक चीनी दूसरे राज्यो मे रहते हैं उनकी दुहरी नागरिकता से लाभ उठाकर विध्वंसात्मक कार्यवाइयाँ कराई जा सकती हैं। पर दुहरी नागरिकता की समस्या तो पुराने चीन की छोडी हुई समस्या है। अभी तक च्यागकाई शेक विदेशो मे बसने वाले थोड़े से चीनियो को उन देशो के खिलाफ विध्वसक कार्य करने के लिए प्रयोग कर रहा है। हम विदेश में बसने वाले चीनियो की दुहरी नागरिकता के प्रश्न को सम्बन्धित देशो के साथ मिलकर हल करने के लिए तैयार हैं।

'कुछ लोग कहते हैं कि चीन में थाई जाति का स्वतन्त्र प्रदेश दूसरे देशो के लिए खतरा है। चीन में बीसियो जाति के चार करोड अल्पसंख्यक लोग रहते हैं। थाई और उनके ही परिवार के चुंग जाति के लोग लगभग एक करोड़ हैं। जब वे हमारे देश में है तो हम उनको प्रादेशिक स्वतन्त्रता देते हैं। जैसे बर्मा में शान जाति के लोगो को स्वतन्त्रता प्राप्त है, वैसे ही चीन मे प्रत्येक जाति को प्रादेशिक स्वतन्त्रता है। चीन की जातियाँ इस प्रादेशिकता का उपयोग अपने ही देश में करती हैं, तब वह पड़ौसियो के लिए किस प्रकार खतरनाक बन सकती हैं।'

उन्होने समझौते के लिए आधार उपस्थित करते हुए कहा--

'हम पचशील के सिद्धान्तो पर दृढता के साथ चलने का आधार बनाकर एशिया व अफ्रीका के सभी देशो, ससार के प्रत्येक देश और विशेष रूप से अपने पड़ौसियो के साथ साधारण सम्बन्ध स्थापित करने को तैयार हैं। इन

समय यह प्रश्न नही है कि हम दूसरे देशो की सरकारो के विरुद्ध विध्वसक कार्य कर रहे हैं, बल्कि प्रश्न ये है कि कुछ लोग है जो चीन के चारो ओर अड्डे बना रहे हैं, ताकि वे हमारी सरकार के विरुद्ध विध्वसक कार्रवाई कर सकें।

'उदाहरण के लिए चीन और बर्मा के सीमावर्ती क्षेत्र में च्यागकाई शेक गुट के सशस्त्र लोग बाकी हैं जो चीन व बर्मा दोनो के विरुद्ध विध्वसक कार्य कर रहे है। चीन व बर्मा के बीच मित्रता के सम्बन्ध होने के कारण से और क्योकि हम सदैव से बर्मा की स्वतन्त्रता का आदर करते हैं, हम समझते हैं बर्मा की सरकार इस समस्या को हल कर लेगी।

'चीनी जनता ने स्वय अपनी सरकार चुनी है, वह उस सरकार का समर्थन करती है। चीन मे धार्मिक विचारो की स्वतन्त्रता है। चीन की ऐसी कोई इच्छा नही हैं कि वह अपने पडौसी देशो के विरुद्ध कोई विध्वसक कार्य करे।

'इसके विपरीत, चीन उन विध्वसक कार्यो का शिकार हो रहा है, जो अमेरिका खुले आम कर रहा है। जिन्हे हमारी बात पर विश्वास न हो, वह स्वयं चीन आकर या किसी को भेजकर देख सकते हैं चीन में, हम जानते हैं कि कुछ लोगो के दिमागो में, जिन्हे सच्चाई ज्ञात नही हैं, हमारे बारे मे सन्देह है। चीन में कहावतें हैं 'सौ बार सुनने से एक बार देखना अच्छा।' हम उन देशो के प्रतिनिधियो को जो इस सम्मेलन में सम्मिलित हैं, जब भी वे चाहे चीन आने का निमंत्रण देते हैं। हम किसी पर्दे में नही रहते, लेकिन कुछ लोग हमारे चारो ओर (धुएें का) पर्दा खडा करना चाहते हैं।

'एशिया और अफ्रीका की १६० करोड़ जनता इस सम्मेलन की सफलता चाहती है। संसार के वे सभी देश व लोग जो शान्ति चाहते हैं, इस सम्मेलन की ओर देख रहे हैं कि हम शान्ति का क्षेत्र बढाने और संसार मे सामूहिक शान्ति स्थापित करने के लिये क्या करते हैं। हम एशिया और अफ्रीका के देशो को एक हो जाना चाहिए और इस सम्मेलन की सफलता के लिए पूरी कोशिश करनी चाहिये ?'[1]

---

१. भारत में चीन के राजदूत कार्यालय की न्यूज बुलेटिन से।

कुछ देशो के प्रतिनिधियो ने अपने भाषण मे जो आरोप कम्युनिस्ट देशों और इशारा किसे या बिना किये चीन पर किये उनके बारे मे हिन्दुस्तान टाइम्स ने लिखा है—

"इन प्रतिनिधियो के नाटक को देखकर यह साफ हो जाता है कि इन्हे कही से तैयार कर और सिखा पढ़ाकर सम्मेलन को तोड़ने के लिए भेजा गया है और कहना भी किसी सीमा तक सच है कि रोज इन्हे कही से आदेश व इशारे मिलते हैं ।"

सम्मेलन के फैसले

सम्मेलन एक सप्ताह तक चला, और जितने भी सम्मेलन मे निर्णय हुए, सभी एक मत से हुए इससे साम्राज्यवादियो के खेमे में आश्चर्य तो हुआ ही साथ ही क्रोध और गुस्सा भी आया, क्योकि उन्होने तो कुछ लोगो को सम्मेलन को विफल करने के हेतु भेजा था जैसा कि हिन्दुस्तान टाइम्स के सवाददाता का बयान ऊपर दिया है, मगर वह देश भी हर निर्णय मे साथ ही रहे ।

सम्मेलन के समाप्त होने के पश्चात् जो विज्ञप्ति प्रकाशित हुई उसकी मुख्य बाते नीचे दी जा रही हैं—

"एशिया अफ्रीका सम्मेलन १८ से २४ अप्रैल तक बाडुग में हुआ । इस सम्मेलन का निमत्रण भारत, इंडोनेशिया, बर्मा, पाकिस्तान, और श्री लका ने दिया था ।

'सम्मेलन मे इनके अलावा ये २४ राष्ट्र सम्मलित हुये—

अफगानिस्तान, गोल्डकोस्ट, ईरान, ईराक, जापान, जार्डन, लाओस, लेबनान, लाइबेरिया, लिबिया, नेपाल, फिलीपाइन, सऊदी अरब, स्वीडन, सीरिया, थाइलैंड, तुर्की, उत्तर तथा दक्षिणी वियतनाम और यमन ।

'सम्मेलन ने इस बात पर विचार किया कि किस प्रकार एशिया और अफ्रीका के लोगो मे पूर्ण आर्थिक सास्कृतिक और राजनैतिक सहयोग कायम किया जाय ।

आर्थिक सहयोग

'सम्मेलन ने इस बात को स्वीकार किया कि एशियाई अफ्रीकी क्षेत्र में

आर्थिक सहयोग को बहुत जल्दी वढाना चाहिये।

'सम्मेलन ने यह स्वीकार किया है कि इस प्रकार आर्थिक सहयोग के ये मानी नही हैं कि इस क्षेत्र के वाहर के देशो से इस प्रकार का सहयोग न किया जाय या विदेशी पूँजी न लगाई जाय।

'यह भी स्वीकार किया गया कि इस क्षेत्र के कुछ देशो को अन्तरराष्ट्रीय समझौते के अनुसार जो मदद मिल रही है उससे विकास योजनाओ को वहुमूल्य मदद मिली है।

'सम्मेलन ने तय किया कि सभी देश एक दूसरे को विशेपज्ञ, शिक्षक तथा प्रदर्शन के लिए साधन देगे।

'परस्पर जानकारी का लेन देन होगा। राष्ट्रीय या क्षेत्रीय प्रशिक्षण केन्द्र और अनुसधान शालाएँ खोली जायेंगी।

'सम्मेलन ने यह सिफारिश की कि आर्थिक विकास के लिये संयुक्तराष्ट्र का एक विशेप कोप हो।.

'पुनर्निर्माण और विकास का अन्तराष्ट्रीय वैंक अपने साधनो का अधिकाश इस क्षेत्र पर खर्च करे।

'पूँजी लगाने के लिए एक अन्तर राष्ट्रीय वित्त कारपोरेशन कायम हो।

'समान हित के लिए एशियाई और अफ्रीकी देशो के सयुक्त कार्यों को प्रोत्साहन दिया जाय।

'सम्मेलन ने इस क्षेत्र में व्यापार में स्थिरता लाने पर जोर दिया। यह स्वीकार किया गया कि व्यापार और आमदनी सम्बन्धी कई देशो के सयुक्त व्यापार समझौते हो। यह भी माना गया कि आज भी स्थिति में द्विपक्षीय समझौते भी हो सकते हैं।

'कच्चे माल के दाम स्थिर करने के लिए इस क्षेत्र के देश द्विपक्षीय और अनेक पक्षीय समझौते कर सकते हैं। इस प्रश्न पर संयुक्त राष्ट्र सघ की सम-धित सस्थाओ में एक समान रुख रखा जाय।

'सम्मेलन ने इस वात की भी सिफारिश की कि इस देश के क्षेत्र अपने कच्चे माल को, जहा तक आर्थिक रूप से लाभदायक हो, निर्यात करने से पहले

पक्का बनाये । इस क्षेत्र मे व्यापारिक मेले लगें, व्यापार प्रतिनिधि मडल आये, जाये, जिससे इस क्षेत्र में परस्पर व्यापार बढे ।

'सम्मेलन ने जहाज रानी को काफी महत्व दिया और कहा कि जहाजी कम्पनियाँ माल ढुलाई की दरे इस तरह बदलती रहती हैं जिससे इस क्षेत्र के लोगो को नुकसान होता है ।

'सम्मेलन ने कहा कि जहाजी कम्पनियो पर दबाव डालने के लिये सामूहिक कार्रवाई की जाय ।

'सम्मेलन इस बारे में सहमत था कि राष्ट्रीय तथा क्षेत्रीय बैंक तथा बीमा कम्पनियाँ स्थापित की जायँ ।

'सम्मेलन ने यह महसूस किया कि तैल के बारे में एक समान नीति बनाने के लिए मुनाफे, टैक्स आदि की सूचना का आदान प्रदान किया जाय ।

'सम्मेलन ने एटमी शक्ति को शान्तिपूर्ण निर्माण के काम में इस्तैमाल करने पर जोर दिया ।

'परस्पर हित की सूचना के लेन-देन के सम्बन्ध मे इस क्षेत्र के देशो मे एक-दूसरे देश के सूचनाधिकारी नियुक्त करने का निश्चय किया गया ।

'यह भी तय किया गया कि अन्तर्राष्ट्रीय सगठनो में अपने पारस्परिक हितो को आगे बढाने के लिए इन देशो के प्रतिनिधियो में पहले विचार-विनिमय हो जाया करे । फिर भी इन देशो का किसी प्रकार का गुट बनाने का इरादा नही है ।'

सांस्कृतिक सहयोग

'सम्मेलन इस बारे मे एक मत था कि राष्ट्रो में सद्भाव बढाने का सबसे प्रबल साधन सास्कृतिक सहयोग है एशिया और अफ्रीका महान धर्मो और सभ्यताओ की जन्मभूमि रहे है । इन देशो की सस्कृति, आत्मिक और विश्व-व्यापी आधार पर खडी है । दुर्भाग्य ने पिछली सदियो मे इनका सास्कृतिक सम्बन्ध टूट गया था ।

'एशिया और अफ्रीका की जनता अपने पुराने सास्कृतिक सम्बन्धो को फिर

जीवित करना चाहती है और नई दुनियाँ के आधार पर नये सम्बन्ध स्थापित करना चाहती है। सम्मेलन मे सम्मिलित होने वाले सभी देशो ने परस्पर घनिष्ठ सास्कृतिक सहयोग कायम करने पर जोर दिया।

'सम्मेलन ने इस बात पर ध्यान दिया कि एशिया और अफ्रीका के अनेक हिस्सो मे उपनिवेशवाद रहना, वह चाहे जिस रूप में हो, न सिर्फ हमारे सास्कृतिक सहयोग को रोकता है बल्कि जनता की राष्ट्रीय सास्कृतियो को भी दबाता है।

'सम्मेलन ने साम्राज्यी राष्ट्रो द्वारा गुलाम जातियों की भाषा और सस्कृति को कुचलने की निन्दा की। सम्मेलन ने खास तौर से नस्ली भेदभाव की निन्दा की।

'सम्मेलन ने इस बात पर जोर दिया कि एशिया अफ्रीका के परस्पर सास्कृतिक सम्बन्धो के पीछे कोई अलग रहने या प्रतिद्वन्द्विता की भावना नही हैं। सहिष्णुता और विश्व बन्धुत्व की भावना के अनुसार एशिया और अफ्रीका का सांस्कृतिक सहयोग विश्व सहयोग की व्यापक परिधि मे ही होगा।

'एशिया और अफ्रीका मे परस्पर सास्कृतिक सहयोग के साथ ही सम्मेलन दूसरो से सास्कृतिक सम्बन्ध बढाना चाहता है। इससे खुद हमारी सस्कृति समृद्ध होगी और विश्व शान्ति और सद्भाव बढेगा।

'एशिया और अफ्रीका के बहुत से देश शिक्षा, विज्ञान और कौशल की दृष्टि से पिछडे हुए हैं। सम्मेलन ने तय किया कि इस क्षेत्र के आगे बढे देश इस सम्बन्ध मे शिक्षा आदि की सुविधा देकर पिछडे देशो की सहायता करें।

'सम्मेलन ने यह मत प्रकट किया कि आज की स्थिती मे द्विपक्षीय समझौते से ही सास्कृतिक सम्बन्धो को बढाने में सबसे अधिक सफलता मिल सकती है।'

मानव अधिकार और आत्म निर्णय

'संयुक्त राष्ट्र अधिकार पत्र मे दिये गये मानव अधिकार के मूल सिद्धान्त और राष्ट्रो के आत्म निर्णय के अधिकार का सम्मेलन ने पूर्ण समर्थन किया।

'अफ्रीका के एक बडे क्षेत्र में और दुनियाँ के दूसरे हिस्से में अनगाव और

भेदभाव की नीतियो की सम्मेलन ने निन्दा की ।

'सम्मेलन मे फिलस्तीन ने अरब जनता के अधिकारो का समर्थन किया और माँग की कि इस सम्बन्ध में सयुक्त राष्ट्रसघ के फैसलो पर अमल किया जाय ।

गुलाम देशों की समस्या

सम्मेलन ने उपनिवेशवाद को खत्म करने का समर्थन किया और इरियान के सवाल पर इंडोनेशिया के रुख को सही माना ।

सम्मेलन ने अलजीरिया, मोरक्को और ट्यूनीशिया की जनता के आत्म-निर्णय और स्वतन्त्रता के अधिकार का समर्थन किया और फ्रासीसी सरकार पर इस बात के लिये जोर दिया कि इस प्रश्न को वह शान्तिपूर्ण ढंग से फौरन हल करे ।

विश्व शान्ति और सहयोग बढ़ाना

सम्मेलन ने इस बात पर जोर दिया कि प्रभावपूर्ण सहयोग के लिये यह आवश्यक है कि संयुक्त राष्ट्रसघ की सदस्यता सभी के लिये खोल दी जाय । सम्मेलन की राय मे इसमें शामिल होने वाले इन देशो को सयुक्त राष्ट्रसघ की सदस्यता मिलनी चाहिये ।

कम्बोडिया, श्री लका, जापान, जार्डन, लाओस, लिबिया, नेपाल और संयुक्त वियतनाम ।

सम्मेलन ने यह भी मत प्रकट किया कि सुरक्षा परिषद मे इस क्षेत्र को उचित प्रतिनिधित्व दिया जाय ।

युद्ध का परिणाम

सम्मेलन ने अन्तर्राष्ट्रीय तनाव की स्थिति पर और विश्व युद्ध के खतरे से सारी मानव जाति के सामने आये हुए खतरे पर विचार कर तमाम राष्ट्रो का ध्यान इस ओर आकर्षित किया कि वे इस पर सोचे कि आज इस तरह का युद्ध छिड गया तो उसका कितना भयकर परिणाम होगा ।

सम्मेलन ने यह मत प्रकट किया कि मानवता को पूर्ण विनाश से बचाने के लिये यह आवश्यक है कि निरस्त्रीकरण किया जाय और ऐटमी हथियारो के

निर्माण और परीक्षण पर रोक लगाई जाय ।

सम्मेलन ने यह मत प्रकट किया कि एशिया अफ्रीका के यहाँ आये हुए राष्ट्रो का मानवता के प्रति यह कर्तव्य है कि इन हथियारो पर रोक लगाने का वे समर्थन करे और सम्बन्धित राष्ट्रो तथा दुनियाँ के जनमत से अपील करें कि ऐसे निरस्त्रीकरण और रोक पर वह अमल कराये ।

सम्मेलन ने सभी राष्ट्रो से अपील की कि ऐटमी हथियारों पर जब तक पूरी रोक नही लगती तब तक के लिये उनके परीक्षण पर रोक लगा देने का एक समझौता किया जाय ।

सम्मेलन ने यह घोषणा की कि शान्ति रक्षा के लिये व्यापक निरस्त्रीकरण एकदम आवश्यक है और सयुक्त राष्ट्रसघ से और सभी लोगो से अपील की कि हथियारो में कमी करने के लिये, व्यापक सहार के हथियारो पर रोक लगाने के लिये और इस पर अन्तर्राष्ट्रीय नियन्त्रण स्थापित करने के लिये तेजी से कोशिश करे ।

'सम्मेलन ने अमन और यमन के दक्षिणी भाग के सम्बन्ध में जिस पर ब्रिटिश संरक्षण है, यमन अधिकार का समर्थन किया और माँग की कि इसे शान्तिपूर्ण ढग से हल किया जाय ।

गुलाम देशों की समस्याओं पर घोषणा

सम्मेलन ने गुलाम देशों और उपनिवेशवाद की समस्याओ और विदेशी आधिपत्य और शोषण की बुराइयो पर विचार किया और इस पर सहमत हुआ।

यह घोषणा की जाती है कि उपनिवेशवाद अपने हर रूप में एक ऐसी बुराई हुई है जिसका जल्दी ही अन्त कर देना चाहिये ।

यह स्वीकार किया जाता है कि लोगो को विदेशी गुलामी, आधिपत्य और शोषण का गुलाम बनाना उन्हे मूल मानव अधिकारो से वचित करना है, सयुक्त-राष्ट्र अधिकार पत्रों के विरुद्ध है और विश्व शान्ति और सहयोग को आगे बढाने में बाधक है ।

इस तरह के तमाम लोगो की स्वतन्त्रता और स्वाधीनता का समर्थन किया जाता है ।

सम्बन्धित राष्ट्रो से माँग की जाती है कि वे ऐसे लोगो को स्वतन्त्रता और स्वाधीनता दे।

विश्व शान्ति सहयोग बढ़ाने की घोषणा

सम्मेलन ने गम्भीरता के साथ विश्व शान्ति और सहयोग के सवाल पर विचार किया। अन्तर्राष्ट्रीय तनाव की मौजूदा स्थिति और उसकी वजह से ऐटमी महायुद्ध के खतरे पर गहरी चिन्ता प्रकट की गई।

शान्ति का सवाल अन्तर्राष्ट्रीय सुरक्षा के सवाल से बँधा है। इस सम्बन्ध में सभी राज्यो को खासकर सयुक्त राष्ट्रसघ के जरिये इस बात में सहयोग करना चाहिये कि हथियार घटाये जायँ और प्रभावपूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय नियन्त्रण में ऐटमी हथियार खतम किये जायँ।

इस तरह अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति मे बढावा दिया जा सकता है और ऐटमी शक्ति को केवल शान्ति के कार्यो में इस्तैमाल किया जा सकता है। इस तरह एशिया और अफ्रीका की आवश्यकताएँ पूरी की जा सकती हैं, क्योंकि इन देशों को फौरन इस बात की जरूरत है कि सामाजिक प्रगति हो और व्यापक स्वाधीनता में उनके रहन-सहन का स्तर ऊँचा उठे।

आजादी और शान्ति एक दूसरे पर निर्भर करते हैं। सभी देशों की जनता को आत्म निर्णय का अधिकार मिलना चाहिये और जो लोग अब भी गुलाम हैं उन्हे जल्द से जल्द स्वतन्त्रता और स्वाधीनता दी जाय।

अविश्वास और भय से मुक्त एक दूसरे के प्रति विश्वास और सद्भावना के साथ, राष्ट्रो को सहिष्णु होना चाहिये और एक दूसरे के साथ शान्ति मे अच्छे पडौसियो की तरह रहना चाहिये और नीचे दिये गये सिद्धान्तो के आधार पर आपस मे मित्रतापूर्ण सहयोग बढाना चाहिये।

१—मानव अधिकारो और सयुक्त राष्ट्र अधिकार पत्र का सम्मान करना,

२—सभी राष्ट्रो की प्रभु सत्ता अखण्डता का सम्मान करना।

३—वर्णो और राष्ट्रीय समानता को मानना।

४—दूसरो के अन्दरूनी मामलो में दखल न देना।

५—संयुक्त राष्ट्र अधिकार पत्र के अनुसार अकेले या सामूहिक रूप से किसी राष्ट्र के आत्म रक्षा के अधिकार को मानना।

६—सामूहिक सुरक्षा व्यवस्था को किसी एक बड़ी विश्व शक्ति के फायदे मे न इस्तैमाल करना, दूसरे देशो पर दवाव न डालना।

७—किसी दूसरे देश के खिलाफ हमले की कार्रवाई की धमकी या वल-प्रयोग न करना।

८—तमाम अन्तर्राष्ट्रीय झगडो को शान्ति से सुलझाना।

९—आपसी हित और सहयोग को वढाना।

१०—न्याय और अन्तर्राष्ट्रीय जिम्मेदारियो का सम्मान करना।

सम्मेलन अपना ये विश्वास प्रकट करता है कि इन सिद्धान्तो के अनुसार मित्रतापूर्ण सहयोग अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति और सुरक्षा प्रभाव पूर्ण ढग से कायम रखी जा सकेगी और वढाई जा सकेगी और आर्थिक, सामाजिक तथा सास्कृतिक क्षेत्र मे सहयोग से सभी की समृद्धि और भलाई होगी।

सम्मेलन ने इस वात की सिफारिश की कि इस सम्मेलन को वुलाने वाले राष्ट्र दूसरे सम्वन्धित राष्ट्रो से सलाह कर दूसरा सम्मेलन वुलाने पर विचार करे।

पंडित नेहरू

सम्मेलन के वीच हमने यद्यपि पडित नेहरू का जिकर नही किया, और ऐसा किसी भ्रमवश हुआ है, ऐसी वात नही है, वल्कि अच्छी तरह मनन करने के वाद ही ऐसा किया गया है। क्योकि सम्मेलन में जो कुछ फैसले हुए उनमें पडित नेहरू का पूरा-पूरा हाथ था, या यो कहिये कि पडित नेहरू ने यदाकदा जव भी शान्ति के वारे में कुछ कहा सम्मेलन के फैसलो में वही निश्चित हुआ। अर्थात् सम्मेलन में दो व्यक्तियो का व्यक्तित्व ही निखर कर चमका, चीन के प्रधानमन्त्री चाओ एन लाई और पडित जवाहरलाल नेहरू।

चाओ एन लाई ने अपने भाषण में चीन की समस्या के सिवाय और जो कुछ अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति और स्वतन्त्रता के लिए कहा, पडित नेहरू की उस पर स्पष्ट छाप दीखती है। पचशील सिद्धान्त तो श्री चाओ और नेहरू जी सम्मिलित देन थे ही। इस तरह बाडुंग सम्मेलन की सफलता का एक बहुत बडा श्रेय पडित नेहरू को है। बाडुंग सम्मेलन में किये गये निश्चय भारत की पर-राष्ट्र नीति के अनुसार ही है, और इस तरह नेहरू जी का शान्ति के लिये दुनिया को आवाहन सफल रहा है।

सप्तम अध्याय

'नेहरू नई दुनियां में'

रूस में नेहरू

पंडित जवाहरलाल नेहरू की रूस यात्रा के सम्बन्ध मे जिन लोगो ने भी समाचार पत्रो में पढा उन पर तुरन्त उसका कुछ न कुछ प्रभाव पडा। अधिकाँश लोग ऐसे थे, जिन्हे इस समाचार से प्रसन्नता हुई, मगर युद्धखोरो के दलालो में एक हलचल सी मच गई, क्योकि अब तक शाँति के देश रूस के बारे मे उन्होंने काफी भ्रम सा लोगो के बीच फैला रखा था। यो दूसरे लोग भी रूस गए थे, मगर उनके वारे में इन दलालो का कहना होता था कि जाने वाले या तो कम्यु-निस्ट थे या कम्युनिस्ट समर्थित। यहाँ तक इन नीचो ने कहा कि रूस से जो भी लौटकर आता है उसे एक मोटी रकम रिश्वत में मिल जाती है, इसीलिये वह रूस के गुणगान करने लगता है। और वह इसके लिए नेहरू का नाम लिया करते कि पंडित जी अमेरिका से इँगलैंड गये, और हाल में चीन में भी गये, मगर रूस इसीलिए नही जाते कि वहाँ की शासन प्रणाली बडी खराव है। ऐसे लोगो के सामने अन्धेरा छा गया कि अव पं० नेहरू रूस जारहे हैं, इससे उनकी पोल खुल जायगी और जिसे वह लोहे की दीवार कहते हैं, वह वास्तव में क्या है इसे लोग भारत के प्रधान मन्त्री के मुँह से सुन लेंगे। खैर !

समाचार से भारतीय जनता को प्रसन्नता हुई, उसने पंडित नेहरू के रूस जाने के विचार का स्वागत किया।

७ जून को पडित जवाहरलाल नेहरू संध्या के समय मास्को के केन्द्रिय हवाई अड्डे पर वायुयान से उतरे। उनके साथ श्रीमती इन्दरा गांधी, परराष्ट्र मन्त्रालय के सचिव श्री एन० आर० पिल्ले तया सयुक्त सचिव श्री एम० ए० हुसैन थे।

केन्द्रीय हवाई अड्डा सोवियत सघ और भारतीय राष्ट्र पताकाओ से सुशो-भित था। पडित नेहरू के स्वागत मे उस समय, रूस के प्रधान मन्त्री एन० ए० वुलगानिन, एल० एम० कगानोविच, जी० एम० मालेनकोव, वी० एम० मोलोतोव, ए० आई० मिकोयान, एम० जी० पूर्वखिन एम० जेड० सावरोव, एन एम० ज्रुश्चेव, रुसी सघ की मन्त्रि परिषद के अध्यक्ष ए०एम० पुजानोव, सोवियत सघ

था—'सोवियत यूनीयन और भारत की जनता के बीच इस मित्रता मे वृद्धि हो और शक्तिशाली बने ।'

'भारतीय गणराज्य के प्रधान प० जवाहरलाल नेहरू आज हमारे देश मे पधार रहे हैं । सोवियत जनता अपनी मित्र भारतीय जनता के इस सुपुत्र का हार्दिक स्वागत करती है ।

'इतिहास के पूरे दौरान मे १५ वी शताब्दी मे साहसी रूसी यात्री अफानासी निकीतिन द्वारा भारत यात्रा से लेकर आज तक हमारे देशो के बीच लगातार मैत्री सम्बन्ध स्थापित रहे हैं ।

'प्रसिद्ध रूसी चित्रकार वेरेशाजिन ने भारत के इतिहास, प्रकृति और उसकी जनता के राष्ट्रीय स्वाधीनता सग्राम मे प्रेरणा ली थी ।

'भारतीय साहित्य के प्रमुख प्रतिनिधि रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने बड़े स्नेह और सहानुभूति से सोवियतराज्य की राष्ट्रनीति और सोवियत सस्कृति के बारे मे लिखा था ।

'सोवियत यूनीयन और भारत की जनता ने सदैव एक दूसरे का बड़ा आदर किया है । दोनो को एकदूसरे के सुन्दर भविष्य के लिये होने वाले सघर्षो से नैतिक सहयोग प्राप्त हुआ है ।

'भारत की प्रगतिशील जनता ने, जो उस समय भी उपनिवेश वादी गुलामी के नीचे दबी थी—महान अक्तूबर क्राति का अभिनन्दन किया और सोवियत यूनीयन द्वारा प्राप्त की गयी सफलताओ को निकट से देखा । सोवियत यूनीयन ने अपने जन्म ही से लगातार भारतीय जनता की स्वाधीनता के लिए और उपनिवेशवादी शासन के विरुद्ध होने वाले सघर्ष के प्रति गहरी सहानुभूति दिखाई ।

'कम्युनिस्ट पार्टी और सोवियत राज के सस्थापक, महान लेनिन भारतीय जनता की रचनात्मक शक्तियो और आजादी तथा स्वाधीनता के लिये होने वाले सघर्ष की सफलता में पूर्ण विश्वास रखते थे । सोवियत जनता को इससे बहुत सन्तोष है कि भारत ने दसियो साल के बाद उपनिवेशवादी शासन के जुए से आखिरकार अपने को मुक्त कर लिया और अब वह राष्ट्रीय विकास के स्वतन्त्र मार्ग पर बढ़ने के लिए दृढ है ।

'यह चीज इस आवश्यकता को और प्रकट करती है कि सोवियत भारतमैत्री मे वृद्धि हो और मजबूती आये ।

'भारत और सोवियत जनता के राजकीय ढाचे मे अन्तर है । उनकी सामाजिक और राजनीतिक प्रथाओ मे विभिन्नता है, लेकिन सोवियत और भारतीय जनता मे समानता भी बहुत है, दोनो ही देशो की जनता शाति प्रेमी है ।

'काफी व्यय से सोवियत यूनीयन और जनतान्त्रिक भारत में फैक्टरिया और मिले खुल रही हैं, बाँध बनाये जा रहे हैं, नदियो के तटो पर बिजली के कारखाने खड़े किये जा रहे हैं, रेगिस्तानो को उत्पादन भूमि में परिवर्तित किया जा रहा है ।

'निर्माण और रचना के लिये शाति की आवश्यकता होती है । हमारी समान कामना यही है कि हम शाति और मैत्री के सम्बन्धो के बीच रहे । हमारे दोनो देश शाति की रक्षा और दृढता के लिए सतत सघर्षशील हैं, अन्तरष्ट्रीय समस्याओ और झगड़ो के शातिपूर्ण हल के लिए आगे वढकर आते हैं । यह चीज सोवियत और भारतीय जनता को एक करती है ।

'अन्य शान्ति प्रेमी जनता के साथ, सोवियत और भारतीय जनता द्वारा शान्ति के लिये किये जाने वाले संघर्ष के संयुक्त प्रयासो के फलस्वरूप स्पष्ट परिणाम प्रकट होने लगे हैं । सोवियत यूनीयन और जनतात्रिक भारत द्वारा सक्रिय रूप से वीच में पड़ने से एशिया मे, कोरिया और हिन्द चीन के दो दावानलो को बुझाया जा सका ।

'सोवियत जनता, एशिया मे शांति और विश्वशान्ति प्राप्त करने के प्रश्न को प्रशसा की दृष्टि से देखती है । हिन्द चीन में अन्तर राष्ट्रीय सगठनो में भारतीय प्रतिनिधियो द्वारा की गई घोषणाओ को, भारतीय प्रतिनिधियो के नेतृत्वमे चलने वाले अन्तरराष्ट्रीय पर्यवेक्षण एव नियंत्रण कमीशन की कार्रवाइयो को सोवियत जनता लगातार वडे गौर से देख रही है ।

'सोवियत यूनीयन के साथ संयुक्त रूप से संयुक्तराष्ट्रसघ में जनवादी चे को उचित स्थान दिलाने के लिये किये जाने वाले संघर्ष के कारण, भा समस्त शान्ति प्रिय जनता की भारी प्रशसा का पात्र बन गया है । जनवादी

अमेरिका गये थे तब यही अखबार उनके स्वागत मे कालम पर कालम रग रहा था, इसका एक कारण था उस समय जगखोरो ने सोचा था, पडित नेहरू हमारे स्वागत के जाल मे फँस जायेगे। पर वह पडित नेहरू ही थे, जिन्होने स्पष्ट शब्दो मे अमेरिका में ही युद्ध चाहने वाले राष्ट्रो की भर्तसना की थी। क्या न्यूयार्क टाइम्स के सम्पादक महोदय ने उस समय पडित नेहरू को नही पहिचाना था, कि पडित नेहरू शान्ति के पुजारी हैं, और उनका अमेरिका भ्रमण शान्ति की खोज का एक छोटा-सा अध्याय मात्र है।

न्यूयार्क क्यो पडित नेहरू की इस यात्रा से नाराज हुआ, इसका कारण उसके नीचे लिखे शब्दो से स्पष्ट हो जाता है—

'मार्शल बुल्गानिन और उनके साथी पडित नेहरू को एक ऐसे नाटक का पात्र बनाने मे सफल हो गये हैं जिनमे कम्युनिस्ट ससार 'तनाव कम करने' के सिद्धान्त का उपासक और बिना युद्ध झगड़े और मतभेद तय करने की कोशिश करने वालो की अन्तिम आशा के प्रतीक रूप में प्रकट होता है, और अमेरिका तथा उसके साथी जगबाजो के रूप मे प्रकट होते हैं।

'खेद है कि पडित नेहरू जैसा आदमी इस नाटक मे सम्मिलित किया जा सका।'

यदि हम यो कहे कि अमेरिकी जंगबाज इसलिए पडित नेहरू से रुष्ट हो गये कि उनकी मास्को यात्रा से रूस की शान्ति नीति उजागर हो गई और अमरीकी साम्राज्यवादियो की 'युद्ध नीति' का पर्दा फाश हो गया तो कुछ अत्युक्ति न होगी।

अमेरिका में ही यह हलचल मची हो, ऐसी बात नही, ब्रिटिश साम्राज्यवादियो के खेमे में भी गडबड़ाहट और बौखलाहट मच गई। ब्रिटिश रेडियो (बी. बी. सी.) ने तो अपनी समाचार बुलेटिन मे पडित नेहरू के मास्को पहुँचने के समाचार का ही जिकर नही किया।

ब्रिटिश पूँजीपतियो के अखबार मैनचेस्टर गार्जियन को ... पर्दा डालने के लिए कुछ नही मिला तो वह नाराज़ होकर लिखने ... के
...वल सोवियत रूस के अखबारो के भ ... के

इण्डियन एक्स प्रेस के लन्दन प्रतिनिधि ने लिखा—

'एक ओर ब्रिटिश सरकार सोवियत के इस कथन पर सन्देह करती है कि (सोवियत की) यह कार्रवाइयाँ अन्तरराष्ट्रीय तनाव कम करने के उद्देश्य से की जा रही हैं। दूसरी तरफ ब्रिटेन के अखबार सोवियत नीति से भारत जैसे देश में पैदा हुए प्रभाव तो कम आकने की कोशिश कर रहे हैं।......

'ब्रिटेन की जनता के लिए (!!!) सबसे परेशानी की बात यह है कि मि० नेहरू जब कभी ब्रिटेन आये, उनका ऐसा उत्साहपूर्ण स्वागत कभी नही हुआ न कभी अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धो का सुधार करने के लिए किये गये उनके प्रयत्नो का उतना सम्मान हुआ, जितना सोवियत नेता कर रहे हैं।'

अन्त मे उस सम्वाददाता ने लिखा—

'यह डर है कि कही मि० नेहरू रूसी राजनीतिज्ञो के सुमधुर व्यवहार और कूटनीति के सयोग के शिकार न हो जायँ, जिसकी वजह से बेलग्रेड और वियना मे इतने अप्रत्याशित और आश्चर्य जनक परिणाम निकले और अब जिसका इस्तैमाल डाक्टर अडेन्योर पर किया जा रहा है।'

मास्को में

८ जून को प्रात. ही सोवियत सघ के प्रधान मन्त्री मार्शल बुलगानिन पण्डित नेहरू से मिले, इस समय सोवियत सघ में भारत के राजदूत श्री के० पी० एस० मेनन नेहरू जी के साथ थे।

प० नेहरू और मार्शल बुलगानिन के बीच जो वातचीत हुई उसमें सोवियत सघ के विदेशमन्त्री वी० एम० मोलोतोव तथा एम० ए० मेन्शिकोव भी सम्मलित थे।

उसी दिन वी० एम० मोलोतोव ने पण्डित नेहरू के सम्मान में एक भोज दिया। पश्चात् रूस के भूतपूर्व प्रधान मन्त्री स्वर्गीय स्टालिन की समाधि पर प० नेहरू ने पुष्पांजलि अर्पित की।

पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने आज मास्को का क्रेमलिन भी देखा। उनके स्थापत्य कला सम्बन्धी स्मारको का व्लागोवेश्चेंस्की गिरजा घर, आर्खांगेल्स का

अमेरिका गये थे तब यही अखबार उनके स्वागत मे कालम पर कालम रंग रहा था, इसका एक कारण था उस समय जगखोरो ने सोचा था, पडित नेहरू हमारे स्वागत के जाल मे फँस जायेगे। पर वह पडित नेहरू ही थे, जिन्होने स्पष्ट शब्दो में अमेरिका में ही युद्ध चाहने वाले राष्ट्रो की भर्तसना की थी। क्या न्यूयार्क टाइम्स के सम्पादक महोदय ने उस समय पडित नेहरू को नही पहिचाना था, कि पडित नेहरू शान्ति के पुजारी हैं, और उनका अमेरिका भ्रमण शान्ति की खोज का एक छोटा-सा अध्याय मात्र है।

न्यूयार्क क्यो पडित नेहरू की इस यात्रा से नाराज हुआ, इसका कारण उसके नीचे लिखे शब्दो से स्पष्ट हो जाता है—

'मार्शल बुलगानिन और उनके साथी पडित नेहरू को एक ऐसे नाटक का पात्र बनाने में सफल हो गये हैं जिनमें कम्युनिस्ट ससार 'तनाव कम करने' के सिद्धान्त का उपासक और बिना युद्ध झगड़े और मतभेद तय करने की कोशिश करने वालो की अन्तिम आशा के प्रतीक रूप में प्रकट होता है, और अमेरिका तथा उसके साथी जगबाजो के रूप में प्रकट होते हैं।

'खेद है कि पडित नेहरू जैसा आदमी इस नाटक मे सम्मिलित किया जा सका।'

यदि हम यो कहे कि अमेरिकी जगबाज इसलिए पडित नेहरू से रुष्ट हो गये कि उनकी मास्को यात्रा से रूस की शान्ति नीति उजागर हो गई और अमरीकी साम्राज्यवादियो की 'युद्ध नीति' का पर्दा फाश हो गया तो कुछ अत्युक्ति न होगी।

अमेरिका में ही यह हलचल मची हो, ऐसी बात नही, ब्रिटिश साम्राज्यवादियो के खेमे में भी गड़बड़ाहट और बौखलाहट मच गई। ब्रिटिश रेडियो (बी. बी. सी.) ने तो अपनी समाचार बुलेटिन मे पडित नेहरू के मास्को पहुँचने के समाचार का ही जिकर नही किया।

ब्रिटिश पूँजीपतियो के अखबार मैनचेस्टर गार्जियन को जब सत्य पर पर्दा डालने के लिए कुछ नही मिला तो वह नाराज होकर लिखने लगा यह सब तो केवल सोवियत रूस के अखबारो के भारी प्रोपेगंडे के कारण हुआ है।

इण्डियन एक्स प्रेस के लन्दन प्रतिनिधि ने लिखा—

'एक ओर ब्रिटिश सरकार सोवियत के इस कथन पर सन्देह करती है कि (सोवियत की) यह कार्रवाइयाँ अन्तरराष्ट्रीय तनाव कम करने के उद्देश्य से की जा रही हैं। दूसरी तरफ ब्रिटेन के अखबार सोवियत नीति से भारत जैसे देश में पैदा हुए प्रभाव तो कम आकने की कोशिश कर रहे हैं।······

'ब्रिटेन की जनता के लिए (!!!) सबसे परेशानी की बात यह है कि मि० नेहरू जब कभी ब्रिटेन आये, उनका ऐसा उत्साहपूर्ण स्वागत कभी नही हुआ न कभी अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धो का सुधार करने के लिए किये गये उनके प्रयत्नो का उतना सम्मान हुआ, जितना सोवियत नेता कर रहे हैं।'

अन्त मे उस सम्वाददाता ने लिखा—

'यह डर है कि कही मि० नेहरू रूसी राजनीतिज्ञो के सुमधुर व्यवहार और कूटनीति के सयोग के शिकार न हो जायँ, जिसकी वजह से बेलग्रेड और वियना मे इतने अप्रत्याशित और आश्चर्य जनक परिणाम निकले और अब जिसका इस्तैमाल डाक्टर अडेन्योर पर किया जा रहा है।'

मास्को में

८ जून को प्रातः ही सोवियत सघ के प्रधान मन्त्री मार्शल बुलगानिन पण्डित नेहरू से मिले, इस समय सोवियत सघ में भारत के राजदूत श्री के० पी० एस० मेनन नेहरू जी के साथ थे।

प० नेहरू और मार्शल बुलगानिन के बीच जो बातचीत हुई उसमे सोवियत सघ के विदेशमन्त्री वी० एम० मोलोतोव तथा एम० ए० मेन्शिकोव भी सम्मलित थे।

उसी दिन वी० एम० मोलोतोव ने पण्डित नेहरू के सम्मान में एक भोज दिया। पश्चात् रूस के भूतपूर्व प्रधान मन्त्री स्वर्गीय स्टालिन की समाधि पर प० नेहरू ने पुष्पांजलि अर्पित की।

पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने आज मास्को का क्रेमलिन भी देखा। उसके स्थापत्य कला सम्बन्धी स्मारको का ब्लागोवेश्चेस्की गिरजा घर, आर्खांगेल्म का

गिरजाघर जो नयी सजधज के साथ हाल ही में खुला है, और ओरूजेइयानापालाता का—निरीक्षण किया।

८ जून को ही पण्डित नेहरू स्तालिन मोटर कारखाना देखने गए थे। नेहरु जी के सम्मान में बालक बालिकाओ ने गीत सुनाए और पुष्प भेंट किये। एक बालिका ने नेहरू जी का स्वागत करते हुए अनुरोध किया कि वे सोवियत सघ के बच्चो की ओर से भारतीय बच्चो के लिए भाई चारे और प्रेम का सन्देश भेज दे।

इस कारखाने में पण्डित नेहरू ने तीन घन्टे बिताये और होने वाले उद्योग के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त की। इस कारखाने मे ४०,००० मजदूर काम करते हैं और ३००० मोटरें नित्य बनकर तैयार होती हैं।

पण्डित नेहरू के पहुँचते ही मजदूरो ने जिनमे आधी महिलाये थी—'भारतीय मैत्री जिन्दाबाद,' 'भारतीय प्रधान मन्त्री जिन्दाबाद' के गगन वेधी नारो से उनका स्वागत किया। इस कारखाने के मजदूरो के प्रेम भाव से उनका हृदय भर आया।

प्रात. भी जब पडित नेहरु क्रेमलिन जा रहे थे, हर जगह जन समूह एकत्रित हो जाता था और तूफानी हर्षध्वनि से अपने अतिथि पण्डित नेहरू का स्वागत करता था। हिन्दुस्तान टाइम्स के सवाददाता ने एक मजदूर महिला से पूछा कि वह नेहरू जी को देखकर क्यो इतना हर्ष प्रगट कर रही हैं तो उसने उत्तर दिया—नेहरू जी शान्ति का समर्थन करते हैं और सोवियत जनता भी शान्ति चाहती है। इसलिये उसे भारत से अत्यन्त प्रेम है।

पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने उस दिन अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति पर सोवियत विदेश मन्त्री मो० मोलोतोव और प्रधान मन्त्री मार्शल बुल्गानिन से बातचीत की।

रात को भारतीय राजदूत की ओर से एक भोज दिया गया, जिसमें मार्शल बुल्गानिन, ख्रुश्चेव और सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी के अध्यक्ष मण्डल के ६ अन्य सदस्य भी उपस्थित थे। इस भोज में भारतीय भोजन परोसा गया था।

तीसरे दिन ९ जून को पण्डित नेहरू ने हवाई जहाज का कारखाना देखा। नेहरू जी के प्रवेश करने और जाने के समय हजारो मजदूरो ने प्रेमपूर्वक नारे

से स्वागत किया।

कारखाने के मैनेजर ने उन्हे बताया कि यह कारखाना सोवियत की पहली पंचवर्षीय योजना के अन्तरगत बना था। इसमें फौजी और नागरिक प्रयोग के हवाई जहाज कम बनते हैं, क्योकि इनके लिए आर्डर नही मिल रहे हैं। आज कल अधिकाँशत· मुसाफिरी हवाई जहाज, उनके कल पुर्जे तथा खेती की मशीनें तैयार हो रही हैं।

दोपहर का भोजन सोवियत राष्ट्रपति मो० वोराशिलोव के साथ हुआ।

सन्ध्या को उन्होने मास्को मे कृषि प्रदर्शन भी देखी। प्रदर्शनी में श्रीमती इन्द्रागाँधी उनके साथ थी। भारतीय अतिथियो के साथ प्रथम उपराष्ट्र मन्त्री वी० वी० कुज़नेत्सोव, भारत मे सोवियत सघ के राजदूत मेनशिकोव, सोवियत सघ के परराष्ट्र मन्त्रालय के प्रोतोकोल विभाग के प्रधान एफ० एफ० मोलोच-कोव थे।

प्रदर्शनी देखने वाले अगणित दर्शको ने तुमुल हर्षध्वनि के साथ उनका स्वागत किया।

पंडित नेहरू और श्रीमती इन्द्रागांधी ने अपने दल के सहित उद्यानो, खेतों और फव्वारो का निरीक्षण करते हुए प्रदर्शनी की अनुपम छटा देखी। अभ्यागत जिधर भी जाते थे तुमुलहर्ष ध्वनि से उनका स्वागत होता था।

जब पण्डित नेहरू उजवेक जनतन्त्र का मडप देखने गए जो कपास रेशम तथा फारस के मेमनो के रोये के लिए प्रसिद्ध है, तो उन्होने बड़ी दिलचस्पी ली। तुर्कमेनिया के मंडप मे नेहरू जी का ध्यान हाथ के बुने एक वृहत् कालीन की ओर आकर्षित हुआ जिसमे सोवियत जातियो की मैत्री की प्रतीक बहुजातीय सोवियत राज्य के प्रतिनिधियो का चित्रण है। इमी मडप में नेहरू जी ने एक मानचित्र में दिलचस्पी ली जिसमें काराकूम नहर का मार्ग दिखाया गया था।

कृषि के यन्त्रीकरण एव विद्युतीकरण के मडप में नेहरू जी ने कपास चुनने की नयी सोवियत मशीनो तथा उत्कृष्ट सर्विस के लिए विख्यात जी० ए० जेड० ६६ मोटर गाडियो पर विशेष ध्यान दिया।

पशुपालन विभाग और जलस्रोत साधन के मंडप को भी उन्होने बड़ी दिल-

चस्पी के साथ देखा।

दर्शकों की पुस्तक मे पण्डित नेहरू ने लिखा—

'यह एक आश्चर्यजनक प्रदर्शनी है, मुझे केवल इसी बात का अफसोस है कि मैंने और अधिक समय यहाँ नही बिताया।'

१० जून को नेहरू बच्चों के स्कूल नं० ५४५ में गये, जहाँ छात्रो और शिक्षको ने प्रेमपूर्वक उनका अभिवादन किया और फूल भेंट किये। तूफानी हर्ष ध्वनि के बीच पंडित नेहरू और इन्द्रागांधी को बच्चों ने तरुणपायनियरो की टाइयाँ भेंट की। बदले में पडित नेहरू ने बच्चो को अपनी चन्दन की छडी भेंट में दी, जिसे उन्होने कभी भी अपने से अलग नही किया था।

दर्शको की पुस्तक मे पंडित जी ने लिखा—

'मुझे इस स्कूल मे आकर बच्चों के प्रसन्न चेहरे देखकर हर्ष हुआ है।' उनकी पुत्री श्रीमती इन्द्रा गाधी ने लिखा—'मै विश्वास करती हूँ कि इस स्कूल में हमारे आने से भारत के बारे में और भी अधिक दिलचस्पी पैदा होगी और हमारे देशो के बच्चो के बीच ज्ञान के आदान-प्रदान की नूतम सभावनायें पैदा होगी।'

मास्को विश्व-विद्यालय

पण्डित नेहरू मास्को विश्वविद्यालय देखने भी गये। देश के सबसे पुराने उच्च शिक्षालय के हजारो छात्रो ने उनका हार्दिक अभिवादन किया। विश्व-विद्यालय के रेक्टर अकादमिशियन आई० पेट्रोवस्की, सोवियत सघ के उच्च शिक्षा के मन्त्री वी० इल्युतिन तथा उप शिक्षा मन्त्री वी० प्रोकोफियेव और वी० स्तोलेतोव ने मेहमानो का स्वागत किया। नेहरूजी ने विद्यार्थियो के आवास एव अध्ययन की परिस्थितियो, वैज्ञानिक शोध कार्य तथा उच्च शिक्षालयो में प्रवेश आदि के विषय में प्रश्न पूछे। विश्वविद्यालय में विदेशी भाषाओं की शिक्षण विधि तथा स्नातक परीक्षा पद्धति में भी काफी दिलचस्पी ली।

पश्चात् विश्वविद्यालय के द्विशती समारोह के उपलक्ष में उन्हें समारोह पदक, इस शिक्षा संस्था की इतिहास सम्बन्धी पुस्तकें और समारोह के बैज भेंट किये।

निश्वविद्यालय की चौबीसवी मंजिल पर नेहरू जी ले जाये गये, जहाँ से उन्होंने मास्को का दृश्य देखा और तारीफ की। भूगोल संग्रहालय भी दिखाया गया जहां द्विशती समारोह के अवसर पर विश्वविद्यालय को भेजे गये उपहार प्रदर्शित थे। भूगोल विभाग के शिक्षकों की ओर से पडित नेहरू को विश्व का मानचित्र भेंट किया गया।

भाषा विज्ञान विभाग मे शिक्षक मडल की एक सदस्या श्रीमती मलेभ्फारेन कोवा ने हिन्दी में पडित नेहरू के स्वागत में भाषण दिया। पडित नेहरू ने 'भारत की खोज' नामक अपनी पुस्तक पर हस्ताक्षर किये।

उन्होने अपने पूरे दल के साथ विश्वविद्यालय का हाल भी देखा। हाल में क्षात्रो और शिक्षको ने तुमुल हर्ष ध्वनि के साथ उनका स्वागत किया। पण्डित नेहरू ने उन्हे सम्बोधित करते हुए कहा—'आपसे मिलकर मुझे अपार प्रसन्नता हो रही है। आपका ये देश अत्यन्त विशाल है, पर आपके दिमाग एव हृदय की महानता देश की विशालता से भी बड़ी है।'

परिशिष्ट

पंडित जवाहरलाल नेहरू मध्य एशिया में भी गये। यह मध्य एशिया कभी खानावदोशो का देश कहलाता था। आज प्राचीन मुस्लिम सस्कृति और आधुनिक उद्योग धन्धो का मनहर और रंगीन प्रदेश है। यहाँ अश्कावाद और ताशकंद में तुर्कमानिया और उजवेक जनतत्र की जनता ने बिल्कुल पूर्वी ढग से भारत के प्रधान मंत्री प नेहरू का स्वागत किया।

अश्कावाद इस रेगिस्तानी प्रदेश पर सोवियत के समाजवादी इन्सान की शानदार जीत का प्रतीक है। यहाँ पडित नेहरू ने मध्य एशियाई कबाबो, तंदूरी रोटी और पुलाव का पहला मजा लिया।

अश्कावाद और बाद में ताशकंद में पंडित नेहरू ने "सलामवालेकुम" से जनता का अभिवादन किया। हर्षोन्मत्त जनता ने "वालेकुमसलाम" के गगनभेदी सामूहिक स्वर में उनका अभिनन्दन किया।

अश्कावाद मे पडित नेहरू और उनके दल को तुर्कमानिया की परम्परागत

मुस्लिम पोशाक भेंट में दी गयी। पंडित नेहरू अलग कमरे में जाकर जब उसको पहनकर लौटे, तो उपस्थित भीड़ खुशी से पागल होकर फिर उनकी जय-जयकार कर उठी।

उर्दू में अभिनन्दन-पत्र

२० लाख आबादी वाले बड़े शहर ताशकंद के हवाई अड्डे पर मानो सारा शहर उमड़ पड़ा था। यहाँ पंडित नेहरू को उर्दू में अभिनन्दन-पत्र दिया गया, जिसे एक उजबेक नागरिक ने पढ़ा। पंडित नेहरू ने इसका उत्तर उर्दू में ही दिया। पंडित नेहरू ने कहा कि भारत और उजबेकिस्तान के बीच सदियों पुराने सांस्कृतिक सम्बन्ध हैं। भारत शांति चाहता है और उजबेकिस्तान भी। इसलिए दोनों देश मित्र हैं।

हवाई अड्डे से पंडित नेहरू कार में बाहर गये और उजबेक प्रधान मन्त्री के मेहमान बने। सड़कों पर दोनों ओर मीलों तक खड़ी जनता ने उनको "सलाम-वालेकुम" से अभिनन्दन किया।

यहाँ पंडित नेहरू ने ताशकंद की शानदार नाटकशाला देखी, जो अपनी कला में बेजोड़ है। इसमें समरकंद और बुखारा की पुरानी कला सजीव हो उठी है।

समरकन्द में

१५ जून को पंडित नेहरू, उजबेकिस्तान के दूसरे बड़े और प्राचीन शहर समरकन्द को देखने पहुँचे। यहाँ प्राचीनतम ऐतिहासिक इमारतें और आधुनिकतम विशाल भवन देखने को मिले। पण्डित नेहरू के स्वागत के लिए सारा शहर सजा हुआ था। नौजवानों के सामूहिक गीतों और मसजिदों से मुअज्जिनों की पुकार से वातावरण में विचित्र संगीत भर गया था।

ताशकंद में मानो मेला जुड़ा हुआ था। दूर-दूर के ग्रामों से, समरकंद के प्रसिद्ध चौकों पर सामूहिक खेतों के किसान पण्डित नेहरू को देखने के लिए आये थे।

पण्डित नेहरू ने यहाँ कुछ प्राचीन ऐतिहासिक स्थान, मिसाल के लिए तैमूर

लगकी समाधि आदि देखे ।

यहाँ से पडित नेहरू फिर ताशकद पहुँचे जहाँ उन्होने स्तालिन सामूहिक खेत और एक कपड़ा मिल का निरीक्षण किया। यहाँ सामूहिक खेत के किसानो के साथ पण्डित नेहरू ने भोजन किया ।

आलमा अता

ताशकद से पण्डित नेहरू कज़ाकिस्तान की राजधानी आलमा-अता पहुँचे । क्रान्ति से पहले यह स्थान, वर्फ से ढके हुए पामारी पहाडो के बीच, चँद भेडें चराने वाले खानाबदोशो की झोपडियो का प्रवेश था किंतु अव यहाँ एक विशाल औद्योगिक नगर बन गया है जिसकी आबादी लगभग ५ लाख है ।

इस शहर की आधुनिकतम सुन्दर इमारतो के बीच चौडी सडको पर से जब पण्डित नेहरू गुजरे तो दोनो ओर खडे हर्षोन्मत्त नागरिको ने राह मे फूल विछा दिये ।

नीतोड़ प्रदेश में

आलमा अता से पण्डित नेहरू साइबेरिया के दक्षिणी भाग मे बाहरी मगोलिया के लगभग करीब के रुबजोवस्क नाम के स्थान पर पहुँचे ।

यह वह स्थान है , जहा की जमीन सदियो से इन्सान के जादू भरे हाथो के छूने का इन्तजार कर रही थी । किन्तु इसे बाँझ (वजर और रेगिस्तान) समझकर, मनुष्यता ने कभी हल की नोक छुआकर इसके अरमानो को जगाने की कोशिश नही की ।

सोवियत जनता ने समाजवाद से कम्युनिज्म की मजिल पर वढते हुए इस जमीन का भाग्य पलटने का बीडा उठाया । दो वर्ष पहले, सोवियत सघ की नई कृषि योजना के अनुसार लगभग ५०,००० एकड़ ज़मीन को सरसब्ज करने के लिए सोवियत सघ के योरपी हिस्से के शहरो के नौजवान स्वयसेवक यहाँ पहुँचे उनके साथ पहुँचे सोवियत सघ के इन्सान के जादू भरे हाथ—आधुनिकतम ट्रेक्टर वडी-बडी मशीने । नहरो के रूप में जमीन का प्यार फूट पडा, गेहूँ की वालों के रूप मे धरती ने वढे हुए हाथो ने सोवियत के नये इन्सान को गले लगाया !

नौजवान स्वयसेवक नयी धातु के इन्सान हैं, जो मुसीबतो पर विजय पाने के विज्ञान मे दक्ष हैं। अभी कुछ दिन पहले वे खेमो में रहते थे, लेकिन अब उनके मकान बन रहे हैं और थोड़े दिनो में यहाँ सभी आधुनिक सुविधाएँ हासिल हो जायँगी ।

यहाँ पण्डित नेहरू को सोवियत कृषि विज्ञान का करिश्मा देखने को मिला। फार्म के नौजवान डायरेक्टर ने पण्डित नेहरू को एक-एक बात बडी दिलचस्पी और उत्साह से बतायी ।

सबसे बड़ा इस्पात केन्द्र

१७ जून को पण्डित नेहरू यूराल के पर्वती प्रदेश में बना हुआ इस्पात का बडा भारी कारखाना देखने गये। मेग्नितोगोरस्क का यह कारखाना योरप में सबसे बडा है जिसका वार्षिक उत्पादन ४५,००,००० टन है। २५ वर्ष पहले यह प्रथम पचवर्षीय योजना के काल मे बना था। आजकल रोज ३५०,००० टन इस्पात उत्पन्न होता है।

युद्ध के बाद इस कारखाने में नयी सोवियत मशीने लगायी गयी, जिसके कारण यहाँ सब काम मशीनो से होने लगा और मनुष्य के श्रम की बचत होने लगी। इतने कम आदमी, दुनिया में कही इतनी पैदावार नही करते।

यहाँ २५,००० आदमी काम करते हैं, जिनमे से एक तिहाई महिलाएँ हैं। बड़ी-बडी भट्टियाँ और मशीनें यहाँ बटन दबाते ही काम करने लगती हैं।

इस्पात बनाने के लिए यहाँ नई विधियाँ इस्तेमाल की जाती हैं जिनकी वजह से इस्पात ढालने के लिए मैंगनीज़ का इस्तेमाल खत्म हो गया है।

पडित नेहरू ने यहाँ ६ घण्टे बिताये और इस इस्पात नगर में विज्ञान का चमत्कार देखा। १६२८ मे यह सिर्फ ३०० झोपडो का गाँव था, किन्तु अब ३ लाख आबादी का बडा नगर है।

मेगनीतोगोरस्क से नेहरू जी यूराल के दूसरे नगर स्वेर्दलोवस्क गये।

स्वेर्दलोवस्क में

१८ जून को स्वेर्दलोवस्क में भी हवाई अड्डे पर और नगर में जनता ने

उमी तरह स्वागत किया, जैसा कि सोवियत सघ मे अन्य स्थानो पर किया गया था।

यहाँ नेहरू जी ने मशीने बनाने वाले विराट कारखाने का निरीक्षण किया। भारत के लिए इस्पात के कारखाने के अधिकाश पुर्जे इसी कारखाने मे बन रहे है। आजकल यहाँ चीन के लिए एक कारखाना तैयार हो रहा है। यह कारखाना १६२८ मे कायम हुआ था। यहाँ आधे इची नट और बोल्ट से लगाकर २ हजार टन भारी खुदाई की मशीने तैयार होती हैं।

इस कारखाने मे २० हजार मजदूर काम करते हैं, जिनमे से एक तिहाई महिलाएँ हैं।

पण्डित नेहरू ने मजदूरो के मनोरजन गृह खेलकूद के स्थान और तैरने के तालाब वगैरा दिलचस्पी से देखे। यहाँ एक स्टेडियम है, जिसमे ६ हजार आदमी बैठ सकते हैं।

इस नगर की आबादी १० लाख है। कारखाना देखने के बाद नेहरू जी लेनिन मार्ग से वापिस लौटे। इस चौडे राजपथ के दोनो ओर कई मजिल ऊँची इमारतो में मजदूरो के रहने के लिए आराम ग्रह और खूब सूरत फ्लैट हैं जिनमे सारी आधुनिक सुविधाओ का प्रवन्ध है।

यहाँ पण्डित नेहरू ने भूगर्भ सम्पत्ति का अजायब घर देखा, जिसमें यूराल क्षेत्र के २० हज़ार किस्म के बहुमूल्य पत्थर तथा खनिज पदार्थ रखे हुए है। खनिज पदार्थो का इतना विशाल अजायबघर दुनिया में दूसरा नही हैं।

लेनिनग्राद में

१६ जून को पडित नेहरू लेनिनग्राद पहुँचे। स्थानीय सोवियत के सदस्यो और अध्यक्ष श्री निकोलाई स्मर्नोवने प० नेहरू का स्वागत किया।

हवाई अड्डे से पं० नेहरू रवाना हुए तो वर्फ जमा देने वाली सर्दी और तूफानी हवा का मुकाबला करते हुए लाखो जनता ने उनका स्वागत किया।

सोवियत सघ की लोकप्रिय पारिवारिक पत्रिका 'आगोनियक' के आज के अक में पंजाब के नये नगर चण्डीगड के बारेमें एक सचित्र लेख प्रकाशित हुआ।

इसके अलावा कई भारतीय गीतो की स्वर-लिपि और सोवियत सघ मे शीघ्र प्रकाशित होने वाली रवीन्द्र-ग्रन्थावली का परिचय भी प्रकाशित हुआ। नेहरूजी की सोवियत यात्रा के भी कई चित्र दिये।

लेनिनग्राद मे प० नेहरू ने सोवियत का प्रसिद्ध चित्रकला सग्रालय देखा। बाद मे रात को उन्होने लेनिनग्राद की प्रसिद्ध नाटिका "सुप्त सौन्दर्य" देखी।

सोवियत सघ में जहाँ भी नेहरू जी गये, उनको शाति के दूत के रूप में जनता का अपार प्यार मिला, क्योकि सोवियत जनता दूसरे विश्व-युद्ध के घावो को भूली नही है, वह शांति को प्यार करती है और अपने समाजवादी समाज को कम्युनिज्म की ओर ले जाने में,—एक ऐसे समाज की ओर ले जाने मे, जिसमे सब अपनी सामर्थ्य के अनुसार श्रम करेगे और सबकी आवश्यकताएँ पूरी हो सकेगी—वे अब कोई बाधा नही चाहते।

यही कारण है कि मास्को से लेकर ताशकद तक, विभिन्न भाषा और सस्कृति की पोषक जनता ने नेहरू जी के मार्ग मे आँखे बिछा दी और उनके शब्दो को फूलो से तोला।

सोवियत सघ की सरकार ने भारतीय प्रधान मन्त्री के लिए सारी सुविधाएँ प्रदान की, उनको हर चीज देखने की सुविधा दी—बडे-बडे कारखाने, मीलो तक फैले हुए सामूहिक खेत, विराट जल-विद्युत केन्द्र, मजदूर जनता के मनोरजन, स्वास्थ्य और सास्कृतिक शिक्षा के केन्द्र, बच्चो के क्रीडा-क्षेत्र—यही वे चीजे है जिनको सोवियत जनता और अधिक बढाना चाहती है।

दो महत्त्वपूर्ण भाषण

२१ जून को मास्को के डायनेमो स्टेडियम मे सोवियत भारत मैत्री सभा हुई। यह एक ऐतिहासिक दिवस था। पडित नेहरू ने उस सभा में जो भाषण दिया वह न केवल भारत सोवियत इतिहास मे वरन विश्व के इतिहास मे एक प्रमुख स्थान रखता है। उनका पूरा भाषण इस प्रकार है :—

सोवियत सघ की मत्रि परिषद् के माननीय अध्यक्ष महोदय,

मास्को सोवियत के अध्यक्ष महोदय,

प्यारे मित्रो !

मै इस बात के लिये क्षमा चाहता हूँ कि आपके देश की भाषा रूसी मे

बोलने में असमर्थ हू । इस कारण आप अनुवाद ही सुन सकेंगे !

दो हफ्ते पूर्व हम सोवियत सघ मे आये और शीघ्र ही इस महान देश से प्रस्थान करेंगे । इस अवधि मे हमने लगभग १३ हजार किलोमीटर का दौरा किया, बहुत से प्रसिद्ध शहरो में गये और बहुत सी अद्भुत चीजे देखी । पर सबसे अधिक आश्चर्यजनक तो वह स्वागत सम्मान है जो हर जगह हम लोगो का हुआ है और वह प्रेम है जिसकी हमारे ऊपर जनता ने वर्षा की है । इस प्रेम और स्वागत के लिये हम असीम कृतज्ञता प्रकट करते हैं, और सोवियत सघ की जनता के प्रति शब्दो द्वारा मैं बिल्कुल ठीक ठीक धन्यवाद ज्ञापन नही कर सकता । (देर तक तूफानी हर्ष-ध्वनि) फिर भी प्रधान मन्त्री महोदय, मैं आपके प्रति, आपकी सरकार के प्रति तथा आपकी जनता के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करना चाहता हूँ और आपसे निवेदन करता हू कि हमारी गहरी भावना की इस अभिव्यक्ति को सोवियत सघ की जनता तक पहुँचादे, जिसने हमारा इतना सम्मान किया है । (हर्ष ध्वनि)

हम इस महान देश की जनता के प्रति भारतीय जनता के अभिवादन एवं शुभेच्छाएँ प्रकट करने आये थे (देर तक हर्ष ध्वनि) हम अपने देश और अपनी जनता के प्रति आपके प्रेम और सद्भावो से लदे हुए घर वापिस जा रहे हैं । (देर तक हर्ष ध्वनि)

हम यहा अजनबी के रूप में नही आये, क्योकि हममें से बहुत लोग उन महान परिवर्तनो और घटनाचक्रो में, जो सोवियत संघ में हुए हैं, गहरी दिलचस्पी लेते रहे हैं । जब आपके देश में महान लेनिन के नेतृत्व में अक्तूबर क्रान्ति हो रही थी, लगभग उसी समय हमने भारत में अपने स्वातन्त्र्य संघर्ष का एक नया दौर शुरू किया । हमारी जनता बहुत वर्षो तक सघर्ष में लगी रही और उसने साहस एव सहिष्णुतापूर्वक भयकर दुख का सामना किया । यद्यपि हमने महात्मागांधी के नेतृत्व में अपने सघर्ष में एक भिन्न मार्ग का अनुसरण किया, फिर भी हम लेनिन की प्रशसा करते थे और उनके दृष्टान्त से प्रभावित हुये । (देर तक हर्ष ध्वनि) हमारी पद्धतियो में इस अन्तर के बावजूद भी हमारी जनता के भाव सोवियत सघ की जनता की तरफ कभी अमैत्रीपूर्ण नही रहे ।

हमने आपके देश के कुछ घटनाचक्र नही समझे और आपने भी हमने जो किया उसमे बहुत कुछ नही समझा होगा। सोवियत सघ जो महान एव नूतन प्रयोग कर रहा है उसमे हमने उसकी शुभकामना की है और यथा सम्भव उससे सीखने की कोशिश की है। हमारे दोनो देशो की पृष्ठभूमि अलग अलग है, उनके भूगोल, इतिहास, परम्परा, सस्कृति तथा परिस्थितिया जिनमें उन्हे काम करना पड़ा है।

हमारा विश्वास रहा है कि एक देश द्वारा दूसरे पर आधिपत्य स्थापित करना बुरी बात है, और जब हम अपनी स्वतन्त्रता के लिये सघर्ष करते थे उस समय भी हम उन देशो के साथ सहानुभूति दिखाते थे जो विदेशी अथवा निरकुश शासन से अपने को मुक्त करने के लिये प्रयत्नशील थे। हर देश और राष्ट्र अपने अतीत द्वारा तथा अनुभवो द्वारा, जिनसे वे गुजरे हैं, प्रभावित एव निर्धारित हुये हैं और उन्होने एक हद तक अपने व्यक्तित्व का विकास किया है। वे विदेशी शासन के अन्दर अथवा बाहर से अपने ऊपर कोई चीज लादे जाने की हालत में प्रगति नही कर सकते। वे तभी बढ सकते हैं जब वे आत्मनिर्भरता तथा अपनी शक्ति का विकास करे और अपनी अखडता कायम रखें। हम सबो को दूसरो से सीखना हैं और हम अपने को एक दूसरे से अलग नही रख सकते, लेकिन उस तरह का सीखना उपयोगी नही हो सकता यदि वह बाहर से लादा जाता है।

हम जनवाद एव समानता मे, तथा विशेषाधिकार के उन्मूलन में विश्वास रखते हैं और हमने अपने देश में शाति पूर्ण पद्धतियो द्वारा समाजवादी ढग के समाज का निर्माण करने का लक्ष्य अपने सामने रखा है। (हर्ष ध्वनि) समाजवाद का अथवा जनवाद का वह नमूना चाहे जो भी शक्ल अख्तियार करे, लेकिन इसमे सबों के लिये ज्ञान का द्वार उन्मुक्त एव समान अवसर होना जरूरी है।

अपने भाग्य का निर्माण करने के लिये देश के अधिकार को मान्यता देते हुये भारत सरकार तथा चीन की लोक सरकार ने अपने पारस्परिक संबंधों के निर्धारण के लिये पचशील सिद्धान्त स्वीकार किये हैं। ये सिद्धान्त हैं :—एक दूसरे की प्रादेशिक अखडता, एव प्रभुसत्ता के प्रतिसम्मान, अनाक्रमण, एक दूसरे के आन्तरिक मामलो मे अहस्तक्षेप, समानता पारस्परिक लाभ, तथा शातिपूर्ण

सह अस्तित्व । बाद मे बर्मा और यूगोस्लाविया ने ये सिद्धान्त स्वीकार किये, और अब सोवियत सरकार ने भी इनके प्रति अपनी सहमति प्रकट की है। (तूफानी हर्ष ध्वनि) बांडुंग सम्मेलन मे ये सिद्धान्त बढाकर दस कर दिये गये और उन्हे विश्व शाति एव सहयोग सम्बन्धी एक घोषणा मे शामिल कर दिया गया। इस प्रकार तीस से ऊपर देशो ने उन्हे स्वीकार कर लिया है। मुझे इसमे सन्देह नही है कि यदि अन्तर राष्ट्रीय आचरण सम्बन्धी ये सिद्धान्त ससार के सभी देशो द्वारा स्वीकृत एवं कार्यान्वित हो जाए, तो बहुत हद तक भय और आशकाएं दूर हो जाएंगी जिनकी काली छाया ससार के ऊपर पड़ रही है।

विज्ञान की एव तज्जनित टेकनोलाजी की प्रगति ने इस ससार की, जिसमें हम रहते हैं, शक्ल बदल दी है, और विज्ञान की हाल की प्रगतियां मनुष्यो के अपने विपय मे तथा दुनियाँ के विषय में सोचने के ढग बदल रही है। काल एव आंतरिक सम्बन्धी धारणाएं बदल गई हैं तथा प्रकृति के रहस्यों का भेदन करने और मानव जाति के हित साधन में अपने ज्ञान का प्रयोग करने के लिये अपरिमित विस्तार खुला पडा है। विज्ञान और टैकनोलोजी ने मानव को उसके बहुत से बोझो से मुक्त कर दिया है और उसको यह नया परिप्रेक्षण एव महती शक्ति प्रदान की है। यदि हम बुद्धिमानी से कामले तो इस शक्ति का उपयोग सबो के हित में हो सकता है, अथवा यदि दुनिया पागल या बेवकूफ रही तो वह ठीक उसी समय जब महती प्रगति और विजय प्राय उसकी पहुँच के अन्दर है, अपने को नष्ट कर सकती है।

यदि हमारी इस दुनियां को प्रगति करनी है, वस्तुतः यदि इस को जीवित रहना है, तो राष्ट्रो के लिये शाति का प्रश्न अत्यधिक महत्वपूर्ण हो जाता है। हमारे विचार में शाति का अर्थ केवल युद्ध से विरत रहना नही है वरन् अन्तर राष्ट्रीय सबंघो की ओर तथा वर्तमान तनातनी कम करने की ओर सक्रिय एवं सकारात्मक रुख अपनाना है, समझौता वार्ता की निधियो द्वारा अपनी समस्याओ को सुलझाने का प्रयान करना तथा इसके बाद विविध प्रकार से राष्ट्रो के बीच बढता हुआ सहयोग शांति है। सांस्कृतिक एव वैज्ञानिक सम्पर्को के साथ-साथ व्यापार में वृद्धि हो सकती है, विचारो का आदान-प्रदान तथा अनुभव और ज्ञा-

कारी क विमनय हो सकता है। हमें अपने मस्तिष्क और हृदय के विकास में रुकावट डालने वाली तथा अन्तरराष्ट्रीय सहयोग के मार्ग में आने वाली समस्त विघ्न वाधाओ को दूर करने का प्रयत्न करना चाहियें। कोई वजह नही कि विभिन्न राजनीतिक सामाजिक या आर्थिक पद्धति वाले देश इस तरह एक दूसरे के साथ सहयोग न करें वशर्ते कि एक दूसरे के मामले मे हस्तक्षेप न हो तथा एक दूसरे पर कोई ऊपर से लादने या आधिपत्य स्थापित करने का प्रयास न हो।

मै सोवियत सघ में जहाँ भी गया, मैंने शाति की उत्कट इक्षा देखी है। मेरा विश्वास है कि हर देश की वहुसंख्यक जनता शाति की भूखी है, लेकिन दूसरो का डर वहुधा उनके मन को आच्छन्न करता है। हमें डर और घृणा से मुक्त होना चाहिए तथा शाति का वातावरण तैयार करने की कोशिश करनी चाहिये। युद्ध, युद्ध के खतरे या युद्ध की अवाध तैयारियों से शाति कभी कायम नही हो सकती।

भारत में हमने शांति के लक्ष्य में अपने को अर्पित कर दिया है और अपने सघर्षों में भी हमने शाति की पद्धतियो का अनुसरण करने का प्रयास किया है। हमारी अपनी प्रगति के लिये तथा उन लक्ष्यो के लिये जो हमे प्रिय हैं शाति जरुरी है। अतएव हम अपनी पूरी शक्ति भर शाति के लिये प्रयास करेंगे तथा इस महत्वपूर्ण कार्य मे अन्तरराष्ट्रो से सहयोग करेंगे।

में सोवियत सघ की सरकार को हाल के महीनो में ऐसे कई कदम उठाने के लिए वधाई देना चाहता हू जिनसे अन्तर्राष्ट्रीय तनातनीमें कमी हुई है और शाति के लक्ष्य में योगदान हैं। (तूफानी हर्षध्वनि) मेरा विश्वास है कि खासतौर से निरस्त्रीकरण के सम्बन्ध में सोवियत सरकार के हाल के प्रस्ताव इस कठिन समस्या को सुलझाने में मदद करेंगे। भय को दूर करने और शाति को सुनिश्चित वनाने के लिये निरस्त्रीकरण आवश्यक है। हम अपने-अपने देश में आर्थिक एव सांस्कृतिक विकास की योजना वनाते हैं। हम सामूहिक हित के लिए तथा युद्ध के उन्मूलन के वास्ते विभिन्न देशो के शान्तिपूर्ण सहयोग की योजना वनायें।

किसी अन्य देश या देशो के भय से मुक्त बहुधा गुटबन्दियाँ बनाते हैं और

साठ-गांठ करते हैं। हमारे निकट आने का आधार यह न होकर कि हम दूसरो को नापसन्द करते हैं तथा उन्हे हानि पहुँचाना चाहते हैं, यह हो कि हम एक दूसरे को पसन्द करते हैं और उनसे सहयोग करना चाहते हैं। (हर्ष ध्वनि)

अभी जब मै आपके सामने बोल रहा हूँ, सानफ्रानसिस्को मे संयुक्त राष्ट्र सघ की दसवी साल गिरह मनाने के लिए एक विशेष समारोह हो रहा है संयुक्त राष्ट्रसघ उदात्त शब्दो मे लिखित अधिकार पत्र पर आधारित है जिसका उद्देश्य शातिपूर्ण सहयोग है। दुनिया के राष्ट्रो ने इस विश्व संगठन से जो आशाएँ की थी वह पूर्ण रूपेण पूरी नही हुई हैं और बहुत कुछ ऐसी बाते हुई हैं जो इस अधिकार पत्र के आदर्शो के मार्ग में अवरोध पैदा करती हैं। मेरी यह उत्कट इच्छा है कि सयुक्त राष्ट्र सघ के नये दशम में, जो अभी शुरू हो रहा है, ये आशाएँ पूर्ण होगी (देर तक हर्ष ध्वनि) लेकिन जब तक कुछ राष्ट्र इसके क्षेत्र से बाहर रखे जायेगे सयुक्त राष्ट्र संघ तब तक विश्व के समस्त राष्ट्रो का प्रतिनिधित्व नही कर सकता, खास करके एक लम्बे अर्से से हमने यह अनुभव किया है कि चीन के महान लोक गणतन्त्र को सयुक्त राष्ट्रसंघ द्वारा मान्यता नही देना न केवल एक बेतुकी बात है, जिसका अधिकार पत्र के साथ कोई मेल नही हैं, वरन शाति को बढावा देने और दुनिया की समस्याओ के हल के लिए खतरा भी है। (देर तक हर्ष ध्वनि)

आज की सर्वाधिक महत्वपूर्ण समस्याओ मे एक है सुदूर पूर्व की समस्या जो चीनी लोक गणतन्त्र की सदिच्छा एवं सहयोग के बिना सुलझाई नही जा सकती। मुझे उम्मीद है कि चीन के लोकतन्त्र को सयुक्त राष्ट्र सघ में अपना न्यायोचित स्थान प्राप्त हो जायगा। (तूफानी हर्ष ध्वनि) तथा सुदूरपूर्व की समस्या को सुलझाने के प्रयासो में अधिकाधिक सफलता प्राप्त होगी।

हम एक जीवत विकाशशील ससार में रहते हैं जो नूतन आविष्कारो एवं नूतन विजयो के पथ पर बढता जा रहा है, जहाँ मानव को अधिकाधिक शक्ति प्राप्त है।

हम आशा करें कि ये शक्ति बुद्धिमानी एवं सहिष्णुता द्वारा नियन्त्रित एवं परिचालित होगी, और हर राष्ट्र सामूहिक हित में योग दान देगा।

सोवियत सघ की महान उपलब्धियो को देखकर मै बहुत प्रभावित हुआ हू। मैंने सोवियत जनता के परिश्रम तथा उत्प्रेरणा के फलस्वरूप. जो अपनी स्थिति को बहतर बनाने के लिये अनुप्रेरित करता है इस विशाल देश की काया पलट देखी है। सगीत, नृत्य एव उत्कृष्ट नाट्य नृत्य जो मैंने देखे हैं, मुझे बहुत पसद आये हैं। सोवियत राज्य तथा सोवियत जनता इस विशाल देश के बच्चो—उगती पीढी—की खुशहाली के लिये जो भारी जागरूकता दिखाती है, उससे मैं सबसे कधिक प्रभावित हुआ हूँ।

प्रधान मन्त्री महोदय ! मैं आपको, आपकी सरकार को तथा आपकी जनता को उनकी मैत्री एव उदारतापूर्ण आतिथ्य सत्कार के लिये पुन धन्यवाद देता हू। भारत की जनता आपकी सुख समृद्धि की कामना करती है और हमारे दोनो देशो के लिये तथा समस्त मानव जाति के वास्ते बहुत से सम्मिलित प्रयासो मे आपके साथ सहयोग करने की आशा रखती है। (तूफानी हर्ष ध्वनि)

मानव जाति के हित के लिये हमारे देशो की जनता तथा सँसार के अन्य देशो के बीच मैत्री एव सहयोग चिरजीव हो ! (तूफानी हर्ष ध्वनि)

—मास्को २२-६-५५ (तास)

एन. ए. बुल्गानिन का भाषण

साथियो !

माननीय प्रधान मन्त्री ! मित्रो !

हमारे माननीय अतिथि, भारत के गणतत्र के प्रधान मन्त्री श्री नेहरू ने हमारे देश के बारे मे जो भावपूर्ण तथा मैत्रीपूर्ण शब्द कहे हैं उनके लिये मैं सोवियत-सरकार की तरफ से यहा पर एकत्रित मास्को की श्रमिक जनता के प्रतिनिधियो की तरफ से, और सोवियत जनता की तरफ से उनको धन्यवाद देता हूँ। हमारे लिये, श्री नेहरू के ये शब्द सुनना अत्यन्त हर्षप्रद था, जिन्हे हम राष्ट्रीय आजादी के लिए भारतीय जनता के संघर्ष के प्रमुख नेता और शान्ति के एक वीर सेनानी के रूप में जानते हैं। (तूफानी हर्ष ध्वनि)

सोवियत जनता ने अपने देश में श्री नेहरू का स्वागत बड़े प्यार, हर्ष तथ

हार्दिक मित्रता की भावना के साथ और उन्हे महान भारतीय जनता का प्रतिनिधि और दूत मानकर किया है ।

हमारे देश और भारत के बीच बहुत समय से मित्रतापूर्ण सम्बन्ध रहे हैं । भारत की चालीस करोड बहुजातीय जनता के श्रम और कौशल ने, जिसने कई शताब्दियो के पूरे इतिहास के दौरान में अमर सॉस्कृतिक स्मारको की रचना की है, स्वतन्त्रता तथा राष्ट्रीय आजादी के लिए उसके अटल प्रयास ने, शाति के लिये उसके अनवरत प्रेम ने हमारे देश की जनता का गहरा सम्मान तथा हार्दिक सहानुभूति प्राप्त की है । (हर्ष ध्वनि) सोवियत नरनारी महान भारतीय जनता के अपने देश मे समाजवादी ढग का समाज निर्माण करने के प्रयासो को गहरी दिलचस्पी और सहानुभूति के साथ देखते है और अपने अर्थ तन्त्र को उन्नत बनाने तथा अपने राष्ट्रीय उद्योग धन्धो को विकसित करने में उसकी उपलब्धियो की वे सराहना करते हैं ।

सोवियत-भारत सम्बन्धो का निर्माण एक ठोस तथा विश्वस्त आधार पर हो रहा है वे एक दूसरे की प्रादेशिक अखडता तथा प्रभुसत्ता के सम्मान, अनाक्रमण, एक दूसरे के अन्दरूनी मामलात में हस्तक्षेप न करने, बराबरी तथा पारस्परिक लाभ और शातिपूर्ण सह अस्तित्व के सिद्धान्तो पर आधारित हैं ।

शाति प्रिय वैदेशिक नीति के इन सिद्धान्तो की घोषणा भारत तथा चीन के लोक गणतन्त्र द्वारा की गई थी । बाद मे बर्मा और युगोस्लाविया ने उन्हे स्वीकार किया और फिर, जैसाकि श्री नेहरू ने यहा कहा, उन्हे बाँडुंग सम्मेलन में एशिया तथा अफ्रीका के २९ देशो की मान्यता प्रदान हुई और उन्हे सम्मेलन द्वारा स्वीकृत विश्व शाति तथा सहयोग की घोषणा में मूर्त कर दिया गया । सोवियत सरकार भी इन सिद्धान्तो को स्वीकार करती है और विश्वास करती है कि वे शाति को कायम रखने तथा उसे दृढ बनाने में सभी जातियो के लिए एक सामान्य आधार बन सकते हैं । (हर्ष ध्वनि)

सोवियत भारत सम्बन्ध विभिन्न सामाजिक तथा राजनीतिक पद्धतियो वाले राष्ट्रो के शाति पूर्ण सह-अस्तित्व तथा सहयोग की सम्भावना के बारे में महान लैनिन द्वारा घोषित सिद्धान्त की सार्थकता की विश्वासप्रद पुष्टि है ।

शाति तथा सभी जातियो के साथ मित्रता के लिये निरतर प्रयास तथा अन्तर राष्ट्रीय तनातनी को दूर करने के लिये सघर्ष, सोवियत सघ तथा भारत को विशेष रूप से एक दूसरे के निकट लाते हैं। शाति पूर्ण निर्माण के श्रम में रत हमारे दोनो देशो की जनता युद्ध नही चाहती। दोनो देशो की जनता अपने अपने ढग से एक नये और बेहतर जीवन की ओर अग्रसर है।

शाति का बचाव करना और जनता की सुरक्षा करना हमेशा से सोवियत सघ की वैदेशिक नीति का आधारभूत लक्ष्य तथा सर्वोच्च सिद्धान्त रहा है और अब भी है। सोवियत सघ ने इधर हाल मे अन्तरराष्ट्रीय सम्बन्धो में अविश्वास को दूर करने की दिशा मे लगातार कई नये कदम उठाये हैं। ये कदम हैं — आस्ट्रिया के साथ राज्यीय सन्धि का सम्पन्न होना, हथियार बन्दी में कमी करने, परमाणविक अस्त्रो पर पाबन्दी लगाने तथा एक नये महायुद्ध के खतरे को दूर करने के बारे में सोवियत सघ के सुझाव, सोवियत सघ तथा यूगोस्लाविया के सम्बन्धो का प्रकृत होना, सोवियत संघ तथा जर्मन सघात्मक प्रजातन्त्र के बीच कूटनीतिक तथा व्यापारिक सम्बन्ध स्थापित करने का सुझाव, सोवियत जापानी सन्धि-वार्ता तथा अन्य कदम।

सोवियत सरकार ने चार शक्तियो की सरकारो के प्रधानो की बैठक में, जो १८ जुलाई से जेनेवा में आरम्भ होने वाली है, भाग लेना स्वीकार कर लिया है। हम इस बात को मानकर चलते हैं कि इस सम्मेलन का उद्देश्य अन्तरराष्ट्रीय तनातनी को दूर करना तथा अन्तरराष्ट्रीय सम्बन्धो में विश्वास को प्रोत्साहन देना होगा। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये हम कोई कोशिश उठा न रखेंगे और हम आशा करते हैं कि इस सम्मेलन में भाग लेने वाले अन्य पक्ष भी यही कोशिश करेंगे। (देर तक तूफानी हर्ष ध्वनि)

शाति को सुदृढ बनाने में सोवियत सघ के योगदान को सभी शान्ति प्रिय जातियो की, जिसमें भारतीय जनता भी शामिल है, सहानुभूति पूर्ण सराहना तथा समर्थन प्राप्त होता है।

इधर हाल में भारत ने शान्ति के लिये जो योगदान किया है उसकी सोवियत जनता बहुत कद्र करती है। सोवियत सघ और चीन के लोक गणतन्त्र के साथ

मिलकर भारत के सक्रिय रूप से भाग लेने के कारण कोरिया मे युद्ध-विराम की स्थापना हुई और हिन्द चीन मे लडाई बन्द हुई।

भारत बॉडुग के एशियाई-अफ्रीकी सम्मेलन के आयोजको मे से एक था, यह सम्मेलन अपने अधिकारो तथा स्वतन्त्रता के लिये एशिया तथा अफ्रीका की जनता के सघर्ष में तथा विश्व शाति को सुदृढ बनाने के लिये एक महान योग दान था।

सोवियत सघ की ही तरह भारत भी हथियार बन्दी सेनाओ मे कमी करने और परमाणविक तथा उद्जन अस्त्रो पर पाबन्दी लगाते के पक्ष में है। हम आशा करते हैं कि श्री नेहरू और भारत सरकार के रूप मे हमे सोवियत सरकार द्वारा प्रस्तावित हथियार बन्दी मे कमी कराने तथा परमाणविक और उद्जन अस्त्रो पर पाबन्दी लगाने के विस्तृत तथा आमूल परिवर्तन कारी कार्यक्रम को कार्यान्वित करने के लिये एक सहयोगी तथा मित्र मिल जायगा। (तूफानी हर्ष ध्वनि)

चीनी जनता के जातीय हितो की ओर उचित ध्यान देते हुए तैवात समस्या को सफलतापूर्वक हल करने की दिशा मे भारत और सोवियत सघ सयुक्त प्रयास कर रहे हैं।

चीन के लोक गणतन्त्र को सयुक्त राष्ट्र सघ मे उसका न्यायोचित स्थान दिलाने के लिये भारत तथा सोवियत सघ के सयुक्त सघर्ष के प्रति सभी शाति प्रेमी जातियो ने अपनी विशेष कृतज्ञता प्रकट की है। (देर तक तूफानी हर्ष ध्वनि) अन्तर राष्ट्रीय तनातनी को दूर करने के लिये, और विभिन्न जातियो के बीच शाति तथा सहयोग के लिये अपने प्रबल सघर्ष में सोवियत सघ तथा भारत हमेशा सयुक्त राष्ट्र सघ के अधिकार पत्र मे मूर्त सिद्धान्तों द्वारा निर्देशित होते हैं।

कल सानफ्रांसिस्को मे संयुक्त राष्ट्र सघ की १० वी वर्षगाठ मनाने के लिये जयन्ती अधिवेशन का उद्घाटन हुआ। दुनिया के हर भाग में नरनारी यह उत्कट आशा रखते है कि यह जयन्ती अधिवेशन शाति तथा अन्तरराष्ट्रीय सुरक्षा की हिफाजत करने की दिशा में नये कदम उठाने के लिये एक प्रारम्भिक विन्दु होगा।

अपने देश की तरफ से मै आज संयुक्त राष्ट्र संघ की दसवी वर्षगाठ के अवसर पर होने वाले जयन्ती अधिवेशन का अभिवादन करता हूँ और मैं सोवियत सघ की जनता तथा सोवियत सरकार की यह उत्कट आशा व्यक्त करता हू कि दुनिया की जातियो का संगठन विश्व व्यापी शाति तथा सुरक्षा के हित सयुक्त राष्ट्र संघ के अधिकार पत्र के आदर्शो को प्राप्त करने के लिये अनवरत काम करता रहेगा। हमारा देश और सरकार इस उच्च उद्देश्य को प्राप्त करने मे सुविधा प्रदान करने का भरसक प्रयत्न करेगी। (तूफानी हर्ष ध्वनि)

सोवियत सघ और भारत का सहयोग केवल अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धो तक ही सीमित नही हैं। सोवियत सघ और भारत की मित्रता तथा सहयोग का उल्लेख करते हुए हम इस बात की ओर ध्यान दिये बिना नही रह सकते कि परस्पर लाभदायक आर्थिक, तथा सास्कृतिक सम्बन्ध जो हमारे देशो को एक दूसरे के और भी निकट लाने में सहायक होते हैं, लगातार बढ रहे हैं।

इसमें कोई सन्देह नही हो सकता कि श्री नेहरू द्वारा सोवियत सघ की यात्रा सोवियत जनता के साथ उनका निकट सम्पर्क और सोवियत सघ के नेताओ के साथ वैयक्तिक सम्पर्क की स्थापना हमारे देशो के बीच मित्रता तथा सहयोग को आगे बढायेगी और सुदृढ बनायेगी। मुझे यह कहते हुये हर्ष होता है कि हमारे बीच विचारो के आदान-प्रदान ने दिखा दिया है कि विश्वव्यापी तनातनी को कम करने के लिए प्रमुख महत्व रखने वाले कई प्रश्नो के बारे में हम एक दूसरे को समझते हैं और उनके बारे में हमारे दृष्टिकोण एक ही हैं। (देर तक तूफानी हर्षध्वनि)

सोवियत सघ में अपने प्रवास के दौरान में श्री नेहरू को स्वय यह देखने का अवसर मिला कि सोवियत जनता शाति की रक्षा करने तथा उसे सुदृढ बनाने के लिए सच्चे हृदय से प्रयास करती है। श्री नेहरू को निस्सन्देह यह देखने का भी अवसर मिला कि हमारे देश की जनता भारत की जनता के प्रति गहरी तथा हार्दिक सहानुभूति और मित्रता की भावना रखती है। (तूफानी हर्षध्वनि)

प्रधानमन्त्री महोदय, सोवियत जनता तथा सोवियत सघ की सरकार की तरफ से मै आपका, भारत की सरकार का, भारत की समस्त जनता का सनि-

वादन करता हूँ तथा भारत के विकास तथा समृद्धि मे सफलता की कामना करता हूँ। (देर तक तूफानी हर्ष ध्वनि। 'हुर्रा' की जय ध्वनि)

सोवियत संघ तथा भारत की जनता की मित्रता तथा सहयोग चिरजीवी हो।

दोनो देशो की जनता की भलाई विश्व शाति और सुरक्षा के हित के लिए सोवियत भारतीय मित्रता विकसित तथा दृढ हो। (सब उठ खड़े होते हैं। देर तक तूफानी हर्ष ध्वनि। 'हुर्रा' की जय ध्वनि)

मास्को २२–६–५५ (तास)

सोवियत सघ के एटमी कारखाने और एटमी बिजली के कारखाने को देखने के पश्चात् पण्डित नेहरू की सोवियत यात्रा समाप्त हुई। एटम शक्ति पैदा करने का केन्द्र दिखाकर सोवियत सघ ने भारतीय प्रधान मन्त्री तथा भारतीय जनता की शाति भावनाओ के प्रति अटूट विश्वास प्रकट किया।

सोवियत भारत मित्रता सघ में भाषण देने के पश्चात् सोवियत संघ की मन्त्रि परिषद के आर्थिक आयोग के अध्यक्ष एम० जेड० साबुरोव से बाते की और वाडुंग सम्मेलन मे भाग लेने वाले देशो के मास्को स्थिति कूटनीतिक प्रतिनिधियो द्वारा आयोजित भोज मे सम्मिलित हुए। भोज मे निम्न देशो के राजदूत सम्मिलित हुये—

(१) वर्मा (२) वियतनाम (३) भारतीय गणतन्त्र (४) अफगानिस्तान (५) हिन्देशियाई गणतन्त्र (६) तुर्की (७) चीनी लोकगणतन्त्र (८) एथियोपिया (६) स्याम (१०) सीरिया (११) लेबनान (१२) ईरान (१३) पाकिस्तान।

भोज मे पडित जवाहरलाल नेहरू उनकी पुत्री श्रीमती इन्दरा गाधी, भारतीय गणतन्त्र के परराष्ट्र मन्त्रालय के महा सचिव एन० आर० पिल्ले तथा संयुक्त सचिव एम० ए० हुसैन भी उपस्थित थे।

सोवियत सघ के निम्न प्रमुख नेता भोज मे सम्मिलित हुए—

(१) एन० ए० बुल्गानिन (२) एल० एम० कगानोविच (३) एन० एस० ख्रुश्चेव (४) जी० एम० मालेनकोव (५) ए० आई० मिकोयान (६) एम० जी० पेवुर्खिन (७) एन० जेड० साबुरोव (८) सोवियत सघ के परराष्ट्र मन्त्रालय के

उप मन्त्री वा० वी० कुजनेत्सोव (९) वी० ए० जोरिन (१०) सोवियत के भारत स्थित राजदूत एम० ए० मेंशिकोव (११) सोवियत सघ के परराष्ट्र मन्त्रालय के निकट एव मध्य पूर्व विभाग के प्रधान जी० टी० जेचीकोव (१२) सोवियत सघ के परराष्ट्र मन्त्रालय के प्रोतोकोल विभाग के प्रधान एफ० एफ० मोलोचकोव (१३) सोवियतसंघ के परराष्ट्र मन्त्रालय के द० पूर्वी एशिया विभाग के उप प्रधान एम० ए० मैक्सियोव (१४) सोवियत सघ के परराष्ट्र मन्त्रालय के दूर पूर्व विभाग के उप-प्रधान ए० एम० लेदोवस्की ।

२१ जून को क्रेमलिन प्रासाद मे सोवियत सघ की मन्त्रिपरिषद के अध्यक्ष एन० ए० बुलगानिन और पडित नेहरू मे एक महत्व पूर्ण वार्ता हुई । इस वार्ता में एल० एम० कगानोविच, एन० एस० ख्रुश्चेव और ए० आई० मिकोयान ने भाग लिया ।

इसी रोज पडित नेहरू ने अपने दल सहित मास्को के बोलशोई थियेटर मे 'दी फाऊटेन आफ बखची सराय' नामक नृत्य नाट्य देखा ।

श्री बुलगानिन, श्री कगानोविच, श्री ख्रुश्चेव और ए० आई० मिकोयान भी नृत्यनाट्य मे पडित नेहरु के साथ ही थे ।

२२ जून को ही पडित नेहरु ने अपने दल सहित प्रथम परमाणविक वैद्यु-तिक स्टेशन देखा ।

इसी दिन पडित नेहरू ने भोज दिया । भोज मे सोवियत सघ के लगभग समस्त उच्चाधिकारी नेता और अफसर तथा पत्रकार उपस्थित थे ।

मास्को स्थित दूतावासो और लिगेशनो के प्रधान भी भोज में उपस्थित थे ।

इस समारोह मे मास्को विश्वविद्यालय के प्राध्यापको एव छात्रों के प्रति-निधि मण्डल ने श्री नेहरू को मास्को विश्वविद्यालय के 'आनरेरी डाक्टर आफ ला' की उपाधि से विभूषित किया ।

२२ जून को सोवियत सघ की मन्त्रि परिषद के अध्यक्ष एन० ए० बुलगानिन और भारत के प्रधान मन्त्री श्री जवाहरलाल नेहरू ने विशाल क्रेमलिन प्रासाद में मैत्रीपूर्ण वातावरण में एक सयुक्त वक्तव्य पर हस्ताक्षर किये ।

सन्ध्या को सवा आठ बजे एन० ए० बुलगानिन और पण्डित जवाहरलाल

नेहरू उस मेज के पास आये जिस पर रूसी और अंग्रेजी भाषाओ मे संयुक्त घोषणा की मूल प्रति रखी थी । एन०ए० बुल्गानिन और पं० जवाहरलाल नेहरू ने सयुक्त घोषणा पर हस्ताक्षर किये और हाथ मिलाया ।

पश्चात् सोवियत सघ की मन्त्रि परिषद के अध्यक्ष एन० ए० बुल्गानिन ने भारतीय गणतन्त्र के प्रधान मन्त्री पंडित जवाहरलाल नेहरू के सम्मान मे विशाल क्रैमलिन प्रासाद मे भोज दिया ।

संयुक्त घोषणा

मास्को २३-६-५५ (तास) सोवियत सघ की सरकार के निमन्त्रण पर भारत के प्रधान मन्त्री श्री जवाहरलाल नेहरू ने सोवियत सघ की यात्रा की। मास्को में अपने प्रवास के दौरान मे उन्होने सोवियत सघ के प्रधान मन्त्री श्री बुल्गानिन और सोवियत सरकार के अन्य अधिकारियो से कई बार बातचीत की । यह बातचीत मैत्री और हार्दिक प्रेम के वातावरण मे हुई और इसमे दोनों देशो के पारस्परिक हित की बहुत सी बातो पर और अन्तर्राष्ट्रीय हित तथा महत्व की बडी समस्याओ पर चर्चा हुई जो वर्तमान विश्व राजनीतिक मामलों से उत्पन्न होती है ।

यह सौभाग्य की बात है कि सोवियत सघ और भारत के सम्बन्ध मैत्री और पारस्परिक सद्भावना की मजबूत नीव पर आधारित है । प्रधान मन्त्रियो का दृढ निश्चय है कि ये सम्बन्ध निम्न सिद्धान्तोसे अनुप्रेरित और सचालित होते रहेगे—

(१) एक दूसरे की प्रादेशिक अखडता और प्रभुसत्ता का पारस्परिक सम्मान,

(२) अनाक्रमण;

(३) आर्थिक, राजनीतिक और विचारधारा सम्बन्धी किसी कारण से एक दूसरे के आन्तरिक मामलो मे अहस्तक्षेप;

(४) समानता और पारस्परिक लाभ, तथा

(५) शातिपूर्ण सह-अस्तित्व ।

क्रियान्वित किये जाने का कार्य अब कुछ नई एव असभावित घटनाओ के कारण वाधाओ मे पडा हुआ है। दोनो प्रधान मन्त्री चाहते हैं कि समझौतो की शर्तों को क्रियान्वित करने से सम्वन्धित सभी सरकारें अपने दायित्व को पूरी तरह निभाएँ, ताकि समझौतो के उद्देश्यो को पूर्णतः प्राप्त किया जा सके। विशेप रूप से, दृढ रूप से यह अनुरोध करते हैं कि राजनीतिक समझौते की भूमिका के रूप में जहाँ निर्वाचिन होना होता है, वहाँ सम्बद्ध सरकारो को चाहिये कि उनके लिये निर्दशित हो।

जिन अन्तरराष्ट्रीय प्रश्नो में विभिन्न राष्ट्रो को गहरी दिलचस्पी है, उनमे कोई समस्या, न तो इतनी आवश्यक है और न ही युद्ध और शाति की समस्या के लिये भयानक दुष्परिणामो से इतनी पूर्ण, जितनी कि नि शस्त्रीकरण की समस्या। शस्त्रास्त्रो के निर्माण की प्रवृत्ति से, जिसमें प्रचलित तथा अणुशस्त्र दोनो ही शामिल हैं, राष्ट्रो मे पहले ही से व्याप्त डर और सन्देह की भावना और वढ गई है, और इसके परिणाम स्वरूप राष्ट्रीय प्रसाधनो को जनोत्थान वाले वास्तविक उद्देश्य के विपरीति दूसरी वातो में जुटाया जा रहा है। प्रधान मत्रियो की राय से आणविक तथा ताप परमाणविक युद्ध शस्त्रो के उत्पादन, परीक्षणो तथा प्रयोगों पर पूर्ण प्रतिवन्ध लगाने के रास्ते मे किसी भी वाधा को नही आने देना चाहिए। इसके साथ ही उनका विचार है कि प्रचलित शस्त्रो मे भी साथ ही ठोस कमी की जाये तथा इस प्रकार के नि.शस्त्रीकरण एवं प्रतिवन्ध की योजना को क्रियान्वित करने के लिये कारगर अन्तरराष्ट्रीय निमन्त्रण की व्यवस्था की जाय। इस प्रसङ्ग में, निःशस्त्रीकरण सम्बन्धी हाल के सोवियत प्रयासो को शांति की दिशा में एक ठोस योगदान स्वीकार किया गया।

प्रधान मत्रियों का विश्वास है कि इस वक्तव्य मे उल्लिखित पाँच सिद्धान्तो के अन्तर्गत दोनो राज्यो के वीच सास्कृतिक, आर्थिक एव प्राविधिक सहयोग की काफी गु जायश है। इस तथ्य को दृष्टि में रखते हुये कि प्रत्येक देश अपनी प्रतिभा, परम्परा एव परिस्थितियो के अनुसार विशेप प्रणाली का अनुकरण कर रहा है, उससे इस प्रभाव के सहयोग में कोई वाधा नही पडनी चाहिये। दरअसल, सह अस्तित्व का सार यह है कि विभिन्न सामाजिक प्रणालियोवाले राज्य शाति

पूर्ण तथा मैत्री भाव से रह सकते हैं और समान हित के लिए कार्य कर सकते हैं।

कुछ समय पहले दोनो देशो के बीच हुए व्यापारिक समझौते की सहायता से दोनो देशो के मध्य साँस्कृतिक एव आर्थिक क्षेत्र मे सहयोग मे उल्लेखनीय विकास हुआ है। इस प्रकार के सहयोग की दृष्टि से वह समझौता उल्लेखनीय है जो सोवियत सरकार की सहायता से भारत मे इस्पात का कारखाना लगाने के सम्वन्ध मे अभी हाल मे हुआ है। दोनो प्रधान मन्त्री उक्त सहयोग जनित पारस्परिक लाभो को दृष्टि मे रखते हुए दोनों देशो के वीच आर्थिक तथा सांस्कृतिक और वैज्ञानिक एवं प्राविधिक अनुसन्धानो के क्षेत्र में पारस्परिक सम्वन्धो को और विकसित तथा दृढ करने का प्रयत्न करते रहेगे।

दोनो प्रधान मन्त्रियो को इस वात पर सन्तोप है कि उन्हे पारस्परिक हित के मामलो में व्यक्तिगतरूप से विचार विमर्श करने का अवसर मिला तथा उनका ऐसा विश्वास है कि उनकी वार्ताओ के फल तथा जो मैत्रीपूर्ण सम्पर्क स्थापित हुये हैं, व दोनो देशो तथा उनकी जनता के सम्वन्धो को और भी सुदृढ तथा विकसित करेंगे तथा विश्व शाति के हितों का साधन करेंगे।

(हस्ताक्षर) एन. ए. वुलानिन
सोवियत संघ की मन्त्रि परिषद के अध्यक्ष
जवाहरलाल नेहरू
भारत के प्रधान मन्त्री

पंडित नेहरू से प्यार

पडित जवाहरलाल नेहरू जव तक रूस में रहे, नित्य उनके पास सैंकड़ो तार और पत्र आते रहे, जिनमें प्राय· उनके चित्र और हस्ताक्षरो की मांग रहती थी, परन्तु दो तार इस प्रकार के आये जिनसे स्पष्टत. पडित नेहरू से सोवियत जनता का हार्दिक प्यार झलकता है।

सोवियत अजर वे जान के एक कलाकार ने अपने तार में लिखा :—"आज मेरे यहाँ एक पुत्र का जन्म हुआ है। मै उसका नाम जवाहरलाल रखने की

आज्ञा चाहता हूँ। मैं आपके स्वास्थ्य की मंगल कामना करता हूँ।'

एक दूसरे तार में कहा गया है :—'आपके प्रति और भारतीय जनता के प्रति अपना हार्दिक भाव प्रकट करने के लिये मैं अपनी नवजात पुत्री का नाम इन्द्रा रख रहा हूँ।'

ऐसे अनेको उदाहरण सोवियत जनता के असीम प्यार के मिलते हैं।

अष्टम अध्याय

इतिहास का नया पृष्ट

सोवियत नेताओं की भारत यात्रा

शुभदिन

भारत के इतिहास मे १८ नवम्बर १९५५ एक एतिहासक दिवस बन गया है, जिस दिन सोवियत नेता श्री एन० एस० खु्रश्चेव और मार्शल एन० ए० बुलगानिन भारत पधारे।

गत जून मे पण्डित नेहरू की सोवियत सघ की सौहार्दपूर्ण यात्रा के कारण ही इन नेताओ का भारत आना हो सका, क्योकि चलते समय इन सोवियत नेताओ को पण्डित नेहरू ने भारत आने का निमन्त्रण दिया था, और इन नेताओ ने इस निमन्त्रण को सहर्ष स्वीकार भी कर लिया था। जब कि सोवियत के दोनो नेताओ के सामने इतना काम था कि वह किसी भी देश की यात्रा करने में उस समय असमर्थ थे, मगर फिर भी विश्व के राष्ट्रो के बीच चल रही तनातनी को कम करने के लिए, युद्ध के विरुद्ध शाति की आवाज को दृढ करने के लिए और विश्व पूँजीवादी देशो द्वारा औपनिवेशक राज्यो को स्वतन्त्रता न देने के कारण औपनिवेशक राज्यो द्वारा चल रहे अपने आजादी के सग्राम को मजबूत करने के लिए सोवियत नेताओ ने पडित नेहरू के निमत्रण को स्वीकार कर लिया। और १८ नवम्बर १९५५ को वह भारत पधारे।

सबसे पहले गैर साम्यवादी देशो में भारत को ही वह स्थान प्राप्त हुआ जहाँ की यात्रा सोवियत नेताओ ने सर्व प्रथम की। इसका अर्थ स्पष्ट था कि भारत की शाति की आवाज इतनी दृढ़ थी कि सोवियत नेताओ को अपने कितने ही आवश्यक कार्य छोड भारत की यात्रा करनी पडी। फिर भारत ने शाति के लिए कोरिया, हिन्द चीन तथा मलाया आदि में चल रहे युद्ध को बन्द कराने के लिए जो सतत प्रयत्न किए उन्हे इतिहास से मिटाया भी नही जा सकता।

जब मध्यान के समय सोवियत नेताओ का वायुयान आई० एल० १४ ढाई बजे पालम के हवाई अड्डे पर पहुँचा तो उनका वहाँ भारत के लाखो नागरिको ने हृदय खोलकर 'हिन्दी रूसी भाई-भाई' के नारो के साथ स्वागत किया।

उनके वायुयान के उतरते ही पंडित नेहरू, डाक्टर राधाकृष्णन, भारत

सरकार के मन्त्री एव प्रमुख अधिकारी, विदेशो के स्थानापन्न राजदूत और सोवियत सघ के स्थानापन्न राजदूत एम० ए० मेनशिकोव ने उनका हार्दिक स्वागत किया।

सर्व प्रथम सोवियत सघ और भारत के राष्ट्र गीतो की ध्वनि बजी।

सोवियत नेताओ ने आर्डर ऑफ ऑनर का निरीक्षण करने के पश्चात् कूट-नीतिक मण्डल के सदस्यो से सम्मानित अतिथियो का परिचय कराया गया।

फूलमालाओ और पुष्पो से दोनो नेता ढक गए।

पश्चात् उनके स्वागत सम्मान में पण्डित नेहरू ने एक सक्षिप्त सा भाषण दिया। जिसमे उन्होने कहा—

'महामहिम व्यक्तिगण सम्मानित अतिथियो!

'भारत भूमि पर प्रथम बार आपके पधारने पर आपका स्वागत करते हुए मैं अति प्रसन्न हूँ। आपका महान् देश और भारत एक दूसरे से दूर नही हैं, वरन लगभग पडोसी हैं। फिर भी बीते दिनो में हमारे दोनो देशो के सम्पर्क अत्यन्त सीमित थे। सौभाग्यवश अनेक क्षेत्रो में उन सम्बधो का तेजी के साथ विस्तार हो रहा है, और हमने एक दूसरे की और भी अच्छी जानकारी प्राप्त करना आरम्भ कर दिया है। कुछ महीने पूर्व मुझे सोवियत सघ जाने का विशेष अवसर और आह्लाद प्राप्त हुआ था और वहाँ आपने, आपकी सरकार ने तथा आपकी जनता ने मेरा जो हार्दिक स्वागत किया और जो मैत्री दिखाई उसे हम चिरकाल तक स्मरण रखेगे। मेरी उस यात्रा ने हमारे दोनो देशो को एक दूसरे के निकट तक लाने मे सहायता की और अब आपकी यह यात्रा मैत्री एव सहयोग के हमारे सम्बन्धो को और भी सुदृढ बनाएगी इसमें मुझे सन्देह नही है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आपका यह प्रवास सुखद होगा तथा हमारे दोनो देशो के लिए हितकारी होगा और राष्ट्रो के बीच शांति एव सहयोग के महान् लक्ष्य को सहायता पहुँचायेगा।'

'मैं पुन. आपका स्वागत करता हूँ।'

श्री एन० ए० बुलगानिन ने पडित नेहरू और जनता द्वारा किये गये उनके स्वागत के लिए धन्यवाद प्रदर्शित करते हुए अपने भाषण में कहा—

'माननीय प्रधान मन्त्री जी,

'प्यारे मित्रो !

'हमें इस बात की प्रसन्नता है कि प्रधान मन्त्री पडित नेहरू के निमन्त्रण की बदौलत, भारतीय गणतन्त्र की राजधानी मे हमारे लिए आना सम्भव हुआ है और हम महान् भारतीय जनता तक स्वय हार्दिक अभिनन्दन एव अत्यन्त शुभ आकाक्षाएँ पहुँचा सकते हैं। हम भारत के प्रधान मन्त्री श्री जवाहरलाल नेहरू के प्रति उनके प्रेमपूर्ण अभिवादन एव शुभेच्छाओ के लिए अपनी सच्ची कृतज्ञताज्ञापन करते हैं।

'हम भारत की प्राचीन भूमि पर सम्मान एव मैत्री के गम्भीरतम भाव के सहित अपने पैर रख रहे हैं, जो सोवियत जनता महान मौलिक सस्कृति की रचना करनेवाली भारत की उद्यमशील एवं मेधावी जनता के प्रति रखती है।

'अपनी मात्र भूमि की स्वतन्त्रा की पुर्न· स्थापना के हितार्थ शातिप्रिय भारतीय जनता के वीरतापूर्ण सघर्ष के साथ सोवियत सघ की जातियो ने सदा समझदारी तथा गहरी सहानुभूति दिखाई है। प्रभु सत्तापूर्ण भारतीय गणतन्त्र की स्थापना पर सोवियत जनता ने परम सन्तोष एव उल्लास प्रकट किया।

'भारतीय जनता की सृजनात्मक शक्ति में जो अन्तरराष्ट्रीय क्षेत्र में तथा सर्व व्यापी सुरक्षा एव शाति को सुदृढ बनाने मे उत्तरोत्तर अधिकाधिक भूमिका अदा कर रही है हमारी जनता का गहरा विश्वास है। शाति की रक्षा करने तथा अपने देश के अर्थ तन्त्र की प्रगति के लिए भारत सरकार के प्रयासो को सोवियत सरकार अच्छी तरह समझती है और उसकी सराहना करती है।

'सोवियत तथा भारतीय जनता के सामने बहुत से समान कार्य हैं। शाति कायम रखने तथा उसे सुदृढ बनाने के लिए भारत और सोवियत सघ महान प्रयास कर रहे हैं और दोनो शांतिपूर्ण रीति से बातचीत के द्वारा विवाद ग्रस्त अन्तरराष्ट्रीय मसलो का हल करने के समर्थक हैं तथा इस क्षेत्र में अब तक अत्यधिक नतीजे हासिल हो चुके हैं।

'सोवियत सघ तथा भारत के पारस्परिक प्रयास जिनका उद्देश्य मैत्रीपूर्ण सम्बन्धो का विकास करना है अन्तरराष्ट्रीय तनातनी कम करने के लक्ष्य में महत्व-

पूर्ण योगदान है ।

'हम अपनी भारत यात्रा के दौरान मे भारतीय जनता से उसके रीतिरिवाजो से, अर्थ तन्त्र तथा राष्ट्रीय उद्योग का विकास करने के उसके प्रयासो के परिणामो से प्रत्यक्ष रूप मे परिचित होना चाहते हैं ।

"हम आशा करते हैं कि भारतीय जनता के साथ हमारे साक्षात्कार होने तथा राजनीतिज्ञो के साथ हमारे सम्पर्क बढने से हमारे देशो की पारस्परिक समझ-बूझ और मैत्री के और भी अधिक विकास के लिए सफल परिणाम प्राप्त होगे ।

'आपके प्रेम पूर्ण और हार्दिक स्वागत के लिए मै अपना सच्चा धन्यवाद ज्ञापन करता हूँ ।

'भारत तथा सोवियत जनता की मैत्री अमर हो ।'

राजधानी में

भाषण के पश्चात् खुली गाडी मे बैठकर दोनो सम्मानीय अतिथि पण्डित नेहरू के साथ राष्ट्रपति भवन पहुँचे । पालम हवाई अड्डे का द्वार बडे कलात्मक ढग से सजाया गया था । ये द्वार स्वागत के निमित्त विशेष रूप से सीढियो का बनाया गया था । प्रत्येक सीढी पर एक-एक कन्या खडी थी जिनके हाथो में सोवियत सघ के झडे तथा भारतीय गणराज्य के झडे एक के बाद एक क्रम से फहरा रहे थे ।

तेरह मील लम्बे मार्ग पर पन्द्रह लाख जनता उनके स्वागत के लिए खडी थी । स्थान-स्थान पर श्री ख़ुश्चेव और बुल्गानिन जनता को नमस्ते कह कर उनके अभिवादन का उत्तर दे रहे थे । हाथ हिला-हिलाकर, झडियाँ हिल-हिला कर 'भारत सोवियत मैत्री जिन्दाबाद' के नारे लगा-लगाकर उनका स्वागत किया गया । देश के अनेक भागो से लोग उनके दर्शनो को आए थे । मार्ग मे पुराने ईरानी ढग से चादरे टगी थी. झडे और झडियो की तो गिनती ही न थी ।

इस प्रकार भारतीय इतिहास मे १८ नवम्बर एक ऐतिहासिक दिवस बन गया ।

जब अमरीकियों के दिल पर साँप लोटा

जहाँ एक ओर भारतीय इतिहास का नया परिच्छेद लिखा जा रहा था, वही सोवियत नेताओ का अपार स्वागत देखकर अमरीकियो के हृदयो पर साप लोट रहे थे। उनके पूजीपति अखबार बिल्कुल वैसे ही बौखला गये थे जैसे पडित नेहरू के मास्को स्वागत पर बौखला गये थे।

न्यूयार्क टाइम्स ने लिखा—'सोवियत नेताओ की भारत यात्रा एक विशेष प्रकार की राजनैतिक एजेन्टी है, जिसमे वो भारत और वर्मा को कम-से-कम तटस्थवाद दे सके तथा अफगानिस्तान का सोवियत की ओर झुकाव कर सके।'

उसने लिखा—'भारतीय जनता की ये आशा कि रूस से कोई आर्थिक सहायता मिलेगी मृग मरीचिका सिद्ध होगी। तथापि रूसी यात्री यह तो जान ही सकेंगे कि स्वतन्त्रता के बाद पश्चिमी राष्ट्रो की सहायता से भारत और वर्मा ने कितनी उन्नति करली है।'

न्यूयार्क टाइम्स ने १९ नवम्बर के अङ्क मे अपने नई दिल्ली स्थित सवाद-दाता का हवाला देते हुए लिखा कि—'सरकारी प्रेरणा पर भारी सख्या मे जनता ने सोवियत नेताओ का स्वागत किया, किन्तु इस स्वागत मे उत्कटता और घनिष्टता नही थी। यदि श्री आइजनहावर भारत जाए तो उन्हे इस से भी अधिक स्वागत मिलेगा।'

और इसका शीर्पक दिया था—'रूसी माल के दो एजेंट'

भला इससे अधिक लज्जा की और क्या वात हो सकती थी।

डेलीन्यूज ने 'क्या रूस कुछ दे सकता है' नामक शीर्पक मे अपने अग्र लेख में लिखा—'निकोलाई और निकिता नेहरू और नू के कानो मे अनेक उपहारो और भेटो के देने की वात कहेगे रूस क्या कुछ देता है यह कुछ समय मे ही ज्ञात हो जाएगा।'

देहली से निकलनेवाले एक हिन्दी दैनिक ने अमरीका के अखवार के एक कार्टून के वारे मे लिखा—'एक पत्र ने कार्टून प्रकाशित किया है, जिसमें एक रूसी कारखाने को दिखलाया गया है, जो औद्योगिक सहायता के लिये है। इनमें

कुछ रस्सियाँ हैं जो सारे एशिया तक फैली हुई हैं। इस कार्टून का शीर्षक है—'रस्सियाँ जो गले का फदा हैं।'

यहाँ एक बात कह देनी आवश्यक समझ पड़ती है, क्योंकि बिना उसे बताए ऊपर के भिन्न-भिन्न अखबारो के उद्धरण अधूरे रह जाएँगे। क्या जब अमरीका से हमने (भारत ने) सहायता ली थी तब क्या सोवियत पत्रो ने ऐसी कोई बात कही थी ? क्या अमेरिका के पत्रकार और सम्पादको के गले तक साम्राज्यवादी फदा इस बुरी तरह से फँस गया है कि वह डलेस की आवाज मे ही पुकारते हैं ! पर हमें क्या ! हम भारतीय तो परम्परागत शाति के ही मार्ग पर चलनेवाले हैं, जिस पर आज नेहरू, ख्रुश्चेव, बुलगानिन, चाओ एन लाई, नू और टीटो आदि अनेक देशो के नेता चल रहे हैं, जो नवनिर्माण के लिए, राष्ट्रो की खुशहाली और मित्रता के लिये शाति चाहते हैं।

स्वागत

१६ नवम्बर को देहली के रामलीला ग्राउण्ड में राजधानी की जनता की ओर से सोवियत नेता श्री ख्रुश्चेव और बुलगानिन का स्वागत किया गया।

राजधानी के इतिहास मे यह एक आश्चर्यजनक घटना थी, जब कि सात आठ लाख नागरिको ने रामलीला मैदान मे एकत्रित होकर सोवियत सघ के प्रधान मन्त्री मार्शल बुलगानिन और उनके साथी श्री ख्रुश्चेव का हार्दिक अभिनन्दन करते हुए 'रूस भारत मैत्री जिन्दाबाद' के नारे लगाये और अपने महान पडोसी देश के प्रति भारतीय जनता की सद्भावनाओ का परिचय दिया।

इस एतिहासिक आयोजन की पृष्ठ भूमि भी देहली नगरपालिका ने एतिहासिक ही बना रखी थी। जो मच बनाया गया था वह सारनाथ मदिर का एक सुन्दर नमूना था और उसी प्रकार का प्रवेश द्वार, जो साची के बौद्ध स्तूप का ज्यो का त्यो नकशा था।

और रोशनी ! रोशनी के लिये तो यो कहना चाहिए कि इस दिन दिल्ली मे जैसी रोशनी की गई वैसी १५ अगस्त १६४७ को भी नही की गई थी। दिल्ली का पुराना टूटा द्वार तुर्कमान गेट आज दूल्हा दिखाई देता था।

लगता था अपने सम्मानीय अतिथियो के स्वागतार्थ देहली नगरपालिका ने एक नया ही द्वार बनवाया है जो रगीन बल्बो से बना है और यही दशा दरियागज के देहली दरवाजे की थी। पेडो के पत्तो-पत्तो पर बल्ब लगाने की चेष्टा की गई थी। इस तरह सोवियत नेताओ का भारतीय जनता ने स्वागत किया था।

रामलीला ग्राउण्ड की सभा मे जिसमें सात लाख से अधिक मनुष्य उपस्थित थे पडित नेहरू ने अपने सम्मानीय अतिथियो का स्वागत करते हुए अपने भाषण में कहा :—

'जब मैं सोवियत यूनियन मे था, वहाँ के नेताओं से और आम लोगो से मिला था। उन्होने अपने विचार हमारे सामने और हमने उनके सामने रखे थे। अब उनके दो आदरणीय नेता हमारे यहाँ आये हैं। यह कोई चन्द नेताओ का मिलना नही, बल्कि बहुत गहरी और अधिक बडी बाते हैं। इसका अर्थ है दो कौमो का मिलना और उनका पहिचानना। इसलिये इस तरह के मिलन का बहुत बडा एतिहासिक महत्त्व होता है। आप लोग आज एक एतिहासिक अवसर पर बैठे हैं, जिसके नतीजे दूर तक जायेंगे, किसी कौम के खिलाफ नही वरन् दुनिया के भले के लिये।'

हिमालय पहाड के बारे में आज तक लोग कहते हैं कि यह एक दीवार है जो बहुत ऊँची है। पडित नेहरू ने इस सम्बन्ध मे कहा—

'ताशकन्द शहर से उड़कर चन्द घन्टो में उनका दिल्ली पहुँच जाना यह सिद्ध करता है कि ऊंचे-ऊँचे पहाडो के बावजूद दुनिया अब कितने पास-पास होती जा रही है। किसी जमाने में हिमालय पहाड़ एक दीवार थी, भारत की सीमा पर बहुत जबरदस्त दीवार थी। इससे लाभ भी होता था, और रुकावटें भो पडती थी। हिमालय अब भी मौजूद है, मगर अब वह दीवार नही है, अब तो वह दूसरे देशो से सम्बन्ध और प्रेम जोडने में दीवार के बजाय एक सुदृढ कड़ी बन जायगी। जो लोग हिमालय के उस पार रहते हैं उनसे हमारी मित्रता है, और वह दिन-दिन मजबूत होती जा रही है।

'.......हमारे महान नेता महात्मा गाधी ने भी हमें एक साथ मिलकर रहना सिखाया है। जो हमारा विरोधी हो उसकी ओर भी हम मित्रता का ही

हाथ बढाते हैं, किसी भय या दवाव के कारण नही, वरन अच्छी नीयत से मित्रता के लिये हाथ बढाते हैं। आज की दुनिया मे तो यह सिद्धान्त और भी आवश्यक है। यह सन्तोप की वात है कि शाति का पक्ष दिन दिन मजबूत होता जा रहा है, पर अभी गाँठे हजारो वाकी हैं जिन्हे खोलना है, पर हमारा वर्ताव सदैव मित्रता का ही रहेगा और शाति की वास्तव मे नीव भी यही है। हमे इस वात का अभिमान है कि दुनिया मे हमारा कोई दुश्मन नही है। सभी मित्र हैं। कोई देश यदि हम से रुष्ट भी रहा तो भी हमने उसकी ओर मित्रता का ही हाथ बढाया। हमारा पडोसी एक महान देश चीन है, जिससे हमारा समझौता हुआ है। हमने पाँच वडे सिद्धान्तो की घोषणा की है, जो विश्व शाति की नींव के पाँच वडे पत्थर कहे जा सकते हैं। इनके पश्चात् वाडु ग सम्मेलन मे दूसरे अन्य देशो ने पचशील को स्वीकार किया और अब सोवियत यूनियन जैसे महान देश ने भी उन सिद्धान्तो को स्वीकार किया है।

'.... ....आज की दुनिया एक गढी हुई दुनिया है। देश एक दूसरे के पास आते हैं विचारो के साथ साथ दूसरी अन्य बातो मे भी। सबके सामने एक ही मार्ग है, और वह कि 'दुनिया मे शाति स्थापित रहे।' यदि चेष्टाये जारी रही तो निश्चय-ही विश्व इस ओर आयेगा।

सोवियत नेताओ की भारत यात्रा का उल्लेख करते हुए पडित जी ने कहा—'इससे भारत और सोवियत यूनीयन का सम्बन्ध दृढ होगा। हम उनके तजुर्बे से लाभ उठायेंगे, और इस से हमारे देश को निश्चय ही लाभ पहुँचेगा। इसीलिये मै चाहता हूँ कि ये अवसर उन बडे दिनो मे गिना जाय जब हमने कुछ-कुछ बडे-बडे कदम उठाये हैं।'

भाषण के अन्त मे पडित जी ने जनता के साथ मिलकर 'रूस भारत मैत्री जिन्दाबाद' और 'जयहिन्द' के नारे लगाए।

देहली की नगरपालिका के प्रधान श्री रामनिवास अग्रवाल ने अभिनन्दन पत्र पढा, जिसमे भारत और सोवियत के शाति प्रयत्नो का उल्लेख करते हुए यह आशा प्रकट भी गई थी कि विज्ञान, उद्योग और व्यापार के क्षेत्र मे दोनो देशो का सहयोग बढता जायेगा।

दिल्ली के इतिहास पर प्रकाश डालते हुये उन्होने कहा—

'एक लम्बी अवधि की विदेशी सत्ता की मुक्ति के पश्चात् अब दिल्ली एक स्वाधीन राष्ट्र की राजधानी के रूप मे पैदा हुई है। अपनी स्वतन्त्रता के इन आठ वर्षो में हमने पूर्वी और पश्चिमी देशो के सर्वोच्च नेताओ एव विशिष्ट राजनीतिज्ञो सहित अनेक प्रतिष्ठित महानुभावो का स्वागत किया है। आज आपका यहा स्वागत करते हुए हम अपने आपको विशेष भाग्यवान समझते हैं। इस प्रसन्नतापूर्ण अवसर पर यहां एकत्र विशाल जनसमुदाय हमारी भावनाओ का रूप है।

'विश्व इतिहास के इस कठिन काल में हमारी सरकार एव जनता के निमंत्रण पर आपका यहाँ पधारना अत्यन्त महत्व पूर्ण है। इससे भारत और सोवियत सघ के बीच मैत्री में वृद्धि होगी। हमारा पूर्ण विश्वास है कि ये मैत्री न केवल हमारे दोनो देशो के लिए शुभ है वरन् इससे विश्वशाति एवं अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग बढाने मे भी सहायता मिलेगी, जिसके लिए हमारे हृदय मे इतना अधिक स्थान है। हमारी इस मैत्री का लक्ष्य किसी अन्य देश अथवा जनता के प्रतिकूल नही है। भारत ने अपने सामने केवल एकही ध्येय और एकही सेवा का व्रत रखा है और वह है प्रत्येक देश के साथ मैत्री पूर्ण सम्बन्ध स्थापित करना फिर चाहे नीति सम्बन्धी विचार विभिन्नता कैसी ही क्यो न हो। हमारा विश्वास है कि हमारी यह नीति शांति एवं पारस्परिक मैत्री स्थापित करने मे सहायक रही है।'

इस समय मार्शल बुल्गानिन ने भी एक भाषण दिया।

बुल्गानिन का भाषण

मान्यवर प्रधान मन्त्री जी, नगर पालिका के अध्यक्ष और भारत की गौरव पूर्ण राजधानी, अद्वितीय नगर दिल्ली के महान् प्रिय नागरिको! मुझे सर्व प्रथम इस बात की अनुमति दीजिए कि मै अपनी ओर से, अपने साथी श्री ख्रुश्चेव की ओर से और अपने अन्य साथियों की ओर से जो हमारे साथ भारत की राजधानी में आये हैं, भारत सरकार तथा भारत के प्रधान मन्त्री श्री जवाहरलाल नेहरू के निमन्त्रण के लिए कृतज्ञता प्रगट करूँ। आपके इसी निमन्त्रण के परि-

णामस्वरूप हमें यहाँ आकर आपका महान देश देखने और यहाँ के दार्शनिक तथा कुशल लोगो से परिचय प्राप्त करने का सुअवसर प्राप्त हुआ है।

मुझे इत बात की भी आज्ञा दीजिए कि मैं आपके द्वारा [किए गए हार्दिक स्वागत के लिए आपको धन्यवाद दूँ। आपने हमारा जो सम्मान व स्वागत किया है हम उसमें महान भारतीय नागरिको की रूस के नागरिको के प्रति सच्ची मैत्री की भावना देखते हैं। हम आपको तथा आपके द्वारा भारत के १५ करोड निवासियों को रूस की जनता की ओर से हार्दिक शुभ कामनाकएँ और उनकी शुभेच्छाये प्रेषित करते हैं—उस रूसी जनता की जो भारत के निवासियो के प्रति शुभ और नि स्वार्थ मित्रता के भाव रखती है।

हमारे देशो के मध्य मैत्री सम्वन्ध वहुत पहले से थे जो आज तक किसी भेद भाव या आपसी शत्रुता के कारण धु धले नही हुए हैं इतना ही नही रूस की महान अक्तूबर समाजवादी क्राति के पश्चात् तो दोनो देशो के बीच मित्रता के यह भाव और भी अधिक वढे और विकसित हुए हैं।

'रूसी जनता ने जो सदियो के पुराने निर्दय पूर्ण वातावरण से मुक्त हुई थी, सदैव ही आपकी ओर स्वतन्त्रता के पुनस्सथापन के लिए किऐ गए बलि-दान पूर्ण सघर्ष को सहानुभूति से देखा है, और इस सफलता से आपको जो प्रस-न्नता हुई है, उससे हमें भी बड़ा हर्ष हुआ है, क्योकि हम भी सदैव एक राष्ट्र द्वारा दूसरे राष्ट्र पर अत्याचार के विरुद्ध रहे हैं।

हमारे महान विचारक नेता और शिक्षक लेनिन ने समानता और आत्म-निर्णय और प्रत्येक राज्य के स्वतन्त्र अस्तित्व की घोषणा की और इसी घोषणा पर रूस की वैदेशिक नीति के सिद्धान्त आधारित हैं। जब से भारत मे एक सार्व-भौम सत्ता का प्रादुर्भाव हुआ है, दोनो देशो के बीच मैत्री के विकास के लिए और भी परिस्थितियाँ वन गई हैं।

'सोवियत सघ और गणतन्त्र भारत, इस समय सुदृढ आधार पर अपने सम्बन्धो का निर्माण कर रहे हैं। पचशील के पाँच अग हैं जो एकदूसरे की राजकीय सीमा और सार्वभौमसत्ता का सम्मान, अनाक्रमण, किसी भी वहाने से दूसरो के आतरिक मामलो में हस्तक्षेप न करना—चाहे वह आर्थिक हो या

राजनैतिक या आदर्शवादी—समानता और आपसी लाभ एवं शातिपूर्ण सहअस्तित्व पर आधारित है। सबसे प्रथम जनवादी चीन और भारत ने इन पाँचो सिद्धान्तों की घोषणा की, लेकिन उन्हे अभी सभी शांति-प्रिय लोगो और राष्ट्रो का समर्थन मिला है और विभिन्न देशो मे उसे कार्यान्वित भी किया गया है, जिससे काफी लाभ हुआ है।

भारत सरकार ने अन्तरराष्ट्रीय तनाव को कम करने और शांति को दृढ़ बनाने की दिशा में काफी प्रगति की है। ऐसी स्थिति में जब कि रूसी जनता ने एक से अधिक अवसरो पर विदेशी आक्रमण कारियो से हाथो मे शस्त्र लेकर अपनी मातृभूमि की रक्षा की और जो इस बात को विशेषरूप से जानते हैं कि युद्धो से जनता को असख्य कठिनाइयाँ होती हैं, रूसी जनता अपने दिल की गहराइयो से भारत सरकार और भारत के निवासियो द्वारा शाति स्थापना के लिए किये गये प्रयत्नो की प्रशसा करती है।

अन्तरराष्ट्रीय क्षेत्र मे, समूचे विश्व में शान्ति के महान और नेक संघर्ष के लिए हमारे देश कधे से कधे लगाकर खडे होते हैं।

हमें इस बात से विशेष प्रसन्नता हुई है कि भारत और साथ ही रूस भी, सयुक्तराष्ट्र सघ मे जनवादी-चीन को प्रतिनिधित्व दिलाने मरीखे महत्त्वपूर्ण प्रश्न पर एक राय है।

भारत सरकार और भारत की जनता ने अपनी राष्ट्रीय अर्थ व्यवस्था को विकसित करने के लिए जो कोशिश की है, विशेषरूप से उद्योगो को विकसित करने की कोशिशे, उनकी ओर हमारे देश की जनता सहानुभूति के साथ देखती है। हमें अपने अनुभवो से यह विश्वास हो गया है कि केवल वही नीति वास्तविकता पूर्ण स्वतन्त्रता ला सकती है, जिसने अपने लिए स्वतन्त्र विकास का मार्ग अपना लिया है। अलवत्ता, आप लोगो को अब कुछ कठिनाइयो का सामना करना हे, लेकिन हमें पूरा विश्वास है कि दार्शनिक और परिश्रमी भारतवासी अपने निर्दिष्ट ध्येय को प्राप्त करके रहेगे। अपनी ओर से, हम औद्योगिक सस्थानों विद्युत-स्टेशनो और अणुशक्ति के उपयोग आदि के के अनुभवो ने आपको सहयोग देने के लिए तैयार हैं।

आज भारत और रूस के बीच आर्थिक सहयोग के विकास के लिए परिस्थितियाँ सर्वथा अनुकूल हैं जिनका लाभ हम समानता और आपसी सहयोग के आधार पर कर सकते हैं।

हमारे देशो के बीच के सम्बन्ध अब काफी दृढ हो गये हैं। आर्थिक क्षेत्र के अलावा वे विज्ञान और सस्कृति क्षेत्र में भी काफी समीप आ गये हैं और ये हर्ष का विषय है, क्योंकि आदान-प्रदान द्वारा और एक दूसरे की सस्कृति के परिचय के द्वारा वे और समीप आते हैं और समृद्धि प्राप्त करते हैं। हम सदैव ही सस्कृति और कला के क्षेत्रो मे विस्तृत आदान-प्रदान के लिए उद्यत हैं।

भारत और रूस के सामाजिक तथा राजनीतिक ढाँचे सवर्था भिन्न है, लेकिन हमारे लोगो की बहुत-सी बाते समान हैं। जिससे हमारी मैत्री दृढ होती है और वह न केवल रूस तथा भारत के लिए वरन समूचे विश्व के लिए लाभप्रद है।

दोनो देशो की जनता की एक समानता यह है कि वे दोनो ही शान्तिप्रिय और परिश्रमी हैं और दोनों ही के लिए उपनिवेशवाद और जातिवाद के विचार विदेशी है। वे सक्रिय रूप से शाति की स्थापना और उसकी सुरक्षा के लिए खड़े हैं। वे अन्तरराष्ट्रीय सुरक्षा, राष्ट्रीय एकता और सभी देशो के बीच आपसी सहयोग और मैत्री के इच्छुक हैं।

भारत और रूस की जनता का सहयोग और उसकी मित्रता जिन्दावाद। जयहिन्द।

आगरे का ताज

आगरे के ताजमहल को बिना देखे भला हमारे माननीय अतिथि कैसे रह सकते थे, वह २० नवम्बर को आगरा पहुँचे, जहाँ उत्तरप्रदेश की जनता ने उनका दिल खोलकर स्वागत किया। उत्तरप्रदेश के राज्यपाल श्री के० एम० मुशी डा० सम्पूर्णानन्द तथा अन्य कई मन्त्री और आगरें के प्रसिद्ध नागरिको ने भी इस स्वागत समारोह मे भाग लिया।

श्री एन० एस० ख्रुश्चेव तथा मार्शल बुल्गानिन को यहाँ कई भेट दी गई, बदले मे अतिथियो ने भी सोवियत सघ की जनता की ओर से उन्हे भेंट दी।

श्री एन० एस० ख्रुश्चेव ने यहाँ पर अपने स्वागत का उत्तर देते हुए कहा—'मैं आपको विश्वास दिला सकता हूँ कि हमारी जनता भारतीय जनता के प्रति मित्रता और सौहार्दपूर्ण भाव रखती है।

'आप राष्ट्रीय मुक्ति तथा अपने देश के स्वतन्त्र शासन के भव्य वसन्तकाल में रह रहे हैं, पर मै आपको ये स्मरण कराना चाहता हूँ कि स्वाधीनता एवं स्वतन्त्रता केवल इसी शर्त पर सुदृढ़ रह सकती है कि आप अपने उद्योगो का, विशेषकर यत्र निर्माण उद्योग का विकास कर सके।'

उन्होने कहा—'मैं आपको परामर्श देना नही चाहता, सोचता हूँ कि आप इन सब बातो को अच्छी तरह जानते हैं।

'हमने अभी-अभी मानव हस्तलिप की अप्रतिभ रचना-भव्य समाधि देखी है। जब मैं यह इमारत देख रहा था तो मेरे मन में दो भाव उठ रहे थे। पहला भाव भारत की महान जनता के लिए उनकी कला सस्कृति एव हस्तशिल्प के लिए प्रशसा का था जिनका विकास सदियों पूर्व हुआ था। यह इमारत आपकी जनता के लिए गर्व की वस्तु है।'

दूसरे भाव के बारे मे उन्होने कहा—'पर मेरे मन मे एक और भाव भी था। अनायास मेरे मन में आया कि किस प्रकार सम्राट और बादशाह मानव श्रमकी परवाह नही करते थे, और वे उसका कैसा अपव्यय करते थे। शासित जनता के हाथो द्वारा बलात ऐसी समाधियो का निर्माण कराके उन्होने केवल अपने को गौरवान्वित करने के उद्देश्य से जनता की शक्ति एव स्रोत साधनो का अपव्यय मात्र किया। और ठीक उसी समय लाखो लोग क्षुधा-पीड़ित हो काल कवलित हो रहे थे। यह है एक ओर सम्पत्ति तथा दूसरी ओर दरिद्रता का दृश्य।'

वह बोले—'यदि मेरा भाषण अप्रासगिक हो गया हो तो उसके लिए मैं क्षमा चाहता हूँ, लेकिन मै आपको अपने भाव बताना चाहता था जो इन समाधि को देखते समय मेरे मनमें उठ रहे थे।'

अन्त में सभी को धन्यवाद देते हुए उन्होने कहा—'मैं आपकी खुशहाली और सुख समृद्धि की कमना करता हूँ।'

नेहरू जी द्वारा दिया गया भोज

सम्माननीय अतिथियों को पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने भोज दिया, जिसमें लगभग समस्त केन्द्रीय सरकार के मन्त्री, उपराष्ट्रपति, संसद के दोनो सदनो के सदस्य, कुछ प्रमुख अधिकारी और लब्ध प्रतिष्ठित नागरिक सम्मिलित थे। इस शुभ अवसर पर सोवियत संघ के प्रधान मन्त्री श्री एन० ए० बुल्गानिन ने एक औपचारिक भाषण दिया। जिसमें उन्होने उपस्थित सज्जनो के प्रति शुभ-कामनाएँ प्रकट करते हुए कहा—

'हमारे देश तथा भारत के बीच मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध एक लम्बी अवधि से स्थापित है, और इस बीच हमारे दोनो देशो की जनता ने एक-दूसरे को बडे सम्मान की दृष्टि से देखा है। सोवियत संघ तथा भारत की जनता ने अपने सुखमय भविष्य के सघर्ष में सदैव एक-दूसरे की नैतिक सहायता प्राप्त की है। उनकी मैत्री एवं सहकारिता इस समय और भी सुदृढ हो गई है, जब ये स्पष्ट हुआ कि शान्ति एवं मानव जाति की खुशहाली के लिए होनेवाले संघर्ष मे भारत और सोवियत संघ के बहुत-से पारस्परिक हित समान हैं।'

माननीय प्रधान मन्त्री ने दोनों देशो के सम्बन्धो को पचशील पर आधारित बताते हुए कहा—

'सोवियत सघ भारत के साथ तथा अन्य शान्तिप्रिय देशो के साथ जो इन सिद्धान्तो का उद्घोष कर चुके हैं या करने को इच्छुक हैं, अपने सबधो मे इन सिद्धान्तो का अक्षरस-पालन करता है।

'भारत और सोवियत संघ शान्तिप्रिय देश हैं। हमारी राजनीतिक और सामाजिक व्यवस्थाएँ भिन्न हैं और अपनी जनता की खुशहाली एव सुख समृद्धि प्राप्त करने के लिए हमने विभिन्न मार्ग चुने हैं। लेकिन भारत तथा सोवियत सघ की जनता के लिए 'शांति' शब्द समान रूप से पवित्र है। शाति का ये इरादा हम लोगो को एक दूसरे के और भी निकट लाता है, हम लोगो को एक जूट करता है, तथा जटिल अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओ को शातिपूर्ण रीति से हल करने लिए सघर्ष करने को हमें समर्थ बनाता है।'

श्री वुल्गानिन ने अपने भाषण मे शीतयुद्ध के खिलाफ बोलते हुए कहा—'हम हमेशा शीतयुद्ध के खिलाफ रहे हैं, और हम नही चाहते कि इसका पुन. सूत्रपात हो। हम पारमाणविक एवं उद्‌जन अस्त्रो को निषिद्ध ठहराने, प्रचलित शस्त्राशस्त्रो में कमी करने, यूरोप मे सामूहिक सुरक्षा-व्यवस्था स्थापित करने तथा राज्यो के बीच सम्पर्क बढाने के लिए संघर्ष करते रहेगे।

'जहाँ तक जर्मन समस्या का सवाल है, हमारी नीति वही है जो पहले थी और इसमें कोई परिवर्तन नही हुआ है। इस समस्या का हल करने के लिए समय और धैर्य की अपेक्षा है। हमारा विश्वास है कि इस मस्ले का हल करने के लिए सबसे पहले जर्मन जनता के ही ऊपर इस बात को छोड देना चाहिए और हमारा काम इस विषय में उनको मदद करना होना चाहिए।

'एशिया, में जहाँ सबसे बड़े देश चीनी लोकगणतन्त्र, भारत और सोवियत संघ हैं, महान परिवर्तन हो रहे हैं। विश्व शांति के लिए यह बात अत्यन्त महत्वपूर्ण है कि इन तीनो देशो के सम्बन्ध शातिपूर्ण सहअस्तित्व, मैत्री एव सहयोग के सिद्धान्तो की ठोस नीव पर आधृत हैं।

'भारतीय गणतन्त्र का अन्तर्राष्ट्रीय महत्व वर्ष प्रति वर्ष बढ रहा है। एशिया तथा अन्य देशो की समस्याओ के ऊपर विचार-विमर्श करने और उनका समाधान करने में भारत उत्तरोत्तर अधिकाधिक भाग ले रहा है।

'यह सभी जानते हैं कि भारत की ख्याति न केवल इस बात से बढ रही है कि यह दुनिया के विशालतम देशो में एक है वरन् इस तथ्य के कारण कि जो भर भी टस से मस हुए बिना दृढतापूर्वक शांति का समर्थन कर रहा है।

'इस सम्बन्ध मे हम एशियाई एवं अफ्रीकी देशो के वाडुंग सम्मेलन के भारी-महत्व की ओर सकेत किए विना नही रह सकते जिसने 'वाडुंग' वातावरण तैयार करने में योग दिया—ऐसा वातावरण जो एशिया और अफ्रीका की जनता के भाग्य से सम्बद्ध समस्याओ का हल करने के काम को और भी आसान बना देता है।

'भारत के सक्रिय सहयोग से कुछ उलझन पूर्ण एशियाई समस्याओ का समाधान किया जा चुका है। हमें पूर्ण विश्वास है कि भारत तथा भारत सरकार

जिसके प्रधान हमारे मित्र श्री नेहरू हैं इसी सक्रिय ढग से भविष्य में भी एशिया तथा सारे ससार मे शान्ति की रक्षा करते रहेगे।'

उन्होने अपनी भारत यात्रा की सफलता के बारे में कहा—'हमारा पक्का विश्वास है कि हमारी भारत-यात्रा हमारे दोनो देशो के बीच मैत्री एव सहयोग को और भी सुदृढ बनाने के लक्ष्य में योगदान देगी।

उन्होने कहा—'**सोवियत सरकार नये भारत के निर्माण में भारतीय-जनता की तथा शांति के निर्भीक सेनानी श्री जवाहरलाल नेहरू की और भी अधिक सफलता की शुभकामना करती है।'**

स्काउट मेला

२१ नवम्बर सन् १९५५ को देहली प्रान्त के स्काउटो के मेले में श्री एन. एस. ख्रुश्चेव ने एक भाषण में कहा—

'......मै आप लोगो से एक और बात कहना चाहता हूँ कि स्काउट दल के नेता ने अपने भाषण के दौरान में यहाँ आने के लिए हमें धन्यवाद दिया है। लेकिन मैं कहूँगा कि हमारी यह यात्रा केवल शिष्टाचार की ही द्योतक नही है, वरन् एक आवश्यकता है। दोनो देशो के बीच मैत्रीपूर्ण सम्बन्धो को सुदृढ बनाना हमारे लिए जरूरी है।'

सोवियत भारत मित्रता के सम्बन्ध में उन्होने बताया—'स्वतन्त्र नीति का अनुसरण करते हुए श्री नेहरू के नेतृत्व मे आपकी सरकार ने सोवियत सघ के साथ सर्वोत्कृष्ट एवं सर्वाधिक मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध स्थापित किए हैं। ये सम्बन्ध विश्व-शाति को सुदृढ बनाने एवं उदात्त लक्ष्य के सयुक्त सघर्ष पर मुख्यतः आधारित हैं।

'अतएव हमारी मैत्री दृढतम आधार पर कायम है, और इसका विकास सफलतापूर्वक होगा।'

पच वर्षीय योजना के बारे मे उन्होने कहा—'हम आपकी हर सफलता के ऊपर हर्ष प्रकट करते हैं। अब आपने द्वितीय पचवर्षीय योजना की रूपरेखा तैयार करना शुरू किया है, यह अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य है। इसके दो पहलू हैं:

कृषि की उन्नति तथा उद्योग का सुदृढीकरण और विकास।

कृषि की उन्नति किए बिना ओद्योगिक विकास की योजना को सफलता पूर्वक कार्यान्वित करना असम्भव है। कल-कारखाने खड़े करने के लिए भोजन वस्त्र तथा जीवन-धारण के अन्य समस्त साधनो का होना आवश्यक है। भारत एक ऐसा देश है जहाँ की जनसंख्या विपुल है और इसमें सन्देह नही कि खाद्य पदार्थों तथा जीवनोपयोगी प्राथमिक वस्तुओ की माँग वर्ष प्रतिवर्ष निरन्तर बढती जायगी।

'लेकिन दूसरी ओर औद्योगिक विकास के बिना कृषि की उन्नति करने की समस्या को सफलतापूर्णक हल करना असम्भव है। उद्योग और कृषि के विकास के लिए यत्र-निर्माण उद्योग मेरुदण्ड स्वरूप है। इसमें सन्देह नही कि हाथी को काम करते देख कुतूहल होता है। मैने एक फिल्म में यह देखा है। लेकिन ट्रैक्टर, आटोमोबाइल और इजने अधिकाधिक शक्तिशाली हैं और उन्हे आदमी जैसे चाहे चला सकता है। अपने अनुभव से हमने ये बात सीखी है। हमारे यहाँ हाथी नही होते, लेकिन बीते दिनो में बैलो और घोडो से हमने काम लिये हैं, लेकिन जब यन्त्रो ने उनका स्थान लिया तो काम और भी अच्छी तरह होने लगा।

'अपनी द्वितीय पचवर्षीय योजना के अन्दर आप अपने उद्योगो का विकास करना चाहते हैं, यह बहुत ही महत्त्पूर्ण बात है। हम सोवियत संघ के लोग अपने अनुभव से जानते हैं कि औद्योगिक विकास का सभी दृष्टियो से भारी महत्व है। इस सम्बन्ध में यह याद रखना विशेषरूप मे महत्वपूर्ण है कि प्राप्त की हुई स्वतन्त्रता को कायम रखना एव उसकी रक्षा करनी जरूरी है। देशकी पूर्ण स्वतन्त्रता केलिए परिस्थितियाँ तैयार करने के वास्ते आवश्यक उद्योगो के रूप में दृढ आधार तैयार करना और उस पर निर्भर रहना जरूरी है।'

हमारे देश को और भी समृद्धिशाली बनाने के बारे में अपनी अमूल्य सलाह देते हुए उन्होने कहा—

'आप आत्मिक दृष्टि से सम्पन्न हैं और यह चीज समस्त पूंजीयो से कही अधिक मूल्यवान है, और यदि आपकी जानता की समृद्धि एवं गर्वपूर्ण आत्मा राष्ट्रीय अर्थतन्त्र के विकास के लिए अपने उद्योग पर निर्भर करे तो आपका देश

और भी अधिक समृद्धिशाली हो जागया ।'

भारतीय संसद में

सम्मानीय अतिथि श्री बुलगानिन और श्री खु श्चेव ने भारतीय संसद के दोनो सदनो के सामने अत्यन्त महत्वपूर्ण भाषण दिये, जिनके मुख्य भाग ये हैं—

एन. ए. बुल्गानिन

मैं यहाँ ये कहना चाहता हूँ कि रामलीला मैदान में लाखो की संख्या में जन समूह को देख जो हमारे अभिनन्दन के लिए वहाँ उपस्थित थे हम अत्यन्त गद्गद हो गये । जिस निष्ठा से जनता ने अपने उद्दाम भावों को एक स्वर से प्रकट किया है उसे देखकर हमें दृढ विश्वास हो गया है कि भारत की जनता सोवियत जनता की सच्ची एव नि स्वार्थ मित्र है । इस मैत्री को बढाने तथा व्यापक बनाने के लिए अपनी तरफ से सोवियत जनता कुछ भी उठा नही रखेगी ।'

……हमारे देशो की जनता के सम्बन्ध तथा उनकी पारस्परिक सद्भावना रूस की महान् अक्तूबर समाजवादी क्राति की विजय के बाद और बडी हद तक दृढ हुई । हमारी क्रान्ति ने समानता और आत्म निर्णय के जिन सिद्धान्तो की घोपणा की थी उनका अन्य देशो में व्यापक रूप से स्वागत किया गया, इन देशो में भारत भी सम्मिलित था । नवम्बर १९१८ में पहले भारतीय प्रतिनिधि मडल का सोवियत रूस मे आगमन, जिस प्रतिनिधि मडल से वी. आई. लेनिन मिले थे, इस बात का प्रमाण था कि उस समय हमारे देश मे होनेवाली घटनाओ के प्रति भारतीय जनता को कितनी गहरी दिलचस्पी थी ।

सोवियत जनता ने भारतीय साहित्य के प्रति भी बहुत दिलचस्पी दिखलाई है । रवीन्द्रनाथ टैगोर की प्रतिभाशाली रचनाएँ जो हमारे देश में कई बार प्रकाशित की जा चुकी हैं, अब अलग से एक सम्पूर्ण सस्करण के रूप में प्रकाशित की जा रही है । सोवियत सघ की विज्ञान अकादमी ने महान् भारतीय कवि तुलसीदास की रचनाएँ प्रकाशित की हैं । प्रेमचन्द जैसे प्रमुख लेखक तथा कई अन्य लेखको की रचनाओ का अनुवाद किया गया है तथा उन्हे प्रकाशित किया है। तथा पुश्री नेहरू की स्तक 'भारत की खोज' भी रूसी में प्रकाशित की गई। उनकी

पुस्तक से सोवियत पाठको को आपके देश के बारे में अनेक नयी रोचक बातें मालूम हुई

इस समय भारत तथा सोवियत सघ के सहयोग का स्वरूप सर्वांगीण है। सास्कृतिक सम्बन्धो के अतिरिक्त यह सहयोग आर्थिक क्षेत्र में और शाति को सुनिश्चित बनाने तथा अन्तरराष्ट्रीय तनातनी को कम करने की समस्याओ के सम्बन्ध मे भी पाया जाता है।

शाति को सुदृढ बनाने के ध्येय के लिए भारत ने जो योग दिया है सोवियत संघ उसका बड़ा आदर करता है। भारत, चीनी लोक गणतन्त्र तथा सोवियत सघ के सयुक्त प्रयासो के फलस्वरूप कोरिया में युद्ध विरामसधि पर हस्ताक्षर हुए और हिन्द चीन मे युद्ध की ज्वाला ठंडी पड़ी। भारत चीन लोक गणतन्त्र को सयुक्तराष्ट्र संघ में उसका न्यायोचित स्थान देने की सक्रिय रूप से पैरवी करता है। भारत सरकार तैवान की समस्या को चीनी लोकगणतन्त्र के राष्ट्रीय हितो तथा न्यायोचित अधिकारो को ध्यान मे रखते हुए शांतिपूर्ण ढंग से हल करने के पक्ष में है।

आक्रमणकारी सैनिक गुटबदियाँ बनाने की नीति के खिलाफ और सामूहिक शांति की रक्षा के लिए भारतीय सरकार के प्रयत्नों के प्रति और अन्तरराष्ट्रीय समस्याओ के हल करने के साधन को रूप मे समझौते के तरीके के प्रति सोवियत संघ की जनता गहरा सम्मान करती है।

सोवियत सघ की वैदेशिक नीति राष्ट्रों के बीच शाति तथा मित्रता की नीति है, वह शाति के लिए और युद्ध के खिलाफ तथा दूसरे राज्यो के अन्दरूनी मामलो में विदेशी हस्तक्षेप के खिलाफ सक्रिय तथा निरन्तर सघर्ष की नीति है।

सोवियत सघ का कहना है कि किसी भी प्रकार का आक्रमण जनता की आत्मा और सम्मान पर प्रहार होता है और उसके फलस्वरूप विपुल भौतिक सम्पदा और असंख्य मनुष्यो का नाश होता है। जो दुनिया की सबसे प्रियतम वस्तु है।

हमें इस बात पर खेद है कि निश्स्त्रीकरण और आणुविक तथा हाइड्रोजन स्त्रो पर रोक-लगाने के प्रश्न की गुत्थी को सुलझाने के सम्बन्ध में हमारे प्रयत्नो

को अभी तक सकारात्मक परिणाम प्राप्त नही हुए हैं। वास्तव में संयुक्तराज्य अमरीका, इगलैंड तथा फ्रास उन सुझावो से मुकर गये हैं जो उन्होने स्वयं इस वर्ष के आरम्भ मे रखे थे।

सोवियत सरकार सैनिक गुट बनाने की नीति के विरुद्ध है और जो गुट बनाए जा चुके है उन्हे भग कर देने के पक्ष में हैं।

हमारी राय में वर्तमानकाल में आर्थिक और सांस्कृतिक साथ ही वैज्ञानिक और प्रावैधिक अनुसन्धान के क्षेत्रो मे सोवियत भारतीय सहयोग को बढाने की पूरी-पूरी सम्भावनाएँ है। हम आपके साथ अपने आर्थिक और वैज्ञानिक अनुभवो का आदान-प्रदान करने के लिए प्रस्तुत हैं। यह हमारी जनता की इच्छाओ और आकाक्षाओ के अनुरूप ही है।

एन० एस० खु्रश्चेव

इस ससद भवन के गुम्बद के नीचे मै ये कहे बिना नही रह सकता कि हमारे देशो की जनता की मित्रता कई शताब्दियो से विकसित होती आई है और वह कभी सघर्षो और गलत फहमियो से कलुषित नही हुई है।

'भारत अनेक सदियो से एक औपनिवेशक देश की स्थिति मे रह चुका है। आपके आश्चर्यजनक देश ने जिसको उपनिवेशवादियो ने पददलित कर दिया था मानव जाति के सास्कृतिक इतिहास मे महान योगदान दिया है।

हमारे बुद्धिमान शिक्षक वी० आई० लेनिन ने १६२३ मे लिखा था कि रूस, भारत, चीन तथा अन्य देश जहाँ दुनियाँ की आबादी का विपुल बहुमत रहता है अपने मुक्त संघर्ष मे असाधारण वेग से अवतीर्ण हो रहे हैं। और उन्होने इस सघर्ष के सफल परिणाम के विषय में भविष्यवाणी भी की थी। सच्चे अर्थ में भविष्यवाणी जैसे इन शब्दो की पूर्ण परिपुष्टि जीवन के अनुभवो द्वारा हो चुकी है।

चीन की महान जनता ने अपार एतिहासिक विजय प्राप्त की है और सफलतापूर्वक अपने स्वतन्त्र नूतन जीवन का निर्माण कर रही है। भारत की महान जनता की राष्ट्रीय स्वतन्त्रता का स्वागत समस्त प्रगतिशील मानव जाति

ने किया है। हिन्देशिया, वर्मा तथा अन्य देशो की जनता ने विदेशी आधिपत्य के जुए को उतार फेका है।

टिकाऊ तथा स्थायी शान्ति रखने के लिए भारतीय जनता की आकाँक्षाओ को सोवियत जनता अच्छी तरह समझती है, क्योकि इन कार्यो का सम्पादन एकमात्र शान्ति की परिस्थितियो के अन्दर ही हो सकता है।

हर देश की जनता को अपने मामलो मे दूसरे राज्यो द्वारा बिना किसी हस्तक्षेप के अपने ढग से जीवन बिताने का अधिकार है।

दूसरे देशो मे साम्यवाद के सिद्धान्तो का निर्यात करने का आरोप हम पर लगाया जाता है। हमारे बारे मे और भी बहुत सी वाहियात बाते कही जाती हैं। दबाये हुए राष्ट्र जब भी विदेशी उत्पीड़िको के जुए को उतार फेकने का प्रयास करते हैं तो कहा जाता है कि यह सब मास्को के इशारे पर हो रहा है।

समाजवाद के अपने चुने हुए योग पर चलते हुए सोवियत जनता ने अपने विकास मे भारी सफलताएँ प्राप्त की हैं। लेकिन समाज के पुर्ननिमाण सम्वन्धी अपने सिद्धान्तो को स्वीकार करने के लिए न हमने कभी किसी को वाध्य किया और न कर रहे हैं।

इस बात पर आश्चर्य हो सकता है कि सोवियत सघ के वारे में कौन यह जाल-फरेव गढ रहा है? ये प्रतिक्रियावादी हल्के हैं जो जनता को आतकित करने तथा युद्ध ज्वर पैदा करने के लिए इन कुत्सापूर्ण मनगढन्त कहानियो का प्रयोग कर रहे हैं।

वे चाहते हैं कि हमारे देश के वारे में जनता की जानकारी न बढ़े, क्योकि सोवियत समाजवादी जनतन्त्र संघ सम्बन्धी सच्चाई प्रतिक्रियावादी शक्तियो के लिए, उपनिवेशवादियो के लिए तथा उनके लिए जो मानव द्वारा मानव के शोषण को स्थायी बनाने के उद्देश्य से एक राष्ट्र द्वारा दूसरे के उत्पीडन को कायम रखना चाहते हैं मौत सिद्ध होती है।

सोवियत सघ एक अखड वहुजातीय राज्य है, जिसमें सोलह समान अधिकार प्राप्त जनतन्त्र हैं और जिनका अपना विकसित राष्ट्रीय अर्थतन्त्र और अपनी ही मौलिक जातीय सस्कृति है। हमारे देश में जाति और नस्ल के भेदभाव बिना

सभी नागरिको की पूर्ण समानता के सिद्धान्त का कठोरतापूर्वक पालन किया जाता है। प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप में अधिकारों पर किसी तरह का नियन्त्रण, जाति या नस्ल के आधार पर नागरिको के लिए प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप मे विशेष सुविधाओ का संयोजन कानून द्वारा दडय अपराध है। हमारे देश की सभी जातियाँ एक सुखी परिवार के सदस्यो की तरह रहती हैं। हमारे देश में बसने वाली जातियो की मैत्री सोवियत राज्य की शक्ति के महान स्रोतो में एक है।

'सारी दुनिया अब मानती है कि संस्कृति के विकास में हमारे देश ने महान प्रगति की है। अक्तूबर क्रान्ति से पूर्व जारकालीन रूस की ७६ प्रतिशत आवादी निरक्षर थी, लेकिन द्वितीय महायुद्ध के पहले ही हमारे देश मे निरक्षरता का प्राय उन्मूलन हो चुका था।

वास्तव मे हमारा देश अभी स्वर्ग नही हैं। अभी कई कमियाँ हमारे यहाँ हैं, लेकिन हमे उनका भास है और हम उन्हे दूर करने के लिए भरसक प्रयत्न करते हैं।

यह ठीक है कि सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी के बारे में विभिन्न प्रकार की मन गढन्त बाते फैलाई जाती हैं। और यह इसलिए कुछ अजीव भी नही हैं, क्योकि हमारी पार्टी मेहनतकश जनता के विशाल समूह को एक ऐसे बिल्कुल नवीन कम्युनिस्ट समाज के निर्माण के लिए सगठित और एक जूट कर रही है, जो पुराने पूजीवादी समाज से बुनियादी तौर पर भिन्न है।

महान अक्तूवर समाजवादी क्रांति ने मानवता के लिए नये युग का द्वार उन्मुक्त किया। श्री जवाहरलाल नेहरू ने अपनी पुस्तक भारत की खोज में लिखा है।

'सोवियत क्राति ने मानव समाज को वहुत आगे वढाया है और एक एसी ज्योति जगाई है जिसे बुझाना असम्भव है।

'इस क्राति ने एक ऐसी नयी सम्पदा की नीव डाली है जिसकी दिशा में सम्भवत: सारी दुनिया आगे वढेगी।'

सोवियत देश के जहाँ की जनता अपने श्रम का उपभोग करती है, अस्तित्व से ही डरने के कारण, शत्रुओ ने हमारे देश पर हिटलरी फासिज्म रूसी एक पागल

कुत्ता छोड दिया । यह सर्व-विदित है कि उस आक्रमण का क्या अन्त हुआ । नात्सीवाद मुक्त मानवता के प्रति भयानक अभिषाप-कुचल दिया गया और हिट-लर न जाने कब का सड़-गल चुका ।

हम देशो के बीच व्यापारिक सम्बन्धो और सांस्कृतिक सम्बन्धो के विकास का समर्थन करते हैं । अन्तर्राष्ट्रीय सम्बधो में तनाव को कम करने की दिशा मे सोवियत संघ द्वारा किए गये प्रयत्न ससार मे सर्व विदित हैं । हम शाति के, राज्यो के शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के, उनका आंतरिक ढाँचा चाहे जैसा भी हो, हामी हैं । हमारे राज्य की वैदेशिक नीति द्वारा अपनाए गए सभी मार्ग इस बात का अकाट्य प्रमाण हैं ।

दूसरे महायुद्ध के वाद प्रतिक्रियावादी क्षेत्र हमें अणुबम से डराना चाहते थे, हमें अधीनता में रखना चाहते थे । परन्तु यह सर्वविदित है कि उसका कोई भी परिणाम नही निकला । सोवियत वैज्ञानिकों ने अणुशक्ति प्राप्त करने का रहस्य जान लिया है । कुछ युद्ध रत विदेशी राजनीतिज्ञो की आक्रमक योजनाओ को पस्त करने के लिये हमें अणु और उद्जन बम बनाने पर विवश हो जाना पड़ा है । पर इस अस्त्र का निर्माण कर लेने के बाद तुरन्त ही हमने ये घोषणा की कि इसका कभी प्रयोग नही किया जाएगा । सोवियत संघ ने अणुशक्ति के शांति पूर्ण विकास मे उपयोग करने का पहला उदाहरण सामने रखा । हमने अणु और उद्जन अस्त्रो के प्रयोग और निर्माण पर प्रतिबन्ध लगाने के सम्बन्ध मे प्रस्ताव प्रस्तुत किए हैं और ऐसे प्रस्ताव भी रखे हैं कि सरकारें शपथ लें कि वे इस अस्त्र का प्रयोग नही करेंगी ।

शाति के प्रयासो को नष्ट करने के लिये प्रतिक्रियावादी शक्तियाँ सब कुछ कर रही हैं । लेकिन हमें विश्वास है कि जीत जनता और उन्ही लोगो को उप-लब्ध होगी जो शांति के लिए प्रयत्नशील हैं, क्योकि देशो में शांति समूची मान-वता का स्वप्न है । हमें प्रसन्नता है कि इस ध्येय में भारत जैसा अच्छा मित्र हमें प्राप्त है ।

सोवियत जनता, साथ ही अन्य देशो की जनता भारतीय जनता भारतीय सरकार के शाति के लिए किए जानेवाले संघर्ष के ध्येय में नये युद्ध की धमकी

जिससे ऐसा कभी न हो। इस तर्क की कभी अवहेलना नही की जा सकती। अतः आप भी उस चीज की रक्षा करें जिसको आपने कठिन संघर्ष के वाद प्राप्त किया है।'

बम्बई में

बम्बई मे सोवियत नेताओ का अत्यन्त शानदार स्वागत हुआ और बम्बई नगर जो सदैव से भारत का गौरवशाली नगर रहा है उसने दिखा दिया कि हम आपस मे चाहे कैसे ही रहे, मगर मित्र या दुश्मन के लिए सब एक साथ होते हैं। मित्र का स्वागत करने मे हम एक हैं और शत्रु का मुकाबिला करने मे भी एक है।

स्मरण रखने की बात है बम्बई में सोवियत नेताओ के आगमन से दो दिन पूर्व ही भारी गडबडी भाषावार प्रान्त बनाने के सिलसिले मे हुई थी मगर जब सोवियत नेता वहा पहुँचे तो सारा बम्बई उनके दर्शनो के लिए सडको पर निकल आया! बम्बई नगर के मेयर की लड़कियो ने उन पर सच्चे मोतियो की वर्षा की।

बम्बई के नागरिको की ओर से उनके स्वागत के निमित्त जो सभा की गई उसमे बोलते हुए श्री ख्रुश्चेव ने कहा--

'भारत की जनता के साथ मैत्रीपूर्ण साक्षात्कारो के दौरान मे इन दिनो हमारे हृदय में जो प्रेमपूर्ण भावनाएँ उठ रही हैं, उन्हे शब्दो द्वारा व्यक्त नही किया जा सकता।'

बम्बई राज्य के मुख्य मन्त्री मुरारजी देसाई द्वारा आयोजित स्वागत समारोह में सोवियत संघ के प्रधान मन्त्री श्री एन० ए० बुल्गानिन ने कहा--

'सारी दुनिया की जनता शाति चाहती है। सभी देशो की जनता अनागत पीढी के लिए एक शातिपूर्ण व सुखी जीवन प्राप्त करने का सकल्प कर चुकी है। लेकिन इस समय हम सब देशो की जनता की समस्याओ के बारे मे बात न करके केवल उन समस्यओ की बात करे जो हमारे दोनो देशो की जनता के-महान भारतीय जनता और महान् सोवियत जनता के सामने है। आइये आज हम कहे—

'हमारे देशों की जनता की दृढ मैत्री अमर हो।'

बंगलौर मे

बगलौर के नागरिको द्वारा किए गये स्वागत समारोह में एन० एम० ख्रुश्चेव ने पूजीपति देशो से अपनी समानता बतलाते हुए कहा—'हम इस बात पर बहस कर सकते हैं कि किसके यहाँ अधिक बुद्धिजीवी, अधिक इजीनियर हैं–सोवियत सघ मे या किसी पूंजीवादी राज्य में ?'

पूंजीवादी राज्यो के गाली गलौच के गलत प्रचार को उन्होने किस प्रकार ग्रहण किया इसके सम्बन्ध में उन्होने कहा—'जो चाहो लिखो, जो मर्जी हो कहो—कुत्सा सुनाम को कलंकित नही कर सकती। मै आपको अपनी एक रूसी लोकोक्ति बतलाता हूँ—कुत्ते भौंकते रहते हैं, पर कारवाँ चला जाता है, हवा सनसनाती रहती है पर आदमी चला जाता है। हमभी अपने मार्ग पर चल रहे हैं, एक ऐसे मार्ग पर जिस पर मानव जाति ने अभी तक अपने चरण नही रखे हैं––समाजवादी निर्माण का मार्ग। हमारा देश समस्त मानव जाति के सुखी भविष्य के लिए पथ-प्रशस्त कर रहा है।'

भारत को सहयोग देने के सम्बन्ध में उन्होने कहा—

'हम कहते हैं सम्भव है हमारे अनुभव में से कुछ आपके लिए उपयोगी हों। यदि ऐसी बात है तो उसका उपयोग कीजिए। यदि वह उपयोगी न हो तो उसे न लीजिए। हम किसी के ऊपर कोई चीज बलात नही लादते, हम कोई राजनीतिक वचन बद्धता नही चाहते। हम आपसे इतने स्पष्ट रूप में क्यो बातें करते हैं ? क्योकि हम सच्चे हृदय से आपको अपने भाई समझते हैं।'

उन्होने अपने इसी भाषण में एक स्थान पर कहा—

'हमारी हार्दिक कामना है कि भारत आर्थिक दृष्टि से एक महान एवं शक्तिशाली राज्य बनें, जैसा महान राज्य आज वह अपनी आत्मिक शक्ति, संस्कृति एव नैतिक सहायता की दृष्टि से है। हमारी कामना है कि भारत में उच्चकोटि का विकसित उद्योग तथा उन्नति कृषि हो और उसकी जनता का जीवन-मान ऊँचा हो। अपनी तरफ से हम इस उदात्त एवं भव्यकार्य में आपके साथ सहयोग करने को तैयार हैं।'

मद्रास में

मद्रास की जनता ने हृदय खोलकर सोवियत नेताओ का स्वागत किया और अपने अगाध प्रेम को प्रकट करके बता दिया कि भारतीय जनता शाति के लिए महान सोवियत सघ की जनता के कधे-से-कधा मिलाकर आगे वढेगी। जनता द्वारा स्वागत सभा मे मार्शल वुल्गानिन और ख्रुश्चेन ने भाषण दिये जिसमें उन्होने भारतीय जनता को अपनी शुभकामनाएँ और श्रेष्ठ कार्य के लिए वधाई दी।

कलकत्ता में

कलकत्ता में वायुयान के अड्डे पर बंगाल के राज्यपाल मुख्यमत्री सहित अन्य समस्त मंत्री और उप-मत्री तथा तमाम बड़े अफसर और प्रान्त के वडे-वड़े नागरिको सहित लाखो लोग उनके स्वागत के लिए उपस्थित थे।

जब खुली कार में दोनो सोवियत नेता वगाल सरकार के अतिथि भवन को चले तो मार्ग में जन समुद्र ठाठे मार रहा था। सडक इतनी भरी हुई थी कि कार चलाना कठिन हो रहा था। जव कार को आगे वढाने का मार्ग न मिला तो एक दूसरी सडक से इन नेताओ को अतिथि भवन पहुँचाया गया था। हिन्दुस्तान टाइम्स के शब्दो मे सडक पर सोवियत नेताओ के दर्शन के हितार्थ आये लोगो की सख्या पचास लाख के लगभग थी।

३० नवम्बर को जब नागरिको की ओर से इनके स्वागत समारोह का प्रबन्ध होने की तैयारी हो रही थी तो कहते हैं लोगो ने उन्हे नजदीक से देखने के लिए सवेरे से ही अपना स्थान आगे बैठने के लिए पाने को वहा पहुँचना आरम्भ कर दिया था। इस स्वागत समारोह में अखवारो की रिपोर्टो के आधार पर तीस लाख से अधिक जनता उपस्थित थी।

भारत ही क्या विश्व का रिकार्ड तोड दिया गया था कलकत्ते मे, किसी के स्वागत में दुनिया के किसी भी शहर मे इतने आदमी इतने उल्लास के साथ कभी एकत्रित नही हुए थे। पडित नेहरू की अध्यक्षता मे ये स्वागत समारोह सम्पन्न हुआ।

स्वागत का उत्तर देते हुए श्री एन० एस० ख्रुश्चेव ने कहा—

'भारत की जनता के समक्ष जो युगो पुराने औपनिवेशिक उत्पीडन से अपने को मुक्तकर स्वतंत्र विकास के पथ पर आरूढ है, स्वतंत्र राष्ट्रीय विकास तथा नवजीवन निर्माण के भव्य मार्ग उन्मुक्त होगये हैं ।

'भारत ने अपनी राजनीतिक स्वतत्रता प्राप्त की है और इस प्रकार आपके महान देश के भावी विकास की नीव डाली गई है ।'

'एशिया के राष्ट्रो की एक जूटता हमे विशेष रूप मे आनन्दित करती है, जिन्होने विश्व उपनिवेशवाद पर निर्णायक आक्रमण कर महती विजय प्राप्त की है।'

गोआ के सवंध मे उन्होने कहा—

'अभी भी ऐसे देश हैं जो स्वस्थ शरीर पर जोक की तरह दूसरे देश पर चिपटे हुए हैं । मेरा मतलब पुर्तगाल से है जो गोवा को छोड़ना नही चाहता, जो भारत की इस न्याय सम्मत भूमि को अपने शासन से मुक्त करना नही चाहता ।'

'लेकिन आज या कल ये होकर रहेगा और गोवा विदेशी शासन से अपने को मुक्तकर भारतीय गणतंत्र का अभिन्न अग हो जावेगा ।'

जयपुर में

जयपुर में भी सोवियत नेताओका शानदार स्वागत किया। जिस प्रकार वम्वई में उन्हे खद्दर की टोपियाँ भेंट की गई उसी प्रकार यहाँ राजस्थानी साफा भेंट किए गये । स्वागत के निमित्त जब जयपुर मे फूलो की कमी महसूस की गई तो देश के दूसरे भागो से फूल मँगाए गये ।

काश्मीर में

काश्मीर की यात्रा का एक विशेष महत्व इसलिए भी है कि काश्मीर की अन्तरराष्ट्रीय स्थिति ऐसी है कि कोई भी विदेशी राष्ट्र उसके वारे में अपनी सम्मति स्पष्ट नही दे पाता । पर काश्मीर पहुँचने पर मार्शल वुल्गानिन ने अपने पहले भाषण में ही कहा—'भारत की यात्रा जो हमने पूरी की है वह हमारे लिए वहुत उपयोगी सिद्ध हुई है । हम स्पष्ट रूप से स्वीकार करते हैं कि भारत के वारे में हमारा ज्ञान अल्प था । लेकिन हमारे लिए जो व्यवस्था की गई उसने

हम सारे दक्षिणी तथा मध्यभारत को देख सके और इसके लिए हम अनुग्रहीत हैं। लेकिन भारत के उत्तारी भाग को देखे विना हम अपने दिमाग मे भारत की पूरी तस्वीर नही खीच सकते थे।'

इस तरह सोवियत नेताओ ने स्पष्ट रूप से काश्मीर के विवाद ग्रस्त प्रश्न पर अपनी स्पष्ट राय देदी और खुले शब्दो मे कह दिया कि काश्मीर भारत का ही एक अग है।

श्री एन० एस० ख ुश्चेव ने काश्मीर के मुख्य मन्त्री वख्शी गुलाम मुहम्मद द्वारा आयोजित अभिनन्द समारोह में उन लोगो को बिल्कुल नगा कर दिया जो काश्मीर के प्रश्न को खामखाँ विवाद ग्रस्त बनाये हुए हैं। उन्होने स्वागत समारोह के उत्तर मे धन्यवाद देते हुए कहा—

'काश्मीर का यह तथाकथित सवाल आखिर क्यो पैदा हुआ ? इस प्रश्न को जनता ने तो उठाया नही। कुछ राज्य उन देशो के लोगो के बीच विद्वेप फैलाना लाभप्रद समझते हैं जो उपनिवेशवाद से तथा विदेशी उत्पीडको के ऊपर अपनी युगो पुरानी निर्भरता से अपने को मुक्त कर रहे हैं।

ऐसा करते समय इजारेदार केवल अपने लक्ष्यो का ही अनुसरण करते हैं। इन देशो को आर्थिक दृष्टि से और भी कसकर अपने कब्जे में लाने के लिए तथा अपनी मर्जी का गुलाम वनाने के लिए वे जनता के एक तबके को दूसरे के खिलाफ भडकाते हैं।'

काश्मीर के बारे मे उन्होने सोवियत नीति स्पष्ट करते हुए कहा—

'इस मसले के सम्बन्ध मे हमारी स्थिति पूर्णतया स्पष्ट है। काश्मीर राज्य सबधी इस मसले की वावत सोवियत सघ का सदा ये विचार रहा है कि इसका निर्णय स्वयं काश्मीर की जनता द्वारा होना चाहिए क्योकि यह वात जनवाद के सिद्धान्तो के अनुकूल होगी और इससे क्षेत्र की जातियो के वीच मैत्रीपूर्ण सवध सुदृढ होगे।'

उन्होने कहा—'जैसा कि तथ्यो द्वारा सिद्ध है, काश्मीर की जनता साम्राज्य वादी शक्तियो के हाथ का खिलौना नही वनना चाहती। लेकिन काश्मीर के मस्ले के सम्वन्ध में पाकिस्तान की नीति का समर्थन करने की आड़ में कुछ

शक्तियाँ बिल्कुल यही करने की कोशिश कर रही हैं।

'भारतीय गणतन्त्र के एक राज्य के रूप में काश्मीर के मस्ले का फैसला काश्मीरी जनता स्वयं पहले ही कर चुकी है। यह जनता का निजी मामला है।'

उन्होने पाकिस्तान की मनोवृति का जिकर करते हुए कहा—'पाकिस्तान के परराष्ट्र मन्त्रालय ने सोवियत राजदूत को बुलाकर उन्हे ये सुझाव दिया कि मै और मेरे मित्र बुलगानिन काश्मीर जाने का विचार त्याग दे और श्रीनगर तथा आपके राज्य के अन्य भागो मे आने के लिए आपके राज्य के अध्यक्ष का निमत्रण अस्वीकार कर दे।'

उन्होने कहा—'हम इस चीज को दूसरो के मामलो में हस्तक्षेप करने की अभूतपूर्व मिसाल समझते हैं। इसके पहले कभी भी दूसरे राज्यो ने हमसे ये कहने की जुर्रत नही कि हमें कहाँ और किस लिए जाना चाहिए तथा किसको अपना मित्र बनाना चाहिए।'

व्यस्त दिवस

१२ दिसम्वर को हैदरावाद हाऊस मे उनका राष्ट्र की ओर से सत्कार किया गया, जिसमे राष्ट्रपति, प्रधान मन्त्री तथा अन्य मन्त्री और कुछ विशेष व्यक्ति सम्मिलित थे।

१३ दिसम्वर को मार्शल वुल्गानिन और ख्रुश्चेव ने रेडियो से भारतीय जनता के लिए भाषण दिए, जिनमे उन्होने भारत और सोवियत सघ की मित्रता की महत्ता पर प्रकाश डाला, और विश्व शांति की आवश्यकता पर प्रकाश डालते हुये कहा कि भारत और सोवियत सघ की मित्रता ही विश्व शांति के लिए एक गारटी है। उन्होने भारत की समस्त जनता को धन्यवाद दिया, जिसने उनका खुले हृदय से स्वागत किया था।

इसीदिन एन० एस० ख्रुश्चेव ने भारतीय ससद के सदस्यो—संसदीय हिन्दी परिषद के सदस्यो के समक्ष एक भाषण दिया।

१४ दिसम्वर को पत्रकारो के सम्मेलन में दोनो नेताओ ने भाषण दिये और उनके द्वारा पूछे गये प्रश्नो के सन्तोषप्रद उत्तर दिए।

विदाई की वेला

विदाई का समय भी बडा करुणाजनक था, लगता था सोवियत नेता भारत के ही बेटे हैं, पडित नेहरू का हृदय भी निकला पड़ता था। दोनों नेताओ ने संक्षिप्त भाषण देकर विदा ली।

श्री ख्रुश्चेव ने अपने मर्मान्ति भाषण में कहा—'प्यारे मित्रो! कुछ ही मिनटो मे हम भारत की महान जनता की राजधानी से विदा ले रहे हैं।'

उन्होने कहा—

'प्यारे मित्रो!

'जब श्री नेहरू सोवियत संघ का दौरा करने के बाद हमारे देश और हमारी जनता से बिदा हो रहे थे तो उन्होने कहा था कि वह अपने हृदय का एक भाग हमारे देश मे छोड़े जा रहे हैं। और आज आपसे, भारत की महान् जनता से बिदा होते समय मैं अनुभव कर रहा हूँ कि ये सीधे-सादे किन्तु गम्भीर अर्थपूर्ण शब्द कितने सही हैं। मैं भी अपने हृदय का एक टुकडा यही भारत मे छोडे जा रहा हूँ। भारत तथा उसकी जनता के प्रति प्रेम का उत्कट भाव हमारे हृदय में पैदा हुआ है और दृढतापूर्वक बहुमूल्य हो गया है। हमें इस बात की प्रसन्नता है कि हमने यहाँ बहुत-से भले मित्र पाये हैं, और हमारे देशो के बीच मित्रता उत्तरोत्तर सुदृढ हो रही है।

'हमारी जनता और देशो की मैत्री कभी भी शत्रुता अथवा सघर्ष से धुधली नही पडी है हमारा दृढ विश्वास है कि भविष्य मे भी ऐसा कभी नही होगा। हम अपने देशो की मैत्री को बढाने और सुदृढ बनाने के लिए कुछ भी नही उठा रखेगे जिससे कि यह मैत्री चिरन्तन एव अटूट हो।

प्यारे मित्रो, फिर मिलेंगे!

नमस्ते!

मित्रता की गारंटी

संयुक्त वक्तव्य

सोवियत संघ की सरकार के निमत्रण पर भारत के प्रधान मत्री जून, १९५५ में सोवियत सघ पधारे। उनका वहाँ हार्दिक स्वागत हुआ और उनकी इस यात्रा ने दो देशो की जनता के बीच मैत्री एवं सद्‌भाव को सुदृढ बनाया। इस यात्रा के अन्त मे भारत के प्रधान मत्री तथा सोवियत सघ की मत्रिपरिषद् के अध्यक्ष ने २२ जून, १९५५ को एक सयुक्त वक्तव्य निकाला।

भारत सरकार द्वारा दिये गये निमत्रण के जवाब में सोवियत सघ की मत्रिपरिषद् के अध्यक्ष श्री एन० ए० बुल्गानिन, सोवियत सघ की सर्वोच्च सोवियत के अध्यक्ष-मडल के सदस्य श्री एन० एस० ख्रुश्चेव सोवियत सघ के अन्य सरकारी प्रतिनिधियों के साथ १९५५ के नवम्बर-दिसम्बर मे भारत पधारे। वे भारत मे जहाँ भी गये हैं, इस देश की जनता ने उनका उत्साहपूर्ण स्वागत किया है। उनकी इस यात्रा ने दो देशो की जनता को बाँधनेवाले मैत्री सम्बंधो को सुदृढ बनाया है। श्री बुल्गानिन और श्री ख्रुश्चेव ने भारत मे कृषि उद्योग तथा नदी-घाट सम्बधी विविध निर्माण कार्यो, सामुदायिक योजनाओ, राजकीय कृषिशालाओ तथा अन्य विकास केन्द्रो को देखा है।

श्री जवाहरलाल नेहरू की सोवियत सघ की यात्रा, तथा सोवियत सघ की मत्रिपरिषद् के अध्यक्ष श्री एन० ए० बुल्गानिन और सोवियत संघ की सर्वोच्च सोवियत के अध्यक्ष-मडल के सदस्य श्री एन० एस० ख्रुश्चेव की भारत-यात्रा के फलस्वरूप उन्होने एक-दूसरे देश की जनता और उसकी जीवन-पद्धतियो, समस्याओ, उपलब्धियो और आकाक्षाओ के बारे में निजी रूप से कुछ जानकारी प्राप्त की है जिसकी परिणति उनमें तथा उनकी जनता के बीच पारस्परिक सम्मान, सदिच्छा एव सहिष्णुता पर आधारित समझबूझ की स्थापना में हुई हैं।

२२ जून, १९५५ को निकाले गये संयुक्त वक्तव्य में "पंचशील" नाम से विख्यात पाच सिद्धान्तो में दृढ निष्ठा प्रकट की गई। इन सिद्धान्तो के अनुसार राजनीतिक, आर्थिक तथा सामाजिक व्यवस्थाओ में अन्तर होते हुए भी देश पारस्परिक सम्मान तथा आंतरिक मामलो में अहस्तक्षेप के आधार पर एक-दूसरे से सहयोग कर सकते हैं और करना चाहिए तथा शाति एव मानव-जीवन की

परिस्थितियो के सुधारने के समान आदेशो की प्राप्ति के लिए सक्रिय एव शांति-पूर्ण सह-अस्तित्व की नीति का अनुसरण वे कर सकते हैं और करना चाहिए।

जब से इन पाच सिद्धान्तो का उद्घोष हुआ है, तबसे अधिकाधिक देशो ने उन्हे स्वीकार किया है और उनके साथ सहमति प्रकट की है। बान्डुंग सम्मेलन में भाग लेने वाले राष्ट्रो ने सर्वसम्मति से एक घोषणा स्वीकृत की जिनमें इन सिद्धान्तो पर बल दिया गया जो अब राष्ट्रो के बीच सहयोग के लिए व्यापक रूप मे दृढ आधार माने गये हैं।

श्री एन० ए० बुल्गानिन और श्री एन० एस० ख्रुश्चेव की वर्तमान भारत-यात्रा के दौरान मे भारत के प्रधान मन्त्री श्री जवाहरलाल नेहरू के साथ अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति के ऊपर उन्मुक्त एव सुस्पष्ट विचार-विमर्श हुए हैं। इन विचार-विमर्शों के फलस्वरूप उन्होने अपने इस दृढ विश्वास पर पुन बल दिया कि अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धो का नियमन इन पाँच सिद्धान्तो द्वारा होना चाहिए और अन्तर्राष्ट्रीय तनातनी मे कमी करने तथा राष्ट्रो के बीच शांति एवं सहयोग के लक्ष्य को बढावा देने के लिए हर प्रयास होना चाहिए। जुलाई, १९५५ मे सरकारो के प्रधानो के जेनेवा-सम्मेलन मे महान् शक्तियो ने युद्ध की व्यर्थता स्वीकार की जो पारमाणविक तथा उद्जन अस्त्रो के विकास के फलस्वरूप मानव-जाति के ऊपर केवल विपत्ति ढा सकता है। अन्तर्राष्ट्रीय झगडे तय करने के लिए युद्ध का सहारा बिल्कुल ही नही लेने के सिद्धान्त की इस आधारभूत मान्यता का संसार के राष्ट्रो ने सहर्ष स्वागत किया और इसके फलस्वरूप तनातनी मे अत्यधिक कमी हो गई। जबकि यूरोप और एशिया की मुख्य समस्याओ का समाधान अभी भी होना बाकी है, युद्ध को निषिद्ध ठहराने का स्वाभाविक परिणाम यह हुआ कि रुख मे परिवर्तन होगया और वार्ता द्वारा समझौते के प्रयास आरम्भ हुए। सोवियत सघ और जर्मन संघात्मक प्रजातन्त्र के बीच कूटनीतिक सम्बन्ध स्थापित हुए। राजदूतीय स्तर पर सयुक्त राज्य अमरीका और चीनी लोक गणतन्त्र के बीच वार्ताओ का सूत्रपात हुआ जो अभी भी जारी है। विगत अगस्त महीने मे पारमाणविक शक्ति शांतिपूर्ण उपयोग सम्बन्धी सम्मेलन ने सफलतापूर्वक अपने विचार-विमर्श समाप्त किये, और बृहद् परिषद ने अन्त-

र्राष्ट्रीय पारमाणविक शक्तिसूत्र की स्थापना के सम्बन्ध मे एक प्रस्ताव स्वीकृत किया है।

समझौता-वार्ता की इस प्रक्रिया को वढावा देने के उद्देश्य से सरकारो के प्रधानो के जेनेवा-सम्मेलन से जो विगत जुलाई महीने मे हुआ था यह निर्देश दिया कि तत्सम्बधी देशोके परराष्ट्र मन्त्रियो का सम्मेलन आयोजित हो। परराष्ट्र-मन्त्रियो का यह सम्मेलन अभी हाल मे जेनेवा मे हुआ है। सम्मेलन मे विचार-विमर्शगत समस्याओ के ऊपर समझौता नही हुआ और सरकारो के प्रधानो के सम्मेलन से जो बडी-बडी आशाए पैदा हुई थी अभी तक पूरी नही हुई हैं। लेकिन इस सम्मेलन के फलस्वरूप उन समस्याओ को और भी स्पष्ट रूप में समझने मे मदद मिली है जो ससार के सामने हैं, और आधारभूत तथ्य यह है कि इन समस्याओ का समाधान एकमात्र शातिपूर्ण पद्धतियो द्वारा तथा शातिपूर्ण समझौता-वार्ता द्वारा ही हो सकता है, यदि युद्ध को निषिद्ध ठहराना है, जैसा कि सर्वस्वीकृत है कि इसको निषिद्ध ठहराना ही होगा। अतएव जेनेवा में परराष्ट्र मन्त्रियो के सम्मेलन के नतीजे से होने वाली निराशा केवल अस्थायी होनी चाहिए, और अन्तर्राष्ट्रीय तनातनी मे ढिलाई करने तथा एकमात्र वार्ता द्वारा मतभेदो को हल करने की पद्धति पर निर्भर रहने के लिए हर प्रयास जारी रहना चाहिए। दोनो देशो के नेता यह आशा व्यक्त करते हैं कि सयुक्त राज्य अमरीका तथा चीनी लोक गणतन्त्र के वीच राजदूतीय स्तर पर जो वार्ताए जारी हैं उनसे न केवल उन समस्याओ का समाधान होगा जिन पर उनके वीच विचार-विमर्श हो रहा है, वरन् उच्च स्तरीय वार्ताओ के द्वारा और भी व्यापक रूप में सद्भाव स्थापित होगा। उनका दृढ विश्वास है कि एशिया मे तव तक स्थायी शाति नही हो सकती जव तक चीनी लोक गणतन्त्र को सयुक्त राष्ट्र सघ में अपना न्यायोचित स्थान मिल नही जाता। इस सुस्पष्ट तथ्य को स्वीकार करने में जो विलम्ब हो रहा है उस पर वे खेद प्रकट करते हैं। उनकी यह उत्कट आशा है कि एशिया के दूरपूर्व की अन्य समस्याएँ भी समझौते द्वारा यथाशीघ्र हल हो जाए, अर्थात् चीनी लोक गणतन्त्र के समुद्र तटीय द्वीपो और तैवान सम्वन्धी न्यायसम्मत अधिकारो की पूर्ति हो, तथा कोरियाई जनता के राष्ट्रीय अधिकारो की मान्यता

के आधार पर एव दूरपूर्व में शाति के हितो के अनुकूल कोरियाई समस्या को हल किया जाऐ ।

पिछले साल जेनेवा में हिन्दचीन के ऊपर जो सम्मेलन हुआ था उसका सोवियत संघ के नेताओ और भारत के प्रधान मन्त्री ने स्वागत किया था। इस सम्मेलन ने हिन्दचीन मे संकटपूर्ण युद्ध का अन्त किया तथा हिन्दचीन के राज्यो की समस्याओ के समाधान की पद्धति सुनिश्चित की थी । वे इस बात का सखेद उल्लेख करते हैं कि वियतनाम से जेनेवा-समझौते को कार्यान्वित करने के मार्ग में वाधाएँ खड़ी की है तथा लाउस मे जेनेवा-समझौते के कार्यान्वियन के सम्वन्ध में भी कठिनाइया पैदा हो गई हैं । इन समझौतो के भग हो जाने के अत्यन्त भयकर परिणाम होगे न केवल हिन्दचीन के लिए वरन् सारी दुनिया के लिए । अतएव दोनो देशो के नेता जेनेवा-समझौतों के सफल कार्यान्वियन के मार्ग की समस्त रुकावटो को दूर करने तथा इन समझौतो के बन्धनों को अक्षरशः एव तत्वतः कार्यान्वित करने में पूर्णत. सहयोग करने के लिए तत्सम्वन्धी समस्त पक्षो और हितो से अपील करना चाहते हैं ।

उनका यह दृढ मत है कि सयुक्त राष्ट्र सघ की सदस्यता के मामले में सार्वजनिकता के सिद्धान्त लागू किये जाएँ । जव तक ऐसा नही होता तव तक सयुक्त राष्ट्र सघ विश्व जन-समुदाय की पूर्ण प्रतिनिधिक सस्था नही हो सकता । इसलिए वे एक साथ अट्ठारह राष्ट्रो को सयुक्त राष्ट्र सघ में प्रवेश करने के लिए संयुक्त राष्ट्र सघ की वृहत् सभा की सिफारिश का स्वागत करते हैं और यह निष्ठापूर्ण आशा व्यक्त करते हैं कि सुरक्षा-परिषद शीघ्र ही यह सिफारिश स्वीकार करेगी और उस पर अमल करेगी ।

विश्व-शाति स्थापित करने तथा कल्पनातीत विपत्तिपूर्ण एक औ
युद्ध की सृष्टि करने वाली [illegible] का उन्मूलन करने के लिए नि[illegible]
के सिवाय और कोई दूस[illegible] । शस्त्रास्त्रो के वर्तमान पैमाने
या उसे जारी रखना युद्ध [illegible] देने के समान है और [illegible]
होने के साथ-साथ सामूहिक [illegible] प्रकार के शस्त्रास्त्र
के लिए होड़ होती है । विन [illegible] ती हुई क्षमतायुक्त

आविष्कार एवं सग्रह के अनुपात मे निश्शस्त्रीकरण की आवश्यकता वढती जा रही है। युद्ध को पूर्णतः निषिद्ध ठहराने की व्यापक इच्छा के फलस्वरूप यह आवश्यक हो जाता है कि निशस्त्रीकरण के मामले मे निश्चित, उचित एव अविलम्ब कार्यवाहियाँ की जाए। इस विषय मे पहले ही एक बडी हद तक मतैक्य स्थापित हो चुका है, और कोई वजह नही मालूम होती कि शेष कठिनाइयो पर शीघ्र ही विजय क्यो न प्राप्त की जाय यदि लक्ष्य स्थायी शाति है। विशेषकर दोनो देशो के नेता अपने इस दृढ विश्वास पर पुनः वल चाहते हैं कि पारमाणविक एव उद्‌जन अस्त्रो के निर्माण, प्रयोग एवं परीक्षण के ऊपर बिना शर्त रोक लगाई जाए। इसके साथ-साथ प्रचलित अस्त्रो मे अनिवार्यत ठोस कमी करना और इस प्रकार के निषेध एव निश्शस्त्रीकरण के कठोर कार्यान्वियन को सुनिश्चित बनाने के लिए कारगर अन्तर्राष्ट्रीय नियन्त्रण स्थापित करना आवश्यक है। जब तक यह नही होता युद्ध का भय दुनिया को आतंकित एवं उत्पीडित करता रहेगा और जनता को इस वात में सन्देह होगा कि वस्तुतः शाति का प्रयास किया जा रहा है।

सोवियत सघ के नेता तथा भारत के प्रधान मन्त्री इस विषय में सहमत हैं कि शान्ति एव सुरक्षा को सुनिश्चित बनाने का तरीका सैनिक गुटवन्दियाँ या क्षेत्रीय सैनिक गुट तैयार करना नही। इस प्रकार की गुटवन्दियो ने सम्वन्धित देशो के शातिपूर्ण विकास में रुकावट डालने के साथ-साथ शीतयुद्ध की सीमाओ का विस्तार किया हैं, सम्वन्धित क्षेत्रो में अस्थिरता पैदा की है तथा भय और तनाव वढाया है। राज्यो के सामूहिक प्रयासो के द्वारा ही शान्ति एवं वास्तविक सुरक्षा सुनिश्चित वनाई जा सकती है।

अन्तर्राष्ट्रीय भय और तनाव में कमी करने की सर्वाधिक कारगर पद्धतियो मे एक है पारस्परिक सहयोग एव सद्भाव के मार्ग मे आने वाली रुकावटो को दूर करना। इस उद्देश्य के लिए देशो के वीच सांस्कृतिक एव आर्थिक सम्पर्कों को वढावा देना चाहिए। दोनो देशो के नेताओ ने इस वात पर सन्तोष प्रकट किया है कि वैज्ञानिको, प्राविधिज्ञो, अर्थशास्त्रियो, ससद-सदस्यो, लेखको तथा सास्कृतिक क्षेत्रो के अन्य कार्यकर्ताओ के नियमित रूप से एक-दूसरे देश में आने-जाने से

दोनो देशों की जनता को एक-दूसरे की जानकारी प्राप्त करने के लिए अधिकाधिक अवसर प्राप्त हो रहा है। वे आशा करते हैं कि एक ऐसे आधार पर जिससे दोनो देशो की विभिन्न जीवन-पद्धतियो के लिए समझबूझ एवं,सम्मान को प्रोत्साहन मिले पारस्परिक सम्पर्कों के लिए इस प्रकार के अवसरो मे अबोध वृद्धि होगी

अतएव सोवियत सघ की मंत्रिपरिषद के अध्यक्ष, सोवियत सघ की सर्वोच्च सोवियत के अध्यक्ष-मण्डल के सदस्य तथा भारत के प्रधान मन्त्री भारत मे भिलाई इस्पात कारखाने के निर्माण मे दोनो देशो के बीच सहयोग के विकास का, तथा उन वार्ताओ का स्वागत् करते हैं जो कई अन्य निर्माण योजनाओ के सम्बध मे हो रही हैं। भारत की द्वितीय पंचवर्षीय योजनाओ के दौरान में जिसमें भारी उद्योग के विकास पर जोर दिया गया है सहयोग के ऐसे और भी अधिक अवसर मिल सकते हैं। वे इस बात को वांछनीय समझते है कि जब आवश्यक प्रारम्भिक कार्य पूरा हो जाए, तो दोनो देशो के योग्य प्रतिनिधि आर्थिक एव प्राविधिक सहयोग के और अधिक परस्पर लाभपूर्ण रूपो पर विचार करने तथा जरूरत पड़ने पर खास विषयो मे मतैव्य स्थापित करने के लिए मिलें।

श्री बुल्गानिन और श्री ख्रुश्चेव की भारत-यात्रा न केवल दो देशो को एक-दूसरे के निकट लाने की दृष्टि से वरन् विश्व-शाति के लक्ष्य को आगे बढाने की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

सोवियत सघ की मन्त्रिपरिषद के अध्यक्ष श्री एन० ए० बुल्गानिन, सोवियत सघ की सर्वोच्च सोवियत के अध्यक्ष-मण्डल के सदस्य श्री एन० एस० ख्रुश्चेव भविष्य मे अपने विश्वास का, तथा न केवल अपने दोनो देशो की वरन् ससार की जनता के हितार्थ शाति को बढावा देने में अपनी शक्तियो को लगा देने के लिए अपने दृढ संकल्प का नये सिरे से उद्घोष करते हैं।

एन० ए० बुल्गानिन,
सोवियत सघ की
मन्त्रिपरिषद् के अध्यक्ष।

जवाहरलाल नेहरू,
भारत के प्रधान मन्त्री।

—०—

समाप्त

हमारे अन्य प्रकाशन